Approved text book in Bengal, Bihar, C. P. & Punjab

महामहोपाध्याय पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कृत

संस्कृत

सुबोध-व्याकरण-कौमुदी

सारे भाग ।

———:०:———

पण्डित रामसुन्दर शर्म्मा काव्यतीर्थ

द्वारा सम्पादित

——०:——

प्रकाशक

सुबोध ग्रन्थमाला कार्य्यालय,

राँची ।

——०:——

[संशोधित और परिवर्द्धित]

Printed by C. S. [illegible]

at the [illegible] Press, Ranchi

[illegible] संस्करण] [मूल्य [illegible]

भूमिका।

व्याकरण कौमुदी की रचना द्वारा महामहोपाध्याय पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विद्यार्थियों का बड़ा ही उपकार किया है। इसके द्वारा सुगम रीति से संस्कृत सीखने में उन्हें बड़ी सहायता मिलती है। यह पुस्तक भारत के प्रत्येक प्रान्तों में प्रचलित है। बंगला में इसके अनेक प्रकार के संस्करण निकल चुके हैं जिससे हाई स्कूल तथा कालेज के विद्यार्थी महान् लाभ उठा रहे हैं। हिन्दी में भी इसके दो तीन प्रकार के संस्करण अवश्य निकले हैं, पर उनसे युनिवर्सिटी के परीक्षार्थियों की सभी आवश्यकतायें पूरी नहीं होतीं तथा मूल्य भी अधिक रखा गया है। विद्यार्थियों की इन्हीं असुविधाओं की पूर्त्ति के विचार से मैंने सुबोध व्याकरण कौमुदी नामक यह नवीन संस्करण प्रकाशित किया है। शब्दरूप में सर्वत्र अंग्रेजी अर्थ सहित शब्दों की सूचियाँ दी गयी हैं। धातुरूप में भी इसी प्रकार अंग्रेजी-अर्थ सहित धातुओं की बृहत् सूचियाँ दे दी गयी हैं। धातुरूप में लुङ् तथा लिट् लकार बड़े ही कठिन हैं अतएव लुङ् लकार ७ भागों में और लिट् दो भागों में विभक्त करके समझाया गया है जिससे विद्यार्थियों के लिये बड़ा ही सरल और सुबोध हो गया है। ऐसे ही विषय को सरल व सुबोध करने के लिये अनेक स्थानों के क्रम में परिवर्तन कर दिया गया है। बीच २ में क्रियाविशेषण Degree of comparison आदि अनेक विषय बढ़ा दिये गये हैं। प्रायः प्रत्येक स्थलों में पाणिनि के संस्कृत-सूत्र भी दे दिये गये हैं जिससे विद्यार्थी शीघ्र कण्ठस्थ कर सकें। सर्वत्र बीच २ में अभ्यास दिये गये हैं; इनके मनन व अभ्यास से विषय के पूर्णतया बोध होने में

विद्यार्थियों को बड़ी ही सहायता मिलेगी। अन्त में के सुभीते के लिये अक्षर के क्रमानुसार अंग्रेज़ी रूप सहित प्रत्येक धातुओं की एक सूची दे दी ग इसके उपरान्त अनुवाद की सुविधा के लिये अंग्रेज़ी धातुओं की सूची भी Alphabets (अक्षरों) के गयी है। विषय को सरल व सुबोध करने के लिये साध्य पूर्ण प्रयत्न किया है, पर मैं इसमें कहाँ तक हूँ, इसका निर्णय सहृदय पाठक ही कर सकते हैं वर्ष उक्त पण्डित जी की संस्कृत व्याकरण की उ का सुबोध संस्कृत व्याकरण नामक नवीन संस्करा किया था इसे शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने ऐस समझा कि विहार में तो इसका सर्वत्र प्रचार हुआ। अतिरिक्त बंगाल, यू० पी० और सी० पी० की कमिटियों ने भी इसे अपने यहाँ टेक्स्ट बुक रख उत्साहित किया है। इसके निमित्त मैं सबों का हूँ। सुबोध संस्कृत व्याकरण का इस प्रकार आद पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षा कर्म्मचारी इस सुबोध व्याकरण कौमुदी को अपनायेंगे, क्योंकि मैंने इसे सुबोध संस्कृत व्याकरण अधिक उपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है, य इससे विद्यार्थियों का कुछ उपकार हुआ तो मैं अ सफल समझूँगा।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिये इसके चारों अलग और एक साथ भी प्रकाशित किये जा रहे हैं प्रकार की सुविधा हो उसी प्रकार लाभ उठाने की

आप का विनीत-

रामसुन्दर शर्म्मा

BODH VYAKARAN KAUMUDI

(सुबोध व्याकरण कौमुदी)

Pandit Ramsundar Sharma Kavyatirtha, H
t Zila School, Ranchi.

is book on Sanskrit grammar is not a mere Hi ation of Vidyasagar's Kaumudi but, Pandit Ra Sharma has made various improvements on Only the fourth part of Vidyasagar's Kaum ed Sutras but, in the peresent publication the auth en Sanskrit Sutras in the 3 preceding parts as we en in the fourth part Panini's aphorisms have at plac given side by side with Vidyasagar's Sutras. Th feature of the publication renders it highly valuab vanced students. The expositions of the Sutras concise and accurate. A large number of exercis rection and for translations from English and Hin nskrit and vice versa, makes the work immense le for students. This excellent publication is pr tly fit to be adopted as a text-book in Schools an s. The equipment the student will get from s sure to be thorough and efficient.

Sd. Kashi Prasad Shastri,

KAVYATIRTHA, M. A., B. L., M. O. L.

(Examiner of Sanskrit Title Examinations etc.)

ubodh Vyakarn Kaumudi" has been very ably by Pandit Ramsundar Sharma, Kavyatirtha of . The general arrangement of the subject matter is tory. The author has taken great pains in carefully this book which is sure to lay under immense on the whole of the student world.

re are at every stage, excellent groups of exercises , which is a new feature of this edition They are selected and arranged that they will be of great the students in mastering the intricacies of Sanskrit ar.

The chapter dealing with समास, तद्धित and कृदन्त are so complete that any student who knows them thoroughly will scarcely require the study of any other grammar for his ordinary purposes.

This attempt of the author is very commendable by issuing this work. He has removed the long-felt want of good Sanskrit grammar in Hindi. No doubt, the present book will not only serve the purposes of High School students but may, with advantages, be consulted also by junior students in colleges.

In my opinion the author has eminently succeeded in his object.

Sd. Ram Pratap Shastri,
VIDYANIDHI, VIDYABHUSHAN,
Senior Professor of Sanskrit
Govt. Morris College, Nagpur (C. P.)

प्रातःस्मरणीय प० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने व्याकरण कौमुदी रच-कर छात्रों का बड़ा ही उपकार किया, पर साथ ही साथ उन के इस उपकार से कुछेक विद्यार्थियों का कुछ अपकार भी हो जाया करता है। ऊपर की कक्षाओं में व्याकरण-कौमुदी के सूत्रों का ज्ञान नितान्त निरर्थक हो जाता है और परिणाम यह होता है कि बहुतेरे छात्र व्याकरण-कौमुदी के सूत्रों को भुला पाणिनि के सूत्रों के उलझन में पड़ संस्कृत के अध्ययन से हताश हो जाते हैं। यदि आरम्भ काल ही में ये होनहार बालक पाणिनि के सूत्रों से कुछ परिचित हो जाते तो शायद उनको दुबारा परिश्रम ऊपर के वर्गों में नहीं करना पड़ता। बड़े हर्ष की बात है कि प० रामसुन्दर शर्म्मा जी ने छात्रों की इस असुविधा को बड़े ही सरल तरीके से हटा दिया है। बहुत से छात्र संस्कृत केवल मैट्रिक परीक्षा आसानी से पास कर लेने के विचार से ही पढ़ते हैं। उनके लिये तो व्याकरण-कौमुदी का अध्ययन ही श्रेयस्कर है। परन्तु जो छात्र ऊपर भी संस्कृत पढ़ना तथा प्रौढ़ता प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिये आरम्भ-

महर्षि पाणिनि के सूत्रों का अत्यन्त अभिप्राय है । हमारे
श्री ने व्याकरण कौमुदी का अनुवाद ऐसा अच्छा किया है
व्याकरण एवं प्रतिभाशाली सूत्र सब के सब आज उन्हें
इस प्रकार विस्तारपूर्वक इन सूत्रों के साथ ही श्री पाणिनि के
दिये गये हैं जिनसे सब किसी को लाभ पहुँचे । और भी, इनसे
अध्यापन कार्य में भी सुविधा होगी । जो शिक्षक अपने
व्याकरण सिखाने जाता है, उन्हें व्याकरण कौमुदी पढ़ाने
का ईश्वर पढ़ेगी परन्तु जो वैयाकरण हैं उन्हें महर्षि पाणिनि
करने को तैयार हो मिलेंगे ।

विशेषता इस पुस्तक की अभ्यासों की भरमार है, जहाँ
अभ्यास भरे पड़े हैं । शब्द रूपावली या धातु रूपावली जहाँ
लीजिये, वहीं वैसे वैसे शब्द तथा धातुओं की सभी विभक्
सम्बन्धी सहित लिखी मिलेगी । इसके सिवाय अन्यान्य
में भी किसी प्रकार की कमी नहीं जिससे छात्रों को अपने
सम्बन्धी ज्ञान को प्रयोग में देखने या लाने का अच्छा सुयोग
।

साथ इस संस्करण की एक और खूबी यह है कि श्रीमान्
इस के अन्त में धातु पाठ और शब्द-कोष भी जोड़ रखा है
र्थियों को अपने संस्कृत अध्ययन काल में अन्यान्य पुस्तकों
री न खटकने पाये ।
आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत प्रेमी छात्र-
गण इस संस्करण को अपनाकर उक्त पण्डितजी के परिश्रम
रेंगे ।

साहित्याचार्य्य प० परमेश्वर प्रसाद शर्म्मा

एम. ए., बी. एल.

Senior Sanskrit Professor.

सूचीपत्र ।

प्रथम अध्याय ।

द्वितीय अध्याय ।

तृतीय अध्याय।

चतुर्थ अध्याय।

र्णय Alphabets.

वर्णा हैं; स्वर और व्यञ्जन। जिन वर्णों के
की सहायता नहीं लेनी पड़ती; उन्हें

वर्ण दो प्रकार के ों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की
उच्चारण में अन्य वर्णां उन्हें व्यञ्जनवर्ण कहते हैं *।
स्वर कहते हैं। जिन वर्ण र्ण—*Vowels.*
सहायता लेनी पड़ती है ॠ लृ ए ऐ ओ औ, ये १३ स्वरवर्ण

अ आ इ ई उ ऊ ऋ

स। एओङ्। ऐऔच्। हयवरट्। ल
ञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफ
* अइउण्। ऋलृक् चटतव्। कपय्। शषसर्। हल्।
ञमङणनम्। झभ न हैं। संज्ञा (प्रत्याहार) की गणना के
ठथचटतव्। कपय्। कों को छोड़ देते हैं। यथा, अण् से अ इ उ
ये १४ महादेव जी के सू ए ऐ औ (सब स्वर वर्णों) का तथा हल् से
य प्रत्येक सूत्र के हलन्त व ता है। ऐसे ही अक्, इक्, उक्, एङ्,
अण् से अ इ उ ऋ लृ ए ऐ , चर्, यम्, झल् इत्यादि प्रत्याहारों
ा व्यञ्जनवर्णों का बोध हो की गणना करनी चाहिये।
, अट्, शल्, यञ्, मन
न्त वर्णों को छोड़ कर

है। स्वरवर्ण दो प्रकार के हैं, ह्रस्व (Short) और दीर्घ (Long). अ इ उ ऋ ऌ, ये पाँच ह्रस्व स्वर हैं और आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ, ये आठ दीर्घ स्वर हैं। ऌ का दीर्घ नहीं होता।

व्यञ्जनवर्ण—Consonants.

क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह* (ं) (ः), ये ३३ व्यञ्जनवर्ण हैं।

(१) कादयोमावसानाः—क से म तक २५ वर्णों को स्पर्श वर्ण कहते हैं क्योंकि जिह्वा के अग्र, मध्य और मूल इत्यादि स्थानों को स्पर्श करने से इनका उच्चारण होता है। स्पर्श वर्ण पाँच भागों में विभक्त हैं; कवर्ग—क ख ग घ ङ, चवर्ग—च छ ज झ ञ, टवर्ग—ट ठ ड ढ ण, तवर्ग—त थ द ध न, पवर्ग—प फ ब भ म।

(२) यरलवा अन्तःस्थाः—स्पर्श और ऊष्मवर्णों के बीच में रहने से य र ल व को अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं।

(३) शषसहा ऊष्माणः—श ष स ह, इनके उच्चारण में अधिक ऊष्मा (वायु) बाहर निकलती है, इसलिये इन्हें ऊष्म वर्ण कहते हैं।

(४) (ं) अनुस्वार और (ः) विसर्ग को अयोगवाह कहते हैं, क्योंकि म् और न् के स्थान में अनुस्वार तथा र् और स् के स्थान में विसर्ग होने के कारण पाणिनीय व्याकरण में इसका उल्लेख (योग) नहीं है तथापि प्रयोग में उसका कार्य्य (वहन) करता है।

वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श ष स को अघोषवर्ण

---

* क् और ष मिलकर क्ष होता है इसलिये यह संयुक्त वर्ण में गिना जाता है।

और वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण तथा य र ल व ह को घोषवर्ण कहते हैं। वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्णों को अल्पप्राण तथा द्वितीय और चतुर्थवर्णों को महाप्राण कहते हैं।

वर्णों का उच्चारण-स्थान।

१ अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः—अ आ क ख ग घ ङ ह और (:) विसर्ग का उच्चारण कण्ठ से होता है; इसलिये इन्हें कण्ठ्यवर्ण (Guttural) कहते हैं।

२ इचुयशानां तालु—इ ई च छ ज झ ञ य और श का उच्चारणस्थान तालु है; इसलिये इन्हें तालव्यवर्ण (Palatal) कहते हैं।

३ ऋटुरषाणां मूर्धा—ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र और ष का उच्चारणस्थान मूर्धा है; इसलिये इन्हें मूर्धन्य (Cerebral) कहते हैं।

४ लृतुलसानां दन्ताः—लृ त थ द ध न ल और स का उच्चारणस्थान दन्त है; इसलिये इन्हें दन्त्यवर्ण (Dental) कहते हैं।

५ उपूपध्मानीयानामोष्ठौ—उ ऊ प फ ब भ और म का उच्चारणस्थान ओष्ठ है; इसलिये इन्हें ओष्ठ्यवर्ण (Labial) कहते हैं।

६ एदैतोः कण्ठतालु—ए और ऐ के उच्चारणस्थान कण्ठ और तालु हैं; इसलिये इन्हें कण्ठतालव्य वर्ण (Palato-guttural) कहते हैं।

७ ओदौतोः कण्ठोष्ठम्—ओ और औ के उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ हैं; इसलिये इन्हें कण्ठोष्ठ्यवर्ण (Labio-guttural) कहते हैं।

८ वकारस्य दन्तोष्ठम्—व के उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ

है, इसलिये इन्हें संयुक्तस्वर (Diphthongs) कहते
९ अनुनासिक—(ँ) अनुस्वार और [illegible]
उच्चारित है, इसलिये इन्हें अनुनासिक (Nasal) वर्ण कहते
१० [illegible]
उच्चारण करते वायु इत्यादि के [illegible] अधिकतर होती है, इसलिये
इन्हें [illegible] (Nasal) वर्ण भी कहते हैं।
११ जिनमें जिन स्वर वर्णों के [illegible] रहता है [illegible]
उच्चारणस्थान जिनमें का भी [illegible] होता है।

परिभाषा।

१ प्रकृति—क्रियावाचक, वस्तुवाचक वा वस्तु के विशेष
वाचक शब्दों को प्रकृति (Radicals) कहते हैं। प्रकृति के
भेद हैं, धातु और प्रातिपदिक।

धातु—"भूवादयो धातवः"—जिन से क्रिया का बोध
होते धातु (Verbal roots) कहते हैं, यथा, भू, स्था, ग
दृश्, हन् इत्यादि।

प्रातिपदिक—"अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्"—जिन
वस्तु या वस्तु के विशेषण का बोध होता हो उसे प्रातिप
(Nominal bases) कहते हैं। वस्तुवाचक—चन्द्र, सूर्य, न
लता, जल, वायु, गृह इत्यादि। वस्तु का विशेषणवाचक—
स्थिर, चपल, नूतन, पुरातन, मधुर, सुन्दर इत्यादि।

२ प्रत्यय—धातु और प्रातिपदिक के परे जो लगाया जा
है उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं, विभक्ति
कृत्, तद्धित, स्त्री प्रत्यय और धात्ववयव।

विभक्ति—"विभक्तिश्च"—धातु के परे ति तः अन्ति इत्यादि
और प्रातिपदिक के परे सौ, औ, अः इत्यादि जो सब प्रत्यय हो

हैं उन्हें विभक्ति (Inflections) कहते हैं।

कृत्—धातु के परे तव्य, य, क्त्वा इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें कृत् (Verbal suffixes) कहते हैं।

तद्धित—प्रातिपदिक के परे अ इ य इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें तद्धित (Nominal suffixes) कहते हैं।

स्त्रीप्रत्यय—स्त्रीलिङ्ग में आ ई इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें स्त्रीप्रत्यय (Feminine suffixes) कहते हैं।

धात्ववयव—धातु के परे णिच्, सन् इत्यादि तथा प्रातिपदिक के परे य, काम्य इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें धात्ववयव (Parts of roots) कहते हैं।

३ पद—"सुप्तिङन्तं पदम्"—धातु और प्रातिपदिक विभक्तियुक्त होने से पद (Inflected words) कहलाते हैं।

४ आदेश—प्रकृति और प्रत्यय के रूपपरिवर्त्तन को आदेश कहते हैं। यथा, वृद्ध शब्द के स्थान में ज्य, स्था धातु के स्थान में तिष्ठ्, जस् विभक्ति के स्थान में अः इत्यादि।

५ गुण—"अदेङ् गुणः"—स्वर के गुण से यह समझा जाता है कि इ ई के स्थान में ए, उ ऊ के स्थान में ओ, ऋ ॠ के स्थान में अर्, ऌ के स्थान में अल् होता है।

६ वृद्धि—"वृद्धिरादैच्"—स्वर की वृद्धि कहने से यह समझा जाता है कि अ के स्थान में आ, इ ई के स्थान में ऐ, उ ऊ के स्थान में औ, और ऋ ॠ के स्थान में आर् होता है।

७ लघु व गुरु—"ह्रस्वं लघुः संयोगे गुरुः, दीर्घञ्च"—ह्रस्व स्वर को लघु और दीर्घ स्वर को गुरु कहते हैं। संयुक्त वर्ण के पूर्व ह्रस्व स्वर को भी गुरु कहते हैं।

८ उपसर्ग—"उपसर्गाः क्रियायोगे"—क्रिया के साथ योग होने से प्र, अप, अव, उप, आ, परा, नि, वि, परि, प्रति, अति, अधि,

अपि, अभि, सु, अनु, उत् (उद्), सम्, निर्, दुर्, इन २० श
को उपसर्ग (Prepositional prefixes) कहते हैं।

९ सवर्ण—"तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्"—समान स्थान
प्रयत्न द्वारा उच्चारण किये हुए वर्णों की सवर्ण संज्ञा होती
यथा, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ इत्यादि। पर एक स्थान
उच्चारण किये जाने के कारण स्वरवर्ण और व्यञ्जनवर्ण
सवर्णता नहीं होती। स्वरवर्ण की स्वरवर्ण के साथ और
ञ्जनवर्ण की व्यञ्जनवर्ण के साथ सवर्णता होती है।

१० टि—"अचोऽन्त्यादि टि"—शब्द के अन्त्य स्वर से
आगे के वर्णों की टि संज्ञा होती है।

११ उपधा—शब्द के अन्त्य वर्ण के पूर्व वर्ण को
कहते हैं।

सन्धि-प्रकरण।

दो वर्ण परस्पर निकट होने से मिल जाते हैं। इसी
को या मेल से जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं। स
के ३ भेद हैं।

(१) स्वरसन्धि—स्वरवर्ण के साथ स्वरवर्ण की जो स
होती है उसे स्वरसन्धि कहते हैं।

(२) व्यञ्जनसन्धि—व्यञ्जनवर्ण के साथ स्वरवर्ण या व्य
वर्ण की जो सन्धि होती है उसे व्यञ्जनसन्धि कहते हैं।

(३) विसर्गसन्धि—विसर्ग के साथ स्वरवर्ण या व्यञ्जनव
की जो सन्धि होती है उसे विसर्गसन्धि कहते हैं।

स्वरसन्धि।

(१) अकः सवर्णे दीर्घः—दो सवर्ण (समान स्वर ह्रस्व
दीर्घ) इकट्ठे होने से दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। यथ

(१) शश + अङ्कः = शशाङ्कः, कुश + आसनम् = कुशासनम्,
। + अर्णवः = दयार्णवः, विद्या + आलयः = विद्यालयः।
गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः, क्षिति + ईशः = क्षितीशः,
ती + इच्छा = महतीच्छा, पृथ्वी + ईश्वरः = पृथ्वीश्वरः।
विधु + उदयः = विधूदयः, लघु + ऊर्म्मिः = लघूर्म्मिः,
म्भू + उदयः = स्वयम्भूदयः, भू + ऊर्द्ध्वम् = भूर्द्ध्वम्
पितृ + ऋणम् = पितृणम्। भ्रातृ + ऋद्धिः = भ्रातृद्धिः।

शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यं। तच्च टेः—शकन्धु इत्य
ररूप आदेश होता है। पूर्व्व शब्द में टि का लोप होता है।
अन्धुः=शकन्धुः, कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः, मनस् + ईषा =
ईषा = हलीषा, लाङ्गल + ईषा = लाङ्गलीषा, कुल + अटाः
+ अञ्जलिः = पतञ्जलिः, सार + अङ्गः = सारङ्गः, सी
= सीमन्तः, मार्त्त + अण्डः = मार्त्तण्डः।

२) आद्गुणः—यदि ह्रस्व या दीर्घ अ के परे ह्रस्व य
ऋ आवे तो अ इ मिल कर ए, अ उ मिल कर ओ
लकर अर् हो जाते हैं। यथा, (१) देव + इन्द्रः = दे
+ ईशः = गणेशः, महा + इन्द्रः = महेन्द्रः, रमा +
। (२) नील + उत्पलम् = नीलोत्पलम्, एक+ऊन
नैकविंशतिः, गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्, महा +
र्म्मिः। (३) देव + ऋषिः=देवर्षिः, हिम + ऋतुः=
+ ऋषिः = महर्षिः, देवता + ऋषभः = देवतर्षभः।

N. B. १ स्वादीरेरिणोः—स्व के परे ईर और ईरि
द्ध होती है। यथा, स्व + ईरः = स्वैरः। स्व +
णी। स्वैरं, स्वैरी।

अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्—अक्ष के परे ऊहिनी

दोनों मिल कर औ (वृद्धि) होता है। यथा, अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी।

३ प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु—प्र के परे ऊह, ऊढ, ऊढि रहे तो दोनों मिलकर औ (वृद्धि) होता है और एष या एष्य परे रहने से ऐ होता है। यथा, प्र + ऊहः = प्रौहः, प्र + ऊढः = प्रौढः, प्र + ऊढि = प्रौढिः, प्र + एषः = प्रैषः, प्र + एष्यः = प्रैष्यः।

४ प्रवत्सरकम्बलवसनार्णदशानामृणे—प्र, वत्सर, कम्बल, वसन ऋण और दश के परे ऋण शब्द हो तो अ और ऋ मिल कर आर् होता है। यथा, प्र + ऋणम् = प्रार्णम्, वत्सर + ऋणम् = वत्सरार्णम्, कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम् इत्यादि।

५ ऋते च तृतीयासमासे—अकार या आकार के परे ऋत शब्द के ऋ रहने से तृतीया तत्पुरुष समास होने पर दोनों मिल कर आर् होता है। यथा, शीत+ऋतः = शीतार्त्तः। पर तृतीय समास भिन्न—परम + ऋतः = परमर्त्तः।

६ उपसर्गादृति धातौ—यदि उपसर्ग के अ या आ के परे धातु की ऋ हो तो दोनों मिल कर आर् (वृद्धि) होता है। यथा, अप + ऋच्छति = अपार्च्छति।

(३) वृद्धिरेचि—ह्रस्व या दीर्घ अ के परे ए, ऐ, ओ, औ आवे तो अ ए या अ ऐ मिलकर ऐ तथा अ ओ या अ औ मिलकर औ हो जाते हैं। यथा, (१) एक + एकम् = एकैकम्, मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्, सदा + एव = सदैव, महा + ऐरावतः = महैरावतः। (२) जल + ओघः = जलौघः, चित्त + औदार्य्यम् = चित्तौदार्य्यम्, महा + ओषधिः = महौषधिः, महा + औदार्य्यम् = महौदार्य्यम्।

१ ओत्वोष्ठयोः समासे वा—अकार या आकार के परे ओतु या ओष्ठ हो और समास हो तो अकार या आकार का

विकल्प से लोप होता है। यथा, स्थूल + ओतुः = स्थूलोतुः, स्थूलौतुः (मोटी बिल्ली); बिम्ब+ओष्ठः=बिम्बोष्ठः, बिम्बौष्ठः। समास नहीं होने से नहीं होता। यथा, तव + ओष्ठः = तवौष्ठः।

२ एङि पररूपम्—उपसर्ग के अकार या आकार के परे (एध् और इ भिन्न) धातु का ए या ओ रहे तो अ या आ का लोप होता है अर्थात् पररूप एकादेश होता है। यथा, प्र + एजयति = प्रेजयति, उप + ओषति = उपोषति। पर उप + एधते = उपैधते, अव + एति = अवैति। (एत्येधत्यूठ्सु)।

३ एवे चानियोगे—अकार के परे एव हो और अनियोग अर्थ हो तो दोनों मिल कर ए होता है। यथा, अद्य + एव = अद्येव। नियोग अर्थ में—अद्यैव गच्छ।

४ ओमाङोश्च—अकार के परे ओम् या आङ् (उपसर्ग) रहे तो अ का लोप होता है। यथा, शिव + एहि (आ + इहि) = शिवेहि, शिवाय + ओम् नमः = शिवायोन्नमः।

(४) इको यणचि—ह्रस्व या दीर्घ इ उ और ऋ के परे कोई भिन्न स्वर (इ के परे इ ई को छोड़ कर दूसरा कोई स्वर तथा उ के परे उ ऊ को और ऋ के परे ऋ को छोड़ कर दूसरा कोई स्वर) आवे तो इ का य्, उ का व् और ऋ का र् हो जाता है। यथा, (१) यदि + अपि = यद्यपि, अभि + उदयः = अभ्युदयः, नदी + अम्बु = नद्यम्बु, देवी + आगता = देव्यागता। (२) अनु + अयः = अन्वयः, सु + आगतम् = स्वागतम्, अनु + एषणम् = अन्वेषणम्, सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु, वधू + ऐश्वर्य्यम् = वध्वैश्वर्य्यम्। (३) पितृ + अनुमतिः = पित्रनुमतिः, पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा।

(५) एचोऽयवायावः—स्वर वर्ण परे रहने से ए ऐ ओ औ के स्थान में क्रम से अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं। यथा,

(१) शे + अनम् = शयनम् , नै + अनम् = नायनम् । (२
चिनै + अकः = चिनायकः, सञ्जै + अकः = सञ्जायकः । (३
भो + अनम् = भवनम् , पो + अनः = पवनः । (४) पौ + अक
= पावकः, भौ + उकः = भावुकः ।

१ लोपःशाकल्यस्य-पदान्त ए ओ ऐ औ के स्थान में होने वा
अय् , अव् , आय् , आव् , के य् और व् का विकल्प से लोप हो
है । यथा, सखे + आगच्छ = सख आगच्छ, सखयागच्छ; तै
एकदा = त एकदा, तयेकदा । प्रभो + आगच्छ = प्रभ आगच्
प्रभवागच्छ; प्रभो + एहि = प्रभ एहि, प्रभवेहि । श्रियै + अर्थ
= श्रिया अर्थः. श्रियायर्थः । तौ + ईश्वरी = ता ईश्वरी, ताव
श्वरी; विष्णौ + उदिते = विष्णा उदिते, विष्णावुदिते ।

२ वान्तो यि प्रत्यये—ओ और औ से परे ऐसा प्रत्यय आ
जिस के आदि में य हो तो क्रम से अव् और आव् हो जाता है
यथा, गो + यम् = गव्यम् (milk); नौ + यम् = नाव्यम् ।

मार्ग परिमाण बोध होने से गो + यूतिः = गव्यूतिः (
कोश) होता है, अन्यत्र गोयूतिः (बैलों का एक जोड़ा) ।

गोरवङ् स्फोटायनस्य—स्वर वर्ण परे हो तो 'गो' पद के ओ
विकल्प से अव् होता है । यथा, गो + ईशः = गवेशः, गवीशः
पर इन्द्र और अक्ष शब्द परे होने से नित्य अव् होता है । यथ
गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः, गो + अक्षः = गवाक्षः (window) ।

३ एङः पदान्तादति—पदान्त ए या ओ के परे अ आवे तो
का लोप हो जाता है और अ के स्थान में एक ऽ ऐसा चि
रहता है । यथा, सखे + अर्पय = सखेऽर्पय, प्रभो + अनुगृहाण
प्रभोऽनुगृहाण ।

(६) निम्न लिखित पदों में सन्धि नहीं होती—

(क) निपात एकाजनाङ्—ओकारान्त तथा एक स्वर वा

अव्यय के साथ उसके परे रहने वाले स्वरों की सन्धि नहीं होती। यथा, अहो + अच्युत = अहो अच्युत, आ + एवम् = आ एवम्।

पर सीमा, व्याप्ति या ईषदर्थ बोध होने से या क्रिया के साथ योग होने से आ अव्यय की सन्धि होती है। यथा, सीमा-आ + अध्ययनात् = आध्ययनात्। व्याप्ति—आ + एकदेशात = ऐकदेशात्। ईषदर्थ—आ + आलोचितम् = आलोचितम्। क्रिया-योगे—आ + इहि = एहि।

(ख) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्। ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्— प्लुत स्वर तथा द्विवचनान्त ई ऊ और ए के परे कोई स्वर आवे तो सन्धि नहीं होती। यथा, एहि कृष्ण ३, अत्र गौश्चरति, कवी + इमौ = कवी इमौ, साधू + इमौ = साधू इमौ, विधे + इमे = विधे इमे।

(ग) अदसोमात्—अदस् शब्द के ईकारान्त और ऊकारान्त पदों की सन्धि नहीं होती। यथा, अमी+अश्वाः=अमी+अश्वाः, अमू + अर्भकौ = अमू अर्भकौ।

अतिरिक्त।

पर + अक्षः = परोक्षः, अन्य + अन्यम् = अन्योन्यम्, किमु + उक्तम् = किम्वुक्तम्, किमु उक्तम्; सप्त + ऋषीणाम् = सप्तर्षीणाम्, सप्त ऋषीणाम्; चक्री + अत्र = चक्रिअत्र, चक्र्यत्र; गो + अग्रम् = गोऽग्रम्, गो अग्रम्, गवाग्रम्।

Exercise 1

1. Join the following words:—अत्र + आसीत्, श्री + ईशः, भानु + उदय., साधु + ऊचुः, कर्तृ + ऋजुः, उप + इन्द्रः, हित + उपदेशः, महा + ऋषिः, प्र + ऋच्छति, सा + एव, प्र + एजते, उप + एति, बिम्ब + ओष्ठ, मनस् + ईषा, इति + आह, कृष्ण + ऋणानाम्, विष्णो + ए, गो +

[illegible]

[illegible] अनुग्रह, मञ्जरी [illegible]

3. Correct [illegible]

व्यञ्जन सन्धि ।

(१) स्तो श्चुनाश्चुः—सकार या तवर्ग के साथ शकार या चवर्ग के योग होने से स् का श् और तवर्ग का चवर्ग हो जाता है (तवर्ग के परे चवर्ग या चवर्ग के परे तवर्ग रहने से अथवा चवर्ग के परे स् रहने से तवर्ग का चवर्ग हो जाता है, पर शकार के परे तवर्ग का चवर्ग नहीं होता) ।

१-त् और द् के स्थान में च् छ् परे रहने से च् और ज् भ् परे रहने से ज् होता है। यथा, महत् + चक्रम् = महच्चक्रम्, तद् + छविः = तच्छविः, उत् + ज्वलः = उज्ज्वलः तद् + झङ्कारः = तज्झङ्कारः।

२—ज या झ परे रहने से न् के स्थान ञ् होता है। यथा, महान् + जयः + महाञ्जयः, गच्छन् + झटिति = गच्छञ्झटिति।

३—पदान्त त् या द् के परे श् हो तो त् द् के स्थान में च् और श् के स्थान में छ् होता है। यथा, जगत् + शरण्यः = जगच्छरण्यः, तद् + शरीरम् तच्छरीरम्।

N. B. १. श् च युक्त हो तो ऐसा नहीं होता । यथा, उत्+श्च्योतति = उत्श्च्योतति ।

२ शश्छोऽटि—पदान्त त् या द् के परे श हो तो वैयाकरण लोग दोनों ही पद सिद्ध करते हैं। यथा, महत् + शकटम् = महच्छकटम्, महच्शकटम्, तद्+शरीरम्=तच्छरीरम्, तच् शरीरम्।

३ झयो होऽन्यतरस्याम्—पदान्त त् या द् के परे ह् हो तो त् के स्थान में द् और ह् के स्थान में ध् होता है। यथा, उत्+हतः= उद्धतः, विपद् + हेतुः = विपद्धेतुः। पर ऐसे स्थान में वैयाकरण लोग दो पद भी सिद्ध करते हैं। यथा, उत् + हरणम् = उद्धरणम्, उद्हरणम्, तद् + हेयम = तद्धेयम्, तद्हेयम् ।

सानुनासिक वर्ण को छोड़ कर वर्ग के किसी वर्ण से परे ह हो तो उस वर्ण के स्थान में निजवर्ग का तृतीय वर्ण और ह् के स्थान में विकल्प से उसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है। यथा, वाक् + हरिः = वाग्घरिः वाग् हरिः ।

४ पदान्त न् से परे श् हो तो न् का ञ् और श् का विकल्प से छ् होता है। यथा, महान् + शब्दः = महाञ्छब्दः महाञ् शब्दः ।

५ चवर्ग के परे न् हो तो न के स्थान में ञ् होता है। यथा, याच् + ना = याच्ञा, यज् + नः = यज्ञः ।

(२) ष्टुना ष्टुः—स् या तवर्ग के साथ ष् या टवर्ग का योग होने से स् के स्थान में ष् और तवर्ग के स्थान टवर्ग होता है।

१—त् और द् के स्थान में ट् ड् पर रहने से ट् तथा ड् ढ् परे रहने से ड् होता है। यथा, तद् + टीका = तट्टीका, एतद् + ठक्कुरः = एतट्ठक्कुरः, उत् + डीनः = उड्डीनः, एतद् + ढक्का = एतड्ढक्का ।

२—ड् या द् के परे रहने से न् के स्थान में ण् होता है।

यथा, महान् + डामरः = महाण्डामरः, भवान् + ढुण्ढति भवाण्ढुण्ढति।

३—ष् के परे त् के स्थान में ट् और थ् के स्थान में ठ् हो है। यथा, आकृष् + तः = आकृष्टः, षष् + थः = षष्ठः।

(३) तोर्लि—ल् परे रहने से त् द् (तवर्ग) के स्थान में और न् के स्थान में अनुस्वार सहित ल् होता है। यथ बृहत् + ललाटम् = बृहल्ललाटम्, पतद् + लीलोद्यानम् = पतल् लीलोद्यानम्, महान् + लाभः = महाँल्लाभः।

(४) ङमोह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्—यदि पदान्त न् के पूर्व ह्रस्व स्वर और परे कोई स्वर हो तो न् का द्वित्व हो जात है। यथा, धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः, हसन् + आगतः हसन्नागतः। दीर्घ स्वर के परे नहीं होता। यथा, महान् आग्रहः = महानाग्रहः।

(५) नश्छव्यप्रशान्— पदान्त न् के स्थान में च् छ् परे रह से अनुस्वार और श्, ट्, ठ् परे रहने से अनुस्वार और तथा त् थ् परे रहने से अनुस्वार और स् होते हैं। यथा, पश्यन् + चकितः = पश्यंश्चकितः, चलन् + टिट्टिभिः = चलं- ष्टिट्टिभिः, पतन् + तरुः = पतंस्तरुः।

(६) नश्चापदान्तस्य झलि—वर्गीय वर्ण परे रहने से पद के मध्य में रहने वाले न् और म् के स्थान में उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है और ऊष्मवर्ण रहने से अनुस्वार होता है। यथा, आशन् + का = आशंका, गम् + ता = गन्ता, दन् + शनम् = दंशनम्, रम् + स्यते = रंस्यते। पर सम् + राट् = सम्राट् होता है।

(७) मोऽनुस्वारः—अन्तःस्थ या ऊष्मवर्ण परे रहने से पदान्त म् का अनुस्वार तथा स्पर्शवर्ण परे रहने से अनुस्वार या म् के

तो वर्ग रहे उसी का पञ्चम वर्ण होता है। यथा, सत्वरम्
ावति = सत्वरं धावति, सत्वरन्धावति; सम् + शयः
शयः, धनम् + ददाति = धनं ददाति, धनन्ददाति।

(क) यदि म् के परे य् व् ल् हो तो म् का अनुस्वार सहित
ल् हो जाता है।

(८) छे च—ह्रस्व स्वर से परे छ् हो तो उसे च् सहित छ्
ाता है और दीर्घ स्वर से परे हो तो विकल्प से होता है;
ा या मा के परे अवश्य च्छ होता है। यथा, परि + छदः=
छदः, वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया, आ+छादयति=आच्छादयति,
छिद्रत् = माच्छिद्रत्, लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया,
छाया।

(९) उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य—उत् उपसर्ग के परे स्था और
धातु के स् का लोप होता है। यथा, उत् + स्थानम् =
ाम्, उत् + स्तम्भनम् = उत्तम्भनम्।

(१०) झलांजशोऽन्ते—स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय या चतुर्थ
र य् र् ल् व् ह् परे रहने से असानुनासिक वर्गीय वर्णों
ान में निज वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। यथा, दिक्
ः = दिगन्तः, वाक् + जालम् = वाग्जालम्, दिक् +
= दिग्हस्ती (१-३ का N. B ३ देखो), अच् + अन्तः =
, सम्राट् + आगतः = सम्राडागतः, जगत् + आदिः =
दिः, अप् + जम् = अब्जम्।

(११) खरि च—वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण या श् ष् स् परे
असानुनासिक वर्गीय वर्णों के स्थान में निज वर्ग का
ार्ण हो जाता है। यथा, ककुभ् + प्रान्तः = ककुप्प्रान्तः,
पतति = दृषत्पतति।

(१२) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा — न् या म् परे रहने से

पदान्त वर्गीय प्रथमवर्णों के स्थान में उस वर्ग का विकल्प से पञ्चम वर्ण हो जाता है। यथा, दिक् + नागः = दिङ्नागः, दिग्नागः; जगत् + नाथः = जगन्नाथः, जगद्नाथः; मधुलिट् + मत्तः = मधुलिण्मत्तः, मधुलिड्मत्तः, [illegible] + [illegible] = [illegible], [illegible], अप् + मानम् = अम्मानम्, अब्मानम्।

(ख) अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्—नाम (अकारान्त शब्द) नवति और नगरी परे रहने से ट का पञ्चम वर्ण होता है। यथा, षट् + नवति = षण्णवति।

(ग) प्रत्यये भाषायां नित्यम्—मात्र या मय के म् परे रहने से केवल पञ्चमवर्ण होता है। यथा, वाक् + मात्रम् = वाङ्मात्रम्, चित् + मयम् = चिन्मयम्।

(१३) अचो रहाभ्यां द्वे—र् या ह् के परे ऊष्मवर्णों को छोड़ अन्य व्यञ्जन वर्णों का विकल्प से द्वित्व होता है। यथा, कर्म, कर्म्म; सर्व्वम् सर्वम्। पर दर्शनम्, मर्षः। द्वित्व होने से प्रारम्भ वाले द्वितीय और चतुर्थवर्णों का क्रम से प्रथम और तृतीयवर्ण हो जाता है। यथा, मूर्द्धा, मूर्धा।

(१४) ङ्णोः कुक् टुक् शरि—श् ष् स् परे रहने से ङ् या ण् के परे विकल्प से यथाक्रम क् या ट् का आगम होता है। यथा, प्राङ् + षष्ठः = प्राङ्षष्ठः, प्राङ्क्षष्ठः, सुगण् + षष्ठः = सुगण्षष्ठः सुगण्ट्षष्ठः।

(१५) समः सुटि—कृ या कॄ धातु से बने हुए शब्द के परे रहने से सम् के म् का अनुस्वार और स् होता है। यथा, सम् + कृतः = संस्कृतः, सम् + कर्त्ता = संस्कर्त्ता।

(१६) पुमः खय्यम्परे—वर्ग के प्रथम और द्वितीय वर्ण के परे रहने से पुम् के म् का अनुस्वार और श् या स् होता है। यथा, पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः, पुम् + चकोरः = पुंश्चकोरः।

(१७) मनस् और काम शब्द परे रहने से तुम् प्रत्यय के म् का लोप होता है। यथा, गन्तुम् + मनाः = गन्तुमनाः, कर्त्तुम् + कामः = कर्त्तुकामः।

१८ ससजुषो रुः। खरवसानयोर्विसर्जनीयः— पद के अन्त में रहने से और क् ख् प् फ् श् ष् स् परे रहने से स् और र् के स्थान में विसर्ग होता है। यथा, प्रातर्-प्रातः, बहिस् बहिः।

Exercise—2

1. Join.— हरिः + शेते, तत् + टीका, एतद् + मुरारिः, वाक् + मयम्, उत् + स्थानम्, तद् + शिवः, गृहम् + गच्छति, उत् + स्थितिः, तद् + मात्रम्, जगत् + नाथः, विपत् + कालः, सम्यक् + वदति, लक्ष्मी + छाया, महान् + छेदः, हसन् + आगतः, उत्सृप् + सः।

2. Disjoin.— विपच्चयः, भवाञ्जीवतु, राज्ञी, भिषग्घृष्टः, विपद्धेतुः, महच्छकटम्, हसंश्चलति, स्मरन्नुवाच, सन्नीरम्, भवदुक्तम्, दिग्गजः।

3. Correct:— वाग्मयम्, विपद्काले, धैर्य्यमवलम्बस्व। अत्र सम्राडागतः। मेघः सूर्य्यमाच्छादयति। हसंश्चलति युवानौ। कवीनाहूय। व्यापारे महाल्लाभो भवति। तस्य वाकाडम्बरोऽयम्।

विसर्गसन्धि।

(१) स्तोः श्चुना श्चुः। ष्टुना ष्टुः। विसर्जनीयस्य सः:— विसर्ग के स्थान में च छ् परे रहने से श्, ट ठ् परे रहने से ष् और त् थ् परे रहने से स् होता है। यथा, पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः, तरोः + छाया = तरोश्छाया, भीतः + टलति = भीतष्टलति, नद्याः + तीरम् = नद्यास्तीरम्, क्षिप्तः + थुत्कारः = क्षिप्तस्थुत्कारः।

(२) वा शरि — श् ष् स् परे रहने से विसर्ग के स्थान में विकल्प से क्रमानुसार श् ष् स् होते हैं। यथा, सुप्तः + शिशुः =

सुप्तशिशुः, सुप्तः शिशुः; मत्तः + षट्पदः = मत्तष्षट्पदः, मत्तःषट्पदः; प्रथमः + सर्गः = प्रथमस्सर्गः, प्रथमः सर्गः ।

(३) ससजुषोरुः । अतोरोरप्लुतादप्लुते । हशि च— यदि विसर्ग के पहले अ और परे अ, वर्ग का तृतीय चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् हो तो अ और विसर्ग के स्थान में ओ हो जाता है। यथा, नरः + अयम् = नरोऽयम्, वेदः + अधीतः = वेदोऽधीतः, शोभनः + गन्धः = शोभनो गन्धः, नूतनः + घटः = नूतनो घटः, शान्तः + रोषः = शान्तो रोषः, हृतः + लोभः = हृतो लोभः, शीतः + वायुः = शीतो वायुः, रामः + हस्तः = रामो हस्तः ।

(४) भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि— १ यदि विसर्ग के पहले अ और परे अ को छोड़ कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप होता है। यथा, कुतः + आगतः = कुत आगतः, नरः + इव = नर इव, देवः + ऋषिः = देव ऋषिः । विसर्ग के स्थान में पक्षान्तर में य् भी होता है। यथा, कुतः + आयातः = कुतयायातः ।

विसर्ग र—जात (र से उत्पन्न) होने से न तो उसका लोप होता है और न पूर्वस्थित अ के साथ मिल कर ओ होता है । यथा, पुनः + अपि = पुनरपि, प्रातः + एव = प्रातरेव, अन्तः + धानम् = अन्तर्धानम्, स्वः + गतः = स्वर्गतः, दुहितः + याहि = दुहितर्याहि ।

पुनः, प्रातः, अन्तः, स्वः, प्रभृति पदों का या ऋकारान्त शब्दों के सम्बोधन एकवचन का विसर्ग र-जात विसर्ग है ।

२ विसर्ग के पहले आ और परे स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चमवर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् होवे तो विसर्ग का लोप होता है । यथा, अश्वाः + अमी = अश्वा अमी, हताः + गजाः = हता गजाः ।

ः + धावन्ति = अश्वा धावन्ति, उन्नताः + नगाः = उन्नता, नराः + लभन्ते = नरा लभन्ते, वाताः + वान्ति = वान्ति, बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति। स्वरवर्ण होने पर पक्षान्तर में विसर्ग के स्थान में य् होता है। यथा, + इमे = गजा इमे, गजायिमे।

N. B. विसर्ग के लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती।

(५) ससजुषो रुः—यदि विसर्ग के पहले अ आ को छोड़ कर कोई स्वर हो और विसर्ग के परे स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय या पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् होवे तो विसर्ग के में र् होता है। यथा, कविः + अयम् = कविरयम्, रविः + = रविरुदेति, निः + धनः = निर्धनः, वायुः + वाति = ति, शिशुः + हसति = शिशुर्हसति।

) ढ्रलोपे पूर्व्वस्य दीर्घोऽणः—र् परे रहने से विसर्ग के स्थान र् होता है उसका लोप होता है और पूर्व्व स्वर का दीर्घ है। यथा, पितः + रक्ष = पिता रक्ष, निः + रसः = :, निः + रोगः = नीरोगः, विधुः + राजते = विधू राजते।

) एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि—सः और एषः के परे छोड़ कर अन्य किसी वर्ण के रहने से विसर्ग का लोप है और लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती। यथा, सः+ = स आगतः, सः + गच्छति=स गच्छति, एषः+आयाति आयाति। 'क' प्रत्यय तथा नञ् युक्त होने से यह नियम गता। यथा, एषको रुद्रः, असः—असो याति।

) भो भगो अघो अपूर्व्वस्य योऽशि—स्वरवर्ण, वर्ग का चतुर्थ पञ्चम वर्ण या य् र् ल् व् ह् परे रहने से भोः के का लोप होता है। लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती। भोः + ईशान = भो ईशान, भोः + गदाधर=भो गदाधर।

[illegible], [illegible] + [illegible] = [illegible] [illegible] + [illegible] = [illegible], [illegible] ।

(३) [illegible] — यदि विसर्ग के पहले अ और परे अ, वर्ग का तृतीय चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा य र ल व ह हो तो अ और विसर्ग के स्थान में ओ हो जाता है। यथा, भटः + अयम = भटोऽयम, मेघः + गर्जति = मेघोगर्जति, मोहनः + गच्छः = मोहनो गच्छः, नृपः + गतः = नृपो गतः, बालकः + वेला = बालको वेला, नृपः + मोदः = नृपो मोदः, शीतः + वायुः = शीतो वायुः, रामः + हसति = रामो हसति ।

(४) भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि — यदि विसर्ग के पहले अ और परे अ को छोड़ कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप होता है। यथा, पुत्रः + आगतः = पुत्र आगतः, नरः + इव = नर इव, देवः + ऋषिः = देव ऋषिः। विसर्ग के स्थान में पक्षान्तर में य् भी होता है। यथा, पुत्रः + आयातः = पुत्रयायातः ।

विसर्ग र—जात (र से उत्पन्न) होने से र को उसका लोप होता है और र पूर्वस्थित अ के साथ मिल कर ओ होता है। यथा, पुनः + अपि = पुनरपि, प्रातः + एव = प्रातरेव, अन्तः + धानम् = अन्तर्धानम्, स्वः + गतः = स्वर्गतः, दुहितः + याहि = दुहितर्याहि ।

पुनः, प्रातः, अन्तः, स्वः, प्रभृति पदों का या ऋकारान्त शब्दों के सम्बोधन एकवचन का विसर्ग र-जात विसर्ग है।

२ विसर्ग के पहले आ और परे स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चमवर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् होवे तो विसर्ग का लोप होता है। यथा, अश्वाः + अमी = अश्वा अमी, हताः + गजाः = हता गजाः,

अश्वाः + धावन्ति = अश्वा धावन्ति, उन्नताः + नगाः = उन्नता नगाः, नराः + लभन्ते = नरा लभन्ते, वाताः + वान्ति = वाता वान्ति, बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति। स्वरवर्ण परे होने पर पक्षान्तर में विसर्ग के स्थान में य् होता है। यथा, गजाः + इमे = गजा इमे, गजायिमे।

N. B. विसर्ग के लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती।

(५) ससजुषो रुः—यदि विसर्ग के पहले अ आ को छोड़ कर दूसरा कोई स्वर हो और विसर्ग के परे स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् होवे तो विसर्ग के स्थान में र् होता है। यथा, कविः + अयम् = कविरयम्, रविः + उदेति = रविरुदेति, निः + धनः = निर्धनः, वायुः + वाति = वायुर्वाति, शिशुः + हसति = शिशुर्हसति।

(६) रूलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः—र् परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र् होता है उसका लोप होता है और पूर्व स्वर का दीर्घ होता है। यथा, पितः + रक्ष = पिता रक्ष, निः + रसः = नीरसः, निः + रोगः = नीरोगः, विधुः + राजते = विधू राजते।

(७) एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि—सः और एषः के परे अ को छोड़ कर अन्य किसी वर्ण के रहने से विसर्ग का लोप होता है और लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती। यथा, सः + आगतः = स आगतः, सः + गच्छति = स गच्छति, एषः + आयाति = एष आयाति। 'क' प्रत्यय तथा नञ् युक्त होने से यह नियम नहीं लगता। यथा, एषको रुद्रः, असः—असो याति।

(८) भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि—स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण या य् र् ल् व् ह् परे रहने से भोः के विसर्ग का लोप होता है। लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती। यथा, भोः + ईशान = भो ईशान, भोः + गदाधर = भो गदाधर।

स्वरवर्ण परे रहने से पक्षान्तर में विसर्ग का य् होता है। यथा, भोयीशान।

(९) सोऽपदादौ—क् ख् प् फ् परे रहने से निः, आविः, बहिः दुः, प्रादुः और चतुः के विसर्ग का ष् होता है। यथा, निः + कामः=निष्कामः, निः + खेदः = निष्खेदः, निः + पापः=निष्पापः, निः + फलः = निष्फलः, आविः + कृतम् = आविष्कृतम्, बहिः + कृतम् = बहिष्कृतम्, दुः + करम् = दुष्करम्, प्रादुः + कृतम् = प्रादुष्कृतम्, चतुः + कोणम् = चतुष्कोणम्।

(१०) इसुसोः सामर्थ्ये—क् ख् प् फ् परे रहने से हविः, सर्पिः, बहिः, अर्चिः, रोचिः, शोचिः, आयुः, धनुः, चक्षुः, वपुः और यजुः इत्यादि के विसर्ग का विकल्प से ष् होता है। यथा, हविः+पतति = हविष्पतति, हविः पतति; सर्पिः + पिबति = सर्पिष्पिबति सर्पिः पिबति। पर भ्रातुः + पुत्रः का भ्रातुष्पुत्रः होता है।

(११) ह्रस्वात्तादौ तद्धिते—तकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहने से ह्रस्व इ या उ के परस्थित विसर्ग का ष् होता है। यथा, अर्चिः + त्वम् = अर्चिष्ट्वम्, चतुः + तयम् = चतुष्टयम्।

(१२) नमस्पुरसोर्गत्योः—कृ धातु परे रहने से नमः, पुरः और तिरः के विसर्ग का स् होता है। यथा, नमः + कारः=नमस्कारः, पुरः + कारः = पुरस्कारः, तिरः + कारः = तिरस्कारः।

(१३) अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य—कर, कार, कांत, काम, कुम्भ और पात्र शब्द परे रहने [illegible] अकार के परस्थित विसर्ग का स् होता है। यथा, श्रेयः + करः = श्रेयस्करः, पुरः + कारः = पुरस्कारः, अयः + कांतः = अयस्कांतः, मनः + कामः = मनस्कामः, अयः + कुम्भः = अयस्कुम्भः, पयः पात्रम् = पयस्पात्रम्।

(१४) तमः + काण्डः, मेदः + पिण्डः, भाः + करः, अह-

+ करः, धान्वः + पतिः, दिवः + पतिः, अधः + कीलः इत्यादि में विसर्ग का स् होता है। यथा, तमस्काण्डः, भेदस्काण्डः, भास्करः, अहस्करः, वाचस्पतिः इत्यादि।

(१५) स्थ परे रहने से विकल्प से विसर्ग का लोप होता है। यथा, मनः + स्थः = मनस्थः, मनःस्थः, दुः + स्थः = दुस्थः, दुःस्थः।

(१६) अधः शिरसी पदे—पद शब्द परे रहने से अधः और शिरः के विसर्ग का स् होता है। यथा, अधस्पदम्, शिरस्पदम्।

अतिरिक्त—विद्वस् + जनः = विद्वज्जनः, पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः, पुम् + चकोरः = पुंश्चकोरः, भुवः + लोकः = भुवर्लोकः, अहन् + अहः = अहरहः।

Exercise—3.

1. Join the following words with rules—वायुः + वहति, हन्तः + सद्, धनुः + टङ्कारः, वामः + हस्तः, प्रथमः + सर्गः, पुत्रः + रोदिति, पितः + रक्ष, निः + रोगः, गतिः + इयम्, कः + पुत्रः, नराः + एते, चन्द्रः + उदेति, स्वः + गतः, भोः + माधव, शिरः + कारः, हविः + पानम्, सम् + कारः।

2 Disjoin the following:—नद्यासीरम्, ब्राह्मणोऽयम्, देव ऋषिः, नरा नमन्ते, मातर्देहि, वायुर्वाति, शिरस्पदम्, चतुष्पथम्, धनुष्करोति, भो जनमेजय, एष बालकः, गौरसः।

3. Correct:—पूर्णो चन्द्रो उदेति। भ्रमरा षट्पदाः भवन्ति। राम भयं धावति। देवा स्वो गच्छति। दशरथोवाच। तस्या पुत्रा पठन्ति। शिरोभोऽयं बालकः। पितो रक्ष माम्। पुत्रो नदति। भो पुत्र कुत्र गच्छसि। स नगरात् बहिस्कृतः। भ्रातुस्पुत्र हि मम। अतिथिर्ग्रामं गच्छति।

णत्वविधान—Change of न् into ण्।

(१) रषाभ्यां नो णः समानपदे—एक ही शब्द [illegible] ऋ ॠ र् या ष् के परे न् आवे तो न् का ण् होता है। यथा, नृणाम्,

स्वरवर्ण परे रहने से पदान्तस्थ विसर्ग का र् होता है। यथा, गौर्यान।

(९) सोऽपदादौ—क् ख् प् फ् परे रहने से निः, आविः, बहि-दुः, प्रादुः और चतुः के विसर्ग का ष् होता है। यथा, निः + कामः=निष्कामः, निः + भेदः = निर्भेदः, निः + पापः=निष्पापः, निः + फलः = निष्फलः, आविः + कृतम् = आविष्कृतम्, बहिः + कृतम् = बहिष्कृतम्, दुः + करम् = दुष्करम्, प्रादुः + कृतम् = प्रादुष्कृतम्, चतुः + कोणम् = चतुष्कोणम्।

(१०) इसुसोः सामर्थ्ये—क् ख् प् फ् परे रहने से हविः, सर्पिः, बहिः, अर्चिषः, रोचिः, शोचिः, आयुः, धनुः, वपुः, यजुः और चक्षुः इत्यादि के विसर्ग का विकल्प से ष् होता है। यथा, हविः+पतति = हविष्पतति, हविः पतति; सर्पिः + पिबति = सर्पिष्पिबति सर्पिः पिबति। पर भ्रातुः + पुत्रः का भ्रातुष्पुत्रः होता है।

(११) इदुपधस्य चाप्रत्ययस्य—तकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहने से ह्रस्व इ या उ के परस्थित विसर्ग का ष् होता है। यथा, सर्पिः + त्वम् = सर्पिष्ट्वम्, धनुः + तयम् = धनुष्टयम्।

(१२) नमस्पुरसोर्गत्योः—कृ धातु परे रहने से नमः, पुरः और तिरः के विसर्ग का स् होता है। यथा, नमः + कारः=नमस्कारः, पुरः + कारः = पुरस्कारः, तिरः + कारः = तिरस्कारः।

(१३) अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य—कर, कार, कांत, काम, कुम्भ और पात्र शब्द परे रहने से अकार के परस्थित विसर्ग का स् होता है। यथा, श्रेयः + करः = श्रेयस्करः, पुरः + कारः = पुरस्कारः, अयः + कांतः = अयस्कांतः, मनः + कामः = मनस्कामः, अयः + कुम्भः = अयस्कुम्भः, पयः पात्रम् = पयस्पात्रम्।

(१४) तमः + काण्डः, मेदः + पिण्डः, भाः + करः, अह-

+ करः, वाचः + पतिः, दिवः + पतिः, अयः + कीलः इत्यादि में विसर्ग का स् होता है । यथा, तमस्काण्डः, मेदस्काण्डः, भास्करः, अहस्करः, वाचस्पतिः इत्यादि ।

(१५) स्थ परे रहने से विकल्प से विसर्ग का लोप होता है । यथा, मनः + स्थ = मनस्थः, मनःस्थः, दुः + स्थः = दुस्थः, दुःस्थः ।

(१६) अधः शिरसी पदे—पद शब्द परे रहने से अधः और शिरः के विसर्ग का स् होता है । यथा, अधस्पदम्, शिरस्पदम् ।

अतिरिक्त—विद्वस् + जनः = विद्वज्जनः, पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः, पुम् + चकोरः = पुंश्चकोरः, भुवः + लोकः = भुवर्लोकः, अहन् + अहः = अहरहः ।

Exercise—3

1. Join the following words with rules—वायुः + चलति, इन्द्रतः + ततः, धनुः + टङ्कारः, रामः + इतः, प्रथमः + सर्गः, पुत्रः + रोदिति, पितः + रक्ष, भिः + रोगः, गतिः + इयम्, कः + पुत्रः, नराः + एते, चन्द्रः + उदेति, स्वः + गतः, श्रीः + माधव, शिरः + कारः, हविः + पानम्, सम् + कारः ।

2. Disjoin the following:—अधास्तीरम्, ब्राह्मणोऽयम्, देव ऋषिः, नरा लभन्ते, मातर्देहि, वायुर्वाति, शिरस्पदम्, चतुष्टयम्, धनुष्करोति, भो जनमेजय, एष बालकः, धीरः ।

3. Correct:—पूर्णो चन्द्रो उदेति । भ्रमरा षट्पदाः भवन्ति । राम भयं धावति । देवा स्वो गच्छति । दशरथोवाच । तस्या पुत्रा पठन्ति । विरोगोऽयं बालकः । पितो रक्ष माम् । एषो वदति । भो पुत्र कुत्र गच्छसि । स नगरात् बहिस्कृतः । भ्रातुश्पुत्र हि मम । यतिर्पन्थानं गच्छति ।

णत्वविधान — Change of न् into ण् ।

(१) रषाभ्यां नो णः समानपदे—एक ही शब्द में ऋ ॠ र् या ष् के परे न् आवे तो न् का ण् होता है । यथा, नृणाम्,

तिसृणाम्, भ्रातॄणाम्, चतुर्णाम्, कृष्णः ।

(१) अट्कुप्वाङ् नुम्व्यवायेऽपि—यदि ऋ ॠ र् या ष और न् के बीच में स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, य् र् व् ह् और अनुस्वार (इनमें से एक या अनेक) हों तो भी न् का ण् हो जाता है । यथा, करणम्, हरीणाम्, गुरुणा, मृगेण, वृक्षेण, बृंहणम् ।

N. B. इनके अतिरिक्त अन्य कोई वर्ण बीच में आवे तो ण् नहीं होता । यथा, अर्च्चना, मूर्च्छना, अर्ज्जनम्, किरीटेन, मृडेन, रुद्रेन, आर्त्तेन, विमर्द्दन, अर्द्धेन, विरलेन, स्पर्शेन, रसेन ।

(२) पदान्तस्य न— पदान्त न् का ण् नहीं होता । यथा, नरान्, हरीन्, गुरून्, भ्रातॄन् ।

N. B. न्-भिन्न तवर्गयुक्त तथा ष् और म् युक्त न् का ण् नहीं होता । यथा, कृन्तति, ग्रन्थनम्, वृन्दः, रन्धनम्, तृप्नोति, क्षुभ्नाति ।

२ यदि एक पद में ऋ ॠ र् या ष् हो और दूसरे पद में न् हो तो ण् नहीं होता । यथा, मृयानम्, गिरिगहनम्, शरासिः, रघुनन्दनः, गिरिनन्दनी, त्रिनेत्रः, वृषवाहनः, सर्व्वनाम ।

३ शेषे विभाषा कवादावषान्त उपदेशे—यदि अन्य पदस्थित न् विभक्ति के स्थान में हो या विभक्ति युक्त हो अथवा स्त्रीलिङ्ग के ई प्रत्यय से युक्त हो तो विकल्प से ण् होता है । यथा, विभक्ति-स्थान-में प्रमायेण, प्रमायेन; परिमयेण, परिमयेन; भस्मर्माणिण, भस्मर्माणिन; विभक्तियुक्त-विषपायिणा, विषपायिना । ई-प्रत्ययुक्त-विषपायिणी, विषपायिनी ।

४. नशम् के न् का ण् नहीं होता । यथा, मृदुशानी, क्षत्रियशूना ।

भगिनी, कामिनी, भामिनी, यामिनी, यूनी इत्यादि के न् का ण् नहीं होता है। यथा, पितृभगिनी, हरिकामिनी, घोरयामिनी।

४ एकाजुत्तरपदे णः, कुमति च— यदि पर पद एक स्वर वाला या कवर्ग युक्त हो तो न् का नित्य ण् होता है। यथा, प्रभुणा, वृत्रहणः। कवर्ग युक्त— श्रीकामेण, दुर्गमेण, परिपाकेण; पर पक्व शब्द का नहीं होता। यथा, परिपक्वेन, परिपक्वानि, परिपक्वानाम्।

५ विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः— औषधिवाचक (पका हुआ शस्य) और वृक्षवाचक शब्दों के परे वन के न का विकल्प से ण होता है। यथा, औषधिवाचक— व्रीहिवणम्, व्रीहिवनम्; दूर्वावणम्, दूर्वावनम्; नीवारवनम्, नीवारवणम्; आर्द्रकवणम्, आर्द्रकवनम्। वृक्षवाचक— लोध्रवणम्, लोध्रवनम्; बदरीवणम्, बदरीवनम्; शिरीषवणम्, शिरीषवनम्; जम्बीरवणम्, जम्बीरवनम्।

दो या तीन स्वर का शब्द नहीं होने से ऐसा नहीं होता। यथा, देवदारुवनम्, उदुम्बरवनम्, नागरङ्गवनम्, नारिकेलवनम्, बोधिद्रुमवनम्, कोविदारवनम्, राजवृक्षवनम्, सहकारवनम्, कुरवकवनम्, कर्णिकारवनम्, सिन्धुवारवनम्, नागकेशरवनम्।

प्रनिरन्तः शरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्योऽसंज्ञायाम्— शर, इक्षु, प्लक्ष, आम्र, खदिर, इन कई शब्दों के परे वन के न का नित्य ण होता है। यथा, शरवणम्, प्लक्षवणम्, आम्रवणम्, इक्षुवणम्, खदिरवणम्।

प्र, निर्, अन्तर्, अग्रे इत्यादि कई शब्दों के परे वन के न का ण होता है। यथा; प्रवणम्, निर्वणम्, अन्तर्वणम्, अग्रेवणम्।

६ वा भावकरणयोः—दूसरे पद में रहने वाले र् के परे पान

शब्द के न का विकल्प से ण होता है। यथा, हरिपानम्, हरि-पाणम्, गिरिपाणम्, गिरिपानम्।

७ त्रिचतुर्भ्यां हायनस्य णत्वं वयसि—वयस् अर्थ होने से त्रि और चतुर् शब्दों के परे हायन के न का ण होता है। यथा, त्रिहायणो वत्सः, चतुर्हायणो गौः।

८ अह्नोऽदन्तात्—प्र, पूर्व, अपर इत्यादि शब्दों के परे अह्न के न का ण होता है। यथा, प्राह्ण, पूर्वाह्णः, अपराह्णः।

९ अयनम्—पर, पार, उत्तर, चान्द्र और नार शब्दों के परे अयन के न का ण होता है। यथा, परायणम्, पारायणम्, उत्तरायणम्, चान्द्रायणम्, नारायणः।

१० अग्रग्रामाभ्यां नयतेः—अग्र और ग्राम शब्दों के परे नी के न् का ण् होता है। यथा अग्रणीः, ग्रामणीः।

११ पूर्वपदात् संज्ञायामगः। उपसर्गात् बहुलम्—संज्ञा बोध होने से शूर्प के परे नख तथा प्र, दुर्, खर और वार्ध्री के परे नस के न का ण होता है। यथा, शूर्पणखा, प्रणसः, दुर्णस, वार्ध्रीणसः।

१२ गिरिनद्यादीनां वा—गिरि नदी इत्यादि के न् का विकल्प से ण होता है। यथा, गिरिणदी, गिरिनदी, स्वर्णदी, स्वर्नदी; गिरिणितम्बः, गिरिनितम्बः। वैसे ही गिरिनख, गिरिनद, चक्रनदी, चक्रनितम्ब, तूर्य्यमान, माषोन, आर्गयन में भी होता है।

१३ पात् पदान्तात्—पूर्व्व पद के अन्त में ष् होने से उत्तर पद के न् का ण् नहीं होता। यथा, हविष्पानम्, आयुष्कामेन, सर्पिष्पायिना।

१४ उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य—प्र, परा, परि, निर्, इन चार उपसर्गों के परे यदि नद्, नम्, नश्, नह, नी, नु, नुद, अन्, धातु हों तो न् का ण् होता है। यथा, प्रणदति, प्रणमति,

प्रणामः; परिणमति, परिणामः, प्रणश्यति, प्रणाशः (नश् के श् का ष् हो तो ण् नहीं होता। यथा, प्रनष्टः, परिनष्टः, निर्नष्टः, अन्तर्नष्टः), परिणाहः। प्रणयति, प्रणयः, परिणयः, निर्णयः। प्रणदः। प्रणोदः। प्राणिति, प्राणः। प्रहण्यते, प्रहणनम् (हन् के ह् का घ् होने से ण् नहीं होता। यथा, प्रघ्नन्ति, परिघ्नन्ति, प्राघानि, प्रघ्यांघानि, शत्रुघ्नः)।

वमोर्वा—यदि हन् धातु का न् म् और व् युक्त हो तो विकल्प से ण् होता है। यथा, प्रहण्मि, प्रहन्मि, प्रहण्वः, प्रहन्वः।

१५ शनिसनिक्षनिन्दाम्—निंस्, निक्ष्, निन्दु इन तीन धातुओं के न् का ण् विकल्प से होता है। यथा, प्रणिंसितव्यम्, प्रनिंसितव्यम्। प्रणिक्षणम्, प्रनिक्षणम्। प्रणिन्दति, प्रनिन्दति।

१६ हिनुमीना—हिनु और मीना के न् का ण् होता है। यथा, प्रहिणोति, प्रहिणुतः, प्रहिण्वन्ति। प्रमीणाति, प्रमीणीतः, प्रमीणन्ति।

१७ आनि लोट्—लोट् की आनि विभक्ति के न् का ण् होता है। यथा, प्रवपाणि, परिभवाणि, प्रवहाणि।

१८ नेर्गदनदपतपदघुमास्यति हन्ति याति वाति द्राति प्साति वपति वहति शाम्यति चिनोति देग्धिषु—गदु नद् पत् दा धा हन् वद् पद् दाम दो दे सो धे मा या द्रा प्सा वप शम् वह चि दिह् धातुओं की पूर्ववर्त्ती नि उपसर्ग के न् का ण् होता है। यथा, प्रणिगदति, प्रणिपतति, प्रणिपातः, प्रणिधानम्, प्रणिहन्ति इत्यादि।

१९ कृत्यचः—धातु के पहले प्र परा परि निर् ये चार उपसर्ग या अन्तर् शब्द हो तो कृत् प्रत्यय के न् का ण् होता है। यथा, प्रयाणम्, प्रहाणम्, प्रवहमाणः, प्रमाणम्, परिमाणम्।

हलश्चेजुपधात्—जिन धातुओं के पहले व्यञ्जनवर्ण हो और अन्त्यवर्ण के पहले अ आ भिन्न स्वर हो उन के परे कृत् प्रत्यय

के न् का विकल्प से ण् होता है । यथा, प्रकोपणम्, प्रकोपनम्; परिगोपणम्, परिगोपनम् ।

ण्यन्तेविभाषा—ण्यन्त धातु के परे कृत् प्रत्यय के न् का विकल्प से ण् होता है । यथा, यापि—प्रयापणम्, प्रयापनम्, प्रयापणीयम्, प्रयापनीयम् । वाहि—प्रवाहणम्, प्रवाहनम् ।

न भाभूपूकमिगमिप्यायिवेपाम्—भा, भू, पू, कम्, गम्, प्याय्, वेप्, कम्प्, इन धातुओं के ण्यन्त होने पर भी इनके परे कृत् प्रत्यय के न् का ण् नहीं होता । यथा, परिभानीयम्, परिभापनीयम्, परिभवनीयम्, परिभावनीयम् ।

कृत् प्रत्यय का न् व्यञ्जनवर्ण से युक्त हो तो ण् नहीं होता । यथा, प्रमग्नः, प्रभग्नः, परिमग्नः ।

२० निम्नलिखित शब्दों का ण् स्वाभाविक है:—
वाणी-तूणीर-वेणी-फणिमणि-लवणं कोण-कल्याण-बाणा-
गोणी-घोणी कणाणुघ्रेण-विपणि-पणो स्थाणु-पुण्यं विषाणम् ।
माणिक्यं शोणशाणौ गुण-गण गणिका-वेणु-सिंहाण-वीणा-
निर्व्वाणो निक्वणेण-क्वण-किण वणिजः कङ्कणं पाणितूणौ
पिण्याकमपि चाणक्यमित्याद्याः स्युः स्वभावतः ।

षत्वविधान Change of स् into ष् ।

(१) इणः कोः— अ आ भिन्न स्वर, क् या र् के परे प्रत्यय के स् का ष् हो जाता है । यथा, मुनिषु, नदीषु, नरेषु, दिक्षु, धनुःषु ।

N. B. सात् प्रत्यय के स् का ष् नहीं होता । यथा, अग्निसात्, धातुसात्, प्राणसात् ।

२ नुम् विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि— अनुस्वार विसर्ग तथा श्,

ष् स् का व्यवधान होने पर भी ष् होता है। यथा, हवींषि, आशीःषु।

क्लीवलिंग की प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन से भिन्न अनुस्वार का व्यवधान हो तो ष् नहीं होता। यथा, पुम्सु, पुंसु।

(२) सञ्ज्, सद्, सह्, साध्, सिच्, सिध्, सु, सू, सेव्, सो, स्तम्भ्, स्तु, स्तुभ्, स्त्यै, स्था, स्ना, स्निह्, स्नु, स्मि, स्वञ्ज्, स्वद्, स्वप्, स्विद्, इत्यादि धातुओं के अभ्यस्त करने पर यदि धातु का द्वितीय भाग स् इ, उ, ए, के परे हो तो ष् होता है। यथा, सिध्-सिषेध, सिषिधतुः, सिषिधुः। सु-सुषाव, सुषुवतुः, सुषुवुः। सू-सुषुवे, सुषुवाते, सुषुविरे। सेव्-सिषेवे, सिषेवाते, सिषेविरे। स्तु-तुष्टाव, तुष्टुवतुः, तुष्टुवुः। स्निह्-सिष्णेह, सिष्णिहतुः, सिष्णिहुः। स्मि-सिष्मिये, सिष्मियाते, सिष्मियिरे। स्वप्-सुष्वाप, सुषुपतुः, सुषुपुः। स्तुभ्-तुष्टुभे, तुष्टुभाते, तुष्टुभिरे। सो- सेषीयते। सेव्-सेषेव्यते। सू-सोषूयते। स्नु-सोष्णूयते।

N. B. (१) यङ् प्रत्यय होने से सिच् के स् का ष् नहीं होता। यथा, सेसिच्यते।

(२) धातु के परे सन् प्रत्यय का ष् हो तो धातु के स् का ष् नहीं होता। यथा, सिच् — सिसीक्षति, सू — सुसूषति, सेव्-सिसेविषते; स्मि-सिस्मयिषते, स्तम्भ्-तिस्तम्भिषति, स्तुभ्-तुस्तोभिषते, स्नु-सुस्नूषति।

केवल स्तु धातु का ष् होता है। यथा, तुष्टूषति।

सन् प्रत्यय का स् रहे तो धातु के स् का ष् होता है। यथा, स्था-तिष्ठासति, स्वप्-सुषुप्सति, सो-सिषासति, स्ना-सिष्णासति।

णयन्त धातुओं में केवल स्विद्, स्वद् और सह् का ष् नहीं होता। यथा, स्विद्-सिस्वेदयिषति, स्वद् सिस्वादयिषति, सह्-

सिस्वादयिषति। इसके अतिरिक्त अन्य धातुओं में ष् होता है। यथा, स्वप्-सुष्वापयिषति, सिच् सिषेचयिषति, सिव् सिषेवयिषति, स्तु-तुष्टावयिषति, सञ्ज्-सिषञ्जयिषति।

(३) उपसर्गात् सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम्—इकारान्त (नि, वि, परि, प्रति, अति, अधि, अभि,) और उकारान्त (सु, अनु,) उपसर्गों के परे सु, सू, सो, स्तु, स्तुभ्, स्था, सेनि, सिध्, सिच्, सञ्ज्, स्वञ्ज् सद् और स्तम्भ धातुओं के स् का ष् होता है। यथा, सु-अभिषुणोति, अनुषुणोति (लृट् और लृङ् विभक्ति तथा स्यन् प्रत्यय परे रहने से ष् नहीं होता। यथा, लृट्-अभिसोष्यति, लृङ्-अभ्यसोष्यत्, स्यन्-अभिसोष्यन्)। सू (तुदादि गणीय)-अभिषुवति, अनुषुवति। सो-अभिष्यति। स्तु-अभिष्टौति, स्तुभ्-अभिष्टोभते, अनुष्टोभते। स्था-अधिष्ठास्यति, अनुष्ठास्यति, सेनि-अभिषेणयति। सिध्-प्रतिषेधति, अनुषेधति, (गमनार्थ सिध् धातु का ष् नहीं होता। यथा, गृहं प्रतिसेधति, परिसेधति, अभिसेधति)। सिच्-निषिञ्चति। सञ्ज्-निषजति, अनुषजति। स्वञ्ज्-परिष्वजते। सद्-विषीदति, अनुषीदति (प्रति पहले हो तो नहीं होता। यथा, प्रतिसीदति)। स्तम्भ्-अभिष्टभ्नोति, अनुष्टभ्नोति (आलम्बन और सामीप्य अर्थ में अव पहले होने से भी ष् होता है। यथा, यष्टिमवष्टभ्य आस्ते यष्टिमालम्ब्य तिष्ठतीत्यर्थः। अवष्टब्धा गौः गौः समीपे वर्त्तते इत्यर्थः।

अट् का व्यवधान होने पर भी ष् होता है। यथा, अभ्यषुणोत्, अभ्यषेणयत्, न्यषिञ्चत्, अन्वषजत्, व्यषीदत्। परन्तु परि और नि पूर्वक स्तु और स्वञ्ज् धातुओं में विकल्प से ष् होता है। यथा, पर्य्यष्टावीत्, पर्य्यस्तावीत्; पर्य्यष्वजत, पर्य्यस्वजत।

(४) परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम्—परि, नि,

षि पूर्वक सेध्, सिध्, सह् धातु के स् का ष् होता है । यथा, सेध्
परिषेधते, निषेधते, विषेधते; सिध्-परिषीष्यति, निषीष्यति
सह्-परिषहते, निषहते, विषहते (सह् का सोढ होने पर ष् न
होता । यथा, परिसोढा, निसोढुम्, विसोढः)।

अट् के व्यवधान होने पर भी सेध् का नित्य और सि
तथा सह् का विकल्प से होता है। यथा, सेध्-पर्य्यषेधत
सिध्-पर्य्यषीष्यत्, पर्य्यसीष्यत् । सह्-न्यषहत, न्यसहत ।

णयन्त करने पर लुङ् में सिध् और सह् के स् का ष् न
होता । यथा, सिध्-पर्य्यसीसिधत्, सह्-पर्य्यसीसहत् ।

(५) स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य:—इकारान्त और उकारा
उपसर्गों के परे सेनि, सिध्, सिच्, सञ्ज्, स्वञ्ज् और ह
धातुओं के अभ्यस्त होने पर दोनों स् का ष् होता है। य
सेनि-अभिषिषेणयिषति । सिध्-निषिषेध, प्रतिषिषेधयिष
अभिषेषिध्यते । सिच्-अभिषिषेच, अभिषिषेचयिषति (
होने से नहीं होता । यथा, अभिसेसिच्यते) । सञ्ज्-अनुषष
प्रतिषिषञ्जयिषति, स्वञ्ज्-परिषिष्वञ्जयिषति;सद्-निषिषादयिष
विषाषद्यते (लिट् में स्वञ्ज् और सद् के द्वितीय स् का ष्
होता । यथा, स्वञ्ज्-परिषस्वजे, विषस्वजे । सद्-निषसा
विषसाद) । सेच्-परिषिषेचे, अभिषिषेच्यते ।

(६) स्तन्भेः—इकारान्त और उकारान्त उपसर्गों के
अभ्यस्त स्था और स्तम्भ् धातुओं का त् के व्यवधान होने
भी ष् होता है। यथा, स्था-अनुतष्ठौ, अधितष्ठौ, अभितष्ठ
स्तम्भ्-अनुतष्टम्भ, अधितष्टम्भ, अभितष्टम्भ ।

प्रतिस्तब्ध और निस्तब्ध में ष् नहीं होता । पर्य्यस्त करने
लुङ् में स्तम्भ् का ष् नहीं होता । यथा, पर्य्यतस्तम्भत् ।

(७) परि पूर्वक स्कु धातु के स् का ष् होता है। य

परिष्करोति, परिष्कारः। अट् के व्यवधान होने पर विकल्प से ष् होता है। यथा, पर्यष्करोत्, पर्यस्करोत्; पर्यष्कार्षीत्, पर्यस्कार्षीत्।

(८) अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु—अनु, वि, परि, अभि, नि पूर्वक स्यन्दु धातु के स् का विकल्प से ष् होता है। यथा, अनुष्यन्दते, अनुस्यन्दते; विष्यन्दते, विस्यन्दते; परिष्यन्दते, परिस्यन्दते; अभिष्यन्दते, अभिस्यन्दते; निष्यन्दते, निस्यन्दते।

प्राणी कर्ता हो तो ऐसा नहीं होता। यथा, अनुस्यन्दते मत्स्यः।

(९) परेश्च—परि पूर्वक स्कन्दु धातु के स् का विकल्प से ष् होता है। यथा, परिष्कन्दति, परिस्कन्दति; परिष्कण्णः, परिस्कन्नः।

वेः स्कन्देरनिष्ठायाम्—निष्ठा-भिन्न कृत् प्रत्यय परे रहने से वि पूर्वक स्कन्दु धातु के स् का विकल्प से ष् होता है। यथा, विष्कन्ता, विस्कन्ता; विष्कन्तुम्, विस्कन्तुम्। निष्ठा प्रत्यय होने से नहीं होता। यथा, विस्कन्नः, विस्कन्नवान्।

(१०) स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः—निर्, नि, वि पूर्वक स्फुर् और स्फुल् धातु के स् का विकल्प से ष् होता है। यथा, स्फुर्-निष्फुरति, निस्फुरति; विष्फुरति, विस्फुरति। स्फुल्-निष्फुलति, निस्फुलति; विष्फुलति, विस्फुलति।

(११) वेः स्कभ्नातेर्नित्यम्—वि पूर्वक स्कम्भ् धातु के स् का ष् होता है। यथा, विष्कभ्नाति, विष्कम्भितुम्, विष्कम्भः, विष्कम्भकः।

सुविनिर्दुर्भ्यः सुपि सूति समाः—सु, वि, निर्, दुर् के सुप् हो तो स् का ष् हो जाता है। यथा, सुषुप्तः, :, निःषुप्तः, दुःषुप्तः, दुःषुषुप्तुः, दुःषुषुपुः।

(१३) उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच् परः— इकारान्त और उकारान्त उपसर्ग तथा प्रादुः शब्द के परे अस् धातु के स् का ष् होता है। यथा, निषन्ति, प्रतिषन्ति, अधिषन्ति, परिष्यात्, अनुषन्ति, प्रादुःषन्ति, प्रादुःष्यात्। पर त थ म या य के साथ मिले हुए स् का ष् नहीं होता। यथा, अधिस्तः, अनुस्तः, प्रादुःस्तः, प्रतिस्थः, अभिस्थः, अधिस्मः, अनुस्मः, प्रादुःस्मः, अनुस्यः, प्रादुःस्यः।

(१४) शासिवसिघसीनाञ्च—उस् प्रत्यय परे रहने से वस् धातु के स् का ष् होता है। यथा, उषितः, उषितवान्, ऊषतुः, ऊषुः।

(१५) घस् धातु के घ का क् हुआ हो तो स् का ष् होता है। यथा, जक्षतुः, जक्षुः।

(१६) सहेः साडःसः—सह् धातु से बने साह् शब्द का साड् और साड् हुआ हो तो स् का ष् होता है। यथा, तुराषाड्, तुराषाड्सु, तुराषाड्भ्यः। साह् रहने से नहीं होता। यथा, तुरासाहौ, तुरासाहः, तुरासाहम्।

(१७) समासेऽङ्गुलेः सङ्गः—समास होने पर अंगुलि शब्द के परे सङ्ग के स् का ष् होता है। अंगुलिषङ्गः।

(१८) सु, वि, निर्, दुर् उपसर्ग के परे सम शब्द के स् का ष् होता है। यथा, सुषमः, विषमः, दुःषमः।

(१९) पतिर्संज्ञायामगात्—नाम समझे जाने से अ आ भिन्न स्वर [illegible] परे सेना शब्द के स् का ष् होता है। यथा, सुषेणः, हरिषेणः, मधुषेणः। नाम न समझा जाय तो नहीं होता, यथा, कुरुसेना, पटुसेना, कपिसेना।

(२०) भूमि और दिवि शब्दों के परे स्थ हो तो स् का ष् होता है। यथा, भूमिष्ठः, दिविष्ठः।

(२१) गवियुधिभ्यां स्थिरः—युधि के परे स्थिर के स् का

ष् होता है। यथा, युधिष्ठिरः ।

(२२) मातृपितृभ्यां स्वसा—समास होने पर मातृ और पितृ शब्दों के बाद स्वसृ के स्थान में स्वसृ का ष् हो जाता है। यथा, मातृष्वसा पितृष्वसा । विसर्ग रहने से विकल्प से होता है। यथा, मातुःष्वसा, मातुःस्वसा, पितुःष्वसा, पितुःस्वसा । समास नहीं होने पर नहीं होता। यथा, मातुः स्वसा, पितुः स्वसा।

(२३) निम्न लिखित शब्दों में ष् स्वाभाविक है,—

आषाढ़, इषु, ईषत्, उत्कर्ष, औषध, कोष, घोष, ईष पुरुष, भीष्म, महिष, मेष, मूषिक, शुष्क, वर्ष, ऊष्मन्, शेष, षोडश पुरुष, विषय, षट्, हर्ष, पाषाण, कष्ट, भाष्य इत्यादि।

Exercise 4

1. When is स् changed to ष् and न् to ण् ?

2. Correct or justify the following words:—

कृष्णेन, अनुष्ठानम्, पुष्टेन, दोषेन, अर्पणा, सम्मर्दनाम्, भीष्म, अभि सेकः, कृशानः, नराण्, मूर्खेन, माधुरा, अहेन, किरीटेन, शुष्काणि, विर प्रभावेन, पितृभगिनी, परिपाकेन, देवरामचनम्, अन्वर्थनम्, पूर्वाह्न चान्द्रायणम्, शूर्पणखा, हविष्पानम्, प्रवाहः, प्राह्णोत्, प्रमदा प्रनिपतति, प्रवत्तनम्, चतुर्षु, अभियान्, धनूंषि, पुंषु, पुराण, सुमुख निसेवते, प्रसिसेव, अधिनस्थी, विस्तारकः, उभिन्, पुरामाद्, विमनः।

विशेषण ।

जिसके द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, जाति, गुण या क्रिया का बोध हो उसे विशेष्य (Noun) कहते हैं। यथा, व्यक्ति वाचक-रामः, गङ्गा, हिमालयः । वस्तुवाचक-घटः, घृतम्, जलम् । जातिवाचक-पशुः, पक्षी, कीटः, मनुष्यः । गुणवाचक ..., धैर्यम् । क्रियावाचक—पठनम्, श्रवणम्, हननम् ।

जिसके द्वारा विशेष्य का गुण, अवस्था या संख्या जानी जाय उसे विशेषण (Adjectivo) कहते हैं। विशेष्य में जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन विशेषण में भी होते हैं। यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्या, सुन्दरं गृहम्, बलवन्तौ सिंहौ, वेगवत्यः नद्यः इत्यादि। कुछ आवश्यकीय विशेषण निम्नलिखित हैं :—

अखिल—all, whole; अगाध very deep, अज्ञ ignorant, अटल immovable, अतीत past, अद्भुत extra-ordinary, अधम base, अधीन dependent, अनुरक्त fond of, अन्ध blind, अर्वाचीन new, अलस idle, अल्प-small, अवहित careful, अवैध unlawful, अशरण helpless, आढ्य rich, आत्मीय intimate, आदिम first, prior; आधुनिक recent, आध्यात्मिक spriritual, आर्द्र wet, damp; उग्र fierce, उच्च high, उत्तुङ्ग high, उत्सुक fond of, उदार liberal, उद्धत haughty, उन्मत्त mad, उष्ण hot, ऊर्ध्व upper, ऋजु straight, कटु bitter, कपिश brown, करुण lamentable, कर्कश cruel, violent, कश्मल dirty, काण one-eyed, कान्त lovely, कुटिल crooked; कुत्सित awkward, कृतघ्न ungrateful, कृतज्ञ grateful, कृपण miser, mean; केवल only, क्रूर cruel, क्षणिक momentary, खञ्ज lame, गभीर deep, गर्ह्य censurable, गुरु long, chief; गोल round, गौण secondary, ग्राम्य vulgar, घन thick, घोर horrible, चञ्चल fickle, चपल fickle, unsteady; चारु beautiful, चिर long, जङ्गम moveable, जटिल mixed with, तनु small, little; तरल liquid, तीक्ष्ण severe, दारुण cruel, दिव्य divine, beautiful; दुर्गम inaccessible; दुर्धर्ष dreadful, दुर्बल weak, दुष्कर difficult, धवल

white, धार्मिक pious, धूसर dirty, धूर्त sly, ध्रुव certain, नग्न naked, नव-नवीन new, नश्वर perishable, निखिल whole, नितान्त excessive, नित्य eternal, निपुण clever, निरीह indifferent, निविड thick, निशित sharp, निष्ठुर cruel, नूतन new. नृशंस cruel, wicked; नैसर्गिक natural, न्यून less, पक्व ripe, पटु able, clever; पथ्य suitable, परुष harsh, पर्य्याप्त sufficient, पवित्र pure, पाण्डु pale, पाप sinful, पावन pure, पीत yellow, पीन thick, large; पीवर fat, पुण्य holy, पुराण-पुरातन old, पृथु large, broad; पैतृक paternal, प्रखर very hot, प्रगल्भ bold, प्रफुल्ल gay, प्रबल tsrong, प्रभूत plentiful, प्रसिद्ध notable, प्रिय dear, बधिर deaf, बहु many, भंगुर brittle, भासुर bright, भीरु timid, भीषण dreadful, भूरि much, भूस much, मधु sweet, मञ्जुल beautiful, मनोज्ञ-मनोरम beautiful, मन्थर slow, मलिन foul, मसृण smooth, महत् great, महार्घ dear, मांसल strong, मूक silent, dumb; मृत dead, मृदु soft, रमणीय charming, रम्य beautiful, रिक्त empty, रुग्ण sick, रुचिर handsome, रुष्ट angry, लघु light, small; [illegible] crooked, वत्सल affectionate, वदान्य liberal, वन्य wild, वाचाल talkative, वार्षिक annual, विकट horrible, विचक्षण skilful, विचित्र curious, वितथ false, विनीत modest, विशाल vast, विश्वस्त faithful, विस्तृत wide, विह्वल overwhelmed, शान्त gentle, शिथिल loose, शीतल cool, शुक्ल white, शुचि pure, शुभ good, शुभ्र white, शुष्क dry, शून्य vacant; श्याम dark, श्वेत white, सकल entire, संकीर्ण narrow, संयुक्त full of, सफल fruitful, समर्थ able, समस्त

all, समान equal, सत्य sincere, सहज natural, सहिष्णु patient, सर्वदेशीय universal, सित white, सुगम accessible, सूक्ष्म thin, स्थविर old, स्थावर immovable, स्थास्नु-स्थिर firm, स्थूल coarse, bulky; स्फुट visible, स्वाधीन independent, हिंस्र ferocious, हृष्ट pleased, ह्रस्व short.

सुबन्त-प्रकरण (Declension)

विभक्ति की आकृति ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ः(सु)	औ	अः (जस्)
द्वितीया	अम्	औ (औट्)	अः (शस्)
तृतीया	आ (टा)	भ्याम्	भिः (भिस्)
चतुर्थी	ए (ङे)	भ्याम्	भ्यः (भ्यस्)
पञ्चमी	अः (ङसि)	भ्याम्	भ्यः (भ्यस्)
षष्ठी	अः (ङस्)	ओः (ओस्)	आम्
सप्तमी	इ (ङि)	ओः (ओस्)	सु (सुप्)

इन उपर्युक्त सातों विभक्तियों को सुप् * कहते हैं। प्रातिपदिक के परे सुप् लगाने से सुबन्त पद बनता है।

१. प्रत्येक विभक्ति में तीन २ वचन (Number) होते हैं; एकवचन (Singular), द्विवचन (Dual) और बहुवचन (Plural)। शब्द में एकवचन की विभक्ति रहने से एक वस्तु, द्विवचन की विभक्ति रहने से दो वस्तु और बहुवचन की

---

* विभक्तियों का पहला अक्षर सु और अन्त्य अक्षर प् है, अतएव इन्हें सुप् कहते हैं।

विभक्ति रहने से दो से अधिक (बहुत्व तक) बहुवचन प्रकट
जाती है।

२ क्रिया के साथ संज्ञा का जो सम्बन्ध है उसे कारक (Case) कहते हैं। कारक के छः भेद हैं, कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध अधिकरण और सम्बोधन। उपर्युक्त सातों विभक्तियाँ सातों कारकों को क्रमानुसार प्रकट करती हैं।

सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति लगती है। सम्बन्ध में क्रिया के साथ सम्बन्ध न होने से सम्बन्ध को कारक न मान कर केवल पद कहते हैं। इस प्रकार वास्तव में कारक ६ हैं।

३ किस शब्द में किस विभक्ति के लगाने से कैसा रूप बनता है, यह यथाक्रम दिया जाता है। सम्बोधन के द्विवचन और बहुवचन में प्रथमा के समान ही रूप होता है, केवल एकवचन में कहीं २ रूपान्तर होता है। अतएव सम्बोधन का एकवचन का रूप पृथक् लिखा जायगा।

स्वरान्त-पुंलिङ्ग शब्द।

अकारान्त–गज (Elephant)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
द्वितीया	गजम्	गजौ	गजान्
तृतीया	गजेन	गजाभ्याम्	गजैः
चतुर्थी	गजाय	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
पञ्चमी	गजात्	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
षष्ठी	गजस्य	गजयोः	गजानाम्
सप्तमी	गजे	गजयोः	गजेषु
सम्बोधन	गज		

(१) अजगर a large serpent, अध्यक्ष superintendent, अन्तराय obstacle, अब्द year, अमात्य minister, अरुण charioteer of the sun, dawn; अर्थ wealth, आकर mine, आचार्य preceptor, आभीर cowherd, आय income, आयुध weapon, उपल stone, ओदन cooked rice, कच्छप-कूर्म tortoise, कट mat, कर्णधार helmsman, कलङ्क spot, कलह strife, काक crow, काम desire, काल time, कुक्कुर a dog, कुञ्जर an elephant, कुम्भ jar, कोण corner, कोदण्ड bow, कोष treasure, क्रोश two miles, क्षण moment, क्षुर razor, खञ्जन a bird, गुच्छ cluster, ग्रह planet, घातक executioner, चटक sparrow, चर्म्मकार shoe-maker, चारण ard, चूत mango tree, छाग goat, जम्बुक jackal, जाल्म ascal, जीमूत cloud, डिम्ब egg, तण्डुल rice, तस्कर thief, ताण्डव dance of Shiva, ताल palm tree, तूल cotton, दत्तक adopted son, दम्भ pride, दायाद kinsman, धनिक ich man, ध्वज flag, नकुल mongoose, नक्र crocodile, नाद ound, पक्ष side, wing; पण wages, price; पयोद cloud, पर्यङ्क bedstead, पारावत pigeon, पाश net, पिक cuckoo, ञ्ज heap, पुरस्कार reward, पौर citizen, बिडाल cat, भक्त evotee, भट soldier, भृत्य servant, मञ्च platform, मठ emple, मण्डप enclosure, मण्डूक frog, मन्मथ cupid, राल duck, मस्तिष्क brain, मशक gnat, मानव man, माष kind of pulse, मृग deer, मेल union, यक्ष servant Kuber, यजमान sacrificer, यव barley, यात्रिक pilgrim, ध warrior, रङ्ग stage, रसाल mango tree, लगुड stick, लाट forehead, लुब्धक hunter, वंश race, family,

bamboo; वयस्य companion, वर boon, वल्मीक ant-h
वारण elephant, वासर day, विनिमय exchange, वृष b
व्यतिकर occurence, व्याज pretense, शाक vegetab
शावक young of beasts, श्वापद beast of prey, षण्ड bu
सङ्कर mixture of castes, सचिव minister, सहाय com
panion, सूद cook, सैनिक soldier, स्तम्भ pillar,
heap, स्तेन thief, स्यन्दन chariot, स्वेद sweat, हय hor
इत्यादि सब अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'गज' के समान होते हैं
पर अजगर, अभ्यर्ण इत्यादि में 'णत्व विधान' के अनुसार तृतीया एकव
और षष्ठी-बहुवचन में न् का ण् हो जाता है।

(२) अल्प little, प्रथम first, चरम last, अर्द्ध hal
कतिपय some, द्वय pair, त्रय three, द्वितय couple
त्रितय third, चतुष्टय four इत्यादि के प्रथमा-बहुवचन
अल्पे अल्पाः इत्यादि दो २ रूप होते हैं।

(३) द्वितीय और तृतीय के चतुर्थी पञ्चमी और सप्तमी
एकवचन में द्वितीयाय-द्वितीयस्मै, द्वितीयात्-द्वितीयस्मा
द्वितीये-द्वितीयस्मिन् इत्यादि दो रूप होते हैं।

(४) द्वितीया-बहुवचन तथा इससे आगे की विभक्तियों में
पाद (foot) के स्थान में पद्, दन्त (tooth) के स्थान में द
मास (month) के स्थान में मास् और यूष (broth) के स्थान
में यूषन् भी हो जाता है। पद् का रूप सुहृद् के समान, दत्
भूभृत् के समान और मास् का वेधस् के समान (भ पर
होने से स् का लोप होता है) होता है। पक्षान्तर में इनका
रूप 'गज' के समान होता है। यथा, पाद-२ या-पादेन-पदा,
पादाभ्याम्-पद्भ्याम्, पादैः-पद्भिः। दन्त-दता, दद्भ्याम्, दद्भिः।
मास-मासा, माभ्याम् माभिः। यूष-यूष्णा, यूषभ्याम्, यूषभिः

(५) अजर, निजर, निर्जर (god) इत्यादि के रूप स्वरा
(जिसके आदि में स्वर हो) विभक्तियों में 'वेधस्' के सम
भी होते हैं। यथा, १मा-अजरः अजरौ-अजरसौ, अजर
अजरसः। २-अजरम्-अजरसम्, अजरौ-अजरसौ।

(६) सायाह्न, व्यह्न तथा संख्यावाचक अह्न (द्व्यह्न,
इत्यादि) शब्दों के सप्तमी-एकवचन में सायाह्नि, सायाह्ना
सायाह्ने, व्यह्नि, व्यहनि, व्यह्ने; इत्यादि तीन २ रूप होते
और अन्य विभक्तियों में 'गज' के समान रूप होते हैं।
मध्याह्न, अपराह्न, पूर्वाह्न, के एक ही रूप होते हैं।

आकारान्त-विश्वपा (God, Sun, Moon

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुव
१.	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः	५.	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वप
२.	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः	६.	,,	विश्वपोः	विश्व
३.	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः	७.	विश्वपि	विश्वपोः	विश्व
४.	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः	सं०	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्व

(१) गोपा cowherd, सोमपा one who drinks
Soma juice, धूमपा one who inhales smoke,
strength-giver, शंखध्मा couch-shall blower इत्यादि
से बने हुए सब आकारान्त शब्दों के रूप 'विश्वपा' के समान होते हैं

(२) धातु से बने हुए सब आकारान्त शब्दों में स
नियमानुसार विभक्तियाँ जोड़ दी जाती हैं। यथा, हाहा—

१.	हाहाः	हाहौ	हाहाः	५.	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्य
२.	हाहाम्	हाहौ	हाहाः	६.	,,	हाहौः	हाहाम्
३.	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः	७.	हाहे	,,	हाहासु
४.	हाहै	,,	हाहाभ्यः	सं०	हाहाः	हाहौ	हाहाः

(५) अजर, निजर, निर्जर (god) इत्यादि के रूप स्वरादि (जिसके आदि में स्वर हो) विभक्तियों में 'वेधस्' के समान भी होते हैं । यथा, १म-अजरः अजरौ-अजरसौ, अजराः, अजरसः । २-अजरम्-अजरसम्, अजरौ-अजरसौ ।

(६) सायाह, व्यह तथा संख्यावाचक अह (द्व्यह, त्र्यह इत्यादि) शब्दों के सप्तमी-एकवचन में सायाह्नि, सायाहनि, सायाह्ने, व्यह्नि, व्यहनि, व्यह्ने; इत्यादि तीन २ रूप होते हैं और अन्य विभक्तियों में 'गज' के समान रूप होते हैं । पर मध्याह्ने, अपराह्ने, पूर्वाह्णे, के एक ही रूप होते हैं ।

आकारान्त-विश्वपा (God, Sun, Moon)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१.	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः	५.	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
२.	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः	६.	,,	विश्वपोः	विश्वपाम्
३.	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः	७.	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
४.	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः	सं०	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः

(१) गोपा cowherd, सोमपा one who drinks the Soma juice, धूम्रपा one who inhales smoke, बलदा strength-giver, शंखध्मा conch-shell blower इत्यादि धातु से बने हुए सब आकारान्त शब्दों के रूप 'विश्वपा' के समान होते हैं ।

(२) धातु से बने हुए सब आकारान्त शब्दों में सन्धि-नियमानुसार विभक्तियाँ जोड़ दी जाती हैं । यथा, हाहा—

१.	हाहाः	हाहौ	हाहाः	५.	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
२.	हाहाम्	हाहौ	हाहाः	६.	,,	हाहौः	हाहाम्
३.	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः	७.	हाहे	,,	हाहासु
४.	हाहै	,,	हाहाभ्यः	सं०	हाहाः	हाहौ	हाहाः

Exercise — 5

1. Translate into Hindi or English :— भद्रः पुरुषः। अयनौ सेवकौ। आध्यात्मिकेन यत्नेन। चपलो बालको धावतः। ग्रामस्य लोका आगच्छन्ति। वृक्षात् बालोऽपतत्। शिष्यानुपदिशति शिक्षकः। मूर्खा बालकाः लोकानां प्रिया भवन्ति। चौरा अर्थं चोरयन्ति। विश्वामित्रस्य उपदेशेनागतौ रामलक्ष्मणौ। नृपः बाणैः शत्रुं हन्ति। अन्धेभ्यो लोकेभ्योऽर्थं ददाति। दशरथस्य पुत्रा ग्रामं गच्छन्ति।

2. Translate into Sanskrit — (a) दो लड़के। गाँव के आदमी। दशरथ के पुत्रों को। गाँव में बहुत वृक्ष हैं (सन्ति)। धनी लोगों को बुलाता है (आह्वयति)। राजा दरिद्रों को धन देता है (ददाति)। बालक एक पैर का लँगड़ा है (अस्ति)। वह दोनों हाथों से शत्रुओं को मारता है (ताडयति)। राजा के दोनों सैनिक युद्ध करते हैं (युध्येते)। मानसरोवर से ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है (निर्गच्छति)।

(b) A good boy. Two sticks of Ram. Warriors of the King. There are (सन्ति) ducks in the pond. The boy takes (गृह्णाति) from the hand. The bull falls (पतति) from the top of the mountain. By the help of his wife Dasharatha conquered (जितवान्) the enemies. The King gives (ददाति) wealth to the poor. There are many trees in the village. People bear (वहन्ति) burden on their heads. Men eat अदन्ति rice with their right hand. Boys see (पश्यन्ति) the moon in the sky. Gods dwell (वसन्ति) in heaven.

3. Correct:— नरवरः लोकाः। लटिकौ प्रश्नः। दरिद्रः पुरुषा आगच्छन्ति। रामरिरो वृक्षे पतति। ग्रामात् गच्छन्ति सैनिकाः। आश्रमेषु अनेको मृगा चरन्ति। रथेण स्वर्गं गच्छन्ति। करेन वस्त्रं गृह्णाति। राज्ञां पुत्रो भवन्ति। मनुष्याणां समूहः वर्तते।

इकारान्त-मुनि (Sage)

प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	मुने		

पति और सखि शब्दों को छोड़ कर अतिथि guest, अरि enemy, अलि bee, असि sword, अहि snake, ऋषि sage, कपि monkey, कवि poet, कुक्षि belly, कृमि worm, गिरि mountain, ग्रन्थि joint, धूर्जटि (शिव), ध्वनि sound, निधि store, पाणि hand, बलि offering, यति ascetic, रवि sun, रश्मि ray, विधि (ब्रह्मा) rule, व्याधि sickness, सारथि charioteer इत्यादि सब इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'मुनि' के समान होते हैं।

पति (Lord, husband)

१.	पतिः	पती	पतयः	५.	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
२.	पतिम्	पती	पतीन्	६.	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
३.	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः	७.	पत्यौ	„	पतिषु
४.	पत्ये	„	पतिभ्यः	सम्बो०	पते	पती	पतयः

अन्य शब्दों के साथ समास होने पर पद के अन्त में पति हो तो 'मुनि' के समान रूप होते हैं। यथा, नृपति, भूपति,

महीपति King, भूपति [illegible], सेनापति [illegible] इत्यादि ।

सखि (Friend)

१. सखा	सखायौ	सखायः	५.	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
२. सखायम्	„	सखीन्	६.	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
३. सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	७	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
४. सख्ये	„	सखिभ्यः	सखे, सखे	सखायौ		सखायः

ईकारान्त-सुधी (A wise man)

प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	सुधीः		

(१) अह्री shameless, कुधी-मन्दधी-दुर्धी silly, यवक्री one who buys barley, शुद्धधी of pure intellect, सुश्री beautiful इत्यादि प्रायः सब ईकारान्त शब्दों के रूप (पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों में) ऐसे ही होते हैं।

(२) पर सेनानी general, अग्रणी leader, ग्रामणी Superintendent इत्यादि कई शब्दों के रूप सन्धि-नियमानुसार विभक्तियों को जोड़ देने ही से बन जाते हैं। सप्तमी के एकवचन में सेनान्याम् इत्यादि होते हैं।

(३) पपी the sun, ययी horse और वातप्रमी a sv
antelope के रूप सेनानी की भाँति होते हैं, पर द्विती
एकवचन में वातप्रमीम् और बहुवचन में वातप्रमीन्
सप्तमी एकवचन में वातप्रमी इत्यादि होते हैं।

(४) प्रधी of good intellect का रूप भी सेनानी
भाँति होता है। केवल सप्तमी के एकवचन में प्रध्यि होता

उकारान्त-साधु (A sage, A saint)

प्रथमा	साधुः	साधू	साधव
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभि
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्य
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्य
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधून
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	साधो		

(१) अणु atom, इक्षु sugarcane, इषु arrow,
straight, ऋतु season, गुरु preceptor, गोमायु jac
जन्तु animal, तन्तु thread, तरु tree, दस्यु robber,
metal, परशु axe, पशु beast, पांशु dust, प्रभु master
friend, बटु (ब्राह्मण), बिन्दु drop, भानु Sun, भिक्षु beg
मनु, मृत्यु death, बाहु arm, वायु wind, विभु lord,
वेणु bamboo, bugle, शत्रु enemy, शिशु infant, सूनु
सेतु bridge, हेतु cause इत्यादि प्रायः सब उकारान्त पुंलिङ्ग
के रूप 'साधु' के समान होते हैं।

(२) क्रोष्टु Jackal के रूप प्रथमा और द्वितीया के

वचन में नित्य तथा अन्य स्वरादि विभक्तियों में विकल्प से क्रोष्टु होकर 'क्रोष्टृ' के समान होते हैं। यथा, १–क्रोष्टा, क्रोष्टारौ क्रोष्टारः; ३–क्रोष्ट्रा-क्रोष्टुना, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभिः।

उकारान्त शब्द—अग्निभू (कार्तिकेय)

१	अग्निभूः	अग्निभुवौ	अग्निभुवः	५	अग्निभुवः	अग्निभूभ्याम्	अग्निभूभ्यः
२	अग्निभुवम्	,,	,,	६	,,	अग्निभुवोः	अग्निभुवाम्
३	अग्निभुवा	अग्निभूभ्याम्	अग्निभूभिः	७	अग्निभुवि	अग्निभुवोः	अग्निभूषु
४	अग्निभुवे	,,	अग्निभूभ्यः	सं.	अग्निभूः	अग्निभुवौ	अग्निभुवः

अधिभू lord, जितभू conqueror of the world, प्रतिभू guarantee, मनोभू (कामदेव), स्वभू-स्वयम्भू (ब्रह्मा) इत्यादि के रूप "अग्निभू" के समान होते हैं।

पर, करभू finger-nail, खलपू sweeper, दम्भू thunderbolt, वर्षाभू frog, सुलू good cutter, हूहू a gandharba इत्यादि शब्दों में उव् न हो कर सन्धि-नियमानुसार विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं। पर हूहू इत्यादि कई शब्दों की द्वितीया के एकवचन और बहुवचन में क्रम से हूहूम् और हूहून् होते हैं। यथा, खलपूः,खल्पौ, खल्पः इत्यादि।

ऋकारान्त-दातृ (giver)

प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सं०	दातः		

(१) अधिष्ठातृ ruler, कर्तृ agent, क्रेतृ buyer, जेतृ con-
ieror, ज्ञातृ one who knows, द्रष्टृ looker, धातृ-विधातृ
eator, नप्तृ grandson, श्रोतृ hearer, audience; सवितृ
n, स्रष्टृ creator, हन्तृ killer इत्यादि सब तृच् व तृन् प्रत्ययान्त
न्य ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'दातृ' के समान होते हैं।

(२) पर जामातृ son-in-law, देवृ husband-brother,
man, पितृ father, सव्येष्टृ charioteer इत्यादि ऋकारा-
न्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'भ्रातृ' के समान होते हैं।

भ्रातृ (Bother)

भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः	५. भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
. भ्रातरम्	,,	भ्रातृन्	६. भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातृणाम्
:. भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः	७. भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
'. भ्रात्रे	,,	भ्रातृभ्यः	स. भ्रातः	भ्रातरौ	भ्रातरः

ऐकारान्त-रै (Wealth)

१. राः	रायौ	रायः	५. रायः	राभ्याम्	राभ्यः
२. रायम्	,,	,,	६. ,,	रायोः	रायाम्
३. राया	राभ्याम्	राभिः	७. रायि	रायोः	रासु
४. राये	,,	राभ्यः	स. राः	रायौ	रायः

ओकारान्त-गो (Cow, earth)

१ गौः	गावौ	गावः	५ गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
२ गाम्	गावौ	गाः	६ गोः	गवोः	गवाम्
३ गवा	गोभ्याम्	गोभिः	७ गवि	गवोः	गोषु
४ गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः	स० गौः	गावौ	गावः

सब ओकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

औकारान्त-ग्लौ (Camphor, Moon)

१. ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः	५. ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्[illegible]
२. ग्लावम्	,,	,,	६. ,,	ग्लावोः	ग्लाव[illegible]
३. ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः	७. ग्लावि	,,	ग्लौषु
४. ग्लावे	,,	ग्लौभ्यः	सम्बो. ग्लौः	ग्लावौ	ग्लाव[illegible]

सब औकारान्त शब्दों के रूप ग्लौ के समान होते हैं।

Exercise—6

1. Translate into Hindi or English:—[illegible] हरिम् [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । गिरौ [illegible] । [illegible] [illegible] । सूर्यः [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।

2. Translate into Sanskrit :— (a) हरि का उपदेश [illegible] [illegible] [illegible] है । राजा मुनि के आश्रम में [illegible] [illegible] राजा का धन चुराते हैं (चोरयन्ति) । सूर्य [illegible] [illegible] है (रक्षति) । [illegible] के लिये [illegible] है (अस्मृति) । [illegible] की [illegible] के [illegible] से जाती है (याति) [illegible] [illegible] है (वर्षति) ।

(b) [illegible] brother of the father. (2) [illegible] the welfare of kings. The order of [illegible] [illegible] his enemy. Fire [illegible] [illegible] like (दीव्यति) [illegible] [illegible] of the [illegible] [illegible] The [illegible] (शृणोति) [illegible]

3. Correct.—गुरस्य आदेशः। हरिस्य सृष्टिः। मुनौ गिरिं गच्छतः। हस्तेन् गृह्णाति। कवीन् आह्वयति। नृपेभ्योऽर्थं ददाति। नरपति सखे विश्वासो नास्ति। पितारं वदति। गावं मा ताडय। भ्रातोः पुत्रौ पठतः।

स्त्रीलिंग-शब्द ।

आकारान्त-लता (Creeper)

प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते		

(१) अर्चना worship, आत्मजा daughter, आज्ञा order, आशा hope, इच्छा desire, कनिष्ठा little finger, कन्या daughter, करुणा compassion, कला art, कलिका bud, कविता poetry, कान्ता wife, कुलटा unchaste woman, कृतज्ञता gratitude, कृपा mercy, क्षपा night, क्षमा forgive-ness, क्षुधा hunger, गङ्गा Ganges, गणिका harlot, गुहा cave, ग्रीवा neck, घण्टिका small bell, घृणा hate, चिता funeral pile, चिन्ता thought, चेष्टा attempt, छटा light, छाया shade, जङ्घा thigh, जनता crowd, जाया wife, जिह्वा tongue, जीविका livelihood, ज्योत्स्ना moonlight, तन्द्रा laziness, तमिस्रा night, तारा star, दशा state, द्राक्षा grape, नासा nose, प्रज्ञा wisdom, पत्रिका letter, पादुका shoe,

पुत्तलिका doll, कक्षा belt, बाला a young wo…
prayer, बालिका girl, भार्या wife, माला fer…
wine, महिला lady, माला garland, मुक्ता pearl…
ney, मृत्तिका earth, घण्टा bell, मल्लिका ares…
jesmine, रेखा line, लज्जा shame, वसुधा earth…
earth, वाञ्छा-स्पृहा desire, वार्ता news, शिक्षा le…
instruction, शिखा flame, शिला stone, …
सभा court, सिकता sand, सुधा nectar, सेवा …
service, हत्या killing इत्यादि शब्द आकारान्त स्त्रीलि…
रूप 'लता' के समान होते हैं।

(२) अम्बा mother के सम्बोधन-एकवचन …
होता है।

(३) द्वितीया और तृतीया शब्दों के रूप चतुर्थी, …
षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में क्रम से द्वितीयायै …
द्वितीयायाः-द्वितीयस्याः, द्वितीयायाः-द्वितीयस्याः, …
द्वितीयस्याम् इत्यादि दो २ रूप होते हैं।

(४) स्वरादि विभक्तियों के आने से जरा (old ag…
विकल्प से जरस् हो जाता है। यथा, जरा, जरे-जरसौ, …
जरसः।

(५) द्वितीया-बहुवचन तथा आगे की स्वरादि विभ…
में नासिका (nose), निशा (night) और पृतना (ar…
का विकल्प से क्रमशः नस्, निश् और पृत् हो जाता …
भ-आदि वाली विभक्तियों में निशा और पृतना का …
से क्रमशः निड् और पृड् तथा सप्तमी-बहुवचन में वि…
से निट् और पृत् होता है। यथा, नासिकया-नसा; नि…
निशां, निशाभ्याम्-निड्भ्याम्, निशाभिः-निड्भिः, नि…

...द्सु इत्यादि।

...ता।

Exercise—7

1. Translate into Hindi or English:—गङ्गाया आत्मजा। ...दायै माला। महिलासु लज्जा वर्त्तते। भार्य्यायाः सेवया तुष्यति जनः। ...रा कन्यायै मालां ददाति। ललनाः शिलायामुपविशन्ति। भाषां शिक्षन्ते ...लिकाः। ललनाया हत्या कदापि न करणीया। रामस्य पादुकया भरतो ...ई प्रत्यागतः।

2. Translate into Sanskrit —(a) कन्या को। महिला के लिये। ...लना की चेष्टा। गङ्गा के लिये मालायें। रात में तारे उगते हैं (उद्यन्ति)। ...न्या की हत्या से लोग दु:खी हैं। पर्व्वत की शोभा देखो (पश्य)। स्त्री ...की रक्षा करो (रक्ष)। कन्याओं की शिक्षा का प्रबन्ध करो (कुरु)। लड़- ...याँ पुतलियों से खेलती हैं (क्रीडन्ति)। स्त्री पति के समाचार से प्रसन्न ...होती है (भवति)।

(b) For the daughter. Desire of women. Ram gives ...arland to Sita. The monkey falls from the mango-tree. ...The wife follows (अनुसरति) her husband. The woman ...worships (पूजयति) gods. Monkeys live (वसन्ति) on the ...branches of trees. Mother gives dolls to her daughters.

3. Correct:—अन्नपूर्णाः घरा। शाखात् पतति शाखा। धरास्य रक्षा ...रु। मालान् धारयन्ति ललनाः। भार्याय अर्थं ददाति। मस्तकस्य पीडेन ...पीडितः। वृक्षशाखासु खगा निवसन्ति। तृष्णां प्रजानां रक्षकाः भवन्ति।

इकारान्त—मति (Intellect)

...थमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
...तीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
...तुर्थी	मत्यै-मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
...ञ्चमी	मत्याः-मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
...ष्ठी	मत्याः-मतेः	मत्योः	मतीनाम्
...प्तमी	मत्याम्-मतौ	मत्योः	मतिषु
...म्बोधन	मते		

अङ्गुलि finger, अन्त्येष्टि funeral ceremony, ... decrease, उन्नति increment, ऋद्धि fortune, ... beauty, कीर्ति fame, कृति action, कृषि husbandry, ... amusement, क्षिति earth, खनि mine, गति movem... चक्रवृद्धि compound interest, चुल्लि fire-place, ... beauty, जन्म-भूमि mother land, जाति caste, race, ... तिथि date, त्रुटि loss, द्युति light, धरणि earth, धूलि dust, ... patience, नीति politics, पंक्ति line, प्रकृति nature, ... prosperity, भूमि land, मुक्ति freedom, मूर्ति image, ... young lady, रात्रि night, रीति manner, रुचि ... वर्ति wick of a lamp, विपत्ति adversity, वृत्ति professi... वृष्टि rain, शक्ति power, शान्ति peace, स्मृति memo... Veda; सृष्टि creation, हानि loss इत्यादि सब इकारान्त स्त्री... शब्दों के रूप 'मति' के समान होते हैं।

(१) ईकारान्त–नदी (river)

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
	नदि		

... finger, अटवी forest, अवनी earth, कठिनी chalk, ... fountain, कामिनी woman, काली-गौरी goddes...

कुमारी Virgin, कौमुदी moon-light, गर्भिणी pregna woman, गृहिणी house- wife, जननी mother, तटिनी-तरंगि river, तर्जनी forefinger, तन्त्री musical instrume दासी maid servant, धरणी earth, धात्री nurse, न town, नन्दिनी daughter, नारी woman, पत्नी wife, town, पुस्ती manuscript, पृथ्वी earth, भगिनी sist मञ्जरी blossom, मशहरी mosquito curtain, म crowned queen, मही earth, युवती young wom रजनी night, राज्ञी queen, लेखनी pen, वाणी speech, well, वाहिनी army, विभावरी-शर्वरी night, श्रेणी li इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'नदी' [illegible] समान होते हैं ।

N. B. पर अवी (रजस्वला स्त्री), तरी boat, तन्त्री l लक्ष्मी goddess of wealth और स्तरी smoke के प्रथमा- वचन में विसर्ग भी होता है । यथा, अवीः, तरीः इत्यादि शेष रूप ' के समान होते हैं ।

(२) श्री (Beauty)

प्रथमा सम्बो०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्-श्रि
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

धी intellect, भी fear, और ह्री shame के रूप 'श्री समान होते हैं ।

अङ्गुलि finger, अन्त्येष्टि funeral c... decrease, उन्नति increment, कान्ति beauty, कीर्ति fame, कृति action, क... amusement, क्षिति earth, खनि mine, ... चक्रवृद्धि compound interest, छवि ... beauty, जन्म-भूमि mother land, जाति cast... तिथि date, त्रुटि loss, द्युति light, धात्रि earth, ... patience, नीति politics, पंक्ति line, प्रगति ... prosperity, भूमि land, मुक्ति freedom, युवति young lady, रात्रि night, रीति manner, ... वर्ति wick of a lamp, विपत्ति adversity, ... वृष्टि rain, शक्ति power, शान्ति peace, श्रुति ... Veda, सृष्टि creation, हानि loss इत्यादि सब इका... शब्दों के रूप 'मति' के समान होते हैं।

(१) ईकारान्त—नदी (river)

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद...
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नद...
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदि...
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदी...
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ...
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीन...
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि		

अंगुलि finger, अटवी forest, उर्वी earth, कठिनी ch... ... plantain, कामिनी woman, गौरी goddes...

कुमारी Virgin, कौमुदी moon-light, गर्भिणी pregnant woman, गृहिणी house- wife, जननी mother, तटिनी-तरंगिनी river, तर्जनी forefinger, तन्त्री musical instrument, दासी maid servant, धरणी earth, धात्री nurse, नगरी town, नन्दिनी daughter, नारी woman, पत्नी wife, पुरी town, पुस्ती manuscript, पृथ्वी earth, भगिनी sister, मञ्जरी blossom, मशहरी mosquito curtain, महिषी crowned queen, मही earth, युवती young woman, रजनी night, राज्ञी queen, लेखनी pen, वाणी speech, वापी well, वाहिनी army, विभावरी-शर्वरी night, श्रेणी line, इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'नदी' के समान होते हैं।

N. B. पर अवी (रजस्वला स्त्री), तरी boat, तन्त्री lute, लक्ष्मी goddess of wealth और स्तरी smoke के प्रथमा-एकवचन में विसर्ग भी होता है । यथा, अवीः, तरीः इत्यादि शेष रूप 'नदी' के समान होते हैं ।

(२) श्री (Beauty)

प्रथमा सम्बो०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्-श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

धी intellect, भी fear, और ह्री shame के रूप 'श्री' के समान होते हैं ।

[illegible] finger, [illegible] [illegible], [illegible] increase, [illegible] increment, [illegible] [illegible], [illegible] beauty, कीर्ति fame, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] amusement, [illegible] earth, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] compound [illegible], [illegible] [illegible] beauty, आम-मूर्ति mother and, [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] date, [illegible] [illegible], [illegible] light, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] patience, [illegible] politics, [illegible] line, [illegible] nature, [illegible] prosperity, भूमि land, मुक्ति freedom, मूर्ति image, [illegible] young lady, रात्रि night, रीति manner, [illegible] [illegible] वर्ति wick of a lamp, विपत्ति adversity, वृत्ति profession, वृष्टि rain, शक्ति power, शान्ति peace, स्मृति memory, [illegible] Veda; सृष्टि creation, हानि loss इत्यादि सब इकारान्त स्त्री[illegible] शब्दों के रूप 'मति' के समान होते हैं।

(१) ईकारान्त—नदी (river)

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन			

अंगुलि fi[illegible] [illegible] earth, कठिनी chalk, कदली plant[illegible] [illegible] goddess,

कुमारी Virgin, कौमुदी moon-light, गर्भिणी pregnant woman, गृहिणी house- wife, जननी mother, तटिनी-तरंगिनी river, तर्जनी forefinger, तन्त्री musical instrument, दासी maid servant, धरणी earth, धात्री nurse, नगरी town, नन्दिनी daughter, नारी woman, पत्नी wife, पुरी town, पुस्ती manuscript, पृथ्वी earth, भगिनी sister, मञ्जरी blossom, मशहरी mosquito curtain, महिषी crowned queen, मही earth, युवती young woman, रजनी night, राज्ञी queen, लेखनी pen, वाणी speech, वापी well, वाहिनी army, विभावरी-शर्वरी night, श्रेणी line, इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'नदी' के समान होते हैं।

N. B. पर अवी (रजस्वला स्त्री), तरी boat, तन्त्री lute, लक्ष्मी goddess of wealth और स्तरी smoke के प्रथमा-एकवचन में विसर्ग भी होता है । यथा, अवीः, तरीः इत्यादि शेष रूप 'नदी' के समान होते हैं।

(२) श्री (Beauty)

प्रथमा सम्बो०	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्-श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

धी intellect, भी fear, और ह्री shame के रूप 'श्री' के समान होते हैं।

(१) स्त्रीलिङ्ग सुधी, हलधी, शुष्कधी, शुद्धधी इत्यादि शब्
के रूप 'श्री' तथा पुंलिङ्ग 'सुधी' दोनों के समान होते हैं।

(२) स्त्रीलिङ्ग ग्रामणी, अग्रणी इत्यादि के रूप पुंलिङ्ग
समान होते हैं।

स्त्री (Woman)

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्-स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः-स्त्री
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्य
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्य
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणा
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि		

उकारान्त-धेनु (Cow)

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै-धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः-धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः-धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम
सप्तमी	धेन्वाम्-धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो		

ऋतु lunar mansion, चञ्चु beak, तनु body, रज्जु rop
रेणु dust, स्नायु nerve इत्यादि सब उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के
'धेनु' के समान होते हैं।

ऊकारान्त–वधू (Wife, bride)

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	वधु		

कर्कन्धू jujube tree, चमू army, चञ्चू beak, चम्पू (काव्य), तनू body, पुनर्भू re-born, प्रसू mother, वीरसू mother of hero, श्वश्रू mother-in-law इत्यादि सब ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'वधू' के समान होते हैं ।

पर भू earth, सुभ्रू woman having beautiful eye-brow शब्दों के रूप 'भ्रू' के समान होते हैं, परन्तु सम्बोधन-एकवचन में 'सुभ्रू' का 'सुभ्रु' होता है ।

भ्रू (Eye-brow)

प्रथमा-सम्बो-	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वितीया	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृतीया	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
चतुर्थी	भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
पञ्चमी	भ्रुवाः-भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
षष्ठी	भ्रुवाः-भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्-भ्रुवाम्
सप्तमी	भ्रुवाम्-भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु

ऋकारान्त शब्द।

स्त्रीलिङ्ग ऋकारान्त शब्द केवल पाँच हैं, दुहितृ daughter, ननान्दृ husband's sister, मातृ mother, यातृ husband's brother's wife, स्वसृ sister इनमें से स्वसृ के रूप 'धातृ' के समान और शेष चार शब्दों के 'पितृ' के समान होते हैं। पर द्वितीया-बहुवचन में स्वसॄः, दुहितॄः, ननान्दॄः, मातॄः, यातॄः होते हैं।

ओकारान्त—औकारान्त शब्द।

स्त्रीलिङ्ग ओकारान्त और औकारान्त शब्दों के रूप पुंलिङ्ग के समान ही होते हैं। यथा, द्यो-heaven के रूप 'गो' के समान और नौ-boat के रूप 'ग्लौ' के समान होते हैं।

Exercise—8

1. Translate into Hindi or English:—कीर्तिः। अग्नेः शक्ति विपत्ती धृतिः। रमणीनां रचना। जननी जन्मभूमिश्च। कृष्णस्य भाषाया उन्नतिः भवति। कृपया भूमिः। कीर्तेः हानिः भवति। कर्मणां श शक्तिः। अटव्यां भ्रमामि। तटिनी पर्वतात् निस्सरति। नारी धनुः प्राप्नोति। कुमारी कठिन्या पत्रं लिखति। दासी नगरीं गच्छति। दास्याः पुत्रं पृच्छति। आम्रवृक्षेषु मञ्जर्यः दृश्यन्ते।

2. Translate into Sanskrit:—चन्द्रमा की रोशनी। पं अंगुलियाँ। लड़की के लिये। स्त्री के लिये मसहरी। स्वर्ग से पृ पर आता है (आगच्छति)। नगर में स्त्रियों का दल जाता (गच्छति)। धूल से आकाश पूर्ण है। दशरथ को तीन स्त्रियाँ चार पुत्र हैं। कार्तिकेय को ६ मातायें थीं (आसन्)। प्रकृति देखता हूँ (पश्यामि)। सीता सासु की सेवा करती है (सेवते की स्त्रियाँ पति को देवता समझती हैं (मन्यन्ते)।

(b) To the earth. The beauty of women. T
ment of the earth. Images of goddesses. Man
fall (पतन्ति) into the Ganges. Stars shine (
the night. Young women go (गच्छन्ति) to their
There are many wells in the village. The qu
money to her maid-servants.

3. Correct:—स्मृतिस्य रचना। देवतास्य आज्ञा
शत्रून् जयति। खेलन्तिका जिस्वति कन्या। स्वश्रोभ्यो मा
लक्ष्मी विष्णोः पत्नी। राज्ञीस्य आज्ञा माननीया। कुमारी
इच्छति। स्मृतिषु बहवो उपदेशा सन्ति।

स्वरान्त-क्लीबलिङ्ग शब्द।

अकारान्त-फल (fruit).

१	फलम्	फले	फलाि
२	,,	,,	,,
३	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
४	फलाय	,,	फलेभ्य
५	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्य
६	फलस्य	फलयोः	फला
७	फले	,,	फलेषु
सं०	फल	फले	फलाि

अघ sin, अङ्क spot, mark; अङ्ग limb, अ
yard, अज्ञान ignorance, अध्यात्म knowledge
अन्तर interval, अन्तरीक्ष sky, अपत्य offspri
nectar, अरविन्द lotus, अर्श piles, अश्रु tear, अहिफे
आलवाल basin for water round the root of
आसन seat, इन्द्रिय an organ of sense, इन्धन fu
upper garment, उत्पल lotus, उदर bell, उद्यान

[illegible] palace, उपल slab, औषध medicine, कङ्कण bracelet, कनक gold, कपाट [illegible], करपत्र saw, कलत्र wife, कलेवर body, कल्याण welfare, काञ्चन gold, कानन forest, कारण cause, कार्पास cotton, कार्य work, काव्य poem, कुटीर hut, कुशल welfare, कुटुम्ब relative, कुमुद lotus, कुल family, कूल bank, कोकनद red lotus, क्रीडनक sport, toy, क्षेत्र field, खाद्य food, गृह house, चक्र wheel, चत्वर court-yard, चरित manner of leading life, चत्वर busyyard, चित्त heart, चिबुक chin, चिह्न mark, चूर्ण powder, चैतन्य conciousness, छल fraud, जठर belly, जल water, जाल net, तत्त्व reality, ताम्र copper, ताम्रकूट tobacco, तारक star, तीर bank, arrow; दिन day, दुःख misery, दुग्ध milk, दुर्ग fort, दैर्घ्य length, द्रव्य thing, द्वार door, ध्यान meditation नक्षत्र star, नगर town, निशीथ midnight, नृत्य dancing, पण्य merchandise, पनस jackfruit, पर्ण leaf, पात्र vessel, पानीय water, पारितोषिक reward, पिञ्जर cage, पिष्टक cake, पुच्छ tail, पुण्य merit, पुर town, पुस्तक book, प्रत्यूष dawn, प्रभात day break, प्रसून flower, बिम्ब disc, भाग्य luck, भुवन world, भैक्ष alms, मद्य liquor, मुकुट crown, मूल root, मूल्य price, यन्त्र machine, युद्ध war, रजत silver, रण war, रन्ध्र hole, रहस्य secrecy, राष्ट्र kingdom, country; लवण salt, लावण्य beauty, वचन speech, वमन vomiting, वयन weaving, वर्णन describing, वसन-वस्त्र cloth, वातायन window, विज्ञान science, वित्त wealth, विष poison, वृत्त circle, वृन्त stalk, वैर enmity, व्यजन fan, व्यसन adversity, difficulty; व्याकरण.

grammar, व्रण tumour, व्रत penance, शव dead body, शष्प young grass, शस्त्र weapon, सस्य corn, शीर्ष head, शील nature, श्राद्ध funeral ceremony, सङ्गीत song, सत्त्व power, सन्तान issue, समीप proximity, साक्ष्य evidence, सादृश्य likeness, साहस boldness, साहित्य literature, सिंहासन throne, सुख happiness, सुवर्ण gold, सोपान stairs, ऐश्वर्य beauty, स्वर्ण gold इत्यादि सब अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप 'फल' के समान होते हैं। पर णत्व-विधान के अनुसार कहीं न का ण् हो जाता है।

पर द्वितीया बहुवचन तथा आगे की विभक्तियों में हृदय का हृत्, उदक का उदन् और आस्य का आसन् भी होता है। पक्षान्तर में इनके रूप 'फल' के समान होते हैं। यथा, तृतीया—हृदा-हृदयेन, हृद्भ्याम्—हृदयाभ्याम्, हृद्भिः-हृदयैः इत्यादि।

आकारान्त शब्द।

आकारान्त शब्दों को अकारान्त करके उनका रूप 'फल' के समान चलाया जाता है। यथा, श्रीपा-श्रीपम्, श्रीपे, श्रीपाणि इत्यादि।

इकारान्त-वारि (Water)

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	वारे, वारि		

अक्षि eye, अस्थि bone, दधि curd, सक्थि t[illegible] को छोड़ कर इकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप 'वा[illegible] समान होते हैं।

दधि (Curd)

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि-दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	दधे-दधि		

अक्षि, अस्थि और सक्थि के रूप 'दधि' के समान [illegible] हैं, परन्तु अक्षि में न् का ण् होता है।

उकारान्त–मधु (Honey)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	[illegible]		

अम्बु water, अश्रु tear, ऊरु thigh, जतु lac, जानु knee, तालु palate, दारु wood, मरु desert, वसु wealth, वस्तु thing, श्मश्रु beard, सानु tableland इत्यादि सब उकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप 'मधु' के समान होते हैं।

द्वितीया-बहुवचन तथा आगे की विभक्तियों में सानु (tableland) का स्नु भी होता है।

ऊकारान्त शब्दों का उकारान्त कर देते हैं और 'मधु' के समान रूप होते हैं। यथा, सुलू-सुलु, सुलुनी, सुलूनि इत्यादि।

विशेषण।

विशेषण इकारान्त और उकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप भी विशेष्य इकारान्त, उकारान्त के समान ही होते हैं; पर चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी [redacted] एकवचन तथा षष्ठी और सप्तमी के द्विवचन में पुंलिङ्ग के समान भी रूप होते हैं। यथा, शुचि (pure)—शुचिने-शुचये, शुचिभ्याम्, शुचिभ्यः इत्यादि।

सुमति-सुबुद्धि good intellect, अनादि eternal, स्वादु sweet इत्यादि के रूप 'शुचि' के समान होते हैं।

N. B. पर सुधी, सुधी, शुद्धधी, मन्दधी, इत्यादि को इकारान्त कर देते हैं और 'वारि' के समान इनके रूप होते हैं परन्तु द्वितीया से आगे की स्वरादि विभक्तियों में पुंलिङ्ग 'सुधी' के समान भी रूप होते हैं। यथा, (१ मा, २ या,) सुधि, सुधिनी, सुधीनि। (३ या) सुधिया-सुधिना, सुधिभ्याम्, सुधिभिः इत्यादि।

ऋकारान्त-धातृ (Creator)

प्रथमा	धातृ	धातृणी	धातॄणि
द्वितीया	धातृ	धातृणी	धातॄणि
तृतीया	धातृणा-धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः
चतुर्थी	धातृणे-धात्रे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
पञ्चमी	धातृणः-धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
षष्ठी	धातृणः-धातुः	धातृणोः-धात्रोः	धातॄणाम्
सप्तमी	धातृणि-धातरि	धातृणोः-धात्रोः	धातृषु
सम्बोधन	धातृ-धातः		

कर्तृ doer, author, दातृ giver, ज्ञातृ knower, जेतृ conqueror इत्यादि ऋकारान्त शब्दों के रूप भी ऐसे ही होते हैं।

ए-ऐ-ओ-औकारान्त शब्द।

ए-ऐकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों को इकारान्त तथा ओ-औकारान्त शब्दों को उकारान्त करके क्रम से 'वारि' तथा 'मधु' शब्दों के समान रूप बनाते हैं। यथा, प्रै (one who has great wealth)—(१-२) प्रि, प्रिणी, प्रीणि; (३) प्रिणा, प्रराभ्याम्, प्रराभिः (see रै)। प्रद्यो तथा सुनौ के रूप 'मधु' के समान बना लो।

Exercise—9

1. Decline:—नर, हरि, सखि, पति, नरपति, शम्भु, सेनानी, हाहा, सुश्री, सुलू, हूहू, कर्तृ, नृ, गन्तृ, गो, तारा, बुद्धि, जननी, तनु, स्वसृ, मातृ, द्यो, नौ, कमल, दारु, शुचि, सुधी and कर्तृ।

2. Decline पति, सुधी, स्त्री, धी, नृ, वारि and प्रै in 2nd, 6th and 7th cases.

3. Translate into Hindi or English:—मधुराणि फलानि । काष्ठमये आसने । फलन्नाय भोजनम् । उद्यानात् पुष्पाणि आनय । दशरथस्य षड् अपत्यानि आसन् । कङ्कणाभ्यां स्वर्णं क्रीतवान् । करपत्रेण विदार्यमाणं काष्ठद्वयमस्ति । उद्यानात् कतिपयानि आम्राणि आनय । गङ्गायाः स्वादु वारि पिबामि । वारिणि सुन्दराणि कमलानि शोभन्ते । भ्रमराः पुष्पेभ्यो मधूनि गृह्णन्ति । चौरा ब्राह्मणस्य सर्वाणि वस्तूनि चोरयन्ति ।

4. Translate into Sanskrit—(a) लकड़ी के घर में । वन के मीठे फल । समुद्र का जल खारा होता है । वृक्ष के सूखे पत्ते पृथिवी पर गिरते हैं (पतन्ति) । मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग देता है (त्यजति) । आम के फल मीठे होते हैं (भवन्ति) । बालक की असफलता का कारण क्या है । रामचन्द्र १४ वर्ष वन में थे (आसीत्) । घर में अन्न की राशि है । रथ ४ पहियों से चलता है (चलति) ।

(b) To the window. Ghee for the friend. The king gave (दत्तवान्) him poison. Beggars beg (याचन्ते) from door to door. Bees gather (संगृह्णन्ति) honey from flowers. Boys will learn (शिक्षिष्यन्ते) literature from the teacher. All subject are satisfied with the rule of Ram. Shyama is blind of one eye. The heart of Hari is full of joy. Contentment is the source of happiness.

5. Correct:—आम्रस्य फलान् खादन्ति लोकाः । प्रकृतेः सौन्दर्येन सन्तुष्टाः लोकाः । बहवो कमलाः शोभन्ते । पद्मो भाति सरोवरे । बालिकाया अक्षिणे पीडा वर्तते । मया वारी स्नाति बालकः । मधौ मधुरतास्ति ।

व्यञ्जनान्त शब्द ।

व्यञ्जनान्त शब्दों में प्रायः सन्धि-नियमानुसार विभक्तियों के योग करने ही से रूप बन जाते हैं ।

पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ।

व्यञ्जनान्त शब्दों में पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के विचार से विभक्तियों के लगाने में कोई भेद नहीं है ।

क् ख् ग् घ्, ट् ठ् ड् ढ्, त् थ् द् ध्, प् फ् ब् भ्—अन वाले शब्दों में प्रायः प्रथमा की स् विभक्ति का लोप होक शब्द के अन्तिम वर्ण के स्थान में अपने वर्ग का प्रथम वर्ण ह जाता है। स्वरादि विभक्तियों में कोई परिवर्तन नहीं होत पर व्यञ्जनादि विभक्तियों में सन्धि-नियमानुसार अपने वर्ग क प्रथम या तृतीय वर्ण हो जाता है। यथा, सर्वशक्-ग्, सर्व शकौ। सर्वशग्भ्याम् सर्वशक्षु, चित्रलिग्-चित्रलिक् चित्रलिखौ चित्रलिग्भ्याम्, चित्रलिक्षु इत्यादि।

चकारान्त-पुंलिङ्ग-जलमुच् (Cloud)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा सम्बोधन	जलमुक्	जलमुचौ	जलमुचः
द्वितीया	जलमुचम्	जलमुचौ	जलमुचः
तृतीया	जलमुचा	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भिः
चतुर्थी	जलमुचे	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
पञ्चमी	जलमुचः	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
षष्ठी	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचाम्
सप्तमी	जलमुचि	जलमुचोः	जलमुक्षु

वर्षामुच्-वारिमुच् (cloud) इत्यादि सब पुंलिङ्ग तथा त्वच् Skin, वाच् Speech, शुच् Sorrow, इत्यादि सब स्त्री-लिङ्ग शब्दों के रूप 'जलमुच्' के समान होते हैं।

पर उदच् north, northern; तिर्यच् bird, प्रत्यच् west, western इत्यादि अञ्च् (to go) धातु से बने शब्द द्वितीया के बहुवचन तथा आगे की स्वरादि विभक्तियों में क्रम से उदीच्; तिरश्च्, प्रतीच् इत्यादि हो जाते हैं। फिर 'प्राच्' के सदृश इनके रूप होते हैं।

प्राक्-(East, eastern)

प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः
प्राञ्चम्	"	प्राचः
प्राचा	प्राग्भ्याम्	प्राग्भिः
प्राचे	"	प्राग्भ्यः
प्राचः	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
"	प्राचोः	प्राचाम्
प्राचि	"	प्राक्षु
प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः

स्त्रीलिङ्ग में प्राच्, उदीच् इत्यादि के रूप प्राची इत्यादि ान्त हो कर 'नदी' के समान होते हैं।

जकारान्त पुंल्लिङ्ग वणिज्-(Merchant)

, सम्बोधन वणिक्	वणिजौ	वणिजः
वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु

) ऋत्विज् family priest; बलिभुज् fire, भिषज् cian, भूभुज् king, भृतिभुज् Servant, हुतभुज् त्यादि सब पुंल्लिङ्ग तथा रुज् disease, स्रज् garland सब स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

(२) पर देवराज् Indra, परिव्राज् mendi[c] विराज् splendour, विश्वसृज् creator of the univ[erse] इत्यादि 'सम्राज्' के समान होते हैं; पर विश्वसृज् के 'वणिज्' के समान भी होते हैं।

सम्राज् (Emperor)

प्रथमा, सम्बो०	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भि[ः]
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्य[ः]
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्य[ः]
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु

तकारान्त-पुंल्लिङ्ग-भूभृत् (King, mountain)

प्रथमा, सम्बो०	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु

अत् (शतृ), स्यत् (स्यतृ), मत् (मतुप्), वत् (वतुप्) [...] तवत् (क्तवतु) प्रत्ययान्त और महत् को छोड़कर इन्द्रजित् conquer[or] of Indra, कर्मकृत् workman, पतत् wing, तनूनपात् fir[e]

पापकृत् one who has committed sin, बृहत् large, मरुत् air, महीक्षित् king, महीभृत् mountain, विपश्चित् learned, विश्वजित् conquering all, शशभृत् moon, हरित् green, इत्यादि सब पुंल्लिङ्ग तथा क्षुत् sneezing, तडित् lightning, पृत् army, योषित् woman, विद्युत् lightning, सरित् river इत्यादि सब स्त्रीलिङ्ग तकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

(१) अत् व स्यत् प्रत्ययान्त।

अत् प्रत्ययान्त–धावत्-running.

१	धावन्	धावन्तौ	धावन्तः	४	धावते	धावद्भ्याम्	धावद्भ्यः
सम्बो०	,,	,,	,,	५	धावतः	,,	,,
२	धावन्तम्	,,	धावतः	६	,,	धावतोः	धावताम्
३	धावता	धावद्भ्याम्	धावद्भिः	७	धावति	,,	धावत्सु

इच्छत् wishing, कुर्वत् doing, गच्छत् going, गायत् singing, गृह्णत् taking, तिष्ठत् standing, द्विषत् hating, ध्यायत् meditating, नृत्यत् dancing, पश्यत् seeing, पिबत् drinking, ब्रुवत् speaking, भवत् being, इत्यादि शतृ प्रत्ययान्त तथा करिष्यत् about to do, गमिष्यत् about to go, दास्यत् about to give, यास्यत् about to go, स्थास्यत् about to stand इत्यादि स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'धावत्' के समान होते हैं।

पर जाग्रत् being awake, शासत् governing, ददत् giving, दधत् holding, बिभ्रत् possessing इत्यादि के रूप 'भूभृत्' के समान होते हैं।

(२) मत्, वत्, तवत् प्रत्ययान्त।

मत् प्रत्ययान्त—श्रीमत् Prosperous,

१	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः	४	श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
सं०	श्रीमन्	,,	,,	५	श्रीमतः	,,	,,
२	श्रीमन्तम्	,,	श्रीमतः	६	,,	श्रीमतोः	श्रीमताम्
३	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः	७	श्रीमति	,,	श्रीमत्सु

अंशुमत् sun, आयुष्मत् long-lived, ज्योतिष्मत् sun, दीप्तिमत् possessed of majestic lustre, धनुष्मत् archer, धीमत् wise, भानुमत् luminous, मतिमत्-बुद्धिमत् wise, मूर्तिमत् having form, भानुमत् mountain, हनुमत् (हनुमान्) इत्यादि मत् प्रत्ययान्त; इयत् this much, एतावत् so much, कियत् how much, ज्ञानवत्-प्रज्ञावत् wise, तावत् as much, नभस्वत् air, भगवत् adorable, भवत् (युष्मदर्थे) thou, भास्वत् shining, यावत् as much, लज्जावत् bashful, बलवत् strong, विद्यावत् learned, विवस्वत् sun, इत्यादि वत् प्रत्ययान्त तथा उक्तवत् said, कृतवत् done, गतवत् gone, जितवत् conquered, ज्ञातवत् known, दृष्टवत् seen, श्रुतवत् heard, स्थितवत् stayed इत्यादि तवत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'श्रीमत्' के समान होते हैं।

महत्-Great.

१.	महान्	महान्तौ	महान्तः	२.	महान्तम् महान्तौ	महतः
सं०	महन्	,,	,,		शेष रूप 'श्रीमत्' के समान।	

स्त्रीलिङ्ग—में अत्, स्यत्, मत्, वत्, तवत् प्रत्ययान्त शब्दों के परे ई जोड़कर (स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय में देखो) 'नदी' के समान रूप बनाये जाते हैं।

दकारान्त—पुंल्लिङ्ग—सुहृद्-Friend.

द्-सुहृत्	सुहृदौ	सुहृदः	४. सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
"	"	"	५. सुहृदः	"	"
दम्	"	"	६. "	सुहृदोः	सुहृदाम्
दा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः	सुहृदि	"	सुहृत्सु

द्भिद् sprouting, गोत्रभिद् Indra, त्रिदिवद् god, निरापद् perous, पद् foot, मर्मविद् sage, सभासद् member of ssembly इत्यादि पुंल्लिङ्ग तथा आपद् danger, दृषद् stone, assembly, विपद् danger, शरद् autumn, संसद् ably, सम्पद् prosperity इत्यादि स्त्रीलिङ्ग दकारान्त शब्दों 'सुहृद्' के समान होते हैं ।

धकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-वीरुध्-Creeper.

-वीरुत्	वीरुधौ	वीरुधः	४ वीरुधे	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
"	"	"	५ वीरुधः	"	"
म्	"	"	६ "	वीरुधोः	वीरुधाम्
।	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भिः	७ वीरुधि	"	वीरुत्सु

र्मबुध् knowing the law, सुयुध् fighting well, पुंल्लिङ्ग तथा क्षुध् hunger, युध् war, समिध् fuel, स्त्रीलिङ्ग धकारान्त शब्दों के रूप 'वीरुध्' के समान ।

Exercise—10.

ranslate into Hindi or English- सुयुधः । आपदम् । वि मातुर्वर्तन्ते । [illegible] कार्यं न्यूहति । दृषद्भिर्जलं [illegible] क्षुधया राक्षसेन पीडिता देवाः । विपत्तिकाले सुहृदमनं [illegible] । [illegible] विकसति । धर्मयुधः सन्ति विपत्तिषु । विपत्सु अशक्ता-

गच्छति । विद्यावन्तो ज्ञानवत आदरं कुर्व्वन्ति । बालकः नृत्यन् गृहं प्रविशति
कार्य्यं करिष्यन् ग्रामं गमिष्यामि । परिपदि द्विविपदः वसन्ते । शरदि आका
निर्म्मलं भवति । विपदि महाविद्वोऽपि दुःखिता भवन्ति ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) वचन से । राजा का । इ
देवताओं का राजा है । राजा को माला देता है । वणिक् व्यापार करता है
मेघ में बिजली चमकती है (प्रकाशते) । नदियों में गङ्गा श्रेष्ठ है । मार्ग
गाते हुए आता है । ईश्वर का ध्यान करते हुए बोला (अवदत्) । ज
सूर्य्य निकलता है (उदेति) तब अन्धेरा दूर हो जाता है (नश्यति) । क
ने कहा था (अकथयत्) । राजा ने शत्रुओं को जीता । राजा ने अनेक श
को मारा (हतवान्) । लड़के ने एक बाघ देखा (अपश्यत्) । सभा
पण्डित लोग आये हुए हैं (आगताः) ।

(b) In the east, Vashishtha was the priest of Ragh
family. Servants serve (सेवन्ते) their king and the kin
protects (रक्षति) them. The girl made (ग्रथितवती) a ga
land and gave (दत्तवती) it to her younger brother. Garu
has large wings. There are many green leaves on th
tree. Women made (ग्रथितवत्यः) garlands of flowers. A
intelligent boy learns (शिक्षते) his lesson. The sun gives u
heat and light. News is heard (श्रूयते) by every one in th
assembly. One should have (अवलम्बनीयं) patience in dange

3. Correct:— भूभृतस्य आज्ञा माननीया । सम्राजः प्रजानां दु
गातुं रात्रे भ्रमन्ति । सम्राजस्य परिषदे मे बहवो सुहृदाः सन्ति । ब्रह्मि
दुग्धभुजं धूर्त प्रक्षिपति । राजन् जित्वा आगच्छन्तं सेनापतिं लोकाः स
भूषयन्ति । शास्त्रज्ञः अपि भगवतस्य आज्ञां न संरक्षते । सम्पदे विपदे
धर्म्मानुगाः धर्मं न त्यजन्ति । द्विविद्वानां परिषदे गोष्ठिः भवति ।

नकारान्त शब्द ।

(१) इन् भागान्त-पुंलिङ्ग—गुणिन् (Qualified)

१.	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः	४.	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
सम्बो.	गुणिन्	,,	,,	५.	गुणिनः	,,	,,
२.	गुणिनम्	,,	,,	६.	,,	गुणिनोः	गुणिनाम्
३.	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः	७.	गुणिनि	,,	गुणिषु

पथिन्, मथिन्, ऋभुक्षिन् को छोड़कर अर्थिन् one who asks anything, आत्मघातिन् one who commits suicide, एकाकिन् alone, कञ्चुकिन् chamberlain, करिन् elephant, कुटुम्बिन् house holder, कुशलिन् happy, केशरिन् lion, गृहिन् householder, चक्रवर्तिन् sovereign ruler, ज्ञानिन् wise, तपस्विन् ascetic, तेजस्विन् strong, दूरदर्शिन् prophet, देहिन् one who has a body, द्वेषिन् enemy, धनिन् rich man, धन्विन् an archer, पक्षिन् bird, प्राणिन् animal, बलिन् strong, मनीषिन् wise man, मनोहारिन् pleasing, मन्त्रिन् minister, मेधाविन् intelligent, रोगिन् sickly, वाग्मिन् eloquent speaker, वाजिन् horse, विषयिन् sensualist, वैरिन् enemy, शिखिन् peacock, साक्षिन् witness, स्वामिन् lord इत्यादि इन् भागान्त शब्दों के रूप 'गुणिन्' के समान होते हैं।

पथिन् (Path, way)

१.	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः	४.	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
सम्बो.	,,	,,	,,				,,
२.	पन्थानम्	,,	पथः				पथाम्
३.	पथा	पथिभ्याम्					पथिषु

मथिन् churning stick शब्द का रूप 'पथिन्' के समान होता है। ऋभुक्षिन् Indra के रूप प्रथमा में ऋभुक्षा, ऋभुक्षाणौ, ऋभुक्षाणः, द्वितीया में ऋभुक्षाणम्, ऋभुक्षाणौ, तथा शेष रूप 'पथिन्' के समान होते हैं। पथिन् शब्द समास होने पर अकारान्त होता है। यथा, सुपथः, सुपथौ, सुपथाः। पथ शब्द अकारान्त भी होता है। स्त्रीलिङ्ग में इन् भागान्त शब्दों के परे ई लगा कर 'नदी' के समान रूप बनाये जाते हैं।

(२) अन् भागान्त पुंल्लिङ्ग-लघिमन् (Lightness)

प्रथमा	लघिमा	लघिमानौ	लघिमानः
द्वितीया	लघिमानम्	लघिमानौ	लघिम्नः
तृतीया	लघिम्ना	लघिमभ्याम्	लघिमभिः
चतुर्थी	लघिम्ने	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
पञ्चमी	लघिम्नः	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
षष्ठी	लघिम्नः	लघिम्नोः	लघिम्नाम्
सप्तमी	लघिम्नि, लघिमनि	लघिम्नोः	लघिमसु
सम्बोधन	लघिमन्	लघिमानौ	लघिमानः

(क) अणिमन् subtility, अर्यमन् the sun, गरिमन् heaviness, तक्षन् carpenter, द्रढिमन् hardness, प्रथिमन् greatness, प्रेमन् affection, मज्जन् marrow, मूर्द्धन् head, सुनामन् auspicious-named इत्यादि पुंल्लिङ्ग तथा पामन् scab, सीमन् boundary इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'लघिमन्' के समान होते हैं।

आत्मन् Soul

१	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	४	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
स०	आत्मन्	,,	,,	५	आत्मनः	,,	,,
२	आत्मानम्	,,	आत्मनः	६	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
३	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	७	आत्मनि	,,	आत्मसु

(ख) पुंलिङ्ग अर्वन् horse, अश्मन् stone, कृष्णवर्त्मन् fire, द्विजन्मन् twice-born, यज्वन् sacrificer, यक्ष्मन् consumption, ब्रह्मन् Brahma, सुशर्मन् इत्यादि जिन शब्दों के अन् का अकार म् या व् संयुक्त वर्ण से मिला हो उनके रूप 'आत्मन्' के समान होते हैं।

	राजन्-king			युवन्-young		
१	राजा	राजानौ	राजानः	युवा	युवानौ	युवानः
सं०	राजन्	,,	,,	युवन्	,,	,,
२	राजानम्	,,	राज्ञः	युवानम्	,,	यूनः
३	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
४	राज्ञे	,,	राजभ्यः	यूने	,,	युवभ्यः
५	राज्ञः	,,	,,	यूनः	,,	,,
६	,,	राज्ञोः	राज्ञाम्	,,	यूनोः	यूनाम्
७	राजनि-राज्ञि	,,	राजसु	यूनि	,,	युवसु

	मघवन् Indra			श्वन् dog		
१	मघवा	मघवानौ	मघवानः	श्वा	श्वानौ	श्वानः
सं०	मघवन्	मघवानौ	मघवानः	श्वन्	श्वानौ	श्वानः
२	मघवानम्	,,	मघोनः	श्वानम्	,,	शुनः
३	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
४	मघोने	,,	मघवभ्यः	शुने	,,	श्वभ्यः
५	मघोनः	,,	,,	शुनः	,,	,,
६	,,	मघोनोः	मघोनाम्	,,	शुनोः	शुनाम्
७	मघोनि	,,	मघवसु	शुनि	,,	श्वसु

(३) हन् भागान्त-पुंल्लिङ्ग-वृत्रहन्—Indra

१	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः	४ वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
स०	वृत्रहन्	,,	,,	५ वृत्रघ्नः	,,	,,
२	वृत्रहणम्	,,	वृत्रघ्नः	६ ,,	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
३	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः	७ वृत्रघ्नि-वृत्रहणि	,,	वृत्रहसु

पूषन्, अर्य्यमन् और शत्रुहन् आदि सब हन् भागान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं, केवल पूषन् के सप्तमी-एकवचन में पूष्णि, पूषणि, और पूषि तीन रूप होते हैं।

पकारान्त स्त्रीलिंग-अप् water नित्य बहुवचनान्त।

आपः अपः अद्भिः अद्भ्यः अद्भ्यः अपाम् अप्सु

पकारान्त शब्द बहुत कम हैं। अप् शब्द समासान्त होने पर अकारान्त होता है; यथा; विमलापं सरः।

भकारान्त-स्त्रीलिंग—ककुभ् Direction

१	ककुप्	ककुभौ	ककुभः	४ ककुभे	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्यः
स०	,,	,,	,,	५ ककुभः	,,	,,
२	ककुभम्	,,	,,	६ ,,	ककुभोः	ककुभाम्
३	ककुभा	ककुब्भ्याम्	ककुब्भिः	७ ककुभि	,,	ककुप्सु

स्त्रीलिङ्ग-अनुष्टुभ्, त्रिष्टुभ् forms of metre इत्यादि तथा पुंलिंग भकारान्त शब्दों के रूप 'ककुभ्' के समान होते हैं। पर भकारान्त पुंलिङ्ग शब्द बहुत कम हैं।

प्रशाम्-Tranquil.

अप्रत्ययादि विभक्तियों में म् का न् हो जाता है। यथा, प्रशान्, प्रशामौ, प्रशामः, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्सु।

रकारान्त स्त्रीलिङ्ग-गिर् Speech.

गिरौ	गिरः	४	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
,,	,,	५	गिरः	,,	,,
र् ,,	,,	६	,,	गिरोः	गिराम्
गीर्भ्याम्	गीर्भिः	७	गिरि	,,	गीर्षु

-स्त्रीलिङ्ग धुर् the forepart of a carriage, धुर्
पादि के रूप ऐसे ही होते हैं, पर व्यञ्जनादि विभक्तियों
ऊ होता है। यथा, धूः, धुरौ, धुरः, धुरम्, धूर्भिः
पुंलिङ्ग शब्द बहुत कम हैं।
द्वार् door में विभक्तियों के जोड़ देने से रूप बनते
, द्वाः, द्वारौ, द्वार्भ्याम्, द्वार्षु।

वकारान्त स्त्रीलिङ्ग-दिव्-Heaven.

दिवौ	दिवः	४	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
,,	,,	५	दिवः	,,	,,
म् ,,	,,	६	,,	दिवोः	दिवाम्
द्युभ्याम्	द्युभिः	७	दिवि	,,	द्युषु

शकारान्त पुंलिङ्ग-विश् Vaishya.

विशौ	विशः	४	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
,,	,,	५	विशः	,,	,,
,,	,,	६	,,	विशोः	विशाम्
विड्भ्याम्	विड्भिः	७	विशि	,,	विट्सु

ight, विपाश् name ... है स्त्रीलिङ्ग
शब्दों के रूप ऐसे ही

दिश्-direction.

१	दिक्	दिशौ	दिशः	४	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
स०	,,	,,	,,	५	दिशः	,,	,,
२	दिशम्	,,	,,	६	,,	दिशोः	दिशाम्
३	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	७	दिशि	,,	दिक्षु

दृश् looker, स्पृश् who touches, तथा इन से बने हुए ईदृश् such, एतादृश् such, कीदृश् what like, तादृश् such like, भवादृश् like you, मर्म्मदृश् Sharp इत्यादि पुंल्लिङ्ग तथा सुदृश् pretty woman, मृगदृश् deer-eyed woman, इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'दिश्' के समान होते हैं।

पुरोडाश् Sacrificial food

१	पुरोडाः	पुरोडाशौ	पुरोडाशः	४	पुरोडाशे	पुरोडोभ्याम्	पुरोडोभ्यः
स०	,,	,,	,,	५	पुरोडाशः	,,	,,
२	पुरोडाशम्	,,	,,	६	,,	पुरोडाशोः	पुरोडाशाम्
३	पुरोडाशा	पुरोडोभ्याम्	पुरोडोभिः	७	पुरोडाशि	,,	पुरोडःसु

षकारान्त शब्द।

अतिरुष् Very angry, द्विष् enemy, धर्म्मद्विष् wicked, चिद्विष् enemy, इत्यादि पुंल्लिङ्ग तथा त्विष् light, splendour, तृष् thirst, रुष् anger, विप्रुष् drop of water, विष् Virgin, ordure इत्यादि स्त्रीलिङ्ग षकारान्त शब्दों के रूप 'दिश्' के समान होते हैं। यथा, द्विष्-द्विट्, द्विषौ, द्विड्भ्याम्, द्विट्सु इत्यादि।

सकारान्त-पुंल्लिङ्ग-वेधस् Creator.

१. वेधाः	वेधसौ	वेधसः	४ वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
स० वेधः	,,	,,	५ वेधसः	,,	,,
२. वेधसम्	,,	,,	६ ,,	वेधसोः	वेधसाम्
३. वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः	७ वेधसि	,,	वेधःसु

दोस्, विद्वस्, लघीयस्, अभिमवस्, आशिस्, पुमस् इत्यादि कई शब्दों को छोड़कर चन्द्रमस् moon, दिवौकस् god, दुर्मनस् ill-minded प्रचेतस् (वरुण), विमनस् ill-minded, विहायस् sky इत्यादि प्रायः सब पुंल्लिङ्ग तथा अप्सरस् nymph, सुमनस् flower इत्यादि प्रायः सब स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'वेधस्' के समान होते हैं। पर उशनस् (शुक्राचार्य) का प्रथमा व सम्बोधन के एकवचन में उशन, उशनन्, उशनः तीन रूप होते हैं।

पुंलिग-दोस् Arm

१मा सम्बो,	दोः	दोषौ	दोषः
२या	दोषम्	दोषौ	दोषः, दोष्णः
३या	दोषा, दोष्णा	दोर्भ्याम्, दोषभ्याम्	दोर्भिः, दोषभिः
४र्थी	दोषे, दोष्णे	,, ,,	दोर्भ्यः, दोषभ्यः
५मी	दोषः, दोष्णः	,, ,,	,, ,,
६ठी	,, ,,	दोषोः, दोष्णोः	दोषाम् दोष्णाम्
७मी	दोषि, दोष्णि	,, ,,	दोःषु दोषसु

पुंल्लिग — विद्वस्- Learned man.

१ विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः	४ विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
स० विद्वन्	,,	,,	५ विदुषः	,,	,,
२ विद्वांसम्	,,	विदुषः	६ ,,	विदुषोः	विदुषाम्
३ विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः	७ विदुषि	,,	विद्वत्सु

स्त्रीलिङ्ग में 'विदुषी' होकर नदी के समान रूप होता है।

पुंल्लिङ्ग-लघीयस् Lighter

१ लघीयान् लघीयांसौ लघीयांसः ४ लघीयसे लघीयोभ्याम् लघीयोभ्यः
सं० लघीयन् ,, ,, ५ लघीयसः ,, ,,
२ लघीयांसम् ,, लघीयसः ६ ,, लघीयसोः लघीयसाम्
३ लघीयसा लघीयोभ्याम् लघीयोभिः ७ लघीयसि ,, लघीयःसु

कनीयस् younger, गरीयस् heavier, ज्यायस् elder, द्रढीयस् harder, प्रेयस् dearer, यवीयस् younger, वरीयस् larger, श्रेयस् better, भूयस् more [illegible] इत्यादि ईयस् प्रत्ययान्त सब पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'लघीयस्' के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में 'लघीयसी' होकर नदी के समान रूप होते हैं।

पुंल्लिङ्ग-जग्मिवस् One who has gone

१ जग्मिवान् जग्मिवांसौ जग्मिवांसः ४ जग्मुषे जग्मिवद्भ्याम् जग्मिवद्भ्यः
सं० जग्मिवन् ,, ,, ५ जग्मुषः ,, ,,
२ जग्मिवांसम् ,, जग्मुषः ६ ,, जग्मुषोः जग्मुषाम्
३ जग्मुषा जग्मिवद्भ्याम् जग्मिवद्भिः ७ जग्मुषि ,, जग्मिवत्सु

तस्थिवस् staying, निषेदिवस् sitting, पेचिवस् cooking, इत्यादि वस् प्रत्ययान्त सब पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग-आशिस् Blessing

१ आशीः आशिषौ आशिषः ४ आशिषे आशीर्भ्याम् आशीर्भ्यः
सं० ,, ,, ,, ५ आशिषः ,, ,,
२ आशिषम् ,, ,, ६ ,, आशिषोः आशिषाम्
३ आशिषा आशीर्भ्याम् आशीर्भिः ७ आशिषि ,, आशीःषु

पुंलिङ्ग-पुमस्-Man, Male.

१	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः	४	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
सं०	पुमन्	"	"	५	पुंसः	"	"
२	पुंमस्	"	पुंसः	६	"	पुंसोः	पुंसाम्
३	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः	७	पुंसि	"	पुंसु

स्त्रीलिङ्ग-भास् Light.

१	भाः	भासौ	भासः	५	भासः	भाभ्याम्	भाभ्यः
२	भासम्	"	"	६	"	भासोः	भासाम्
३	भासा	भाभ्याम्	भाभिः	७	भासि	"	भासु
४	भासे	"	भाभ्य.	स.	भाः	भासौ	भासः

हकारान्त-पुंलिङ्ग–मधुलिह्- Honey-bee.

१	मधुलिट्	मधुलिहौ	मधुलिहः	४	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
सं०	"	"	"	५	मधुलिहः	"	"
२	मधुलिहम्	"	"	६	"	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
३	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः	७	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु

उपानह्, ममदुह्, इत्यादि कई शब्दों को छोड़कर तुरासाह् Indra इत्यादि सब पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग हकारान्त शब्दों के रूप 'मधुलिह्' के समान होते हैं।

स्त्रीलिंग उपानह् Shoe

१	उपानत्	उपानहौ	उपानहः	४	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
सं०	"	"	"	५	उपानहः	"	"
२	उपानहम्	"	"	६	"	उपानहोः	उपानहाम्
३	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः	७	उपानहि	"	उपानत्सु

पुंलिंग अनडुह् Bull

१ अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः	५ अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
२ अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः	६ ,,	अनडुहोः	अनडुहाम् ।
३ अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः	७ अनडुहि	,,	अनडुत्सु
४ अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः	सं० अनड्वन्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः

विश्ववाह्

१ विश्ववाट्-ड्	विश्ववाहौ	विश्ववाहः	५ विश्वौहः	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भ्यः
२ विश्ववाहम्	विश्ववाहौ	विश्वौहः	६ विश्वौहः	विश्वौहोः	विश्वौहाम्
३ विश्वौहा	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भिः	७ विश्वौहि	विश्वौहोः	विश्ववाट्सु
४ विश्वौहे	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भ्यः	सं विश्ववाट्-ड्	विश्ववाहौ	विश्ववाहः

दुह्

१ धुक्-ग्	दुहौ	दुहः	५ दुहः	धुग्भ्याम्	धुग्भ्यः
२ दुहम्	दुहौ	दुहः	६ दुहः	दुहोः	दुहाम्
३ दुहा	धुग्भ्याम्	धुग्भिः	७ दुहि	दुहोः	धुक्षु
४ दुहे	धुग्भ्याम्	धुग्भ्यः	सं० धुक्-ग्	दुहौ	दुहः

Exercise 11

1. Decline ज्ञानिन्, स्वामिन्, मथिन्, राजन्, आत्मन्, ब्रह्मन्, मघवन्, श्वन्, दिश्, ईदृश्, मर्मस्पृश्, धर्मद्विष्, चन्द्रमस्, उशनस्, [illegible], मधुलिह् and आशिस् ।

2. Decline तेजस्विन्, सुधर्मन्, युवन्, पूषन्, ककुभ्,

प्रशाम्, गिर्, पुर्, दिव्, पुरोडाश्, लघीयस्, अप्सरस्, सुमनस्, भास्, उपानह् and अनडुह् in 3rd to 7th cases & सम्बोधन।

3. Translate into Hindi or English:— गुणी गुणिनां गुणं वेत्ति। लोके धनाय धनिनां आदरो भवति। मनीषिणः सर्वत्र सर्वैः आद्रियन्ते। राजा मेधाविनो मन्त्रिणः सहायेन वैरिणं हतवान्। पथि आत्मनः पुत्रं पश्यति। युवा पुरुषः वैरिणां विनाशाय मघोनः पूजां करोति। दिवि दिवौकसः पुरोडाशं भुञ्जन्ति। प्रचेतस आशिषा पुंसां सृष्टिर्भवति। मधुलिहः पुष्पेभ्यो मधु आनयन्ति। उपानद्भिः शरीरिणां पादानां रक्षा भवति। भारतवर्षेऽनडुहः प्रतिष्ठा पूजा च क्रियेते।

4. Translate the following into Sanskrit:— (a) माता पिता से भी श्रेष्ठ है। स्वामी की आज्ञा से घोड़े पर चढ़ता है (आरोहति)। कूएँ पर मोर नाचते हैं (नृत्यन्ति)। शिव के मस्तक पर चन्द्रमा की कला शोभती है (शोभते)। कुत्ते घर की रक्षा करते हैं (संरक्षन्ति)। नगर में राजा की आज्ञा का पालन होता है। अपने राजा की आज्ञा से सेवक सब दिशाओं में गये (अगच्छन्)। शुक्राचार्य्य राक्षसों के गुरु हैं। छोटे भाई को फल देता है। ब्रह्मा की सृष्टि में ऐसा विद्वान् नहीं है। वैश्य धन से देश की सहायता करते हैं (साहाय्यं कुर्वन्ति)। चोर रात में अकेले भी चोरी करते हैं (चोरयन्ति)।

(b) The lion kills (हन्ति) elephants. In the town there is a good garden of mango trees. Two ascetics are going (गच्छतः) to the mountain. Gods and demons churned (अमथ्नन्) the sea with a churning stick. Palaces are made (निर्मितानि) with stones. Boys heard (श्रुतवन्तः) such instruction from the wise man. Brahma has made (असृजत्) the creation. The elder brother loves (स्निह्यति) his youngers. Gods descended (अवातरन्) from the heaven to the earth.

5. Correct:— मेधावीनां वचनस्। साक्षिनस्य शिरेण। राजास्य मूर्द्धे मुकुटं अस्ति। पथे युवनः सन्ति। वृत्रहणा हतः। मघवानः अपं। ददाति। रचनै रक्ष्यते। दिवे दिवौकसः सन्ति। देशाय विदुस्य धनं।

[illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible] भवति ।

स्त्रीलिङ्ग ।

व्यञ्जनान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं, पर प्रथमा और द्वितीया में अन्तर पड़ता है। अतएव केवल प्रथमा और द्वितीया ही में रूप दिखाये जाते हैं। पर जहाँ पुंल्लिङ्ग के साथ कुछ भी मेल नहीं है वहाँ सब विभक्तियों के रूप दिखाये जायँगे ।

चकारान्त-प्राच्-Eastern, prior.

प्रथमा, सम्बोधन	प्राक्	प्राची	प्राञ्चि
द्वितीया	प्राक्	प्राञ्ची	प्राञ्चि

शेष विभक्तियों में 'अम्मुच्' के समान रूप होते हैं। प्रत्यच्, तिर्य्यच् और उदच् को छोड़ कर सब चकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'प्राच्' के समान होते हैं ।

प्रत्यच्-Western.

प्रथमा, सम्बोधन	प्रत्यक्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि
द्वितीया	प्रत्यक्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि

तिर्य्यच्-An irrational animal.

प्रथमा, सम्बोधन	तिर्य्यक्	तिरश्ची	तिर्य्यञ्चि
द्वितीया	तिर्य्यक्	तिरश्ची	तिर्य्यञ्चि

उदच्-Northern.

[illegible], सम्बोधन	उदक्	उदीची	उदञ्चि
[illegible]या	उदक्	उदीची	उदञ्चि

जकारान्त-असृज्-Blood.

प्रथमा, सम्बो०	असृक्	असृजी	असृञ्जि
द्वितीया	असृक्	असृजी	असृञ्जि

शेष रूप 'वणिज्' के समान होते हैं। सब जकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

N. B. द्वितीया बहुवचन तथा आगे की विभक्तियों में असृज् का 'असन्' भी हो जाता है। यथा, असानि। ३—अस्ना, असभ्याम्, असभिः। ४ अस्ने, असभ्याम्, असभ्यः। ५ अस्नः, असभ्याम्, असभ्यः ६—अस्नः, अस्नोः, अस्नाम्। ७—अस्नि, असनि, अस्नोः, अससु।

तकारान्त-जगत्-World.

प्रथमा, सम्बोधन	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति

शेष रूप 'धावत्' के समान होते हैं। महत् और अत्—प्रत्ययान्त कुछ शब्दों को छोड़ कर सब तकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं; पर स्यत्-प्रत्ययान्त शब्दों की प्रथमा व द्वितीया के द्विवचन में ती के स्थान में विकल्प से न्ती होता है। यथा, भविष्यन्ती, भविष्यती।

महत्-Great.

प्रथमा, सम्बोधन	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	महत्	महती	महान्ति

अत् प्रत्ययान्त(१)-गच्छत् Going

प्रथमा, सम्बोधन	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति
द्वितीया	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति

भ्वादि और दिवादि गणीय धातुओं से बने अत् (शतृ) प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'गच्छत्' के समान होते हैं।

२-इच्छत्-Wishing.

प्रथमा, सम्बोधन	इच्छत्	इच्छन्ती, इच्छती	इच्छन्ति
द्वितीया	इच्छत्	इच्छन्ती, इच्छती	इच्छन्ति

तुदादि और दरिद्रा भिन्न आकारान्त प्रभृति गणों की धातुओं से बने अत् (शतृ) प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'इच्छत्' के समान होते हैं। दरिद्रत् का रूप 'ददत्' के समान होता है।

३-ददत्-Giving

प्रथमा, सम्बोधन	ददत्	ददती	ददन्ति, ददति
द्वितीया	ददत्	ददती	ददन्ति, द

अभ्यस्त (जिस का द्वित्व होता है) धातुओं से बने प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'ददत्' के समान होते हैं।

४ इनके अतिरिक्त अत्-प्रत्ययान्त सब शब्दों के 'जगत्' के समान होते हैं।

N. B. द्वितीया-बहुवचन तथा आगे की विभक्तियों में यकृत् का 'यकन्' भी हो जाता है और 'अमन्' के समान रूप होते हैं।

दकारान्त-हृद्-Heart

प्रथमा, सम्बो०	हृत्	हृदी	हृ
द्वितीया	हृत्	हृदी	हृ

शेष रूप 'सुहृद्' के समान होते हैं। सब दकारान्त क्ली लिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

नकारान्त।

नकारान्त शब्द दो प्रकार के होते हैं, अन्-भागान्त, इन

(१) नामन्-Name

प्रथमा	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
सम्बोधन	नाम, नामन्	नाम्नी, नामनी	नामानि

कर्म्मन् इत्यादि और अहन् शब्दों को छोड़कर वस्तिमन् the bladder, शर्मन् happiness, धामन् house, lustre; प्रेमन् affection, लोमन् hair, वेमन् loom, व्योमन् sky, सामन् Samaveda हेमन् इत्यादि सब अन्-अन्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

कर्म्मन्-Action.

प्रथमा	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
द्वितीया	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
सम्बोधन	कर्म्म, कर्म्मन्	कर्म्मणी	कर्म्माणि

चर्म्मन् skin, छद्मन् disguise, जन्मन् birth, नर्म्मन् jest, joke; पर्व्वन् festival, भस्मन् ashes, मर्म्मन् organ, लक्ष्मन् mark, spot; वर्त्मन् road, manner; वर्म्मन् armour; वेश्मन् house, शर्म्मन् pleasure, सद्मन् house इत्यादि शब्दों के रूप, जिन के अन्त अकार म् वा व् संयुक्तवर्ण से मिले हैं, 'कर्म्मन्' के समान होते हैं।

अहन् Day.

प्रथमा सम्बो०	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु

अहन् शब्द तत्पुरुष और कर्मधारय समास में अकारान्त होता है और 'गज' के समान रूप होता है ।

(२) स्थायिन Permanent.

प्रथमा	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
द्वितीया	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
सम्बोधन	स्थायिन्	स्थायिनी	स्थायीनि

इन्-भागान्त सब क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

सकारान्त ।

सकारान्त शब्द तीन प्रकार के हैं; अस्-भागान्त, इस्-भागान्त, उस्-भागान्त ।

अस्-भागान्त-पयस्-Milk, water.

प्रथमा सम्बोधन	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि

शेष विभक्तियों में पुंलिङ्ग 'वेधस्' के समान रूप होते हैं

अम्भस् water, अयस् iron, आगस् sin, उरस् breast, औधस् udder, एनस् sin, ओकस् house, ओजस् light, चेतस् mind, छन्दस् metre, desire; तपस् religious austerity, तमस् darkness, तेजस् light, नभस् sky, मनस् mind, यशस् fame, यक्षस् an evil spirit, रजस् dust, रहस् secret, रोधस् bank, वक्षस् breast, वयस् age, वर्चस् light, वासस् cloth, शिरस् head, श्रेयस् bliss, सदस् assembly, सरस् pond, water इत्यादि अस्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप 'पयस्' के समान होते हैं ।

1. बहुव्रीहि समास में पयस्, मनस्, चेतस् आदि अस्-भागान्त शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में 'वेधस्' के समान होते हैं। यथा, उदारं चेतो यस्य सः उदारचेताः।

2. तस्थिवस् का प्रथमा, सम्बोधन और द्वितीया में तस्थिवत्, तस्थुषी, तस्थिवांसि रूप होते हैं।

(२) इस्-भागान्त-हविस्-Ghee.

प्रथमा, सम्बोधन	हविः	हविषी	हवींषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवींषि
तृतीया	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःषु

अर्चिस् ray of light, ज्योतिस् light, रोचिस् light, बर्हिस् light, शोचिस् light, सर्पिस् ghee इत्यादि सब इस्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

(३) उस्—भागान्त-धनुस्-Bow.

प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि

शेष रूप हविस् के समान होते हैं। अरुस् sore, आयुस् age, चक्षुस् eye, यजुस् yajur veda, वपुस् body इत्यादि उस् भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

Exercise— 12

1. Decline धावत्, पठयत्, सिञ्चत्, कथयत्, ददत्, भास्, धामन्, व्योमन्, भस्मन्, हयन्, उरस्, वयस्, सरस्, ज्योतिष्, आयुस् and चक्षुस्।

सर्व्व ।

र्व-पुंलिंग । सर्व्व-स्त्रीलिंग ।

	सर्व्वौ	सर्व्वे	सर्व्वा	सर्व्वे	सर्व्वाः
	„	„	सर्व्वे	„	„
	„	सर्व्वान्	सर्व्वाम्	„	„
	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वैः	सर्व्वया	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभिः
	„	सर्व्वेभ्यः	सर्व्वस्यै	„	सर्व्वाभ्यः
त्	„	„	सर्व्वस्याः	„	„
	सर्व्वयोः	सर्व्वेषाम्	„	सर्व्वयोः	सर्व्वासाम्
न्	„	सर्व्वेषु	सर्व्वस्याम्	„	सर्व्वासु

सर्व्व-क्लीवलिङ्ग ।

सर्व्वे सर्व्वाणि शेषरूप पुंलिङ्ग के समान ।

„ „

3. सर्व्व और विश्व शब्द केवल 'सकल वा समस्त' अर्थ में ोते हैं, अन्य अर्थ में 'गज' के समान रूप होते हैं। यथा, गवाय) क्षितिमूर्त्तये नमः । यहाँ सर्व्वस्मै नहीं होगा । विश्व ा में देखा जाता है। यथा, विश्वे देवाः । जगत् अर्थ में ीं होता । यथा, विश्वात् अभिन्नो विश्वेश्वरः ।

(२) अन्यादि ।

ॊther, अन्यतर either, इतर other, कतर which तम which of many, और एकतम one of ' अन्यादि शब्दों के रूप भी 'सर्व्वादि' के समान ल क्लीवलिंग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन अन्यतरत्, इतरत्, कतरत्, कतमत्, एकतमत् हैं ।

2. Translate into Hindi or English — महान् गृहं तिष्ठति। व्योम्नि नक्षत्राणि प्रकाशन्ते। भवति। मर्माणि हतः सेनापतिः। मित्रस्य यशो मिश्रितं राशि महात्मनः चाक्षुषिन्द्र अस्ति। तमसा आवृता रात्रिः। रात्रि गमिष्यति। मद्गृहि वाक्पटुना प्रशंसनीया।

3. Translate into Sanskrit—(a) बाग से मधुर है (आयते)। ब्राह्मण के दर धन नहीं है। नारे आकाश से पृथ्वी पर गिरते हैं। ब्राह्मण मन्त्रों के द्वारा ईश्वर की स्तुति करता है। ब्राह्मण के लड़के यजुर्वेद पढ़ते हैं। कोमा सिर से मार देते हैं। कमल के पुत्र हैं। इन्द्र की आज्ञा से मेघ जल देता है। योगियों में ईश्वर रमते हैं (रमन्ति)। गाँव के पूरब हो तालाब है।

(b) The house of the brother. Ashes are seen body of Shiva. The son of Ram is going (गच्छति) to bly. Men see (पश्यन्ति) with eyes. Boys wear (परिदधति) Good men enter (प्रविशन्ति) the heart of men. Arju (हतवान्) the enemies with a bow. There is pain in the the friend. There is great darkness in the night broke (बभञ्ज) the great bow of Shiva at the age

4. Correct:—महान् धनु.। मधुरं पयासि। व्योम्नि काष्ठेन सद्मो निर्मीयते। वाससेन रक्षा भवति। नमन्तर शिरे भीरं वहति। ग्रामे बहवो सरः सन्ति। धनुषाणा कम्पन्ते। सूर्य्यः उदीचे उदेति प्रतीचे निमज्जति च।

सर्व्वनाम (Pronoun)

रूप की सुविधा के लिये सर्वनाम पाँच भागों है, सर्व्वादि, अन्यादि, पूर्व्वादि, इदमादि, यदादि।

(१) सर्व्वादि।

सर्व्व all, विश्व all, उभय both, एक one, one of two, इन सर्व्वादि शब्दों के रूप 'सर्व्व' होते हैं।

सर्व्व।

सर्व्व-पुंलिंग।			सर्व्व-स्त्रीलिंग।		
सर्व्वः	सर्व्वौ	सर्व्वे	सर्व्वा	सर्व्वे	सर्व्वाः
सर्व्व	,,	,,	सर्व्वे	,,	,,
सर्व्वम्	,,	सर्व्वान्	सर्व्वाम्	,,	,,
सर्व्वेण	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वैः	सर्व्वया	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभिः
सर्व्वस्मै	,,	सर्व्वेभ्यः	सर्व्वस्यै	,,	सर्व्वाभ्यः
सर्व्वस्मात्	,,	,,	सर्व्वस्याः	,,	■
सर्व्वस्य	सर्व्वयोः	सर्व्वेषाम्	,,	सर्व्वयोः	सर्व्वासाम्
सर्व्वस्मिन्	,,	सर्व्वेषु	सर्व्वस्याम्	,,	सर्व्वासु

सर्व्व-क्लीवलिङ्ग।

सर्व्वम् सर्व्वे सर्व्वाणि शेषरूप पुंलिङ्ग के समान।
,, ,, ,,

N. B. सर्व्व और विश्व शब्द केवल 'सकल या समस्त' अर्थ में नाम होते हैं, अन्य अर्थ में 'राम' के समान रूप होते हैं। यथा, र्वाय (शिवाय) क्षितिमूर्त्तये नमः। यहाँ सर्व्वस्मै नहीं होगा। विश्व प्रयोग वेद में देखा आता है। यथा, विश्वे देवाः। जगत् अर्थ में नाम नहीं होता। यथा, विश्वात् अभिन्नो विश्वेश्वरः।

(२) अन्यादि।

अन्य other, अन्यतर either, इतर other, कतर which of two, कतम which of many, और एकतम one of any, इन अन्यादि शब्दों के रूप भी 'सर्व्वादि' के समान होते हैं; केवल क्लीवलिंग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन अन्यत्, अन्यतरत्, इतरत्, कतरत्, कतमत्, एकतमत् होते हैं।

(३) पूर्व्वादि।

पूर्व्व prior, east, पर after, अपर other, अवर posterior, west; अधर inferior, west; दक्षिण south, right; उत्तर north, स्व own, इन के रूप 'पूर्व्व' के समान होते हैं।

पूर्व्व-पुंलिङ्ग।

प्रथमा	पूर्व्वः	पूर्व्वौ	पूर्व्वे, पूर्व्वाः
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वौ	पूर्व्वान्
तृतीया	पूर्व्वेण	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वैः
चतुर्थी	पूर्व्वस्मै	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्व्वस्मात्-पूर्व्वात्	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्व्वस्य	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषाम्
सप्तमी	पूर्व्वस्मिन्-पूर्व्वे	"	पूर्व्वेषु

क्लीवलिङ्ग।

प्रथमा	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में 'लता' के समान रूप होते हैं।

N. B. 1. पूर्व्व से उत्तर तक सात शब्द दिक्, देश और काल-वाचक अर्थ में ही सर्व्वनाम होते हैं, अन्य अर्थों में पुंल्लिङ्ग में 'गज', क्लीवलिंग में 'फल' और स्त्रीलिंग में 'लता' के समान रूप होते हैं।

2. 'स्व' शब्द कुटुम्ब और धन अर्थ में 'गज' के समान होता है और 'अपना' अर्थ में सर्व्वनाम होता है।

(४) इदमादि।

अस्मद्, युष्मद्, इदम् और अदस् के रूप भिन्न २ होते हैं।

अस्मद्-पुं-क्लीव-स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्-मा	आवाम्-नौ	अस्मान्-नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्-मे	आवाभ्याम्-नौ	अस्मभ्यम्-नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम-मे	आवयोः-नौ	अस्माकम्-नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्-पुं-क्लीव-स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्-त्वा	युवाम्-वाम्	युष्मान्-वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्-ते	युवाभ्याम्-वाम्	युष्मभ्यम्-वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव-ते	युवयोः-वाम्	युष्माकम्-वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

N. B. 1. अस्मद् और युष्मद् के छोटे रूप (Short forms) , मे, नौ, नः तथा त्वा, ते, वाम्, वः, वाक्य के या श्लोक के चरण के रम्भ में अथवा च, एव, वा, [illegible] ह, अह के पूर्व में प्रयोग नहीं किये ते। यथा, मम मित्रम्। इदं पुस्तकं ममैव; तव पुस्तकम्; इदं तवैव; मे या ते का प्रयोग नहीं होगा। यदि मा, मे इत्यादि को च वा इत्यादि सम्पर्क न हो तो एक साथ प्रयोग होता है; यथा, रामो रक्षतु मे पुत्रौ।

2. ये छोटे रूप अन्वादेश में अवश्य और अन्यत्र विकल्प से प्रयोग किये जाते हैं। एक बार कहा गया है, उसके फिर कहने को 'अन्वादेश' कहते हैं। यथा, तस्मै ते नमः (जिसका वर्णन हो चुका है)। बालकः ते भक्तोऽस्ति; बालकः तव भक्तोऽस्ति।

3. सम्बोधन के ठीक परे या, मे इत्यादि छोटे रूप का प्रयोग नहीं होगा। यथा, प्रभु! मम (मे नहीं होगा) निवर्तनम्। देव! मां (मा नहीं) पाहि।

4. ये छोटे रूप एक ही क्रिया के साथ प्रयोग किये जाते हैं। यथा, शालीनां ते ओदनं दास्यामि। पर, ओदनं पच तव भविष्यति।

इदम्।

इदम्-this-पुंलिङ्ग।			इदम्-this-स्त्रीलिङ्ग।		
१ अयम्	इमौ	इमे	इयम्	इमे	इमाः
२ इमम्	,,	इमान्	इमाम्	,,	,,
३ अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
४ अस्मै	,,	एभ्यः	अस्यै	,,	आभ्यः
५ अस्मात्	,,	,,	अस्याः	,,	,,
६ अस्य	अनयोः	एषाम्	,,	अनयोः	आसाम्
७ अस्मिन्	,,	एषु	अस्याम्	,,	आसु

इदम्-क्लीवलिङ्ग।

१ इदम्	इमे	इमानि	
२ ,,	,,	,,	शेष रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं।

अन्वादेश अर्थ में इदम् और एतद् के स्थान में द्वितीया के तीनों वचन में (एनं, एनौ, एनान्), तृतीया के एकवचन में (एनेन) तथा षष्ठी और सप्तमी के द्विवचन में (एनयोः) 'एन' आदेश हो जाता है। यथा, अनेन व्याकरणमधीतम्, एनं छन्दोऽध्यापय। अनयोः पवित्रं कुलं, एनयोः प्रभूतं धनम्।

अदस्।

अदस्-this, that-पुंल्लिंग। अदस्-स्त्रीलिंग।

१	असौ	अमू	अमी	असौ	अमू	अमूः
२	अमुम्	,,	अमून्	अमूम्	,,	,,
३	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
४	अमुष्मै	,,	अमीभ्यः	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
५	अमुष्मात्	,,	,,	अमुष्याः	,,	,,
६	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	,,	अमुयोः	अमूषाम्
७	अमुष्मिन्	,,	अमीषु	अमुष्याम्	,,	अमूषु

अदस्-क्लीवलिंग।

१	अदः	अमू	अमूनि	शेष रूप पुंलिंग के समान।
२	,,	,,	,,	

(५) यदादि।

यद् who, which, what; तद् he, she, it, that; एतद् this, त्यद्, किम् who, what, ये यदादि में हैं।

यद्-who, which, what; पुंल्लिंग। यद्-स्त्रीलिंग।

१	यः	यौ	ये	या	ये	याः
२	यम्	,,	यान्	याम्	ये	,,
३	येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः
४	यस्मै	,,	येभ्यः	यस्यै	,,	याभ्यः
	यस्मात्	,,	,,	यस्याः	,,	,,
	यस्य	ययोः	येषाम्	,,	ययोः	यासाम्
	यस्मिन्	,,	येषु	यस्याम्	,,	यासु

यद्-क्लीबलिङ्ग।

१	यत्	ये	यानि	शेष रूप पुंलिङ्ग के समान।
२	,,	,,	,,	

तद्-he, she, it, that-पुंलिङ्ग।				तद्-स्त्रीलिङ्ग।		
१	सः	तौ	ते	सा	ते	ताः
२	तम्	तौ	तान्	ताम्	,,	,,
३	तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
४	तस्मै	,,	तेभ्यः	तस्यै	,,	ताभ्यः
५	तस्मात्	,,	,,	तस्याः	,,	,,
६	तस्य	तयोः	तेषाम्	,,	तयोः	तासाम्
७	तस्मिन्	,,	तेषु	तस्याम्	,,	तासु

तद्-क्लीबलिङ्ग।

१	तत्	ते	तानि	शेष रूप पुंलिङ्ग के समान।
२	,,	,,	,,	

एतद्-this-पुंलिङ्ग।				एतद्-स्त्रीलिङ्ग।		
१	एषः	एतौ	एते	एषा	एते	एताः
२	एतम्	,,	एतान्	एताम्	,,	,,
३	एतेन	एताभ्याम्	एतैः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
४	एतस्मै	,,	एतेभ्यः	एतस्यै	,,	एताभ्यः
५	एतस्मात्	,,	,,	एतस्याः	,,	,,
६	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	,,	एतयोः	एतासाम्
७	एतस्मिन्	,,	एतेषु	एतस्याम्	,,	एतासु

एतद्-क्लीबलिङ्ग।

१	एतत्	एते	एतानि	शेष रूप पुंलिङ्ग के समान।
२	,,	,,	,,	

किम्-who, what-पुंलिङ्ग।			किम्-स्त्रीलिङ्ग।		
१ कः	कौ	के	का	के	काः
२ कम्	,,	कान्	काम्	,,	,,
३ केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
४ कस्मै	,,	केभ्यः	कस्यै	,,	काभ्यः
५ कस्मात्	,,	,,	कस्याः	,,	,,
६ कस्य	कयोः	केषाम्	,,	कयोः	कासाम्
७ कस्मिन्	,,	केषु	कस्याम्	,,	कासु

किम्-क्लीवलिङ्ग।

१ किम्	के	कानि	शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान।
२ ,,	,,	,,	

ऐसे ही त्यद् का 'त्य' होकर 'यद्' के समान रूप होगा।

विशेष द्रष्टव्य।

सर्व, विश्व, उभ (two), उभय, डतर, डतम, कतर, कतम प्रत्ययान्त, अन्य, अन्यतर, इतर, त्यत् (other), त्व (other), नेम (half), सम (all), सिम (whole); पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर; स्व, अन्तर (outer), त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि (two), युष्मद्, अस्मद्, भवत् (you), किम्, ये ३५ सर्वनाम; हैं, इनके अतिरिक्त और सर्वनाम नहीं हैं।

(१) उभ और द्वि द्विवचनान्त होते हैं। पर उभय शब्द द्विवचनान्त नहीं होता; यह एकवचनान्त या बहुवचनान्त होता है। यथा, उभौ (दो) बालकौ आगतौ। एतदुभयं विचार्य्यं पश्य।

(२) एक शब्द एकत्व अर्थ में एकवचनान्त और बहुत्व अर्थ में बहुवचनान्त होता है। यथा, एको जनो वदति। एके

प्र यन्ति (Some say) ।

(३) सर्व्वादि शब्द विशेष्य और विशेषण दोनों होते हैं। यथा, सर्व्वेषामस्माकमसौ गुरुः (हम सब का गुरु है) । सर्वे लोकाः मरिष्यन्ति (सब मनुष्य मरेंगे)। त्वं सर्व्वेषां आश्रयः (तुम सब के आश्रय हो)। त्वं सर्व्वान् लोकान् जितवान् (तुम ने सब लोकों को जीता)।

(४) अन्यतर सर्व्वनाम है, पर अन्यतम सर्व्वनाम नहीं है। यथा, अन्यतरस्मै । पर अन्यतमाय ।

(५) सम 'सकल' अर्थ में सर्व्वनाम है, पर 'समान' अर्थ में सर्व्वनाम नहीं है। यथा, समाः (equals) ।

(६) अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः—बहिर्योग (बाहर) और उपसंव्यान (पहन पहनने) के अर्थ में अन्तर शब्द सर्वनाम होता है। 'पुरि' का विशेषण हो तो सर्वनाम नहीं हो यथा, अन्तरायां पुरि ।

(७) पूर्व्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्,— पर अवर दक्षिण उत्तर अपर अधर, ये अपनी २ व्यव अर्थात् दिक् देश काल समझे जाने पर सर्व्वनाम होते अन्यत्र नहीं होते; संज्ञा समझे जाने पर भी सर्व्वनाम होते। यथा, उत्तराः कुरवः, दक्षिणाः गायकाः । पश्चिम, स नाम नहीं है। यथा, पश्चिमायां दिशि । तृतीया समास उसके अर्थ में भी पूर्व्वादि सर्वनाम नहीं होते। य मासपूर्व्वाय, मासेन पूर्व्वाय ।

(८) स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्,—स्व शब्द आत्मा और आत्म अर्थ में सर्वनाम होता है, पर ज्ञाति और धन अर्थ में स नाम नहीं होता। यथा, बन्धनमोचनकर्त्ता तु स्वस्मादन्यो (बन्धन से मुक्त करने वाला अपने से भिन्न कोई न

है); ते स्वेषां पुत्राणां मङ्गलमिच्छन्ति । तस्य शब्दं श्रुत्वा सर्वे स्वाः (ज्ञातयः) विरोद्धु मारब्धाः; सर्व्वे जनाः स्वाय (धनाय) यतिष्यन्ते ।

२—यदि निकटवर्ती कोई व्यक्ति या वस्तु समझी जाय तो 'इदम्' शब्द, अधिक निकटवर्ती व्यक्ति या वस्तु समझी जाय तो 'एतद्' शब्द, दूरवर्ती कोई व्यक्ति या वस्तु समझी जाय तो 'अदस्' शब्द तथा अनुपस्थित कोई व्यक्ति या वस्तु का बोध हो तो 'तद्' शब्द, का प्रयोग किया जाता है ।

इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम् ।
अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात् ॥

३. प्रश्नसूचक वाक्य में 'किम्' शब्द का प्रयोग वाक्य के आरम्भ में होता है । यथा, किं त्वं श्रुतवानेतत् ? कति—how (much) many; तति-so (much) many; ये बहुवच-नान्त हैं । यथा, कति बालकाः, पर ये सर्व्वनाम नहीं हैं ।

४. संज्ञोपसर्जनीभूतास्तु न सर्वादयः । तृतीया समासे । द्वन्द्वे च—यदि सर्व्वनाम समास का अप्रधान शब्द हो या तृतीया तत्पुरुष के अन्त में या तृतीया समास के अर्थ में हो अथवा द्वन्द्व या बहु-व्रीहि समास के अन्त में हो तो उसका रूप सर्व्वनाम की भाँति नहीं होता । यथा, अतिक्रान्तः सर्व्वं अतिसर्वः, तस्मै अति-सर्व्वाय (not सर्वस्मै) । मासपूर्व्वाय or मासेन पूर्व्वाय (not मासपूर्वस्मै) । वर्णाश्रमेतराणाम्, पूर्व्वदक्षिणोत्तरा-णाम् । पर द्वन्द्व समास में प्रथमा के बहुवचन में विकल्प से सर्व्वनाम होता है । यथा, वर्णाश्रमेतरे, वर्णाश्रमेतराः; पूर्व्व-दक्षिणोत्तरे, पूर्वदक्षिणोत्तराः । जितं सर्व्वं, येन जितसर्व्वः-जितसर्व्वाय, जितसर्व्वात्, जितसर्व्वे ।

सर्व्वनाम से उत्पन्न क्रियाविशेषण।

तद्, इदम्, एतद्, यद्, किम्, सर्व्व, पूर्व्व, पर इत्यादि सर्व्वनाम के परे पञ्चमी और सप्तमी के अर्थ में तस्, त्र, ह, थ इत्यादि; कालसूचक अर्थ में दा, दानीम्, र्हि इत्यादि; काल स्थान और दिग्वाचक अर्थ में तात्, दिक्सूचक अर्थ में अ, आत्, आहि इत्यादि तथा प्रकार अर्थ में था, थ इत्यादि प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा,

तद्—तदा then, तदानीम् at that time, तर्हि then, therefore; तथा so, तत्र there, ततः thence, thereupon, therefore, etc.

इदम्—इदानीम् now, इत्थम् thus, अत्र here, अतः therefore, इतः from this, hence; अधुना now, इ here.

एतद्—एतर्हि now, इत्थम् thus, अतः hence, fore; अत्र here.

यद्—यर्हि when, यदा when, यथा as, यत्र where, यतः whence, since, because.

किम्—कर्हि when, कदा when, कथम् how, कुत्र where, क्व where, कुतः where, whence, कुह whence, h

सर्व्व—सर्व्वदा always, सदा always, सर्वतः where, on all sides; सर्वत्र everywhere, in all p

पर—परतः further on, beyond etc.

).

तः,

, below.

अवर—अधः, अधस्तात् or अधरस्तात्, अधस्तरः, be-
ow, downwards.

अपर—पश्चात् from behinds, afterward,
rd etc.

दक्षिण—दक्षिणा, दक्षिणात्, दक्षिणाहि to or in
th, on the right side.

उत्तर—उत्तरा, उत्तरात्, उत्तराहि to or in the nor

Exercise—13

1. Decline उभय, एक, पर, स्व, यद्, तद्, एतद् a
all genders.

2. Translate the following into Hindi or En
य बालकस्य पिता क्व ? दशरथस्य पुत्रो रामोऽसि
इति । कस्य पत्रिका इयम् ? ईश्वरः अस्माकं सर्वेषां पिता
वेषु अंगेषु दर्पा कुर्वन्ति । शत्रुः पुत्रोऽयम् । कस्य
ष्वो बालको दशरथस्य अस्ति । असौ राजा प्रजानां कल्याणं करोति
। गृहं गमिष्यसि । तत्र तस्य हृदये दया संजाता ।
मेष्यति । युष्मं [illegible] ददाति । युष्मासु सर्वेषां श्रद्धा वर्तते
यं [illegible] देहि । कदा त्वम् गृहं गमिष्यसि ।

3. Translate into *Sanskrit*:—(a) सब आप का आदर करते हैं (आद्रियन्ते)। सूर्य की किरणें सब जगह जाती हैं। मैं आप लोगों के स्वागत के लिये आया हूँ (आगतोऽस्मि)। सूर्य पूर्व में उगता है और पश्चिम में डूबता है (निमज्जति)। आम के वृक्ष भारत में सर्वत्र पाये जाते हैं (प्राप्यन्ते)। उसमें से एक पढ़ना आयगा (पठिष्यति)। आप की बातों में मधुरता है। तुम्हारे दर्शन के लिये बहुत से लोग आये हुए हैं। सब लोग अपने देश को प्यार करते हैं। एक समय भारत संसार में श्रेष्ठ था। मैं रामायण और महाभारत का आदर करता हूँ (आद्रिये)। ईश्वर हम लोगों की सदा रक्षा करता है। धर्म से उसका विजय हुआ (अभवत्)। मेरा लड़का तुम्हारे लड़के के साथ व्याकरण पढ़ता है। राम या श्याम घर जायगा।

(b) I will just now go (गमिष्यामि) to your house. He has given (दत्तवान्) him hundred rupees. Who will get (प्राप्स्यसि) it from me to-morrow. Who will give (दास्यति) it to you? He fell (अपतत्) to the earth from the top of the mountain. He gives a garland to his girl. In what country do you live (वससि)? Where are your sons going early in the morning? This is the creation of Brahma. I am going (गच्छामि) to the northern direction

संख्यावाचक (Numerals)

एक	२० विंशतिः
द्वि	२१ एकविंशतिः
त्रि	२२ द्वाविंशतिः
चतुर्	३० त्रिंशत्
पञ्चन्	४० चत्वारिंशत्
षष्	४२ द्वाचत्वारिंशत्
सप्तन्	द्विचत्वारिंशत्
अष्टन्	४३ त्रयश्चत्वारिंशत्
नवन्	त्रिचत्वारिंशत्
दशन्	४८ अष्टाचत्वारिंशत्
एकादशन्	अष्टचत्वारिंशत्
द्वादशन्	५० पञ्चाशत्
त्रयोदशन्	६० षष्टिः
चतुर्दशन्	७० सप्ततिः
पञ्चदशन्	८० अशीतिः
षोडशन्	९० नवतिः
सप्तदशन्	१०० शतम्
अष्टादशन्	१०१ एकाधिकं शतम्
नवदशन्	एकाधिकशतम्
एकोनविंशतिः	१०२ द्व्यधिकं शतम्
ऊनविंशतिः	द्व्यधिकशतम्
एकान्नविंशतिः	२००, द्वे शते

३०० त्रिशतम्	१००० सहस्रम्, दशशतम्
त्रीणि शतानि	दश शतानि
४०० चतुःशतम्	२००० द्वे सहस्रे
चत्वारि शतानि	१०००० अयुतम्

(१) ऐसे ही इकाइयों के नाम हैं:—

लक्षम्, प्रयुतम्, कोटिः, अर्बुदम्, अब्जम्, खर्वः, निखर्वः, महापद्मः, शङ्कुः, जलधिः, अन्त्यम्, मध्यम्, परार्धम्।

(२) विंशति, त्रिंशत् इत्यादि के पूर्व में एक इत्यादि जोड़ने से २१ इत्यादि संख्यायें बन जाती हैं। पर ५२, ५३, ५८, ६२, ६३, ६८, ७२, ७३, ७८, ९२, ९३, ९८ के ४२, ४३, ४८ की भाँति दो २ रूप होते हैं और ८२, ८३, ८८ में अशीति के पहले द्वि, त्रि, अष्ट जोड़ दिये जाते हैं।

(३) १०० से अधिक की संख्याओं में एकाधिक, द्व्यधिक इत्यादि जोड़ दिये जाते हैं। यथा, १२० = विंशत्यधिकं शतम्। १६५२ = द्विपञ्चाशदधिकं षट्शताधिकसहस्रम्। ६४० = चत्वारिंशदुत्तरं षट्शतम्। ३२० = त्रीणि च शतानि विंशतिः। २१७ = सप्तदशं द्विशतम्, ऐसा भी होता है।

एक से नवदशन् पर्यन्त विशेषण शब्द अपने विशेष्य के लिङ्ग, वचन और कारक के अनुसार होते हैं। एक और द्वि (द्व होकर) के रूप तीनों लिङ्गों में 'सर्व' के समान होते हैं। 'एक' शब्द एकवचनान्त और 'द्वि' शब्द द्विवचनान्त होते हैं। पञ्चन् से नवदशन् तक के शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में एक ही होते हैं। सप्तन् से नवदशन् तक के रूप पञ्चन् के समान होते हैं।

	त्रि		चतुर्		पञ्चन्	षष्	अष्टन्
	पुं.	स्त्री.	पुं.	स्त्री.	पुं. क्ली. स्त्री.	पुं. क्ली. स्त्री.	पुं. क्ली. स्त्री.
१ ला	त्रयः	तिस्रः	चत्वारः	चतस्रः	पञ्च	षट्-ड्	अष्ट-अष्टौ
२ रा	त्रीन्	,,	चतुरः	,,	,,	,,	,,
३ रा	त्रिभिः	तिसृभिः	चतुर्भिः	चतसृभिः	पञ्चभिः	षड्भिः	अष्टभिः-अष्टाभिः
४,५ वी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः
६ ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	पञ्चानाम्	षण्णाम्	अष्टानाम्
७ वी	त्रिषु	तिसृषु	चतुर्षु	चतसृषु	पञ्चसु	षट्सु	अष्टसु-अष्टासु

(१) त्रि और चतुर् के रूप स्त्रीलिङ्ग की प्रथमा विभक्ति में क्रम से तिसृ और चतसृ होते हैं। शेष पुंलिङ्ग के समान होते हैं।

(२) त्रि से अष्टादशन् पर्यन्त संख्यावाचक शब्द ... सदा बहुवचनान्त होते हैं। आगे की संख्याएँ एकवचनान्त होती हैं और इनके लिङ्ग, वचन, विशेष्य के अनुसार नहीं होते। यथा, त्रीणि फलानि। विंशतिः पुरुषाः ... पर विंशतिः = 20...

(३) विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति और इनके रूप स्त्रीलिङ्ग 'मति' के समान होते हैं। त्रिंशत् इत्यादि तान्त शब्दों के रूप स्त्रीलिङ्ग तकारान्त शब्दों के समान होते हैं। शत, सहस्र इत्यादि के रूप 'फल' के समान और ... इत्यादि के रूप पुंलिङ्ग शब्दों के समान होते हैं।

अनेक (Many) बहुवचनान्त।

तीनों लिङ्गों में 'सर्व' के समान रूप होते हैं।

कति (How many) बहुवचनान्त

कति कति कतिभिः कतिभ्यः कतिभ्यः कतीनाम् कति...

तीनों लिंगों में ऐसे ही रूप होंगे। तति So many और यति as many के रूप 'कति' के समान होंगे।

पूरणवाचक Ordinal

ंख्या	Ordinal	पुंलिङ्ग	क्लीबलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
क	First	प्रथमः	प्रथमम्	प्रथमा
ि	Second	द्वितीयः	द्वितीयम्	द्वितीया
ि	Third	तृतीयः	तृतीयम्	तृतीया
तुर्	Fourth	चतुर्थः	चतुर्थम्	चतुर्थी
ञ्चन्	Fifth	पञ्चमः	पञ्चमम्	पञ्चमी
ष्	Sixth	षष्ठः	षष्ठम्	षष्ठी
एकादशन्	Eleventh	एकादशः	एकादशम्	एकादश
विंशति	Twentieth	विंशः	विंशम्	विंशी
		विंशतितमः	विंशतितमम्,	विंशति
षष्टि	Sixtieth	षष्टितम	षष्टितमम्	षष्टित
एकषष्टि	Sixtifirst	एकषष्टः	एकषष्टम्	एकष
		एकषष्टितमः	एकषष्टितमम्	एकष

सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् के पूरणवाचक 'पञ्चन्' के स द्वादशन् से नवदशन् तक के 'एकादशन्' के समान, और विंशति से उनषष्टि तक के "विंशति" के समान होते हैं। सप्तति, अशीति, नवति, शत, सहस्र के पूरणवाचक 'षष्टि' समान होते हैं, परन्तु षष्टि इत्यादि के पूर्व में अन्य स वाचक शब्द हों तो 'एकषष्टि' के समान होंगे।

N. B. पूरणवाचक शब्दों के रूप पुंलिङ्ग में 'राम', क्लीबलि 'फल' और स्त्रीलिङ्ग में 'नदी' शब्द के समान होते हैं।

संख्यावाचक क्रियाविशेषण ।

(१) एकवार once सकृत्, दो बार twice द्विः, ती thrice त्रिः, चारबार four times चतुः, पाँचबार five t

पञ्चकृत्वः, छःबार six times षट्कृत्वः, ऐसे ही आगे की संख्याओं में 'कृत्व' जोड़ कर संख्यावाचक क्रियाविशेषण (Numeral adverbs) बनाये जाते हैं।

(२) प्रकारार्थ—एक प्रकार से in one way एकधा ऐकध्यम्; ऐसे ही द्विधा, द्वेधा, द्वैधम्; त्रिधा, त्रेधा, त्रैधम्; चतुर्धा, पञ्चधा, षोढा-षड्धा, सप्तधा, अष्टधा इत्यादि धा जोड़ कर बनाये जाते हैं।

(३) एक २ करके one by one एकशः, ऐसे ही द्विशः, त्रिशः, त्रिशः, शतशः, सहस्रशः इत्यादि।

अतिरिक्त—जोड़ा a pair द्वयम्-द्वितयम्, consisting of three parts त्रयम्, त्रितयम्, ऐसे ही चतुष्टयम्, पञ्चतयम् इत्यादि तय जोड़ कर बनाते हैं। स्त्रीलिंग में ई जोड़ देते हैं।

(४) पञ्चकः bought for five (Rs. etc.) त्रिंशत्कः bought for thirty, विंशतिकः bought for twenty जिनके अन्त में ति और शत् हो उनके परे क जोड़ने से ये बनते हैं।

(५) क और अत् जोड़ने से षट्कः a collection of six, पञ्चत् a collection of five, दशत् इत्यादि।

Exercise—14

1. Translate into Hindi:—पञ्च स्त्रियः। चत्वारि मित्राणि। त्रिवो वारदः। अत्र पञ्चदश पुस्तकानि सन्ति। व्यासोऽष्टादश पुराणानि कृतवान्। चत्वारो वेदाः षट् शास्त्राणि च सन्ति। अनेके देवाः तत्र गतवन्तः। कति बालका अस्मिन् वर्गे सन्ति? चतुः तव गृह आगताः, परन्तु त्वां नापश्यन्। स सर्वं धर्मं शुद्धं धारयति। सहस्रं सैनिका अस्मिन् युद्धे निहताः। ईश्वरस्य भक्तिर्नवधा क्रियते। बालकानां चतुष्टयमत्र वर्तते। पञ्चाशतः क्रीतोऽयं हयः। षष्टितमं बालकं मत्समीपं प्रेषय। परीक्षायां पञ्चविंशतिर्बालका ...

2. Translate into Sanskrit:—(a) दोनों लड़के। पहला आदमी। तीसरे मनुष्य को भेजो (प्रेषय)। तीनों मित्रों ने कहा (अकथयन्)। मुझे तीन फल मिले (प्राप्तवान्)। वर्ष में ६ ऋतु और १२ महीने होते हैं (भवन्ति)। इस स्कूल में १२ वर्ग हैं और प्रत्येक वर्ग में ३० लड़के हैं। स्कूल में कुल कितने लड़के हैं? मैं पाँच लड़कों के साथ वहाँ जाऊँगा (गमिष्यामि)। उस सभा में हजार आदमी थे। करोड़ों मनुष्य क्षुधा से पीड़ित हैं। जरासन्ध युद्ध में १७ बार हार गया (पराजितः)। दो स्त्रियाँ माला बना रही हैं (ग्रथ्नीतः)। कृपा कर मुझे ८० रुपये दीजिये। इस बगीचे में २१ आम के और २७ जामुन के वृक्ष हैं। ५) रुपये में पुस्तक खरीदी है (क्रीतवान्)। एक जोड़ा कपड़ा भेजिये। एक २ करके सब लड़के चले गये (गताः)।

(b) Three friends. Two creepers. Eleven boys. Seventeen horses. Ninety nine men are coming from Calcutta. Please send the first boy to me. Three thousand soldiers are fighting (युध्यन्ते) in the battle field. I will go to you on the 15th day. The king went to the forest with three hundred men. There are (भवन्ति) 30 days in a month and 52 weeks in a year. He has 23 elephants and 65 horses.

3. Correct:—त्रीणि बालकाः। चत्वारः स्त्रियः। द्वौ पुस्तकानि। महान्दशानि पुस्तकानि। एकादशाः छात्राः। विंशतयो (२०) पुरुषाः। पञ्चः बालकाः। चतस्रः पुरुषाः सन्ति। त्रिंशतोऽश्वा वर्तन्ते। द्वाविंशति आगच्छन्ति।

Degree of Comparison.

१. दो में से एक का उत्कर्ष बताना हो तो शब्द के परे 'तर' और अनेक में से एक का उत्कर्ष बताना हो तो 'तम' प्रत्यय लगाते हैं।

(क) तृतीया-भ्याम् के पूर्व्व शब्दों में जो कार्य्य होता है वही तर और तम के पूर्व्व भी होता है। यथा, अयमेनयोरतिशयेन गुरुः गुरुतरः; अयमेतेषामतिशयेन गुरुः गुरुतमः। ऐसे ही लघु लघुतर, लघुतम; विद्वस् विद्वत्तर, विद्वत्तम; बलिन्-बलितर, बलितम; महत्-महत्तर, महत्तम; उत्-उत्तर, इत्यादि।

(ख) तर और तम के आने से ई और ऊ का विकल्प से ह्रस्व होता है। यथा, श्रीतरा-श्रितरा, श्रीतमा-श्रितमा।

(ग) क्रिया और क्रियाविशेषण अव्यय के परे तर और तम के स्थान में क्रम से तराम् और तमाम् हो जाता है। यथा, प्रयान्तुतराम्, प्रयान्तुतमाम्; नितराम्, नितमाम्; उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्। पर विशेषण-उच्चैस्तरः, उच्चैस्तम।

२. गुणवाचक विशेषण के परे तर और तम के स्थान में क्रम से ईयस और इष्ठ हो जाता है। यथा, पाप-पापीयस्, पापिष्ठ; लघु-लघीयस्, लघिष्ठ; महत्-महीयस्, महिष्ठ। पर पाचकतर, पाचकतम।

(क) ईयस् और इष्ठ प्रत्ययों के लगने से मत्, वत्, विन्, इन् और तृ प्रत्ययान्त विशेषणों के इन प्रत्ययों का लोप हो जाता है। यथा, बलवत्-बलीयस्, बलिष्ठ; मतिमत्-मतीयस्, मतिष्ठ; मेधाविन्-मेधीयस्, मेधिष्ठ; धनिन्-धनीयस्, धनिष्ठ; स्तोतृ स्तवीयस्, स्तविष्ठ।

(ख) ईयस् और इष्ठ प्रत्यय के आने पर व्यञ्जन के परवर्ती ऋ का र् हो जाता है। यथा, कृश-क्रशीयस्, क्रशिष्ठ; दृढ strong-द्रढीयस्, द्रढिष्ठ; पृथु (स्थूल)-प्रथीयस्, प्रथिष्ठ; भृश much-भ्रशीयस्, भ्रशिष्ठ; मृदु-म्रदीयस्, म्रदिष्ठ।

(ग) नियम विरुद्ध:—

अन्तिक near	नेदीयस्	नेदिष्ठ	बहु	भूयस्	भूयिष्ठ
अल्प little	अल्पीयस्	अल्पिष्ठ	बाढ well	साधीयस्	साधिष्ठ
	कनीयस्	कनिष्ठ	युवन् (युवा)	यवीयस्	यविष्ठ
उरु (विशाल)	वरीयस्	वरिष्ठ		कनीयस्	कनिष्ठ
क्षिप्र (शीघ्र)	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ	विपुल (बहुत)	ज्यायस्	ज्येष्ठ
क्षुद्र (नीच)	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ	वृद्ध	वर्षीयस्	वर्षिष्ठ
गुरु	गरीयस्	गरिष्ठ		ज्यायस्	ज्येष्ठ
दीर्घ	द्राघीयस्	द्राघिष्ठ	स्थिर	स्थेयस्	स्थेष्ठ
दूर	दवीयस्	दविष्ठ	स्थूल (बड़ा)	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
प्रशस्य	} श्रेयस्	श्रेष्ठ	स्फिर (बहुत)	स्फेयस्	स्फेष्ठ
Praiseworthy	} ज्यायस्	ज्येष्ठ	ह्रस्व	ह्रसीयस्	ह्रसिष्ठ
प्रिय	प्रेयस्	प्रेष्ठ			

(घ) अर्थ की अधिकता प्रकट करने के लिये कहीं २ ईयस् और इष्ठ के परे भी तर और तम लगाये जाते हैं। यथा, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम; पापीयस्तर, पापीयस्तम।

Exercise 15

1. Translate into Hindi—तयोर्ज्येष्ठतरः। पुष्पेषु श्रेष्ठतमः। विद्वत्तमं पुरुषमेकं प्रेषय। स उत्तमं पुरस्कारं प्राप्स्यति। पशूनां दीर्घतमो हस्ती। पशुषु सिंहो बलिष्ठः। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। राजा ज्येष्ठपुत्रं राज्यभारं दत्वा तपोवनं गतः। स कनिष्ठभ्रात्रे फलं ददाति।

2. Translate into Sanskrit—(a) दोनों में बड़ा। सब में धनी। राम चारों भाइयों में ज्येष्ठ थे। राजा दशरथ के लड़कों में शत्रुघ्न सबसे छोटे थे। राजा का सबसे बड़ा लड़का राज्याधिकारी होता है। इस गाँव में राम सबसे बुद्धिमान् है। दोनों में गोपाल अधिक बूढ़ा है। यह लड़का सबसे सुन्दर है। वह अपने छोटे भाई को प्यार करता है।

(क) [illegible] प्रत्यय के पूर्व शब्दों में जो अन्तिम [illegible] तर और तम के पूर्व [illegible] होता है। यथा, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। लघु-लघुतर, लघुतम, [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], महत्-महत्तर, महत्तम, [illegible] इत्यादि।

(ख) तर और तम के आगे [illegible] और ऊ का [illegible] होता है। यथा, [illegible], [illegible]।

(ग) किम् और क्रियाविशेषण अव्यय के पीछे तर तम के स्थान में क्रम से तराम् और तमाम् हो [illegible] यथा, पचतितराम्, पचतितमाम्; किंतराम्, [illegible] उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्। पर विशेषण अर्थ [illegible]

२. गुणवाचक विशेषण के पीछे तर और तम के [illegible] क्रम से ईयस् और इष्ठ हो जाता है। यथा, [illegible] पापिष्ठ, लघु-लघीयस्, लघिष्ठ, महत् महीयस्, महि[illegible] पापतर, पापतम।

(क) ईयस् और इष्ठ प्रत्ययों के आने से म[illegible], विन्, इन् और तृ प्रत्ययान्त विशेषणों के इन प्रत्ययों [illegible] हो जाता है। यथा, बलवत्-बलीयस्, बलिष्ठ; मतिमत्-मतिष्ठ; मेधाविन्-मेधीयस्, मेधिष्ठ; धनिन्-धनीयस्, स्तोतृ-स्तवीयस्, स्तविष्ठ।

(ख) ईयस् और इष्ठ प्रत्यय के आने पर व्यञ्जन के पश्चात् ऋ का र् हो जाता है। यथा, कृश-क्रशीयस्, [illegible] दृढ strong-द्रढीयस्, द्रढिष्ठ; पृथु (स्थूल)-प्रथीयस्, प्रथिष्ठ; भृश much-भ्रशीयस्, भ्रशिष्ठ; मृदु-म्रदीयस्, म्रदिष्ठ।

(ग) नियम विरुद्धः—

अन्तिक near	नेदीयस्	नेदिष्ठ	बहु	भूयस्	भूयिष्ठ
अल्प little	अल्पीयस्	अल्पिष्ठ	बाढ well	साधीयस्	साधिष्ठ
	कनीयस्	कनिष्ठ	युवन् (युवा)	यवीयस्	यविष्ठ
उरु (विशाल)	वरीयस्	वरिष्ठ		कनीयस्	कनिष्ठ
क्षिप्र (शीघ्र)	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ	विपुल (बहुत)	ज्यायस्	ज्येष्ठ
क्षुद्र (नीच)	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ	वृद्ध	वर्षीयस्	वर्षिष्ठ
गुरु	गरीयस्	गरिष्ठ		ज्यायस्	ज्येष्ठ
दीर्घ	द्राघीयस्	द्राघिष्ठ	स्थिर	स्थेयस्	स्थेष्ठ
दूर	दवीयस्	दविष्ठ	स्थूल (बड़ा)	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
प्रशस्य }	श्रेयस्	श्रेष्ठ	स्फिर (बहुत)	स्फेयस्	स्फेष्ठ
Praiseworthy }	ज्यायस्	ज्येष्ठ	ह्रस्व	ह्रसीयस्	ह्रसिष्ठ
प्रिय	प्रेयस्	प्रेष्ठ			

(घ) अर्थ की अधिकता प्रकट करने के लिये कहीं २ ईयस् और इष्ठ के परे भी तर और तम लगाये जाते हैं। यथा, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम, पापीयस्तर, पापीयस्तम।

Exercise 15

1. Translate into Hindi—तयोर्बलवत्तरः। पुष्पेषु श्रेष्ठतमः। विद्वत्तमं पुरुषमेकं प्रेषय। स उत्तमं पुरस्कारं प्राप्यति। पशूनां दीर्घतमो हस्ती। पशुषु सिंहो बलिष्ठः। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। राजा ज्येष्ठपुत्रं राज्यभारं दत्त्वा तपोवनं गतः। स कनिष्ठभ्रात्रे वस्त्रं ददाति।

2. Translate into Sanskrit—(a) दोनों में बड़ा। सब में बड़ा। राम चारो भाइयों में ज्येष्ठ थे। राजा दशरथ के लड़कों में शत्रुघ्न सबसे छोटे थे। राजा का सबसे बड़ा लड़का राज्याधिकारी होता है। इस गाँव में राम सबसे बुद्धिमान् है। दोनों में गोपाल अधिक मोटा है। यह लड़का इससे दुबला है। वह अपने छोटे भाई को प्यार करता है।

(b) Higher of the two. Strongest of all. Ram was the strongest of all boys. It is safer than fire. The Himalaya is the highest mountain in the world. He is the nearest man in the village. Kalidas was the best of all poets. His is stronger than yours.

3. Correct: [illegible] । [illegible] । [illegible] । सर्वेषु श्रेष्ठोऽयम् । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

अव्यय (Indeclinable)

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

लिंग, वचन और कारक के कारण अव्यय में कोई अन्तर नहीं होता । यह सदा एक रूप रहता है । केवल अन्तस्थित र् और स् का विसर्ग हो जाता है ।

अव्यय के प्रधानतः चार भेद हैं, उपसर्ग, क्रियाविशेषण, संयोजकादि और विस्मयादिबोधक ।

N. B. इनके अतिरिक्त अन्तर्, ओम्, चाटु coaxing, नमस्, भूर् earth, भुवर् sky, स्वर् heaven, भी अव्यय हैं ।

उपसर्ग ।

जो अव्यय क्रिया के पूर्व्व आते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उपसर्ग के लगाने पर क्रिया का अर्थ बदल जाता है। कभी तो अर्थ में कुछ विशेषता हो जाती है, कभी भिन्न और कभी उल्टा अर्थ हो जाता है। उपसर्ग २० हैं:—

प्र— Forth, forward, well, exceedingly, प्रयाति goes forth, प्रकर्षः greatness, प्रकारः, प्रकोपः, प्रमाणम्, प्रमादः, प्रयोगः, प्रलापः, प्रवाहः, प्रसादः, प्रस्तावः, प्रस्थानम्, प्रसारः, प्रहारः इत्यादि ।

परा— Away, back, opposed to etc. power, पराजयते defeats, पराभवः defeat, dis परामर्शः, पराजयः ।

अप— Away, away from, opposite to, taking away, अपकर्षः degradation, अपकारः मानः, अपयशः, अपराधः, अपशब्दः, अपव्ययः, अप अपेक्षा ।

सम्— Together with, full, excellent etc. union, संस्कारः perfection, संस्कृतिः refine संयमः, संयोगः, संवादः, संसर्गः, संसारः, संहारः, स सन्देशः, सन्देहः, सद्भावः, समयः, सम्भोगः, सम्भ्रमः ।

अनु— After, along, behind etc. अनुसर गच्छति goes after, follows, अनुकृतिः imitation, method, अनुभवः, अनुचरः, अनुतापः, अनुनयः, अ अनुमानम्, अनुरागः, अनुरोधः, अनुवादः, अनुष्ठानम् सन्धानम्, अनुसरणम् ।

अव— Down, off, from, away etc. अवतरति down, descends, अवगाहनम् bathing, अवचयः g ing, अवच्छेदः, अवतरणम्, अवसरः, अवहेला ।

निस्— (निर्) Out of, away from, withou निःश्वासः breathing out, निर्गमः a passage,

निराकरणम्, निर्भरः, निर्णयः, निर्धनः, निर्गमनम्।

दुस् (दुर्)— Bad, hard to be done, difficult etc. दुराचारः bad conduct, दुष्करः hard to be done, दुःसहः difficult to be borne, दुर्जनः, दुर्दशा, दुर्भिक्षम्, दुष्कृतिः।

वि— Apart, separate from, certainly, reverse to etc. विश्लिष्यति separates, विकारः, विकृतिः, विकासः, विक्रमः, विक्रयः, विग्रहः, विघ्नः, विजयः, विधानम्, वितानम्, विदेशः, विनयः, विनाशः, विप्लवः, विभवः, विभ्रमः, वियोगः, विरागः, विरामः, विरोधः, विलासः, विवाहः, विवेकः, विधानम्, विषादः, विस्तारः, विस्मयः।

आ— Up to, towards, all round, a little etc. आगच्छति comes, आरोहति grows to, ascends, आरूढः, आकारः, आक्रोशः abuse, आक्षेपः, आख्यानम् a tale, आगमः, आघातः, आचारः, आज्ञा, आतपः, आधारः, आपद्, आकम्पः shaking a little, आहुतिः।

नि— In, within, on, upon, opposed to, down etc. निषीदति sits down, निकरः heap, निकषः touchstone, निग्रहः, निदानम्, निदेशः, निपातः, निमज्जनम्। नियमः, नियोगः order, निसर्गः nature.

अधि— Over, above, upon, on etc. अधिगच्छति goes over, knows, gets, अधिकारः, अधिष्ठानम्, अधिवासः।

अति— Beyond, over, too much, very much,

exceedingly, अतिक्राम्यति goes over, अतिसारः
sentry, अतिपानम्, अत्ययः।

सु—Well, thoroughly, सुकृतं done well, सुशा
well governed, सुगमः, सुघटितम्, सुजनः, सु
सुबुद्धिः।

उत्—Up, above, superior etc. उत्पतति falls
उद्गच्छति rises, उच्छ्वासः, उत्कण्ठा, उत्कर्षः, उ
उत्थानम्, उत्पत्तिः, उत्पातः, उत्सर्गः, उत्सवः, उ
उदयः, उद्गमः, उद्भवः, उद्यमः।

अभि—To, towards, upon, near to etc. अभिग
goes to, goes near to, अभिगमः going tow
अभिज्ञानम्, अभिधानम्, अभिनयः, अभिप्रायः de
अभिमानः, अभियोगः, अभिरुचिः, अभिलापः, अभिव
अभिलाषः, अभिषेकः।

प्रति—In return, back, towards, in oppos
to etc. प्रतिभाषते speaks in return, प्रतिकारः rem
प्रतिक्रिया, प्रतिघातः, प्रतिध्वनिः, प्रतिनिधिः, प्रतिवादः, प्र
प्रतिरोधः, प्रतिहिंसा।

परि—All round, about etc. परिधा to plac
round, परिखा ditch, परिक्षयः, परिक्रमः, परिक्रान्तिः
परिणयः marriage, परित्यागः, परिताप., परिधिः, परि
परिश्रम, परिवर्तनम्, परिवारः, परिशिष्टम् appe
परिहास।

उप—Near, less, next to etc. उपगच्छति appro
उपकारः, उपतापः disease, उपचय. excess, उपदा
देशः, उपभोगः enjoyment, उपनयनम्, उपवासः, उ

१४. ११ (१) भव और अति उपसर्गों के [illegible] होता है। यथा, [illegible]।

(२) [illegible] Precortu, [illegible]।

(३) समास में अति, अधि, अनु, अप, अभि, उप, [illegible] के परे क्रिया का लोप होता है। यथा, [illegible]

(४) [illegible] यथा, भस्मसात् reduces to ashes [illegible]।

क्रियाविशेषण। (Adverb)

क्रियाविशेषण में क्लीबलिङ्ग द्वितीया एकवचन की विभक्ति होती है। कभी २ दूसरी विभक्तियों के एकवचन का भी प्रयोग होता है। सर्वनाम और संख्या से बने हुए क्रियाविशेषण शब्द पहले दिये गये हैं। निम्नलिखित अव्ययों में प्रायः सभी क्रियाविशेषण की भाँति व्यवहृत होते हैं।

अकस्मात् Suddenly	अथ then
अग्रतस् before	अथ किम् yes
अग्रे before	अद्धा certainly
अचिरम्, अचिरात्, अचिरेण, अचिराय } recently, quickly	अद्य to-day
	अधस् below
	अपरेद्युः following day
	अनिशम् incessantly
अजस्रम् ever	अन्तर, अन्तरा, अन्तरेण, अन्तरे } except, without, between
अञ्जसा rightly	
अन्तर् in, into	
अतीव exceedingly	

था } again
स् } besides
त्र elsewhere
था otherwise
तः near
च moreover
भीक्ष्णम् frequently
: quickly
त्र in the next world
म् quickly
र्वाक् before
लम् enough
रेण् without
कृत् repeatedly
स्थाने } improperly
साम्प्रतम् }
ह्नाय instantly
रात् near
विस् openly
तस्ततस् here and there
ति so
तरम् again
तरेद्युः the other day
त्थम् thus
द्धा truly
ह here

ईषत् little
उच्चैस् loudly
उत्तरम् then
उपरि above
उपांशु in private
उभयतस् from both si
उभयद्युस् } on both
उभयेद्युस् } days
उषा at dawn
ऋतम् } truthfully
ऋधक् }
ऋते without
एकत्र together
एकदा once
एकपदे suddenly
एतर्हि now
एव just
एवम् thus
ओम् so be it
कच्चित् } I trust,
कच्चन } I hope
कथञ्चन } with gre
कथञ्चित् } effort
कदाचित् once upon a t
न कदाचित् never
कर्हिचित् at any tim

किञ्च moreover
किञ्चन } some what
किञ्चित् } some what
किन्तु but
किम् what
किमु what then
किमुत how much more
किमुत what, how
किंवा or
किंस्वित् how, whether
किल assuredly
कुत्रचित् anywhere
केवलम् only
क्वचित् in some place
न क्वचित् nowhere
खलु certainly
चिरम्, चिरात्, चिराय, चिरेण } for a long time
जातु perhaps
जोषम् silently
ज्योक् soon
झटिति quickly
तद् therefore
तथाहि as for instance

ततस् thereupon
तावत् in the first place
तिरः } crookedly, badly
तिर्यक् } crookedly, badly
तूष्णीम् } silently
तूष्णीकम् } silently
तेन by that
दिवा by day
दिष्ट्या fortunately
दूरम् highly, to a distance
दोषा at night
ध्रुवम् certainly
न not
नक्तम् by night
नवरम् but
नह } not so, not at all
नहि } not so, not at all
नाना in various way
नाम by name
निकषा near
नूनम् certainly
मा not
परम् then, over
परश्वः day after tomorrow
परितः around

श्वः to-morrow
पर्याप्तम् sufficiently
पश्चात् behind
पुनः again
पुनः पुनः again and again
पुरतः } before,
पुरः } in front
पुरस्तात्
पुरा in former times
पूर्वम् before
पूर्वेद्युः yesterday
पृथक् apart from
प्रगे in the morning
प्रकामम् extensively
[illegible] } being exhausted
[illegible]
प्रतिदिनम् every day
प्रत्युत on the other hand
प्रसह्य forcibly
प्राक् before
प्रातर् in the morning
प्रायस् mostly
[illegible] in the noon
प्रेत्य after death
[illegible] } foremostly, importantly
[illegible]

बहिस् out
भूयः exceedingly
भृशम् greatly
मनाक् a little
मा not
माकिम् except
माचिरम् without delay
मिथः } to each other
मिथो }
मिथ्या wrongly
मुधा in vain
मुहुर् often
मृषा in vain
यत् since
यतः for which reason
यत्र where
यावत् तावत् as much as
यथाक्रमम् in due order
[illegible] just as required
यावत् as much as
युगपत् at once
वत् like
विना except
विहायसा high up in the sky

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	सततम् constantly
[illegible]	सम्यक् well
[illegible]	सामि half
[illegible]	साम्प्रतम् now
[illegible]	[illegible] in the event of
[illegible] at a time	सुबहु very much
समम् equally	मुधा in vain
समया near	सुष्ठु well
समक्षम् / साक्षात् } near in one's presence	स्वयम् oneself
	हि because
[illegible] well	हेतोः on account of
सम्प्रति now	हेतौ because of
सम्मुखम् in front	ह्यः yesterday
सम्यक् well	

संयोजकादि (Conjunction)

निम्नलिखित संयोजकादि अव्यय हैं।

(१) संयोजक—अथ, अथो, उत, च, किञ्च इत्यादि।

(२) वियोजक—वा, वा………वा, अथवा, तु, किन्तु इत्यादि।

(३) संकेतार्थ—यदि, चेत्, नोचेत्, यद्यपि, इत्यादि इ

(४) कारणवाचक— हि, तत्, तेन इत्यादि।

(५) प्रश्नवाचक— आहो, आहोस्वित्, उत, किं, ...त, ननु, नवा, नु इत्यादि।

(६) कालवाचक— यावत् तावत्, यदा तदा इत्यादि

(७) विधि व निषेधार्थक—अङ्ग, अथ, किम्, माम्, भद्रा इत्...

N. B. अथ कार्यारम्भ का और इति कार्यान्त का सूचक है।

२- च और वा का प्रयोग— दो या अनेक पद एकत्र रहने से ... अन्तिम पद के अन्त में रहते हैं या प्रत्येक पद के अन्त में रह... च द्वारा दो एकवचनान्त कर्तृपद संयुक्त हों तो क्रिया ... है और अन्यत्र बहुवचनान्त होती है। परन्तु वा, अथवा, न व... होने पर क्रिया अन्तिम कर्तृपद के अनुसार होती है। कर्... के हों तो उत्तम पुरुष क्रिया के निकट रहता है और क्रि... पुरुष होती है। मध्यम पुरुष और प्रथम पुरुष के कर्ता... मध्यम पुरुष होती है। यथा, रामो लक्ष्मणश्च गच्छताम्, ...लक्ष्मणश्च, गच्छतः। रामो लक्ष्मणो वा गच्छति। स, त्वं, अहम्...त्वं वा आगच्छ।

विस्मयादिबोधक (Interjection)

निम्नलिखित अव्यय मन के भावों को प्रकट करते हैं...

(१) आ, इ, उ, ए, ऐ, ओ, अह, अहह, अहो, बत, ...हा इत्यादि आश्चर्य और शोक इत्यादि प्रकट करते हैं...

(२) किम्, धिक् इत्यादि अवज्ञा प्रकट करते हैं।

(३) हा, हाहा, बत, बन्त इत्यादि शोक और खेद ...रते हैं।

(४) हन्त इत्यादि हर्ष प्रकाश करते हैं।

(५) वौषट्, श्रौषट् और वषट्, देवता या पितरों को बलि देने के समय बोले जाते हैं। यथा, देवताभ्यो वषट्, इत्यादि ।

(६) स्वाहा और स्वधा क्रम से देवता या पितरों को बलि देने के समय बोले जाते हैं । यथा, अग्नये स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा ।

(७) सम्बोधन में— (१) अङ्ग, अयि, अये, अहो, अव, उ, ए, ओ, प्याट्, भो, भोः, हंहो, हे, है, हो, इत्यादि आदर अर्थ में आते हैं। (२) अङ्ग, अरे, अये, रे, रे रे, अरेरे, इत्यादि अवज्ञा अर्थ में आते हैं ।

अतिरिक्त अव्यय Particles.

Particles पादपूरण या निश्चय अर्थ में आते हैं। इनमें से ये हैं; किल, खलु, च, तु, नु, वै, हि इत्यादि ।

कुछ अव्यय दूसरे शब्दों के साथ प्रयोग किये जाते हैं।

(१) अद्भु— अद्भुतं a wonder.

(२) का-कापुरुषः a bad man, कोष्णम् luke warm.

(३) कु— कुकृत्यम् a bad deed.

(४) चन, चित्—किञ्चित्, कश्चित्, किञ्चन, कश्चन इत्यादि ।

(५) न—स्वरादि शब्द के पूर्व न का अन् और व्यञ्जनादि शब्द के पूर्व अ हो जाता है। यथा, अनीश्वरः, अनश्वः, अब्राह्मणः, अज्ञानम्, अकालः, अनीतिः, असुरः इत्यादि।

(६) स्म—भूतकाल के अर्थ में वर्त्तमान के लट् के साथ स्म आता है। यथा, भवति स्म = अभवत्। मा पहले रहने से

अर्थ की अधिकता का बोध होता है । यथा; मा स्म प्रजापीडने मनः कृथाः ।

(७) स्वित्—कि या दूसरे अव्ययों के साथ जोड़ा जाता है और प्रश्न या सन्देह करना अर्थ प्रकाश करता है । यथा, किंस्वित्, अहोस्वित् इत्यादि ।

(८) स्वी—स्वीकार अर्थ में कृ धातु या भू धातु से निष्पन्न शब्दों के पूर्व में आता है । यथा, स्वीकारः, स्वीकृतम् इत्यादि ।

Exercise—16.

1. Translate into Hindi:—भीमोऽर्जुनश्च । हरिश्च हरश्च । देवा राक्षसाश्च । कृष्णो हरिर्वा । बालकः कुत्र गच्छति । क्व गतः स दुरात्मा । रावणो बलात् सीता अपाहरत् । पूर्वेद्युः तेऽत्रागताः । मिथ्या मा वद । ग्रामाद्बहिः तिष्ठति सः । अलसा दिवा निद्रां यान्ति । स पृथक् तान् अनुवादान् करिष्यति । उच्चैः ते विरोधमारब्धाः । अपि कुशली त्वम् ? धिक् मां कृष्ण-भक्तम् । रामः खलु तीक्ष्णबुद्धिः । यतो धर्मस्ततो जयः । भोः ! कुत आगच्छति भवान् ? महान् धर्मात्मा हि स नृपतिः । राजा नाम साक्षाद्विष्णोरवतारः । मृत्युरेव प्राणिनां ध्रुवम् ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) भाई और बहन । पुत्र या पुत्री । अरे, गीत की मधुरता । इसमें इसका दोष नहीं है । यह माया है या मतिभ्रम है । हे तात ! अब विलम्ब क्या । तुम्हारा मित्र कहाँ है । अरे, यह बड़ा पाप है । मैं परसों घर जाऊँगा । आज मेरा जन्म सफल हुआ । इसका फल क्या है ? प्रातःकाल का घूमना अच्छा है । तब लड़के की पारी आयी । सज्जनों का दर्शन बड़ा दुर्लभ है । उसमें मेरी बड़ी प्रीति है । हितकर और मनोहर वचन दुर्लभ है । आलस्य मनुष्य के शरीर में रहने वाला भारी शत्रु है ।

(b) Father and mother. The king and the minister. Men or women. Send them here. Where do you live? Where are

they going ? Don't tell a lie. Moreover you are my enemy The youthful age and this handsome body. Bring the thieves in the presence of the king. Who is then the second ? I have no fear from death. Ram went (अगच्छत्) to the forest with Sita and Lakshmana. Ram, you and I will go home. He and you will come to my village.

3. Correct:—सुबोधः सुशीलश्चागतः। रामो लक्ष्मणो वा वर्तेते। त्वं स्वप्न पश्यसि। दिवायां निद्रा याति। मिथ्यां मा वद्। स हास् भागमिष्यति। नवलागतः ते। स नक्ते दिवायां च स्वपिति। मुदया तत्र गताः ते।

व्याकरण-कौमुदी

द्वितीय भाग।



तिङन्त (Conjugation of Verbs).

भावयो धातवः—भू, स्था, गम्, दृश्, वद्, हस् इत्यादि
वाचक शब्दों (प्रकृति) को 'धातु' कहते हैं। धातु के परे
भक्तियाँ होती हैं उन्हें 'तिङ्' और तिङ् युक्त पद को
पद' कहते हैं।

तु के परे दश विभक्तियाँ होती हैं; लट्-Present,
mperative, लङ्-Imperfect, विधिलिङ्-Poten-
लुट्-Periphrastic Future, लृट्-Future, लृङ्-
tional, आशीर्लिङ्-Banedictive, लिट्-Perfect,
orist.

B. रूप बनाने की सुविधा के लिये इन १० विभक्तियों को दो
विभक्त करते हैं। प्रथम भाग (Special tenses and
) में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् हैं, द्वितीयभाग (General
and moods) शेष सभी विभक्तियाँ हैं।

तिङ्स्त्रीणित्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः— विभक्तियों में तीन पुरुष
प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष।

युष्मदः—अस्मद् और युष्मद् को छोड़कर सब शब्द
य हैं।

३. तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः — प्रत्येक पुरुष में तीन वचन हैं; एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

सब विभक्तियाँ दो भागों में विभक्त हैं; परस्मैपद, आत्मनेपद। प्रत्येक विभक्ति के अठारह रूप होते हैं, परस्मैपद में नव, आत्मनेपद में नव। अतएव परस्मैपद में नव्वे और आत्मनेपद में नव्वे रूप होते हैं। इनमें से प्रत्येक को भी विभक्ति ही कहते हैं। इस प्रकार कुल १८० विभक्तियाँ हुईं।

४. धातुविभाग—संस्कृत के सब धातु १० श्रेणियों में विभक्त हैं। प्रत्येक श्रेणी को गण कहते हैं। भ्वादि (First conjugation), अदादि (2nd conj), ह्वादि (3rd conj), दिवादि (4th conj), स्वादि (5th conj), तुदादि (6th conj), रुधादि (7th conj), तनादि (8th conj), क्र्यादि (9th conj), चुरादि (10th conj), ये १० गण हैं।

N. B. रूप बनाने की सुविधा के लिये इन १० गणों को दो भागों में विभक्त करते हैं। प्रथम भाग (Group I) में भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादि हैं तथा शेष गण द्वितीय भाग (Group II) में हैं।

विभक्ति की आकृति।

लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् (special tenses and moods) में प्रथमभाग (Group I) और द्वितीय भाग (Group II) की विभक्तियों की आकृति में कहीं २ कुछ भेद पड़ता है। जहाँ दोनों में भेद पड़ता है वहाँ प्रथम भाग की विभक्ति के सामने ही द्वितीय भाग की विभक्तियाँ भी ऐसी ( ) बन्धनी में दी जाती हैं।

लट्।

पु.	परस्मैपद ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	आत्मनेपद ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	ति	तः	अन्ति	ते	इते (आते)	अन्ते (अते)
म. पु.	सि	थः	थ	से	इथे (आथे)	ध्वे
उ. पु.	मि	वः	मः	इ (ए)	वहे	महे

लोट्।

पु.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम् (आताम्)	अन्ताम् (अताम्)
म. पु.	०(हि)	तम्	त	स्व	इथाम् (आथाम्)	ध्वम्
उ. पु.	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

लङ्।

पु.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	त्	ताम्	अन्	त	इताम् (आताम्)	अन्त (अत)
म. पु.	:	तम्	त	थाः	इथाम् (आथाम्)	ध्वम्
उ. पु.	अम्	व	म	इ	वहि	महि

विधिलिङ्।

पु.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	ईत् (यात्)	ईताम् (याताम्)	ईयुः (युः)	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म. पु.	ईः (याः)	ईतम् (यातम्)	ईत (यात)	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ. पु.	ईयम् (याम्)	ईव (याव)	ईम (याम)	ईय	ईवहि	ईमहि

लृट्।

पु.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म. पु.	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ. पु.	स्यामि	स्यावः	स्यामः	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लृङ्।

पु.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
म. पु.	स्यः	स्यतम्	स्यत	स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
उ. पु.	स्यम्	स्याव	स्याम	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

लुट्।

प्र. पु.	ता	तारौ	तारः	ता	तारौ	तारः
म. पु.	तासि	तास्थः	तास्थ	तासे	तासाथे	ताध्वे
उ. पु.	तास्मि	तास्वः	तास्मः	ताहे	तास्वहे	तास्महे

आशीर्लिङ्।

प्र. पु.	यात्	यास्ताम्	यासुः	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्
म. पु.	याः	यास्तम्	यास्त	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उ. पु.	यासम्	यास्व	यास्म	सीय	सीवहि	सीमहि

लिट्।

प्र. पु.	अ	अतुः	उः	ए	आते	इरे
म. पु.	थ	अथुः	अ	से	आथे	ध्वे
उ. पु.	अ	व	म	ए	वहे	महे

लुङ्।

प्र. पु.	त्	ताम्	अन्	त	आताम्	अन्त
म. पु.	ः	तम्	त	थाः	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	अम्	व	म	इ	वहि	महि *

N. B. (१) लट्–वर्तमान काल में, लोट्–आज्ञा, निमन्त्रण, प्रार्थना, अनुरोध, आशीर्वाद इत्यादि अर्थ में, लङ्-लिट्-लुङ्–भूतकाल में, विधिलिङ् औचित्य (विधि) और आज्ञा इत्यादि अर्थ में, लृट्-लुट्—भविष्यर्थ में, आशीर्लिङ्–आशीर्वाद अर्थ में, लृङ्—दो क्रियाओं के कार्य्य कारण का भाव बोध होने से क्रिया के फल की अप्राप्ति का अर्थबोध होने पर आता है।
(लकारार्थ निर्णय में सविस्तर देखो)।

*प्र. पु.	तिप्	तस्	झि	त	आताम्	झ
म. पु.	सिप्	थस्	थ	थास्	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	मिप्	वस्	मस	इट्	वहि	महिङ्

(२) यदि क्रिया का फल कर्त्ता ही के निमित्त हो तो क्रिया के प
आत्मनेपद की विभक्ति लगती है, पर क्रिया का फल किसी दूसरे के लि
हो तो परस्मैपद की विभक्ति लगती है। यथा, यजते (अपने ला
लिये यज्ञ करता है), यजति (यजमान के लिये यज्ञ करता है)
पर आज कल प्रयोग में ऐसा नहीं है।

Special tenses and moods
(लट् , लोट् , लङ् , विधिलिङ्)
प्रथम भाग (Group I.)

साधारण नियम।

१. अतोगुणे—विभक्ति के अकार परे रहने से पूर्वपद
अकार का लोप होता है। यथा, पत् + अ + अन्ति = पतन्ति

२. अतो दीर्घो यञि—विभक्ति के व और म परे रहने
पूर्ववर्ती अकार का आकार होता है। यथा, पत् + अ + वः
पताव:; पत् + अ + मः = पतामः।

३. लङ् लुङ् लृङ् ष्वडुदात्तः—लङ्, लुङ् और लृङ् विभक्ति
में धातु के आदि में 'अ' होता है। यथा, अभवत् , अभू
अभविष्यत्। परन्तु मा और मास्म शब्दों के योग में अ न
होता। यथा, मा-भवत् , मास्म भूत्।

४. आडजादीनाम्। आटश्च—लङ्, लुङ् और लृङ् विभक्ति
में, 'अ' के साथ धातु के आदिस्थित इ ई का ऐ, उ ऊ का औ
ऋ का आर् हो जाता है। यथा, अ + ईक्ष् + अ + त = ऐक्ष
इष् (इच्छ्)-ऐच्छत्; ऋच्छ-आर्च्छत्; ऐक्षिष्ट, ऐक्षिष्य
इत्यादि।

५. वावसाने—पदान्त वर्गीय वर्ण के स्थान में विकल्प
निज वर्ग का प्रथम वर्ण होता है।

कर्तृवाच्य (Active voice.)

कर्तृवाच्य में धातु तीन प्रकार के हैं; परस्मैपदी, आत्मनेपदी, उभयपदी। परस्मैपदी धातु के परे परस्मैपद की विभक्ति, आत्मनेपदी धातु के परे आत्मनेपद की विभक्ति और उभयपदी धातु के परे दोनों पदों की विभक्तियाँ होती हैं।

कर्तृवाच्य के कर्ता में जो पुरुष और जो वचन होते हैं क्रिया में भी वही पुरुष और वही वचन होते हैं अर्थात् कर्ता उत्तम पुरुष हो तो क्रिया उत्तम पुरुष की होगी, कर्ता मध्यम पुरुष हो तो क्रिया मध्यम पुरुष की होगी, कर्ता प्रथम पुरुष हो तो क्रिया प्रथम पुरुष की होगी, कर्ता एकवचन हो तो क्रिया एकवचन की, कर्ता द्विवचन हो तो क्रिया द्विवचन की और कर्ता बहुवचन हो तो क्रिया बहुवचन की होगी। यथा, अहं गच्छामि; स गच्छति; आवां गच्छावः; वयं गच्छामः इत्यादि।

तुदादि (6th conjugation)

१. तुदादिभ्यः शः—लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्, इन चार विभक्तियों में तुदादिगणीय धातु के परे तथा विभक्ति के पूर्व 'अ' जोड़ दिया जाता है। यथा, सृज् + अ + ति = सृजति।

स्पृश् (to touch) परस्मैपद ।

लट् ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
मध्यमपुरुष	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
उत्तमपुरुष	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः



लोट्।

प्रथमपुरुष	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
मध्यमपुरुष	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उत्तमपुरुष	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

लङ्।

प्रथमपुरुष	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
मध्यमपुरुष	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उत्तमपुरुष	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

विधिलिङ्।

प्रथमपुरुष	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
मध्यमपुरुष	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उत्तमपुरुष	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

परस्मैपदी धातु।

उज्झ् to avoid, to abandon, उञ्छ् to glean, त्रुट् to cut, मृश् to touch, to shake, लिख् to write, विश् to enter, with नि to sit down, with परि to place before, with सम् and नि to be near, with सम् and आ to introduce, सृज् to create, with उत् or वि to leave, with सम् to unite, स्पृश् with उप to trend upon, स्फुर् to open, स्फुट् to throb, इन धातुओं के रूप 'स्पृश्' के समान होंगे।

विज् to fear, to tremble आत्मनेपदी।

लट्।

प्रथमपुरुष	विजते	विजेते	विजन्ते
मध्यमपुरुष	विजसे	विजेथे	विजध्वे
उत्तमपुरुष	विजे	विजावहे	विजामहे

लोट् ।

प्रथमपुरुष	विजताम्	विजेताम्	विजन्ताम्
मध्यमपुरुष	विजस्व	विजेथाम्	विजध्वम्
उत्तमपुरुष	विजै	विजावहै	विजामहै

लङ् ।

प्रथमपुरुष	अविजत	अविजेताम्	अविजन्त
मध्यमपुरुष	अविजथाः	अविजेथाम्	अविजध्वम्
उत्तमपुरुष	अविजे	अविजावहि	अविजामहि

विधिलिङ् ।

प्रथमपुरुष	विजेत	विजेयाताम्	विजेरन्
मध्यमपुरुष	विजेथाः	विजेयाथाम्	विजेध्वम्
उत्तमपुरुष	विजेय	विजेवहि	विजेमहि

विज् with उत् to shake उद्विजते ।

उभयपदी ।

कृष् to plough, क्षिप् to throw, दुह् to give pa..
दिश् to grant, with आ to order, with उत् to proclaim
with उप to advise, with निर् to speak abou..
with वि & निर् to declare, with सम् to communi..
cate, तुद् to throw, to send, to put, to incite, with
प्र to direct, with अप to remove, with निर् ..
confess, with वि to be happy, मिल् to join, इनके ..
'मिश्' और 'विज्' दोनों के समान होंगे ।

ऋकारान्त धातु ।

१ रिच् धातुमिस्थु—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में ..
के अन्तर्गत ऋ का रिय् हो जाता है ।

मृ to die आत्मनेपदी।

	लट्			लोट्	
. पु म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
. पु म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
. पु म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

लङ्, विधिलिङ् में भी ऐसे ही विभक्तियाँ जोड़ दो।

आत्मनेपदी—दृ with आ to worship, to regard, पृ with वि and आ to be busy, इनके रूप 'मृ' के समान होंगे।

ऋकारान्त धातु।

३ ऋत इद्धातोः—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में धातु के अन्तस्थित ऋ का इर् हो जाता है। यथा, कॄ to scatter, to pour out—किरति, किरतः, किरन्ति। गॄ to devour, to swallow—गिरति, गिरतः, गिरन्ति। ऐसे ही विभक्तियों को जोड़ने से सब रूप बन जायँगे।

इकारान्त, उकारान्त धातु।

४ लट् इत्यादि चार विभक्तियों में धातु के अन्तस्थित ह्रस्व या दीर्घ इ, उ के स्थान में यथाक्रम इय्, उव् हो जाते हैं। यथा, रि to go, to move—रियति, रियतः, रियन्ति इत्यादि। धू to shake—धुवति, धुवतः, धुवन्ति इत्यादि। क्षि to dwell—क्षियति।

परिवर्त्तनीय धातु।

५. निम्नलिखित धातुओं में कुछ परिवर्त्तन होता है। लट् के प्रथम-एकवचन का रूप दिया जाता है। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में ऐसे ही विभक्तियों को जोड़ने से सब रूप

बन जायेंगे। अन्य गणों में भी परिवर्तनशील धातुओं के रूप ऐसा ही करना चाहिये।

इष् to wish इच्छति	मस्ज् to bathe मज्जति
कृत् to cut कृन्तति	मुच् to release मुञ्चति
कृ with उप or प्रति उप.	लिप् to anoint लिम्पति
स्किरति or प्रतिस्किरति	लुप् to break लुम्पति-ते
खिद् to suffer pain खिन्दति	विद् to obtain विन्दति-ते
गृ to swallow गिरति, गिलति,	व्यच् to deceive विचति
with उत् to vomit, with	व्रश्च् to cut वृश्चति
सम् and उत् to throw up.	सस्ज् to go सज्जति
छुद् to cut छुदयति, छुदति	सिच् to sprinkle सिञ्चति
प्रच्छ् to ask पृच्छति	पिश् to form पिंशति
भ्रस्ज् to fry भृज्जति-ते	

Exercise— 17

1. Translate into Hindi:— [illegible] बुभुक्षया गात्रं सीदति व्यथानुविद्यते तस्य हृदयम्। ते क्षेत्रेषु धान्यानि उञ्छन्ति। सेन राज्ञया सैनिका नगरं प्राविशन् *। ब्रह्मा सृष्टिमिमां असृजत्। तव क्षेत्रं कृषेत्। नृपतेरादेशेन सैनिका बाणान् अक्षिपन्। तस्य पुत्रो मामनुवर्तताम्। पितरौ मामादिशतः। आवां प्रभोः क्षेत्राणि अलिखाम स्वामिन्! अस्मात् नरकात् मुञ्च माम्। अस्मिन् सरोवरे बालका मज्ज यूयं गुरुं बहूनि प्रश्नानि पृच्छथ।

2. Translate into Sanskrit:- (a) राजा ने चोरों को छोड़ दि उसके लड़के फल की इच्छा करते हैं। अपनी माता से पूछो। आज मुझे ठग दिया। ईश्वर की कृपा से वह धन पावे। मृत्युलोक के मरते हैं। कल उसका बड़ा लड़का मर गया। अपने पिता के पास एक

*किसी गण के धातु के पूर्व उपसर्ग हो तो धातु का रूप बना कर पहले उपसर्ग जोड़ दिया जाता है। यथा, प्र-विश् प्र+अविशत् = प्राविशत्

3



लिखा । किसी को दुःख मत दो । हवा से वृक्ष के पत्ते हिलते हैं । सब लोग स्वर्ग में जाते हैं । उसके दोनों लड़के पत्र लिखें । ब्रह्मा सृष्टि को बनावें । मैं देशभक्तों का हृदय से आदर करता हूँ । तुम्हारे दोनों लड़कों ने सब रुपये छितरा दिये । उसने छुरी से अपनी अंगुली काट दी है । उसने प्रेमाश्रु से पुत्र का शरीर सींच डाला ।

(b) Yamaraj asked Yudhishthir many questions. You should enter the assembly. Soldiers got order of their general. The cloud sprinkled the earth yesterday. We two wish your welfare. Let us plough our fields for corns. I am writing a book of Sanskrit grammar. Ask this of your parents. Touch the right hand of your friend. Warriors should throw arrows on their enemies. Kings too have regards for wise men.

3. Correct—आवां त्वां स्मरामि । सर्वे त्वां आह्वयन्ति । तौ त्वं आह्वयति । यूयं गुरुं पृच्छ । नरा क्षिपन्ति । पुस्तकं लेखामि । स्तोत्रा अस्य सर्पस्य अनुचन् । तः फलमेक ऐचत् । ते धनं विस्मरथ । स पवनं अदृष्टान् स्म ।

भ्वादि (1st Conjugation).

१. कर्त्तरिवाच्य-लट् इत्यादि चार विभक्तियों में भ्वादि गणीय धातु के परे 'अ' जोड़ा जाता है । यथा, पत्+अ+ति = पतति ।

वद् to speak परस्मैपदी ।

लट् ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यमपुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तमपुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

लोट्।

प्रथमपुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यमपुरुष	वद	वदतम्	वदत
उत्तमपुरुष	वदानि	वदाव	वदाम

लङ्।

प्रथमपुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यमपुरुष	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तमपुरुष	अवदम्	अवदाव	अवदाम

विधिलिङ्।

प्रथमपुरुष	वदेत्	वदेताम्	
मध्यमपुरुष	वदेः	वदेतम्	
उत्तमपुरुष	वदेयम्	वदेव	

परस्मैपदी धातु।

अक् to go, अट् to pervade, अय् to go, to beg worship, अट् to ramble, to wander, अत् to go, to worship, अर्ज् to earn, अर्ह् to worship, to serve, अव् to protect, ईर्ष्य् to envy, कल् to burn, to sound, कांक्ष् to wish, to desire, कूज् to coo hum, कुष् to be blunded, क्रन्द् to cry, क्रीड् to p क्षर् to flow, क्षल् to wash, खाद् to eat, गद् to say, to roar, गै to sing, ग्लै to be weary, चर् to w with अति & आ to transgress, with अभि to be with अनु to attend, with आ to practise a du with उप to worship, with परि to serve, with वि अभि to go astray, with सम् to ride upon, with & आ to perform, चर्च् to discuss, चर्व् to eat,

chew, चल् to walk, to move, चुम्ब् to kiss, जप् to mutter, जल्प् to rumour, जीव् to live, ज्वर् to be hot with fever, ज्वल् to burn, to glow, टल् to be confused, तक्ष् to cut, to wound, तप् to shine, with अनु to repent, with परि or सम् to beat or inflict pain, तर्ज् to threaten, त्यज् to abandon, त्रस् to trouble, दल् to burst open, दह् to burn, to pain, धे to suck, ध्यै to think, ध्वन् to sound, नट् to dance, to act, नद् to sound, नन्द् to be pleased, with अभि to wish for, with आ to be happy, with प्रति to be thankful, नम् to salute, नर्द् to sound, निन्द् to censure, पठ् to read, पण् to praise, पत् to fall, with अति prefixed to excel, with अभि or अव to descend, with आ to come, with उत् to ascend, with नि to get or fall down, with वि to turn back, with सम् & उत् to fly, फल् to result, फुल्ल् to open, to blow, भण् to speak, भूष् to adorn, भ्रम् to walk, to roam, मण्ड् to decorate, मथ् to churn, मील् to close, to twinkle, मुण्ड् to shave, to grind, मूर्छ् to faint, म्लै to grow weary, रक्ष् to protect, लप् to talk, with अनु to talk like, with अप to deny, with आ to address, with प्र to talk incoherently, with वि to lament, with सम् to converse, लस् to shine, लुण्ठ् to rob, to plunder, वद् with अनु to speak similarly, with अप to reprove, with परि to speak against, with प्रति to reply, वम् to vomit, वस् to dwell, with अधि to occupy, with उप to fast,

with नि to dwell, with प्र to dwell abroad, काङ्क्ष् to wish, to desire, व्रज् to go, शंस् to praise, with प्र to praise, स्खल् to fall down, स्तन् to sound, हस् to laugh.
इन धातुओं के रूप लट् इत्यादि चारों विभक्तियों में 'वद्' के समान हैं।

सेव् to serve आत्मनेपदी।

लट्।

प्रथमपुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यमपुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तमपुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट्।

प्रथमपुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यमपुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तमपुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ्।

प्रथमपुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यमपुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तमपुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ्।

प्रथमपुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यमपुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तमपुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

आत्मनेपदी धातु।

अय् to go, with प्रति to believe, with प्र or परा to fly, ईक्ष् to see, with अप to expect, with अभि to

gaze at, with अव to inspect, with निर् to see, with परि to examine, with प्रति to expect, with प्र to see, with सम् to compare, to select, with उद् to look at, with उप to abandon, to neglect, ईह् to aim at, एज् to shake, एध् to grow, to prosper, कम्प् to shake, to tremble; काश् to shine, क्षम् to bear, to endure; गाह् to bathe, वञ्च् to be crooked, ग्रस् to swallow, घट् to happen, क्रम् with उत् to transgress, चेष्ट् to strive, to try, जृम्भ to yawn, ढौक् to go, with उप to approach, तप् with सम् or वि to warm, त्रप् to be ashamed, त्रै to protect, त्वर् to hurry, दद् to give, दध् to hold, दय् to pity, to protect, दीक्ष to dedicate oneself to, ध्वंस् to perish, to fall down; प्याय् to grow, to swell, प्रथ् to become famous, बाध् to oppress, to torment, भाष् to speak, with परि to explain, with सम् to converse, with अप to censure, भास् to shine, भिक्ष् to beg, भ्रंश् to fall down, भ्राज् to shine, भ्लाश् to shine, भ्राश् to shine, यत् to attempt, रभ् to begin, with आ to begin, रम् to play, with उप or वि to rest, with उप to stop, लक्ष् to perceive, लभ् to get, to gain, लम्ब् to hang down, with अव to hold, with वि to delay, लोक् to see, with अव to see, लोच् to see, to discuss, वद् with वि to dispute, वन्द् to salute, वेप् to tremble, वेष्ट् to surround, व्यथ् to be sorry, शङ्क् to doubt, to be afraid, शंस् with आ to hope, शिक्ष् to learn, श्लाघ् to praise, सह् to bear, to

suffer, ऊह् to suppose, मन् to think, मर्द्, to che[illegible] lionize, स्यन्द् to flow out, to sue, ईड् to praise, मुद् to be glad, इन धातुओं के भी लट् इत्यादि चार विभक्तियों में सेव् के समान होंगे।

उभयपदी धातु।

खन् to dig, सृ to sue, to flow, याच् to ask, to bless, पच् to cook, to digest; भज् to honour, to share; यज् to sacrifice, to worship; याच् to beg, राज् to shine, इष् to wish, to desire, with अभि to wish; वप् to sow, to scatter, वह् to carry, वे to weave, शप् to swear, to curse; ह्वे to call इन धातुओं के भी रूप 'सेव्' धातु के समान होंगे।

* सार्वधातुकार्धधातुकयोः—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातु के अन्त्य स्वर का गुण होता है। यथा: भू + अ + ति = भो + अ + ति = भव् + अ + ति = भवति

जि to conquer परस्मैपदी।

	लट्			लोट्		
प्र. पु.	जयति	जयतः	जयन्ति	जयतु	जयताम्	जयन्तु
म. पु.	जयसि	जयथः	जयथ	जय	जयतम्	जयत
उ. पु.	जयामि	जयावः	जयामः	जयानि	जयाव	जयाम

लङ्, विधिलिङ् में भी ऐसे ही विभक्तियाँ जोड़ दो।

भू to be प. लट्				स्मृ to remember प. लट्		
प्र. पु.	भवति	भवतः	भवन्ति	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म. पु.	भवसि	भवथः	भवथ	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ. पु.	भवामि	भवावः	भवामः	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लोट्, लङ्, विधिलिङ् में भी ऐसे ही विभक्तियाँ जोड़ दो।

* ह्रस्व या दीर्घ इ उ ऋ और लृ का गुण क्रम से ए ओ अर् और अल् होता है

परस्मैपदी धातु।

क्षि to waste away, तॄ to cross, with अव् to descend, with आ to cross by a boat, with उत् to cross over, with दुर् to cross with difficulty, with निर् to obtain salvation, with वि to give away, with सम् to swim over, द्रु to melt, to rush, नी with अनु to entreat, with अप to take away, with अभि to indicate by signs, with आ to bring, with उत् to raise up, with निर् to ascertain, with परि to marry, with वि to be humble, with प्र to write, with वि and अप to remove, with सम् and आ to assemble, with उप to invest with sacred thread, श्वि to swell, to increase; चर to move, with अनु to follow, with अप to go back, with अभि to attend, with उप to approach, with निर् to go forth, with प्र to proceed; सृ to flow, to go, हृ with अनु to imitate, with अप to remove, with अभि and आ to reason, with उत् and आ to say, to illustrate, with उप to bring to, with उप and सम् to withhold, with निर् and आ to fast, with परि to leave, with प्र to strike, with प्रति (प्रती) to keep watch, with वि to sport, with वि and आ to say, with वि and अव to transact business, with सम् to kill, with सम् and आ to collect इन धातुओं के रूप लट् इत्यादि चारो विभक्तियों में जि, भू वा स्मृ के समान होंगे।

आत्मनेपदी धातु—डी to fly, with उत् to fly, द्रु to go, to jump; स्मि to smile. इनमें भी अन्त्य स्वर का गुण करके आत्मनेपद की विभक्ति लगाने से चारों विभक्तियों में रूप बन जायेंगे।

उभयपदी धातु— धृ to hold, to bear, नी to le[ad]; भृ to nourish, to carry; श्रि to serve, to go; ह[ृ to] take away. इन धातुओं में भी गुण करके परस्मैपद और आत्मने[पद] दोनों विभक्तियों के जोड़ने से रूप बन जायेंगे।

३ पुगन्तलघूपधस्य च—लट् इत्यादि चार विभक्तियों [में] भ्वादिगणीय धातु की उपधा * के लघु स्वर का गुण हो[ता] है। यथा, शुच् + अ + ति = शोच् + अ + ति = शोचति †।

	सिध् to go प. लट्			शुच् to mourn प. लट्		
प्र. पु.	सेधति	सेधतः	सेधन्ति	शोचति	शोचतः	शोच[न्ति]
म. पु.	सेधसि	सेधथः	सेधथ	शोचसि	शोचथः	शोचथ
उ. पु.	सेधामि	सेधावः	सेधामः	शोचामि	शोचावः	शोचा[मः]

वृत् to exist आ. लट्।

प्र. पु.	वर्त्तते	वर्त्तेते	वर्त्तन्ते	लोट्, लङ्, विधिलिङ् भी ऐसे ही विभक्तियों जोड़ने से सिध्, शुच्, वृ[त्] के रूप बन जायेंगे।
म. पु.	वर्त्तसे	वर्त्तेथे	वर्त्तध्वे	
उ. पु.	वर्त्ते	वर्त्तावहे	वर्त्तामहे	

* अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा— शब्द के अन्त्य वर्ण के पूर्व (अन्त्य) वर्ण को उपधा कहते हैं। यथा, शुच् = श् + उ + च्, इसमें उ उपधा है।

† तुदादि व दिवादि गणीय धातुओं के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघु स्वर का गुण नहीं होता।

परस्मैपदी धातु ।

उष् to burn, कृष् to plough, to draw, with अप to draw down, with अव to draw out, with आ to attract, with उद् to raise, with सम् to draw together, with सम् & नि to bring near, क्रुश् to cry, to lament, with आ to censure, with उप to reproach, with उत् to cry aloud, घुष् to proclaim, to sound, मुष् to rob, चित् to understand, श्चुत् to drop down, पुष् to nourish, मृष् to bear, to sprinkle; वृष् to rain, सृप् to go, to creed. इनके रूप 'लिख् या पठ्' के समान होंगे ।

आत्मनेपदी धातु ।

ऋज् to go, acquire, क्षुभ् to disturb, द्युत् to shine, भृज् to fry, to parch; मुद् to be glad, to rejoice, रुच् to be pleased, वृध् to grow, शुभ् to shine, स्फुट् to split open. इनके रूप 'वृत्' के समान होंगे ।

उभयपदी धातु—ज्ञा to know के रूप बुध् और वृत् दोनों के समान होंगे ।

परिवर्त्तनीय धातु ।

ऋ to go ऋच्छति
गुप् to protect गोपायति
धूप् to heat धूपायति
विच्छ् to go विच्छायति
पण् to praise पणायति, to transact business पणते
गुह् to conceal गूहति-ते

भास् to shine भासते
भ्रम् to roam भ्रमति, भ्राम्यति
क्रम् to walk क्रमति, क्राम्यति
लष् to desire लष्यति-ते
धिन्व् to please धिनोति

कम् to wish कामयते
ष्ठिव् to spit ष्ठीवति
चम् with आ to sip आचामति
गम् to go गच्छति
यम् to restrain यच्छति
पा to drink पिबति
घ्रा to smell जिघ्रति
ध्मा to blow धमति
स्था to stand तिष्ठति
म्ना to think मनति
दा to give यच्छति
दृश् to see पश्यति
शद् to perish शीयते
सद् to perish सीदति
दंश् to bite दशति
सञ्ज् to adhere सजति
स्वञ्ज् to embrace स्वजते
रञ्ज् to dye रजति-ते
मृज् to be clean मार्जति
जम् to yawn जम्भते
कृप् to be edequate कल्पते
लज्ज् to blush लज्जते
सज्ज् to be ready सज्जति
कित् to treat as a patient चिकित्सति-ते

कृण्व् to kill, hurt कृणोति
अक्ष् to pervade अक्ष्णोति
तक्ष् to cut तक्ष्णोति
मन् to reproch मानीयते
गुप् to censure जुगुप्सते
तिज् to bear तितिक्षते
बध् to be disgussed बीभत्सते
दान to make straight दीदांसति-ते
मान् to think मीमांसते
शान् to sharpen शीशांसति ते
कित् to desire केतति, to dwell केतयति
दान् to cut दानयति ते
मिद् to cut मिन्दति
अह् to go अहते
पिड् to roll into a ball, पिण्डते
शुद् to purify, to go शुंडति
दृह् to be firm दृहति-दृंहति
म्लुच्-म्लुच् to go म्रोचयति, म्रुञ्चति; म्लोचयति, म्लुञ्चति
लुच् to pluck लोचति, लुञ्चति
गुञ् to hum गोजते, गुञ्जते
गृज् to roar गर्जति, गृंजति

Exercise—18

1. Translate into Hindi— पिता पुत्रमवदत् । सर्वे नराः एवं इच्छन्ति स्म । मम सेवका भवन्तं सेवताम् । ब्राह्मण ! श्रद्धया पितरं सेवस्व । तस्य पुत्राः पठनाय विद्यालयं अगच्छन् । राजानः सैन्यबलेन शत्रून् जयन्ति । वानराणां साहाय्येन रामो रावणं अजयत् । प्राणभयेऽपि मिथ्या मा वद । सदा सत्यं वदेत् । पुरा सुरासुरयोर्महायुद्धमभवत् । कीर्तिर्यस्य स जीवति । तौ मृगस्य वासभूमिं अगच्छताम् । पिता कन्यायै पुत्तलिकाम् अयच्छत् । स पादाभ्यां चलति । आवां बालकैः सह तत्र क्रीडावः । यूयं प्रातः काशीं गच्छत । चौराः तेषां सर्वस्वं अपाहरन् । नारदः स्वर्गात् पृथिवीं अवतरति । वीराः नृपते रादेशायात्र वर्तन्ते ।

2. Translate into Sanskrit—(a) मैं सामने भय देख रहा हूँ । घर जाओ और पुस्तक लाओ । वह सेना के साथ वन में घूमता है । इस समय दोनों कहाँ से आते हो ? चारों ब्राह्मण पढ़ने के लिये काशी गये । शिव हम लोगों की रक्षा करें । आम की डाली पर कोयल बोलती है । राम प्रातःकाल में शय्या से उठता है । वह अपना हाथ मुख धोता है । लड़कों को मिठाई अच्छी लगती है । हम दोनों ने सभा में रामायण गान किया । इस वन में रातदिन सिंह व व्याघ्र गरजते रहते हैं । शौनक ऋषि के पुत्र के शाप से राजा परीक्षित मर गये । दुष्टों का साथ छोड़ो, भलों के साथ रहो । इस कुत्ते ने कई आदमियों को काटा है । राजा ब्राह्मणों को धन देता है ।

(b) Boys see tigers in the forest. Sages always think about God. Every man and woman salute him respectfully. They two fell down from the top of the mountain. She adorns her body with ornaments. Gods and demons churned the sea with a mountain. The sage ascended the high peak of the Himalayas. In ancient times kings went to the forest in their old age.

3. Correct—वर्षा भवति । देवम् तिष्ठति । सर्वे पुत्रान् स्मरन्ति । सूर्यः दिवायां प्रकाशति । अहं भयात् कम्पते । ते मधुरं भाषन्ति । बालकाः मोदकानि रोचन्ते । स वनं अगमन् । त्वमोदनं पचेत् । बालकाः धावन्तु । ते बालकाम् द्रक्षेम ।

दिवादि (4th Conjugation.)

१ विकरण: श्यन्—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में दिवादि गणीय धातु के परे य जोड़ा जाता है। यथा, मद्+य+ति = मद्यति।

नृत् to dance परस्मैपदी।

लट्।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लोट्।

प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्।

प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्।

प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

परस्मैपदी धातु।

अस्-to throw, with नि to deposit, with निर् to expel, with अप to abandon, with परि and उत् to

sit around, with ■ to reject, with वि to divide, with सम् and नि to abandon the world, with सम् to collect, इष् to go, with अनु to search after, राध् to prosper, to please; कुप् to be angry, क्रुध् to be angry, कृश् to become thin, क्षिप् to throw, क्षुभ् to be angry, क्षुभ् to be agitated, तुष् to be pleased, तृप् to become satisfied, तृष् to be thirsty, त्रस् to be afraid, त्रुट् to cut, दुष् to impure, दृप् to be proud, द्रुह् to bear malice, नश् to be lost, to perish, पुष् to nourish, पुष्प् to open, to blow, मुह् to faint, राध् to be favourable, रुष् to be angry, लुभ् to covet, शुध् to be pure, शुष् to be dried, श्लिष् to embrace, सिध् to succeed, to accomplish, स्निह् to have affection for, स्विद् to perspire, हृष् to be delighted इनके रूप सारे विभक्तियों में 'नृत्' के समान होंगे।

विद् to be, to exist आत्मनेपदी।

लट्।

प्रथम पुरुष	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
मध्यम पुरुष	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उत्तम पुरुष	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लोट्।

प्रथम पुरुष	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
मध्यम पुरुष	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उत्तम पुरुष	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

लङ्।

प्रथम पुरुष	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
मध्यम पुरुष	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उत्तम पुरुष	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

विधिलिङ्।

प्रथम पुरुष	विद्येत	विद्येयाताम्	विद्येरन्
मध्यम पुरुष	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येध्वम्
उत्तम पुरुष	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

आत्मनेपदी धातु।

अन to breathe, to live; क्लिश् to be afflicted, to suffer pain, डी to fly, तप् to be powerful, trouble, with अनु to repent, with परि or सम् to be sorrowful (see श्यादि), दीप् to shine, दू to suffer pain, पद् to go, to attain, with अभि to understand, with अनु to follow, with आ to happen, with उद् to be born, with प्र to gain, with उप or प्रति to gain, with नि to suffer misfortune, with वि and उद् to discriminate, to analyze, with सम् to increase, to execute, with सम् and आ to finish; पूर् to fill, to satisfy, प्री to feel affection, बुध् to know, with to look for, with वि to wake, मन् to think, to know, with अनु to assent, with अभि to desire, with अव to disrespect, with सम् to concur; मा to measure, मी to kill, युज् to concentrate the mind, with to take, to eat, with नि to order, to join, with

to be fit, with वि to separate, with सम् to unite, युध् to fight, ली to lie on, to stick, सू to produce, सृज् to create. इनके रूप चारो विभक्तियों में 'दिव्' के समान होंगे।

उभयपदी धातु।

नह् to bind, सह् to suffer, to pardon, इष् to wish, शक् to be able, शप् to curse, शुच् to be afflicted. इनके रूप नृत् और दिव् दोनों के समान होंगे।

ॠकारान्त धातु।

ऋत इद्धातोः। हलि च—लट् इत्यादि चारो विभक्तियों में ॠकारान्त धातु के ॠ का ईर् हो जाता है। यथा, जॄ to grow old—जीर् + य + ति = जीर्य्यति, जीर्य्यतः, जीर्य्यन्ति; दॄ to tear दीर्य्यति, दीर्य्यतः, दीर्य्यन्ति इत्यादि।

ओकारान्त धातु।

१. ओतः श्यनि—लट् इत्यादि चारो विभक्तियों में ओकारान्त धातु के ओ का लोप होता है। यथा, सो to destroy स्यति, स्यतः, स्यन्ति इत्यादि। छो to cut, दो to cut, शो to sharpen के रूप ऐसे ही होंगे।

परिवर्त्तनीय धातु।

क्रम् to go क्राम्यति	भ्रम् to walk भ्राम्यति
तम् to endure ताम्यति	भ्रंश् to fall भ्रश्यति
क्षम् to endure क्षाम्यति, क्षमति	स्रंस् to fall स्रस्यति
	मद् to be mad माद्यति
जन् to be born जायते	रञ्ज् to colour रज्यति-ते
तम् to desire ताम्यति	व्यध् to hurt विध्यति
दम् to be tamed दाम्यति	शम् to be calm शाम्यति
दिव् to play, to shine दीव्यति	श्रम् to be wearied श्राम्यति
	सिव् to sew सीव्यति

Exercise—17

1. Translate into Hindi:— पुत्राय कुप्यति । कन्या [illegible] नदन्ति । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] शतं पुत्राः [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । पिता पुत्राय [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) मुनि ने राजा को [illegible] दिया। वे अपने कर्तव्य से प्रसन्न हो गये। आकाश में तारे चमकते हैं। सेनापति के आज्ञा से सेना एक नगर से दूसरे नगर में जाती है। दोनों [illegible] [illegible] । वानर फलों से संतुष्ट होते हैं। पक्षी आकाश में उड़ते हैं। [illegible] [illegible] शुभ जीव जनमते और मरते रहते हैं। क्रोध से दुःख उत्पन्न होता ।

(b) Mothers have affection for their children. He has grown old and his son is now young. The arrow [illegible] the enemy pierced him in the battlefield. Owing to fear of punishment he became calm. You should not be agitated in vain. He closely embraced his son. Owing to the want of water lotuses dried up.

3. Correct:—स फलैः तोष्यति । कन्या नन्दति । [illegible] [illegible] सरस्य जलं शोषति । बालको नृत्यति । पिता कुप्यते । पुत्रो [illegible] तस्य हृदयं क्षुभ्यतु । पुत्रं श्लिष्यते ।

चुरादि (10th Conjugation)

१९. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो लट् इत्यादि चार विभक्तियों में चुरादिगणीय धातु के (स्वार्थ में णिच् होता है अर्थात्) 'अय' जोड़ा जाता चुरादिगणीय धातु प्रायः उभयपदी होते हैं। यथा, भक्ष् + अय + ति = भक्षयति ते ।

परस्मैपदी-लट्   आत्मनेपदी-लट

१. पु. भक्षयति भक्षयतः भक्षयन्ति भक्षयते भक्षयेते भक्षयन्
२. पु. भक्षयसि भक्षयथः भक्षयथ भक्षयसे भक्षयेथे भक्षयध्
३. पु. भक्षयामि भक्षयावः भक्षयामः भक्षये भक्षयावहे भक्षयाम

लोट्, लङ् विधिलिङ् में भी ऐसे ही विभक्तियाँ जोड़

अंस् to distribute, अघ् to commit sin, अङ्
count, to mark; अच् to worship. अर्च् to wors
अर्ज् to earn, अर्द् to kill, अर्ह् to worship, अन्ध् to
blind, अवधीर् to hate, आन्दोल् to rock, कथ् to tell
to pierce, कल् to sound, to count, कुण्ठ् to cove
to send, to direct, खण्ड् to break, गण् to count,
to sound, गर्द् to sound, गर्ह् to blame, to cen
गुण् to multiply, ग्रन्थ् to string together, चर्च्
study, चित्र् to paint, चिन्त् to think, to cons
चूर्ण् to crush, छद् to cover, छिद्र to bore, क्षप् to k
तुल् to weigh, to examine, दण्ड् to punish, to
दुःख to give pain, ध्वन् to sound, पाल् to protec
to give pain, पूज् to worship, पूर् to fill, to
प्रथ् to publish, भूष् to adorn, मण्ड् to adorn, म
honour, मान् to respect, मार्ग् to seek for, to d
ate, मिश्र् to mix, मूल् to plant, यन्त्र् to restrai
to adorn, to write, रूप् to form, to find out, ल
see, to look at, लिख् to paint, लोच् to speak, to s
वण्ट् to divide, वर्ण् to explain, शब्द् to sound,
to appease, सूच् to trace out, यथा—

आत्मनेपदी धातु— अर्थ to beg, कुत्स to abuse, तं to blame, दंश to bite, भर्त्स to threaten, मन्त्र to c sult, मृग to seek, लक्ष to notice, to desire, वञ्च cheat. इनके रूप भक्ष् इत्यादि चारों विभक्तियों में 'भक्ष्' के समान हों ये सब अकारान्त धातु हैं, पर इनके 'अ' का लोप हो जाता है।

२– 'अय' के पहले चुरादिगणीय धातुओं के अन्त्य स्व तथा उपधा के 'अ' की वृद्धि * होती है। यथा, चि (to gather) + अय + ति = चै + अय + ति = चाय् + अय + ति चाययति। तड् + अय + ति = ताड् + अय + ति = ताड ताडयतः, ताडयन्ति इत्यादि चारों विभक्तियों में ऐसे ही हो

अकारोपधधातु— क्षल् to wash, भक्ष् to eat, घट् collect together, धृ to hold, to suppose, श shine, to fall तथा परस्मैपदी धातु— गल् to pour to filter, मद् to please, इनके रूप 'तड्' के समान होंगे। जप्, कथ् इत्यादि उपर्युक्त धातुओं की उपधा का दीर्घ नहीं होता।

३ 'अय' के पहले धातु की उपधा के लघु स्वर (इ उ का गुण होता है। यथा, चुर् (to steal) + अय + ति = + अय + ति = चोरयति, चोरयतः, चोरयन्ति इत्यादि।

घुष् to proclaim, तिज् to sharpen, तुल् to weig to examine, त्रुट् to tear (परस्मैपदी) इनके रूप 'चुर्' समान होंगे। पर स्पृह् to desire, मृग to seek, दय pity, सुख् to make happy, स्फुट् to become manife इत्यादि के उपधा-लघुस्वर का गुण नहीं होता। यथा, स्पृहयति।

---

* अ की वृद्धि आ, इ ई की ऐ, उ ऊ की औ, और ऋ की आर् होती है।

परिवर्त्तनीय धातु ।

कृत् to celebrate कीर्त्तयति	प्री to please प्रीणयति
धू to shake धूनयति	गण्-गणयति
अर्थ to beg अर्थापयति	वण्ट्-वण्टापयति
लज्ज् to be ashamed लज्जापयति	

Exercise—20

1. Translate into Hindi :—गोपालस्य पुत्री धन मर्जयत: । तस्मै कथामिमा मकथयत् । तस्य दुष्टस्य सर्व्वं वृत्तान्तं राज्ञे कथय । तौ गुरोः पादौ जलेनाक्षालयताम् । कोऽपि कति मुद्राः वस्त्रस्य इति कोषाध्यक्षः मुद्राः गणयति । नृपस्याज्ञां घोषयतु भवान् । धनार्थं वृथा न चिन्तयेत् बालकः । भिक्षुकाः राजानं मर्थयन्ते । रहसि नृपतिः मन्त्रिभि र्मन्त्रयेत् ।

2. Translate into Sanskrit :— (a) तुम दोनों घोड़े को क्यों मारते हो। शिक्षक ने कल लड़कों को दण्ड दिया। राम ने प्रजा को पुत्र के समान पाला। साधु लोग कभी किसी को दुःख नहीं देते। वह माता पिता को ईश्वर के समान पूजता है। उसने इस वर्ष कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। गहने से लड़के का शरीर आभूषित कीजिये। मीठी बात से लोगों को सान्त्वना देनी चाहिये। तब शृगाल जोर से बोलने लगे।

(b) The mother protects her children. Tell me where your father is now. An idle man always thinks of sin. A learned man should think of success as well as of failure. One day the boy cheated his class-fellows and his teacher. He stole every thing of his.

3. Correct:—धन मार्जयामि । शत्रून् ताडयन्ति । द्रव्यम् मुषयत् । सुखं मार्गयन्ति जनाः । स धनमर्थयति । भार्या भूषणाभिः शरीरान् भूषयामः । राजाज्ञा घोषयति मन्त्री ।

द्वितीय भाग (Group II)

इस भाग (group) की १८० विभक्तियाँ दो भागों में

विभक्त हैं; सबल (strong terminations) और अबल (weak terminations)

सबल विभक्ति — में लट्-ति, सि, मि; लङ्-त्, स्, अम्; लोट्-तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै; ये १३ विभक्तियाँ हैं।

अबल विभक्ति—में शेष १६७ विभक्तियाँ हैं।

स्वादि, तनादि (5th, 8th Conj.)

१. स्वादिभ्यः श्नुः। तनादिकृञ्भ्य उः—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में स्वादि और तनादि गणीय धातुओं के परे क्रम से नु और उ जोड़ दिये जाते हैं।

२. सबल विभक्तियों में दोनों के 'उ' का 'ओ' हो जाता है।

३. यदि नु या उ के पहले संयुक्त वर्ण न हो तो विभक्ति के व और म के आने से 'उ' का विकल्प से लोप होता है। यथा, सु-सुनुवः, सुन्वः; सुनुमः, सुन्मः; तन्-तनुवः, तन्वः, पर शक् शक्नुवः, शक्नुमः।

४. यदि नु या उ के पहले संयुक्त वर्ण हो तो स्वरादि अबल विभक्तियों के आने से 'उ' का 'उव्' हो जाता है। यथा, शक् शक्नुवन्ति। पर सु-सुन्वन्ति।

५. यदि नु या उ के पहले संयुक्त वर्ण न हो तो लोट् के हि का लोप होता है। यथा, सुनु। पर शक्नुहि।

स्वादि-सु to bathe उभयपदी

लट्-परस्मैपद।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
मध्यमपुरुष	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उत्तमपुरुष	सुनोमि	सुनुवः-सुन्वः	सुनुमः-सुन्मः



आत्मनेपद ।

सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
सुन्वे	सुनुवहे-सुन्वहे	सुनुमहे-सुन्महे

लोट्—परस्मैपद ।

सुनोतु-सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु
सुनु-सुनुतात्	सुनुतम्	सुनुत
सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

आत्मनेपद ।

सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लङ्—परस्मैपद ।

असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
असुनवम्	असुनुव-असुन्व	असुनुम-असुन्म

आत्मनेपद ।

असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
असुन्वि	असुनुवहि-असुन्वहि	असुनुमहि-असुन्महि

विधिलिङ्—परस्मैपद ।

सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

आत्मनेपद ।

प्र. पु.	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म. पु.	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ. पु.	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

परस्मैपदी धातु—क्षि to destroy, दु to give pain, तृ to be satisfied, हि to send forth, to go तथा—

उभयपदी धातु—चि to collect, धु to shake, धू to shake, कि to throw, to scatter, वृ to choose, सि to bind, to tie, स्तृ to spread, इनके रूप 'सु' के समान होते हैं।

आप् to get परस्मैपद   अश् to spread आत्मनेपद

लट् ।

प्र. पु.	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	अश्नुते	अश्नुवाते	अश्नुवते
म. पु.	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	अश्नुषे	अश्नुवाथे	अश्नुध्वे
उ. पु.	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	अश्नुवे	अश्नुवहे	अश्नुमहे

लोट् ।

प्र. पु.	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	अश्नुताम्	अश्नुवाताम्	अश्नुवताम्
म. पु.	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	अश्नुष्व	अश्नुवाथाम्	अश्नुध्वम्
उ. पु.	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम	अश्नवै	अश्नवावहै	अश्नवामहै

लङ् ।

प्र. पु.	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	आश्नुत	आश्नुवाताम्	आश्नुवत
म. पु.	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	आश्नुथाः	आश्नुवाथाम्	आश्नुध्वम्
उ. पु.	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम	आश्नुवि	आश्नुवहि	आश्नुमहि

विधिलिङ् ।

प्र. पु.	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	अश्नुवीत	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीरन्
म. पु.	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	अश्नुवीथाः	अश्नुवीयाथाम्	अश्नुवीध्वम्
उ. पु.	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम	अश्नुवीय	अश्नुवीवहि	अश्नुवीमहि

परस्मैपदी धातु—आप् with वि to pervade, with उप, सम् & वि to arrive at or enter, क्षण् to cut to wound, शक् to be able, to endure, राध् to kill, to accomplish, साध् to finish. इनके रूप 'आप्' के समान होंगे।

परिवर्त्तनीय धातु।

श्रु to hear शृणोति, with प्रति or सम् to promise, with वि to be famous, धिव् to please धिनोति।

Exercise—21

1. Translate into Hindi:—ऋषिकुमारस्याज्ञया सर्वे राजानमवाप्नोत्। स भुजबलेन द्विषत्स्वपि साम्राज्यं साध्नोति। हरिर्गुरूणां वचनं प्रेम्णा शृणोति। परिश्रमस्य फलं स प्राप्नुयात्। रामस्योद्याने आम्रफलानि चिनु।

2. Translate into Sanskrit—(a) वह अपने दोनों पंखों को फैलाता है। तुम फलों से सन्तुष्ट होओ। उसने बागीचे में बहुत फल पाये। उनका धार्मिक व्याख्यान सुनना चाहिये। राजा के दण्डभय से चोर का सर्वाङ्ग काँपता है।

(b) I gather fruits and flowers every day in the garden. He got much wealth here in the earth. I heard a great noise in the night.

3. Correct:— बालकाः तस्य वचनं न शृणोति। तौ बहूनि फलानि प्राप्नुवः। वयं पुष्पाणि चिन्वामि। फलानि चुनति।

तनादि-तन् to spread उभयपदी।

परस्मैपदी			लट्	आत्मनेपदी	
प्र. पु. तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म. पु. तनोषि	तनुथः	तनुथ	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ. पु. तनोमि	तनुवः-तन्वः	तनुमः-तन्मः	तन्वे	तनुवहे-तन्वहे	तनुमहे-तन्महे

लोट्।

प्र. पु.	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म. पु.	तनु	तनुतम्	तनुत	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ. पु.	तनवानि	तनवाव	तनवाम	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

लङ्।

प्र. पु.	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म. पु.	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ. पु.	अतनवम्	अतनुव } अतन्व }	अतनुम अतन्म	अतन्वि	अतनुवहि } अतन्वहि }	अतनुमहि अतन्महि

विधिलिङ्।

प्र. पु.	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म. पु.	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ. पु.	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

कृ to do उभयपदी।

१ सबल विभक्तियों के आगे तो 'कृ' का 'कर्' और अबल विभक्तियों के आगे में 'कुर्' हो जाता है।

२ विभक्ति के व, म, य परे रहने से कृ के परस्थित उ का लोप हो जाता है।

परस्मैपद			लट्	आत्मनेपद		
प्र. पु.	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे



लोट् ।

ु. करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
ु. कुरु	कुरुतम्	कुरुत	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
. करवाणि	करवाव	करवाम	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ् ।

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ् ।

कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

with अति to exceed, with अधि to overcome,
old right, with अनु to copy, with अप to wrong,
jure, with आ to call, with उप to be friend,
निर् & आ to expel, with परा & आ to act well,
प्र to begin, with प्रति to counteract, with वि
ter, with वि & आ to explain, with सम् to
n, with परि to polish.

Exercise—22

Translate into Hindi—अहमेतत्कार्यं नकरवम् । स स्वबाहु-
वीर्यान् नृपान् अधिकरोति । महता आधरणं सर्वेऽनुकुर्वन्ति ।
त स्वकीर्त्ति तनोति । त्यज दुर्जनसंसर्गं कुरु साधुसमागमम् ।
वने यत्नं कुर्यात् ।

Translate into Sanskrit—(a) राम अपना काम करता
याम नहीं करता । उसने तेरी भलाई की । दूसरों की बुराई
नी चाहिये । कवि लोग बड़ों की कीर्ति फैलाते हैं । सदा

मित्र की भलाई करो। युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया।

(b) Do your duty. You should do this work by all means. The gnat imitates the action of the hare. Ram spread his fame in the whole world.

3. Correct:—ते एतत्कार्य्यं करोति। धर्म्मं कुर्यात् त्वम्। मां पूजा करोमि। तौ गानं कुर्व्वन्ति। भार्यां तस्य कीर्त्तिं तनुवाद्।

क्र्यादि (9th Conj.)

१ क्र्यादिभ्यः श्ना—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में क्र्यादिगणीय धातुओं के परे सबल विभक्ति में ना, स्वरादि अबल विभक्ति में न् और व्यञ्जनादि अबल विभक्ति में नी जोड़ दिया जाता है।

२ व्यञ्जनान्त धातुओं में लोट् के 'हि' का 'आन' होता है और ना का लोप होता है। यथा, मुष्-मुषाण। अश्-अशान, पुष्-पुषाण इत्यादि।

क्री to buy उभयपदी

लट्

	परस्मैपदी			आत्मनेपदी		
प्र. पु.	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म. पु.	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ. पु.	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लोट्।

प्र. पु.	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म. पु.	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ. पु.	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ्।

प्र. पु.	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म. पु.	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ. पु.	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि



विधिलिङ् ।

क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

परस्मैपदी धातु—अश् to eat, क्लिश् to torment, क्षुभ् to disturb, पुष् to nourish, मुष् to steal, मृद् to press, to kill; आत्मनेपदी धातु—वृ to cherish; उभयपदी धातु—प्री to take delight in, मी to kill इनके रूप उपर्युक्त नियमानुसार होंगे, पर क्षुभ् में ना के न् का ण् नहीं होता। यथा, क्षुभ्नाति।

परिवर्त्तनीय धातु।

३. लट् इत्यादि चार विभक्तियों में ग्रह् का गृह्, ज्या to become old का जि और ज्ञा का जा होता है। ग्रह् to take गृह्णाति, गृह्णीते, with अनु to favour, with नि to punish, with परि to lay hold of, with प्रति to accept, with वि to quarrel, with सम् to collect, ज्ञा to know जानाति, जानीते, with अप to conceal, with अनु to acknowledge, with अव to despise, with परि to ascertain, with प्रति and अभि to recognise, with सम् to recollect.

४. लट् इत्यादि चार विभक्तियों में परस्मैपदी—री to go, ली to melt, व्ली to select, to go, प्ली to go, कॄ to kill, गॄ to speak, जॄ to wear out, नॄ to carry, पॄ to fill, भॄ to fry, to support, मॄ to kill, शॄ to kill, तथा उभयपदी—धू to shake, पू to purify, लू to cut off, वॄ to choose, स्तॄ to spread, इन धातुओं के दीर्घ स्वर का

ह्रस्व हो जाता है। यथा, जिनाति, लिनाति। पर क्र्यादि
पॄ, मॄ to kill, शॄ to tear, पॄ to protect, वॄ to
choose के दीर्घ स्वर का विकल्प से ह्रस्व होता है। यथा,
शीर्णाति, शिणाति।

५. मन्थ् इत्यादि चार क्रियापदों में अनुनासिक नकार का लोप
होता है। यथा, बन्ध् to tie बध्नाति, मन्थ् to churn
मथ्नाति, ग्रन्थ् to bind ग्रथ्नाति, ग्रन्थ् with अनु to be
attached to, with सम् to connect, with वि to dis-
unite, with श्र to loosen.

Exercise—23

1. Translate into Hindi:—अद्य मातरि पत्रं तुरगान् अर्वाचत्। कृपया पुस्तकमिदं सर्वं गृहाण। स वृषो रज्ज्वा तुरगानां भारं बध्नाति। देवासुरा मन्दरेण समुद्रं ममन्थुः। भीमः क्षणेनैव युद्धे अर्जुनानां वीराणां मस्तकं अलुनात्।

2. Translate into Sanskrit:—(a) वह लड़के के लिये पुस्तक खरीदता है। चोरों ने उनका सर्वस्व अपहरण कर लिया। राजा ने आनन्दपूर्वक प्रजाओं का उपहार स्वीकार किया। तुम उसकी कथा जानते हो। उसने अपने आचरण से अपना वंश पवित्र किया। दुर्योधन ने जल की गति रोक दी।

(b) He fills the jar with water. Let them tie the burden. He bought 10 books in the market. He took Uttara, the daughter of Virat, for his son. He purifies his nation by his good actions.

3. Correct:—वयं पुस्तकं गृह्णामि। सो हरं जानाति। स जलाशयं बध्नाति। पुत्रं पुनीहि। आवां पुस्तकं क्रीणाथः।

रुधादि, अदादि, ह्लादि।

१. सन्धि के विशेष नियम।

(१) हादेर्घातोर्घः—अन्तःस्थ तथा ङ् ञ् ण् न् म् को
अन्य व्यञ्जन वर्ण परे रहने से हकारादि धातु के हका
घकार होता है।

(२) एकाचोबशोभष् भवन्तस्य स्ध्वोः-पदान्त में या स् औ
के परे होने से दह्, बुध् इत्यादि धातु के आदिस्थित तृती
के स्थान में चतुर्थवर्ण होता है। यथा, दुह् + सि = धोर्
भाद् ह्रस्तुहस्नुष्णिहाम् हो ढः। ढो ढे लोपः। ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घो
त थ ध परे रहने से हकार सहित दोनों का ध होता है
हकार का लोप होता है और त थ ध का ढ हो जात
लुप्त हकार के पूर्वस्थित ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है।
मुह्-मुग्धः, मूढः। गुह् + तः = गूढः; लिह् + तः = लीढः।

(३) होढः—अन्तःस्थ तथा ङ् ञ् ण् न् म् को छोड़
व्यञ्जन वर्ण परे रहने से धातु के अन्तस्थित 'ह्' का '
जाता है। यदि धातु के प्रारम्भ में 'द्' हो तो इस अवस
ह् का घ् हो जाता है।

(४) किसी वर्ग के चतुर्थ वर्ण से परे विभक्ति के
स्थित त् और थ् का ध् हो जाता है। (१ वाँ देखो)

(५) स् परे रहने से ढ् या ष् का क् हो जाता है।

(६) यदि धातु में एकाधिक स्वर हों तो स्वरादि
विभक्ति [illegible] आने से धातु के अन्तस्थित ह्रस्व या
(जिसके पहले कोई संयुक्त वर्ण न हो) का य् हो जात
यथा, दीधी + ईत = दीध्यीत।

(७) लङ् त् आने से धातु के अन्तस्थित स् का

[illegible]

(८) [illegible]

(९) [illegible]

१०. [illegible]

११. [illegible] इन वर्णों के परे [illegible] आते [illegible] [illegible] हो जाता है। यथा, [illegible]

१२. [illegible] के परे [illegible] आवे तो [illegible] के स्थान में [illegible] और [illegible] के स्थान में [illegible] होता है।

१३. [illegible] के स्थान में [illegible] और [illegible] होता है।

१४. धातु के अन्त में [illegible] या [illegible] को छोड़ अन्य कोई व्यञ्जन वर्ण हो तो ऐसे धातु या [illegible] to sacrifice के परे लोट् के हि का धि होता है।

१५. [illegible] धातु के परे लङ् के त् और स् का लोप होता है।

१६. [illegible] परे रहने से धातु के अन्तस्थित [illegible] का [illegible] हो जाता है।

रुधादि (7th conj.)

१. रुधादिभ्यः श्नम्—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में सकल विभक्ति के आने से धातु के अन्त्य स्वर और अन्तिम व्यंजन



वर्ण के बीच में न जोड़ दिया जाता है और सबल विभक्ति के आने पर न् जोड़ा जाता है। यथा, रुध्-रुणद्धि, रुन्धः।

२. धातुस्थित सानुनासिक वर्ण का लोप होता है। यथा, अञ्ज्-अनज्मि।

३. तृणह इम्—व्यञ्जनादि सबल विभक्ति के आने से तृह् धातु में उपर्युक्त न का ने हो जाता है।

N. B. यहाँ सन्धि के विशेष नियम के ३, ४, ९, १०, ११, पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

रुध् to obstruct उभयपदी।

परस्मैपदी। लट्। आत्मनेपदी।

प्र. पु.	रुणद्धि	रुन्द्धः (रुन्धः)	रुन्धन्ति	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म. पु.	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उ. पु.	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लोट्।

प्र. पु.	रुणद्धु, रुन्धात्	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म. पु.	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ. पु.	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ्।

प्र. पु.	अरुणत् द्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	अरुन्धत	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म. पु.	अरुणत् द्	अरुन्धम्	अरुन्ध	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ. पु.	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

विधिलिङ्।

प्र. पु.	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म. पु.	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ. पु.	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

रुध् with अप to guard, with उप to blockade with प्रति or वि to oppose, with सम् and नि to shut up.

भुज् to protect परस्मैपदी लट् भुज् to eat आत्मनेपदी

प्र. पु	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म. पु.	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उ. पु.	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

हिंस् to kill प. लट् तृह् to kill प.

प्र. पु.	हिनस्ति	हिंस्तः	हिंसन्ति	तृणेढि	तृण्ढः	तृंहन्ति
म. पु.	हिनस्सि	हिंस्थः	हिंस्थ	तृणेक्षि	तृण्ढः	तृण्ढ
उ. पु.	हिनस्मि	हिंस्वः	हिंस्मः	तृणेह्मि	तृंह्वः	तृंह्मः

परस्मैपदी धातु ।

अञ्ज् to anoint अनक्ति
उन्द् to wet उनत्ति
पिष् to grind, to hurt पिनष्टि
भञ्ज् to disappoint भनक्ति
विज् to shake, to fear विनक्ति
वृज् to avoid, to shun वृणक्ति
शिष् to distinguish शिनष्टि

आत्मनेपदी धातु ।

इन्ध् to kindle इन्धे
खिद् to suffer pain खिन्ते
विद् to know विन्ते

उभयपदी धातु ।

क्षुद् to pound क्षुणत्ति, क्षुन्ते
छिद् to cut छिनत्ति, छिन्ते
तृद् to split तृणत्ति, तृन्ते
भिद् to separate भिनत्ति, भिन्ते
युज् to unite युनक्ति, युङ्क्ते
रिच् to empty रिणक्ति, रिङ्क्ते
विच् to separate विनक्ति, विङ्क्ते



Exercise—24.

1. Translate into Hindi:—मेघाः सूर्यस्य किरणानि रुन्धन्ति
र मन्नानि भुञ्ज्महे । शस्त्राण्यपि आत्मानं न छिन्दन्ति । अहं
ज्ञानि अयुङ्क्ष्मि । अस्मिन् संसारे लोकाः बहूनि दुःखानि भुञ्ज
द्रा जीवान्न हिंसन्ति ।

2. Translate into Sanskrit—(a) साधु लोग शत्रु को भी
गते । देवताओं ने स्वर्ग का द्वार बन्द कर दिया । छोटे जीवों
ो मारना नहीं चाहिये । घर का दरवाजा बन्द कर लो । वह
। शाखाओं को काट ले । बूढ़े हजारों दुःख भोगते हैं ।

(b) They two fear from the serpent. You should
ll an animal. Let Ram kill Rawan, the king of demo
Ram broke the bow of Shiva with a great ease. Ma
eople dine here today.

3. Correct:—स द्वारं रुन्धति । तौ शत्रून् हिंसन्तः । वय मन्न
ुञ्जामहे । इन्धे अग्नेन् । ते शास्त्राणि छिदन्ति ।

अदादि (2nd Conj.)

१. अदादि गणीय धातुओं के परे विभक्तियाँ सीधे
ी जाती हैं ।

अद् to eat परस्मैपदी ।

	लट्			लोट्		
प्र. पु.	अत्ति	अत्तः	अदन्ति	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
म. पु.	अत्सि	अत्थः	अत्थ	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उ. पु.	अद्मि	अद्वः	अद्मः	अदानि	अदाव	अदाम

२. अदः सर्वेषाम्—अद् के परे लङ् के त् और : के स्थान
क्रम से अत् और अः हो जाता है ।

	लङ्			विधिलिङ्	
प्र. पु.	आसीत्	आस्ताम्	आसन्	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म. पु.	आसीः	आस्तम्	आस्त	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ. पु.	आसम्	आस्व	आस्म	स्याम्	स्याव	स्याम

४८ आस् to sit आत्मनेपदी।

ध्व परे रहने से आस् के स् का लोप होता है।

	लट्			लोट्		
प्र. पु	आस्ते	आसाते	आसते	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
म. पु	आस्से	आसाथे	आध्वे	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
उ. पु.	आसे	आस्वहे	आस्महे	आसै	आसावहै	आसामहै

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र. पु.	आस्त	आसाताम्	आसत	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
म. पु.	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उ. पु.	आसि	आस्वहि	आस्महि	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

वस् to dress with आ के रूप 'आस्' के समान होंगे

आकारान्त धातु

४. आकारान्त धातु के परे लङ् अन् का विकल्प से उस् होता है। उस् होने से आकार का लोप होता है।

या to go परस्मैपदी

	लट्			लोट्		
प्र. पु	याति	यातः	यान्ति	यातु	याताम्	यान्तु
म. पु.	यासि	याथः	याथ	याहि	यातम्	यात
उ. पु.	यामि	यावः	यामः	यानि	याव	याम



	लङ्			विधिलिङ्		
प्र. पु.	अयात्	अयाताम्	अयुः-अयान्	यायात्	यायाताम्	यायुः
म. पु.	अयाः	अयातम्	अयात	यायाः	यायातम्	यायात
उ. पु.	अयाम्	अयाव	अयाम	यायाम्	यायाव	यायाम

या with अनु to follow, with अभि to approach, with आ to come, with उप to yield, with निर् to go out, with प्रति to go towards, with सम् and आ to arrive.

परस्मैपदी धातु—ख्या to tell, दा to cut, द्रा to fly, पा to protect, प्रा to fill, भा to shine, मा to measure, रा to give, ला to give or take, वा to blow, प्सा to eat, श्रा to cook, स्ना to bathe इनके रूप 'या' के समान होंगे।

५ पुगन्तलघूपधस्य च — सबल विभक्ति आने से अदादिगणीय धातुओं के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघुस्वर का गुण होता है।

द्विष् to hate, to envy परस्मैपदी।

	लट्			लोट्।		
प्र. पु.	द्वेष्टि	द्विष्टः	द्विषन्ति	द्वेष्टु	द्विष्टाम्	द्विषन्तु
म. पु.	द्वेक्षि	द्विष्ठः	द्विष्ठ	द्विड्ढि	द्विष्टम्	द्विष्ट
उ. पु.	द्वेष्मि	द्विष्वः	द्विष्मः	द्वेषाणि	द्वेषाव	द्वेषाम

६. द्विष् के परे लङ् के अन् का विकल्प से उस् होता है।

	लङ्।			विधिलिङ्।		
प्र. पु.	अद्वेट्-ड्	अद्विष्टाम्	अद्विषुः / अद्विषन्	द्विष्यात्	द्विष्याताम्	द्विष्युः
म. पु.	अद्वेट्-ड्	अद्विष्टम्	अद्विष्ट	द्विष्याः	द्विष्यातम्	द्विष्यात
उ. पु.	अद्वेषम्	अद्विष्व	अद्विष्म	द्विष्याम्	द्विष्याव	द्विष्याम

५. रुदादिभ्यः सार्वधातुके—लट्, लोट्, लङ् के व्यञ्जना
विभक्तियों के परे रहने से रुद्, स्वप्, श्वस्, अन्, ज
धातुओं के परे 'इ' का आगम होता है।

रुद् to cry परस्मैपदी।

	लट्।			लोट्।		
प्र. पु.	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
म. पु.	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
उ. पु.	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः	रोदानि	रोदाव	रोदाम

N. B. रुद् इत्यादि धातुओं के लङ् के त् के स्थान में ईत् और
अत् तथा (:) के स्थान में ईः और अः होता है।

	लङ्।			विधिलिङ्।		
प्र. पु.	अरोदीत्, अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्	रुद्यात्	रुद्याताम्	रु
म. पु.	अरोदीः, अरोदः	अरुदितम्	अरुदित	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्या
उ. पु.	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम	रुद्याम्	रुद्याव	रु

अन् to breathe, स्वप् to sleep, श्वस् to breath
इनके रूप ऐसे ही होंगे।

८ जक्षित्यादयः षट्—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में ज
जागृ, दरिद्रा, चकास्, शास्, इन धातुओं के परे अन्ति, अ
और अन् का क्रम से अति, अतु और उस् हो जाता है।

जक्ष् to eat परस्मैपदी।

	लट्।			लोट्।		
प्र. पु.	जक्षिति	जक्षितः	जक्षति	जक्षितु	जक्षिताम्	जक्षतु
म. पु.	जक्षिषि	जक्षिथः	जक्षिथ	जक्षिहि	जक्षितम्	जक्षि
उ. पु.	जक्षिमि	जक्षिवः	जक्षिमः	[illegible]		जक्षा



चकास् to shine परस्मैपदी।

लट्			लोट्		
चकास्ति	चकास्तः	चकासति	चकास्तु	चकास्ताम्	चकासतु
चकास्सि	चकास्थः	चकास्थ	चकाद्धि चकाधि	चकास्तम्	चकास्त
चकास्मि	चकास्वः	चकास्मः	चकासानि	चकासाव	चकासाम

लङ्			विधिलिङ्		
अचकात्-द्	अचकास्ताम्	अचकासुः	चकास्यात्	चकास्याताम्	चकास्युः
अचकाः-त्-द्	अचकास्तम्	अचकास्त	चकास्याः	चकास्यातम्	चकास्यात
अचकासम्	अचकास्व	अचकास्म	चकास्याम्	चकास्याव	चकास्याम

शास् to govern, to teach परस्मैपदी।

११. शास इदङ्हलोः। शा हौ—अपित् हलादि विभक्ति आने से शास् का शिष् और हि आने से शा हो जाता है। चकास् धातु देखो।

	लट्			लोट्		
प्र. पु.	शास्ति	शिष्टः	शासति	शास्तु	शिष्टाम्	शासतु
म. पु.	शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ	शाधि	शिष्टम्	शिष्ट
उ. पु.	शास्मि	शिष्वः	शिष्मः	शासानि	शासाव	शासाम

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र. पु.	अशात्	अशिष्टाम्	अशासुः	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः
म. पु.	अशात्-अशाः	अशिष्टम्	अशिष्ट	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
उ. पु.	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

शी to sleep आत्मनेपदी।

१२. शीङः सार्वधातुके गुणः। शीङोरुट्—लट् इत्यादि चारों विभक्तियों में शी का शे तथा अते, आताम् और अत में शेर् हो जाता है।



इ to go परस्मैपदी।

१४ इणो यन्—अन्ति और अन्तु में इ का य् हो जाता है।

लट्			लोट्		
प्र. पु. एति	इतः	यन्ति	एतु	एताम्	[illegible]
म. पु. एषि	इथः	इथ	इहि	इतम्	[illegible]
उ. पु. एमि	इवः	इमः	अयानि	अयाव	[illegible]

लङ्			विधिलिङ्		
प्र.पु. ऐत्	ऐताम्	आयत्	इयात्	इयाताम्	[illegible]
म.पु. ऐः	ऐतम्	ऐत	इयाः	इयातम्	[illegible]
उ पु. आयम्	ऐव	ऐम	इयाम्	इयाव	[illegible]

इ with उत् to rise or ascend, with अभि and उत् to prosper, with अनु to go after, with अभि to obtain, with अप to go away; to perish, with अ[illegible] and उप to arrive, with उप to receive, with प्र[illegible] to trust, with वि to expend, with सम् and इ[illegible] to obtain.

इ (with अधि) to study आत्मनेपदी।

लट्			लोट्		
अधीते	अधीयाते	अधीयते	अधीताम्	अधीयाताम्	[illegible]
अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे	अधीष्व	अधीयाथाम्	[illegible]
अधीये	अधीवहे	अधीमहे	अध्ययै	अध्ययावहै	[illegible]

१५. लङ् की स्वरादि विभक्ति में ऐकार के परे य् होता है।

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र. पु.	अहन्	अहताम्	अघ्नन्	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म. पु.	अहन्	अहतम्	अहत	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ. पु.	अहनम्	अहन्व	अहन्म	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

हन् with अभि to sound a musical instrument, with नि or परि to destroy entirely, with वि and आ to obstruct.

विद् to know परस्मैपदी।

लट्।

वेत्ति	वित्तः	विदन्ति	वेद	विदतुः	विदुः
वेत्सि	वित्थः	वित्थ	वेत्थ	विदथुः	विद
वेद्मि	विद्वः	विद्मः	वेद	विद्व	[illegible]

लोट्

प्र. पु.	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु	विदाङ्करोतु	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुर्वन्तु
म. पु.	विद्धि	वित्तम्	वित्त	विदाङ्कुरु	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्कुरुत
उ. पु.	वेदानि	वेदाव	वेदाम	विदाङ्करवाणि	विदाङ्करवाव	विदाङ्करवाम

प्र. पु.	अवेत्-द्	अवित्ताम्	अविदुः / अविदन्	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
म. पु.	अवेः / अवेत्-द्	अवित्तम्	अवित्त	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उ. पु.	अवेदम्	अविद्व	अविद्म	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

उकारान्त धातु।

१७० उतोवृद्धिर्लुकि हलि—व्यञ्जनादि सबल विभक्तियों में धातु के अन्त्य उ की वृद्धि होती है।



ऐसे ही लोट्, लङ् और विधिलिङ् में विभक्तियों को जोड़ो। रु to grow और रु to sound. इनमें भी देवे ... सार्वधातुक विभक्तियाँ जोड़ दो।

ब्रू to speak उभयपदी।

११ ब्रुव ईट्—हलादि सबल विभक्तियों के आने से ब्रू धातु को ई का आगम होता है।

परस्मैपदी	लट्		आत्मनेपदी		
ब्रवीति आह	ब्रूतः आहतुः	ब्रुवन्ति आहुः	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
ब्रवीषि आत्थ	ब्रूथः आहथुः	ब्रूथ	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लोट्।

प्र. पु. ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म. पु. ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ. पु. ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लङ्।

प्र. पु. अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म. पु. अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ. पु. अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

विधिलिङ्।

प्र. पु. ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म. पु. ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ. पु. ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि



दुह् to milk उभयपदी ।

परस्मैपदी		लट्		आत्मनेपदी	
पु. दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	दुग्धे	दुहाते	दुहते
पु. धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	धुक्षे	दुहाथे	धुग्ध्वे
पु. दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः	दुहे	दुह्वहे	दुह्महे

लोट् ।

पु. दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु	दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्
पु. दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध	धुक्ष्व	दुहाथाम्	धुग्ध्वम्
पु. दोहानि	दोहाव	दोहाम	दोहै	दोहावहै	दोहामहै

लङ् ।

पु. अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्	अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
पु. अधोक्-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध	अदुग्धाः	अदुहाथाम्	अधुग्ध्वम्
पु. अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म	अदुहि	अदुह्वहि	अदुह्महि

विधिलिङ् ।

पु. दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः	दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
पु. दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात	दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
पु. दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम	दुहीय	दुहीवहि	दुहीमहि

दिह् to anoint, to polute के देग्धि, दिग्धे इत्यादि ऐसे ही होंगे ।

लिह् to lick, to taste उभयपदी ।

परस्मैपदी		लट्		आत्मनेपदी
प्र. पु. लेढि	लीढः	लिहन्ति	लीढे	लिहाते
म. पु. लेक्षि	लीढः	लीढ	लिक्षे	
उ. पु. लेह्मि	लिह्वः	लिह्मः		

लोट्।

प्र. पु. लेढु लीढाम् लिहन्तु लीढाम् लिहाताम् लिह…
म. पु. लीढि लीढम् लीढ लिक्ष्व लिहाथाम् लीढ्…
उ. पु. लेहानि लेहाव लेहाम लेहै लेहावहै लेहा…

लङ्।

प्र. पु. अलेट्-ड् अलीढाम् अलिहन् अलीढ अलिहाताम् अलिह…
म. पु. अलेट्-ड् अलीढम् अलीढ अलीढाः अलिहाथाम् अलीढ्…
उ. पु. अलेहम् अलिह्व अलिह्म अलिहि अलिह्वहि अलिह्…

विधिलिङ्।

प्र. पु. लिह्यात् लिह्याताम् लिह्युः लिहीत लिहीयाताम् लिहीर…
म. पु. लिह्याः लिह्यातम् लिह्यात लिहीथाः लिहीयाथाम् लिहीध…
उ. पु. लिह्याम् लिह्याव लिह्याम लिहीय लिहीवहि लिहीम…

ईश् to command, to rule आत्मनेपदी।

१०. ईशः से। इडत्ययोर्ध्वे च—लट्, लोट्, लङ् के स् और …
आदि वाले प्रत्यय परे होने से 'ईश्' धातु को इ का आगम होता है।

लट्

प्र. पु. ईष्टे ईशाते ईशते
म. पु. ईशिषे ईशाथे ईशिध्वे
उ. पु. ईशे ईश्वहे ईश्महे

लोट्

ईष्टाम् ईशाताम् ईशताम्
ईशिष्व ईशाथाम् ईशिध्वम्
ईशै ईशावहै ईशामहै

लङ्

प्र. पु. ऐष्ट ऐशाताम् ऐशत
म. पु. ऐष्ठाः ऐशाथाम् ऐशिध्वम्
उ. पु. ऐशि ऐश्वहि ऐश्महि

विधिलिङ्

ईशीत ईशीयाताम् ईशीरन्
ईशीथाः ईशीयाथाम् ईशीध्वम्
ईशीय ईशीवहि ईशीमहि

ईड् to praise ईड्, ईट्टे, ईडते इत्यादि ईश् के समान …
होंगे।

वश् to wish परस्मैपदी।

२१. अबल विभक्तियों में वश् के व का उ होता है।

	लट्			लोट्		
प्र.पु.	वष्टि	उष्टः	उशन्ति	वष्टु	उष्टाम्	उशन्तु
म.पु.	वक्षि	उष्ठः	उष्ठ	उड्ढि	उष्टम्	उष्ट
उ.पु.	वश्मि	उश्वः	उश्मः	वशानि	वशाव	वशाम

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र.पु.	अवट्-ड्	औष्टाम्	औशन्	उश्यात्	उश्याताम्	उश्युः
म.पु.	अवट्-ड्	औष्टम्	औष्ट	उश्याः	उश्यातम्	उश्यात
उ.पु.	अवशम्	औश्व	औश्म	उश्याम्	उश्याव	उश्याम

चक्ष् to speak आत्मनेपदी।

२२. स्कोः संयोगाद्योरन्ते च—त, थ, ध, स परे रहने से चक्ष् धातु का चष् होता है।

	लट्			लोट्		
प्र.पु.	चष्टे	चक्षाते	चक्षते	चष्टाम्	चक्षाताम्	चक्षताम्
म.पु.	चक्षे	चक्षाथे	चड्ढ्वे	चक्ष्व	चक्षाथाम्	चड्ढ्वम्
उ.पु.	चक्षे	चक्ष्वहे	चक्ष्महे	चक्षै	चक्षावहै	चक्षामहै

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र.पु.	अचष्ट	अचक्षाताम्	अचक्षत	चक्षीत	चक्षीयाताम्	चक्षीरन्
म.पु.	अचष्ठाः	अचक्षाथाम्	अचड्ढ्वम्	चक्षीथाः	चक्षीयाथाम्	चक्षीध्वम्
उ.पु.	अचक्षि	अचक्ष्वहि	अचक्ष्महि	चक्षीय	चक्षीवहि	चक्षीमहि

अतिरिक्त।

पी—to go पेति, पीतः, पियन्ति; अपेत्, अपीताम्, अपियन्।

ईर्—to go ईर्ते, ईराते, ईरते; ऐर्त, ऐराताम्, ऐरत।

कश्—to go कष्टे, कशाते, कशते; अकष्ट, अकशाताम्।

निज्—to purify निङ्क्ते, निञ्जाते, निञ्जते; अनिङ्क्त, निक्षीत ।

ऊर्णु—to cover त् और : को छोड़ अन्य सबल व्यञ्जनादि विभक्तियों में उ की विकल्प से वृद्धि होती है। यथा, ऊर्णौति, ऊर्णोति ।

मृज्—to cleanse के ऋ का सबल विभक्तियों में और अबल स्वरादि विभक्तियों में विकल्प से वृद्धि होती है। यथा, मार्ष्टि, मृष्टः, मार्जन्ति-मृजन्ति; अमार्ट्-ड्; मृज्यात् ।

वच्—to speak का लट् के प्रथमपुरुष-बहुवचन में रूप नहीं होता । यथा; वक्ति, वक्षि, वच्मि; वक्त, वक्थ, वचानि, अवक्-ग्; उच्यात् ।

ह्नु—to take away ह्नुते, ह्नुवाते, ह्नुवते, अह्नुत । .

Exercise— 25

1. Translate into Hindi :—अत्र बहवो लोका रात्रौ आजग्मुः आददन् । भगवन् इदमासनमिदमास्यताम् । भरतेन सह सर्वे ...रा वनं ययुः । इमे बालकाः क्षुधया रुदन्ति । चौरा निशायां जाग्रति, दिने निद्रां यान्ति । आकाशे बहूनि तारकाणि चकासति । रामः प्रजाः पुत्रवत् अशात् ।

2. Translate into Sanskrit— (a) हम लोग रात को खाट पर सोते हैं । यहां ब्राह्मण वेद पढ़ते हैं । इस सभा में बहुत से विद्वान् हैं। राम ने रावण को बाण से मारा । प्राण के संकट में पड़ने पर भी असत्य नहीं बोलना चाहिये । श्लोकों के द्वारा ईश्वर की स्तुति करो । रावण राम की गायों को दूहता है ।

(b) I read the book. He told him the whole story. You should always speak the truth. Lotuses shine in the pond. I do not believe in your words. Why do you envy me? Benares is a sacred place for Hindus.

3. Correct — सोऽश्वमद्ति । अत्र बालकौ आसताम् । पत्रानि
पतति सरोवरे । स ग्रामममहनत् । पुत्रमपश्यत । बालकाः शय्यायां शयन्ते ।
अहं वेदं वेत्ति । पुत्रौ रोदितः ।

ह्वादि (3rd Conj.)

१. जुहोत्यादिभ्यः श्लुः । श्लौ—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में ह्वादि गणीय धातुओं का अभ्यस्त होता है।

अभ्यस्त (reduplication) के नियमः —

(क) अपने पूर्ववर्त्ती व्यञ्जनवर्ण (यदि हो) सहित आदि स्वर का अभ्यस्त (द्वित्व) होता है। यथा, पत्-पपत्, बुध्-बुबुध् ।

(ख) धातु के आदि में संयुक्त वर्ण हो तो प्रथम अक्षर सहित आदि स्वर का अभ्यस्त होता है। यथा, प्रच्छ्-पप्रच्छ् ।

N. B. यदि संयोग का प्रथम अक्षर ऊष्मवर्ण (श्, ष्, स्) हो और द्वितीय अक्षर किसी वर्ग का प्रथम या द्वितीय वर्ण हो तो वर्गीय वर्ण का अभ्यस्त होता है। यथा, स्पर्ध्-पस्पर्ध् । स्तृ-तस्तृ ।

(ग) धातु के आदि में वर्ग का द्वितीय या चतुर्थवर्ण हो तो अभ्यस्त में उसका क्रम से प्रथम या तृतीय वर्ण हो जाता है। यथा, छिद्-चिच्छिद् । भुज्-बुभुज् ।

(घ) अभ्यस्त में कवर्ग का चवर्ग और ह का ज् होता है। यथा, कम-ककम्-चकम् । खन्-चखन् । हस्-जहस् ।

(ङ) अभ्यस्त में दीर्घ स्वर का ह्रस्व और ऋ का अ होता है। यथा, धा-दधा, नी-निनी, कृ-चकृ ।

(च) अभ्यस्त में उपधा ए या ऐ और ओ या औ का क्रम से इ और उ हो जाता है। यथा, सेव्-सिसेव्-ढौक्-डुढौक् ।

२. ह्वादि गणीय धातुओं के परे झान्त और झन्तु के न् का लोप होता है।

३. लङ् के अन् का उस् हो जाता है। उस् के पहले
के आ का लोप तथा ह्रस्व या दीर्घ इ, उ और ऋ का गु
होता है।

४. सबल विभक्ति के आने से धातु के अन्त्य स्वर
उपधा के लघु स्वर का गुण होता है।

हु to sacrifice परस्मैपदी।

५. अन्ति और अन्तु में हु धातु के उ का व् होता है।

	लट्			लोट्		
प्र. पु.	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
म. पु.	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
उ. पु.	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

लङ्			विधिलिङ्		
अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवु.	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

ह्री to be ashamed परस्मैपदी

	लट्			लोट्		
प्र. पु	जिह्रेति	जिह्रीतः	जिह्रियति	जिह्रेतु	जिह्रीताम्	जिह्रि
म. पु	जिह्रेषि	जिह्रीथः	जिह्रीथ	जिह्रीहि	जिह्रीतम्	जिह्री
उ. पु	जिह्रेमि	जिह्रीवः	जिह्रीमः	जिह्रयाणि	जिह्रयाव	जिह्र

लङ्			विधिलिङ्		
अजिह्रेत्	अजिह्रीताम्	अजिह्रयुः	जिह्रीयात्	जिह्रीयाताम्	जिह्री
अजिह्रेः	अजिह्रीतम्	अजिह्रीत	जिह्रीयाः	जिह्रीयातम्	जिह्री
अजिह्रयम्	अजिह्रीव	अजिह्रीम	जिह्रीयाम्	जिह्रीयाव	जिह्री

भी to fear परस्मैपदी।

१. भियोऽन्यतरस्याम्—सबल व्यञ्जनादि विभक्तियों में भी धातु का विकल्प से ह्रस्व होता है।

	लट्			लोट्		
प्र. पु.	बिभेति	बिभीतः बिभितः	बिभ्यति	बिभेतु	बिभीताम् बिभिताम्	बिभ्यतु
म. पु.	बिभेषि	बिभीथः बिभिथः	बिभीथ बिभिथ	बिभीहि बिभिहि	बिभीतम् बिभितम्	बिभीत बिभित
उ. पु.	बिभेमि	बिभीवः बिभिवः	बिभीमः बिभिमः	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्			विधिलिङ्		
अबिभेत्	अबिभीताम् अबिभिताम्	अबिभयुः	बिभीयात् बिभियात्	बिभीयाताम् बिभियाताम्	बिभीयुः बिभियुः
अबिभेः	अबिभीतम् अबिभितम्	अबिभीत अबिभित	बिभीयाः बिभियाः	बिभीयातम् बिभियातम्	बिभीयात बिभियात
अबिभयम्	अबिभीव अबिभिव	अबिभीम अबिभिम	बिभीयाम् बिभियाम्	बिभीयाव बिभियाव	बिभीयाम बिभियाम

भृ to maintain.

*. भृञामित्—मा, हा to go. भृ, पृ or पॄ to fill और ऋ के स्वर का अभ्यस्त में इ होता है। यथा, मिमा, जिहा, बिभृ।

	परस्मैपदी	लट्		आत्मनेपदी		
प्र. पु.	बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
म. पु.	बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
उ. पु.	बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे

ऐसे ही लोट्, लङ् विधिलिङ् की विभक्तियाँ जोड़ दो। ...

माङ् to measure, हाङ् to go आत्मनेपदी।

९. मा और हा का अभ्यस्त अतादि विभक्तियों में मिम् और जिह् तथा अन्यत्र व्यञ्जनादि विभक्तियों में मिमी और जिही होता है।

हा to go

	लट्			लोट्		
प्र. पु	जिहीते	जिहाते	जिहते	जिहीताम्	जिहाताम्	जिहताम्
म. पु	जिहीषे	जिहाथे	जिहीध्वे	जिहीष्व	जिहाथाम्	जिहीध्वम्
उ. पु.	जिहे	जिहीवहे	जिहीमहे	जिहै	जिहावहै	जिहामहै

लङ्—अजिहीत, अजिहाताम्, अजिहत; अजिहीथाः; अजिहि। विधि॰ जिहीत, जिहीयाताम्, जिहीरन्, जिहीथाः, जिहीय।

हा to abandon परस्मैपदी।

१. जहातेश्च—हा to abandon का अभ्यस्त लट्, लोट्, लङ् के व्यञ्जनादि सबल विभक्तियों में जहि या जही तथा स्यादि और विधिलिङ् की विभक्तियों में जह् हो जाता है। लोट् के हि में जहाहि, जहिहि, जहीहि तीन रूप होते हैं।

	लट्			लोट्		
प्र. पु.	जहाति	जहीतः जहितः	जहति	जहातु	जहीताम् जहिताम्	जह
म. पु.	जहासि	जहीथः जहिथः	जहीथ जहिथ	जहाहि जहिहि, जहीहि	जहीतम् जहितम्	जही जहि
उ. पु.	जहामि	जहीवः जहिवः	जहीमः जहिमः	जहानि	जहाव	जहा

दा और धा धातु।

१०. अयल विभक्तियों में दा और धा के अभ्यस्त दद्
दध् होते हैं। स्, ध्व्, त और थ परे रहने से दध् का धत्
जाता है। लोट् के हि में क्रम से देहि और धेहि रूप होते

दा to give उभयपदी।

परस्मैपदी लट् आत्मनेपदी।

प्र. पु. ददाति	दत्तः	ददति	दत्ते	ददाते	द
म. पु. ददासि	दत्थः	दत्थ	दत्से	ददाथे	द
उ. पु. ददामि	दद्वः	दद्मः	ददे	दद्वहे	द

लोट्।

प्र. पु. ददातु	दत्ताम्	ददतु	दत्ताम्	ददाताम्	ददता
म. पु. देहि	दत्तम्	दत्त	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्व
उ. पु. ददानि	ददाव	ददाम	ददै	ददावहै	ददा

लङ्।

अददात्	अदत्ताम्	अददुः	अदत्त	अददाताम्	अदद
अददाः	अदत्तम्	अदत्त	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद
अददाम्	अदद्व	अदद्म	अददि	अदद्वहि	अदद्म

विधिलिङ्।

दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	ददीत	ददीयाताम्	ददीर
दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्व
दद्याम्	दद्याव	दद्याम	ददीय	ददीवहि	ददीम

धा to hold उभयपदी।

परस्मैपदी			लट्	आत्मनेपदी	
प्र. पु. दधाति	धत्तः	दधति	धत्ते	दधाते	दधते
म. पु. दधासि	धत्थः	धत्थ	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
उ. पु. दधामि	दध्वः	दध्मः	दधे	दध्वहे	दध्महे

लोट्—दधातु, धत्तः, दधतु; धेहि; दधानि; धत्ताम्। धत्स्व; दधै।

लङ्—अदधात्, अदधाः, अदधाम्; अधत्त, अधत्थाः, अदधि।

विधिलिङ्-दध्यात्, दध्याः, दध्याम्, दधीत, दधीथाः, दधीय।

निज्, विज्, विष्, धातु।

११. निजां त्रयाणां गुणः श्लौ—लट् इत्यादि चारों लकारों में निज्, विज्, विष् के अभ्यस्त के पूर्व भाग के इ का गुण होता है। पर स्वरादि सबल विभक्तियों के परभाग में गुण नहीं होता।

निज् to wash उभयपदी।

परस्मैपदी			लट्	आत्मनेपदी	
नेनेक्ति	नेनिक्तः	नेनिजति	नेनिक्ते	नेनिजाते	नेनिजते
नेनेक्षि	नेनिक्थः	नेनिक्थ	नेनिक्षे	नेनिजाथे	नेनिग्ध्वे
नेनेज्मि	नेनिज्वः	नेनिज्मः	नेनिजे	नेनिज्वहे	नेनिज्महे

विज् to distinguish वेवेक्ति, वेविक्तः, वेविजति, वेविक्ते।
विष् to spread वेवेष्टि, वेविष्टः, वेविषति, वेविष्टे, वेविषाते।

Exercise—26

1. Translate into Hindi— पिता विनयं ददाति। राजा दरिद्रेभ्यो धनमददात्। युधिष्ठिरः कदापि सत्यं नाजहात्। नृपान् सर्वे लोका बिभ्यति। लोका नवानि वस्त्राणि परिदधति। स्वकर्मणा निर्



Translate into Sanskrit—(a) मेघ जल से संसार का पालन है। इस दोन को खाने को दो। मैं तुम से डरता हूँ। दशरथ ने सत्य कहा। उसने दरिद्रों को वस्त्र दिये। उसने इस नगर को परित्याग ॥। कृपया मुझे यह पुस्तक दीजिये।

b) The teacher gives knowledge to the student. took his dress and went there. The Brahman offers into the fire. A pious man does not give up his religion.

. Correct :—से धर्म दृश्ति। स मह्यं पुस्तकं देहि। सर्पात् लोका ते। वयं वस्त्राणि परिदधामि।

General tenses and moods.

इस भाग (लट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लिट् और) में गणभेद् से रूप में कोई अन्तर नहीं होता। अतएव क विभक्ति में सब गणों के रूप दिखाये जायँगे।

इस भाग में कई धातुओं में कुछ विशेषता है उनमें प्रधान दे दिये जाते हैं।

(१) इस भाग में अस् और ब्रू का क्रम से भू और वच् जाता है।

(२) गुप्, धूप्, विच्छ्, पण्, पन्, कम्, और ऋत् के रूप से गोपाय्, धूपाय् इत्यादि (जो प्रथम भाग में विभ- यों के पहले होते हैं) भी होते हैं। यथा, गोपिता, गोपा- ॥, धूपिता, धूपायिता।

(३) जिन धातुओं के अन्त में ए, ऐ और ओ हों वे इस भाग में (इन लकारों में) आकारान्त समझे जाते मि 5 U to throw, मी 9 U to kill, दी 4 A to rish, ली 9 U, 4 A to adhere का विकल्प से आका- त हो जाता है।

(४) चुरादि गणीय धातुओं के परे इस भाग में अय् लगता है। यथा, कथ् कथयिता, कथयितव्य इत्यादि।

(५) इस भाग में सृज् का स्रज् और मर्ज्, तथा सृज् और दृश् के श का ष् हो जाता है। यथा, स्रष्टा, द्रष्टा।

इ (इट्) विधान।

इस भाग के प्रकारों के तथा तव्य, त, तवत्, तुम्, ति इत्यादि प्रत्ययान्त कृदन्त पदों के रूप बनाने में व लिङ आदि विभक्तियों के पूर्व इट् (इ) का आगम होता है। जिन धातुओं में इ लगता है उन्हें सेट्, जिन धातुओं में नहीं लगता उन्हें अनिट्, तथा जिन में विकल्प से लगता है उन्हें वेट् कहते हैं।

सेट् धातु—(१) एक से अधिक स्वर वाले, चुरादि गणीय तथा णिजन्त, सनन्त, नामधातु इत्यादि दूसरे धातु या संज्ञा से बने हुए धातु सेट् होते हैं।

(२) ऊदृदन्तैर्यौति रुक्ष्णुशीङ्स्नुनुक्षुश्विडीङ्श्रिभिः।
वृङ्वृञ्भ्यां च विनैकाचोऽजन्तेषु निहताः स्मृताः॥

ऊकारान्त और ॠकारान्त धातु, यु, रु, क्ष्णु, शी, स्नु, नु, क्षु, श्वि, डी, श्रि, वृ 9 A और वृ 5 U धातु सेट् हैं।

(३) एक स्वर वाले व्यञ्जनान्त (१०२ अनिट् धातुओं को छोड़ कर) सभी धातु सेट् हैं।

अनिट् धातु—(१) उपर्युक्त कारिकाभिन्न एक स्वर वाले सभी स्वरान्त धातु अनिट् हैं।

(२) एक स्वर वाले व्यञ्जनान्त धातुओं में निम्नलिखित १०२ धातु अनिट् हैं :—

शक्, पच्, मुचि रिच् वच् विच्। सिच् प्रच्छित्यज् निजिर्भज

मस्ज् भुज् भ्रस्ज् मृज् यज् युज् रुज् । रञ्ज विजिर् स्वञ्जि सञ्जसृजः ।
अद् क्षुद् खिद् छिद् तुदि नुदः । पद्यभिद् विद्यतिर्विनद् ।
शद् सदीस्विद्यतिः स्कन्दि । हदी क्रुध् क्षुधि बुध्यती ॥
बन्धिर्युधिरुधी राधिः । व्यध् शुधः साधिसिध्यती ।
मन्यहन्नाप् क्षिप् छुपितप् । तिपस्तृप्यतिदृप्यती ॥
लिप् लुप् वप् शप् स्वप् सृपि यभ् । रभ् लभ् गम् नम् यमो रमिः ।
क्रुशिर्दंशिदिशी दृश् मृश् । रिश् रुश् लिश् विश् स्पृशः कृषिः ॥
त्विष् तुष् द्विष् दुष् पुष्य पिष् विष् । शिष् शुष् श्लिष्यतयो घसिः ।
वसतिर्दह् दिहि दुहो नह् मिह् रुह् लिह् वहिस्तथा ॥
अनुदात्ता हलन्तेषु धातवो द्व्यधिकं शतम् ।

वेट् धातु— निम्नलिखित धातु वेट् हैं ।

स्वरतिः सूयते सूते पञ्चमे नवमे च धुञ् ।
तनक्तिर्व्रश्चतिश्चान्तावनक्तिश्च ततक्तिमः ॥ १ ॥
मार्ष्टि मार्जति आगतेषु हार्मौ क्लिश्यति स्यन्दते ।
रध्यतिः सेधतिर्गर्भो यान्ताः परस्मैव कल्पने ॥ २ ॥
गोपायतिस्तृम्पतिश्च त्रपते दृम्फतिस्तथा ।
माष्टौ ह्यारयति अक्षतेऽक्षुणे क्लिश्नाति नश्यति ॥ ३ ॥
श्रान्ताववोधाहतिश्च निष्कुष्णातिश्च तक्षति ।
त्वक्षतिश्च परस्मैषा हान्तास्तत्र वाहने ॥ ४ ॥
पदच्ये गूहतिश्च मुञ्चातेरात्मनेपदे ।
तृहति तृंहति द्वयोर्वृहति मुहति ॥ ५ ॥
स्तुहति स्निह्यति स्नुह्यतीने वेट्का हि धातवः ।
अकारान्तौ तु परस्मैव वेट् प्रोक्ताश्च सर्वदा ॥ ६ ॥

अनिरिक ।

(१) क्षु, शु, रु, स्नु, ह, धृ, मृ, वृ, स्मि अनिट् धातुओं

के लिट् में इ होता है।

N. B. १ ह्रस्व ऋकारान्त धातु के परे थ रहने से इ नहीं होता, पर स्व, वृ, धातु में नित्य होता है।

२ धातु के अन्त में स्वर तथा उपधा में अ हो तो थ के पहले विकल्प से इट् होता है।

(२) दृश्, सृज्, स्वरान्त और अकारयुक्त अनिट् धातुओं के लिट् के थ में विकल्प से इ होता है।

N. B. व्ये और अद् धातु के परे नित्य इ होता है।

(३) लृट् और लृङ् में परस्मैपदी गम्, हन् और ऋकारान्त अनिट् धातुओं के परे इ होता है।

(४) लुङ् के परस्मैपद में स् परे होने से सु, धु और स्तु धातुओं के परे इ होता है।

(५) लुङ् और आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में संयोगादि ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के परे विकल्प से इ होता है।

लुट्, लृट्, लृङ्।

१—पुगन्तलघूपधस्य च—लुट्, लृट् और लृङ् विभक्ति में धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघु स्वर का गुण होता है।

भू to be परस्मैपदी।

लुट्।

प्र. पु.	भविता	भवितारौ	भवितारः
म. पु.	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ. पु.	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

लृट्।

प्र. पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ. पु.	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लृङ् ।

प्र. पु.	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म. पु.	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ. पु.	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

शी to sleep आत्मनेपदी ।

लुट् ।

प्र. पु.	शयिता	शयितारौ	शयितारः
म. पु.	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे
उ. पु.	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे

लृट् ।

प्र. पु.	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म. पु.	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ. पु.	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लृङ् ।

प्र. पु.	अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त
म. पु.	अशयिष्यथाः	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्
उ. पु.	अशयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि

२. ग्रहोऽलिटि दीर्घः :— लुट्, लृट्, और लृङ्, में ग्रह् के परे इ (इट्) का दीर्घ होता है । यथा, ग्रहीता; ग्रहीष्यति, अग्रहीष्यत् ।

३. वृतो वा—लुट्, लृट् और लृङ् में वृ तथा ॠकारान्त धातु के परे इ (इट्) का विकल्प से दीर्घ होता है । यथा, तॄ to cross परस्मैपदी-तरिता तरीता, तरिष्यति-तरीष्यति, अतरिष्यत्-अतरीष्यत् ।

४ लुट्, लृट्, लृङ् में इ (इट्) परे रहने से दरिद्रा के आ का लोप होता है । यथा, दरिद्रिता, दरिद्रिष्यति, अदरिद्रिष्यत् ।

५. लुट्, लृट्, लृङ् में दृश् और सृज् धातु के ऋ का र् होता है। यथा, दृश्-द्रष्टा, द्रक्ष्यति, अद्रक्ष्यत्। सृज् स्रष्टा, स्रक्ष्यति, अस्रक्ष्यत्। पर कृष्, मृश्, तृप्, दृप्, स्पृश् इत्यादि के ऋ का विकल्प से र् होता है। यथा, क्रष्टा, कर्ष्टा इत्यादि।

६. लृङ् में अधि पूर्वक इ to read का विकल्प से गी होता है और गी की ई का गुण नहीं होता। यथा, अध्यगीष्यत; अध्यैष्यत।

७. लृट् और लृङ् में कृत्, चृत्, छृद्, तृद् और नृत् धातुओं में विकल्प से इट् होता है। यथा, कृत्—कर्तिष्यति, कर्त्स्यति, अकर्तिष्यत्, अकर्त्स्यत्।

प्रथम पुरुष के एकवचन में कुछ धातुओं के रूप।

धातु	लुट्	लृट्	लृङ्
चल्	चलिता	चलिष्यति	अचलिष्यत्
पच्	पक्ता	पक्ष्यति	अपक्ष्यत्
मुच्	मोक्ता	मोक्ष्यति	अमोक्ष्यत्
सिच्	सेक्ता	सेक्ष्यति	असेक्ष्यत्
भञ्ज्	भङ्क्ता	भङ्क्ष्यति	अभङ्क्ष्यत्
भुज्	भोक्ता	भोक्ष्यति	अभोक्ष्यत्
भ्रस्ज्	भ्रष्टा	भ्रक्ष्यति	अभ्रक्ष्यत्
	भर्ष्टा	भर्क्ष्यति	अभर्क्ष्यत्
अद्	अत्ता	अत्स्यति	आत्स्यत्
पद्	पत्ता	पत्स्यते	अपत्स्यत
मन्	मन्ता	मंस्यते	अमंस्यत
तृप्	तर्पिता	तर्पिष्यति	अतर्पिष्यत्
	तर्प्ता-त्रप्ता	तर्प्स्यति-त्रप्स्यति	अतर्प्स्यत्-अत्रप्स्यत्
गम्	गन्ता	गमिष्यति	अगमिष्यत्



हन्	हन्ता	हनिष्यति	अहनिष्यत्
घस्	घस्ता	घत्स्यति*	अघत्स्यत्
दह्	दग्धा	धक्ष्यति	अधक्ष्यत्
वह्	वोढा	वक्ष्यति	अवक्ष्यत्
या	याता	यास्यति	अयास्यत्
जि	जेता	जेष्यति	अजेष्यत्
[illegible]	कर्ता	करिष्यति	अकरिष्यत्
धु	धोता	धोष्यति	अधोष्यत्
वच्	वक्ता	वक्ष्यति	अवक्ष्यत्
प्रच्छ्	प्रष्टा	प्रक्ष्यति	अप्रक्ष्यत्
लभ्	लब्धा	लप्स्यते	अलप्स्यत
क्षम्	क्षमिता	क्षमिष्यते	अक्षमिष्यत
	क्षन्ता	क्षंस्यते	अक्षंस्यत
त्रप्	त्रपिता-त्रप्ता	त्रपिष्यते-त्रप्स्यते	अत्रपिष्यत्-अ
दृप्	दर्पिता-द्रप्ता	दर्पिष्यति-द्रप्स्यति	अदर्पिष्यत्-अ
सू	सविता-सोता	सविष्यते-सोष्यते	असविष्यत-अ

Exercise—27

1. Translate into Hindi—[illegible] सर्वे जनाः [illegible] धोक्ष्यन्ति। अस्मिन् वर्षे [illegible] इच्छति। ते सर्वे [illegible] स्वर्ग [illegible]। अहं [illegible] अकरिष्यत् [illegible] यदि [illegible] गुरुजनोऽदर्पिष्यत् [illegible] यास्यति सभाम्।

2. Translate into Sanskrit—(a) [illegible] [illegible] वे तुम्हारे साथ [illegible] नहीं [illegible] अगर वह यहाँ आते तो [illegible] और [illegible]

* स के पहले के धातु के अन्तिम स् का त् होता है।

का घन पावता। मैं कल प्रात मे मिलूँगा। विर्देश में मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। कब रामचन्द्र राजा होंगे।

(b) I will see you to-morrow. Who will go there with me? If I were there I would save you. You shall get a ... your father. They will learn grammar with you from ... teacher. He will conquer the enemy at last.

3. Correct—युष्मं युष्मकं द्रक्ष्यामि। ते धनं अविष्यमे। ... गृहिं गर्जिष्यति। मी तत्र गमिष्यति। बालकं वर्द्धिष्यामि। बालक ... शेष्यते। तत्र वचनं प्रक्ष्यामि।

आशीर्लिङ्।

परस्मैपदी धातु।

भू to be परस्मैपदी।

प्र. पु.	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म. पु.	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ. पु.	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

१ आशीर्लिङ् में परस्मैपदी दा, पा, मा, गा (गै), सा (सो), हा धातुओं के आ का ए हो जाता है। यथा, देयात्, देयास्ताम्, देयासुः; पेयात्, पेयास्ताम्, पेयासुः।

N. B. पर स्था-भिन्न संयुक्तवर्णादि धातु के आ का विकल्प से ए होता है। यथा, ग्ला-ग्लेयात्, ग्लायात्; घ्रा-घ्रेयात्, घ्रायात्। स्था स्थेयात्।

२. परस्मैपद [redacted] धातु के अन्तस्थित इ उ का दीर्घ होता है। यथा, जि-जीयात्, जीयास्ताम्, जीयासुः। श्रु-श्रूयात्।

३. परस्मैपद में धातु के अन्तस्थित ऋ का रि होता है। यथा, कृ-क्रियात्। धृ to hold ध्रियात्।

N. B. संयोगादि ऋकारान्त और ऋ धातु का अर् होता है। यथा, स्मृ स्मर्यात्। ऋ to go-अर्यात्।

४. धातु के अन्तस्थित ऋ का ईर् होता है, पर पवर्ग के परे ऋ हो तो ऊर् होता है। यथा, तॄ–तीर्य्यात्। पॄ to blow पूर्य्यात्।

५. आशीर्लिङ् में ग्रह् का गृह्, प्रच्छ् का पृच्छ्, व्यध् का विध् और यज् का इज् होता है। यथा, ग्रह्-गृह्यात्; प्रच्छ्-पृच्छ्यात्, व्यध् to pierce विध्यात्; यज्-इज्यात्।

६. वच, वद्, वप्, वस्, वह्, स्वप् धातुओं के व का उ होता है। यथा, वच् उच्यात्। वस् उष्यात् इत्यादि।

७. ह्वे to call का हू होता है। यथा, हूयात्, हूयास्ताम्, हूयासुः।

८. धातु के उपधा-नकार का लोप होता है। यथा, मन्थ् to churn मथ्यात्, मथ्यास्ताम्, मथ्यासुः इत्यादि।

९. शास् to govern का शिष् होता है। यथा, शिष्यात्।

आत्मनेपदी धातु।
सेव् to serve.

प्र. पु. सेविषीष्ट सेविषीयास्ताम् सेविषीरन्
म. पु. सेविषीष्ठाः सेविषीयास्थाम् सेविषीढ्वम्-सेविषीध्वम्*
उ. पु. सेविषीय सेविषीवहि सेविषीमहि

१. आशीर्लिङ् में आत्मनेपदी धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघु स्वर का गुण होता है। यथा, शी to sleep-शयिषीष्ट; द्युत् to shine द्योतिषीष्ट इत्यादि।

---

*अ आ भिन्न स्वर तथा य, र, ल् या ह् के परे आशीर्लिङ्, लिट् और लुङ् के षीध्वम्, ध्वम् और ध्वे के ध् का ढ् होता है. इट् के परे विकल्प से ढ् होता है।

२. आत्मनेपदी में ग्रह् धातु के परे ई (इट्) का दी...
होता है। यथा, ग्रहीषीष्ट।

३. अनिट् धातु के अन्तस्थित ऋ का गुण नहीं होता।
यथा, कृ-कृषीष्ट। मृ—मृषीष्ट।

४. अनिट् धातु की उपधा के लघु स्वर का गुण न
होता। यथा; भुज् to eat भुक्षीष्ट।

प्रथम पुरुष के एकवचन में कुछ धातुओं के रूप।

भिद्	भिद्यात्	तुद्	तुद्यात्-तुत्सीष्ट	ग्रह्	ग्रह्या...
गम्	गम्यात्	स्पृश्	स्पृश्यात्	वृत्	वृत्या...
मा	मेयात्	क्षुभ्	क्षुभ्यात्-क्षुभीष्ट	वृ	वरिषी...
गा	गेयात्	मुद्	मुद्यात्		वोरी...
स्था	स्थेयात्	सृज्	सृज्यात्-सृक्षीष्ट	वृ	वरिषी...
हा	हेयात्	दंश्	दश्यात्		हरी...

Exercise—23.

1. Translate into Hindi:—कुशलं ते भूयात्। राजा चिरञ्जीव्यात्। सुशिक्षादर्शनेन तव पतिः स्मर्यात्। अनया सेनया शत्रून् जी... भवात्। त्वं धार्मिको दानशीलश्च भूयाः।

2. Translate into Sanskrit:—(a) तुम्हारा पुत्र दीर्घजी... होवे। तुम आज भाग्यमनोरथ होओ। तुम लोग सदा प्रसन्न रहो। ईश्वर राजा की रक्षा करे। तुम्हें एक पुत्र होवे। उसका कल्याण हो। हमारे देश के लोग गुणवान् और धनवान् होवें।

(b) May you have a son. Be you happy with your family members. God save the king. Long li... our emperor.

Correct—ते कुशलं भूयाः। भवान् चिरं जीव्यात्। त्वं दीर्...

लिट्।

ट्र् दो प्रकार के होते हैं; उन्हें Reduplicative
स्त) और Periphrastic कहते हैं।

१) एक स्वर वाले व्यञ्जनादि धातुओं (दय्, कास् को
कर) तथा स्वरादि धातुओं में जिनके आदि में अ, आ,
.स्र हों, उन धातुओं (अय् आस् को छोड़कर) के रूप
uplicative (अभ्यस्त) से बनते हैं।

(२) शेष धातुओं (ऊर्णु और ऋच्छ् को छोड़ कर) के
Periphrastic की रीति से बनते हैं।

N. [illegible]. कय्, विद्, कास्, काश्, जागृ, भी, ह्री, भृ, हु और दरिद्रा
न दोनों रीति से बनते हैं।

Reduplicative (अभ्यस्त)

१ अभ्यस्त (reduplicative) के नियम द्वादिगण में
गये हैं।

२ परस्मैपद में—(१) प्रथम पुरुष के एकवचन में अवश्य
। उत्तम पुरुष के एकवचन में विकल्प से धातु की उपधा
और अन्त्य स्वर की वृद्धि होती है (उत्तम पुरुष के एक-
न में धातु के अन्त्य स्वर की वृद्धि और गुण दोनों होते
।) (२) प्रथम और उत्तम पुरुष के एकवचन [illegible] उपधा के
स्वर का गुण होता है। (३) मध्यम पुरुष के एकवचन
धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघु स्वर का गुण
ता है।

N. B. लिट् के रूप में इट् का अतिरिक्त देखो।

नि to lead, to carry उभयपदी ।

प्र. पु.	निनाय	निन्यतुः	निन्युः	निन्ये	निन्याते	निन्यि
म. पु.	निनेथ-निनयिथ	निन्यथुः	निन्य	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यि
उ. पु.	निनाय-निनय	निन्यिव	निन्यिम	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यि

शश् to jump प. विद् to know प.

प्र. पु.	शशाश	शशशतुः	शशशुः	विवेद	विविदतुः	वि
म. पु.	शशशिथ	शशशथुः	शशश	विवेदिथ	विविदथुः	वि
उ. पु.	शशाश-शशश	शशशिव	शशशिम	विवेद	विविदिव	वि

शश् के समान—खद्-चखाद, गद्-जगाद, क्रम्-चक्राम, चक्षाम, क्षर्-चक्षार, स्वञ्ज् सस्वञ्जे, स्पृश्-पस्पर्श, साध्-सषाध, श्वस्-शश्वास, शास्-शशास, शंस्-शशंसे-शशंस, मृ ... इत्यादि ।

विद् के समान—खिद्- चिखेद, चित्, निज् (उ), ... मिल् (उ), रिच्, दिप्, दिश् (उ), लिख्, लिप् (उ), श्लिष्, श्लिष्-शिश्लेष, सिच्, सिध्, कुप्-चुकोप, ... चुक्रोश, क्षुद्-चुक्षोद, क्षुध्-चुक्षोध, क्षुभ्-चुक्षोभ, क्रुध्-चु... च्युत्-चुच्योत, तुष्, तुद् (उ), दुह्, भुज् (उ), हृष्, ... रुध् (उ), मुच्, मुष्, शुच्, शुध् । नृत्-ननर्त-ननृतत, ... कृत्, कृष्, कृप्, तृप्, तृद्, दृप्, धृष्, मृश्, वृत् (... स्पृश् इत्यादि ।



कृ to do उभयपदी।

प्र. पु. चकार	चक्रतुः *	चक्रुः	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
म. पु. चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
उ. पु. चकार-चकर	चकृव	चकृम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

ऐसे ही—भृ-बभार, धृ-दधार, मृ-ममार, सृ-ससार, धृ-धार, हृ-जहार। पर वृ + थ = ववर्थ।

कॄ to scatter   स्मृ to remember

प्र. पु. चकार	चकरतुः	चकरुः	सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः
म. पु. चकरिथ	चकरथुः	चकर	सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर
उ. पु. चकार-चकर	चकरिव	चकरिम	सस्मार-सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम

कॄ के समान—गॄ-जगार, जॄ-जजार इत्यादि।

३. आकारान्त धातु—में परस्मैपद के प्रथम पुरुष और उत्तम पुरुष के एकवचन में आकारान्त धातुओं के आ के परे औ होता है। अन्यत्र धातु के आ का लोप होता है, पर इट् भिन्न प के पूर्व आ का लोप नहीं होता।

या to go

प्र. पु. ययौ	ययतुः	ययुः
म. पु. ययिथ-ययाथ	ययथुः	यय
उ. पु. ययौ	ययिव	ययिम

ऐसे ही पा-पपौ, वा-ववौ, धा-दधौ, स्था-तस्थौ, हा-जहौ, भा-बभौ, म्ना-जम्नौ, ज्ञा-जज्ञौ, ख्या-चख्यौ।

* परस्मैपद के प्रथम और उत्तम पुरुष के एकवचन भिन्न स्वरादि अन्य लिट् विभक्ति के पूर्व ऋकारान्त धातु के ऋ का र् होता है। पर ॠकारान्त, संयोगादि ऋकारान्त और ऋ, ऋच्छ तथा जागृ धातु के ऋ का अर् होता है। परन्तु शॄ, दॄ, पॄ के ऋ का विकल्प से अर् होता है।

म्ला-मम्लौ, द्रा-दद्रौ, मा-ममौ, ध्मा-दध्मौ, ग्लै-जग्लौ, श्रै-शश्रे, ध्यै-दध्यौ, म्लै-मम्लौ, दा-ददौ, ददे, ददाते इ

४- जिन धातुओं के आदि और अन्त में असंयुक्त व्य वर्ण और मध्य में अ हो उनका अभ्यास नहीं होता, का ए हो जाता है (पर आदि का अक्षर बदला हुआ ऐसा नहीं होता), परस्मैपद के प्रथम और उत्तम पु एकवचन तथा इट् भिन्न थ विभक्ति में ऐसा नहीं शक्-शेकिथ-शशाकथ ।

N. B. वकारादि धातु तथा शस् और दद् में यह नियम नहीं

	चल्-प.			पच्-आ.		
प्र. पु.	चचाल	चेलतुः	चेलुः	पेचे	पेचाते	पेचिरे
म. पु.	चेलिथ	चेलथुः	चेल	पेचिषे	पेचाथे	
उ. पु.	चचाल-चचल	चेलिव	चेलिम	पेचे	पेचिवहे	

परस्मैपदी—चम्, चर्, जप्, तन् (उ), तप् (उ), दम्, नह्, पच्, फल्, भज्, यम्, पद्, पत्, मृ आत्मनेपदी-त्रप्, पठ्, रभ्, सह्, रम्, इत्यादि के ऐसे ही होंगे।

ऐसे ही तॄ का तेर् और त्रप् का त्रेप् होता है। तॄ-ततार, तेरतुः, तेरुः। त्रप्-त्रेपे, त्रेपाते, त्रेपिरे।

५- परस्मैपद के प्रथम और उत्तम पुरुष के एक भिन्न अन्य लिट् विभक्तियों में भ्रम्, राज् और वम् धातु का विकल्प से यथाक्रम भ्रेम्, रेज्, वेम् होता है। यथा, बभ्राम, बभ्रमतुः-भ्रेमतुः, बभ्रमुः-भ्रेमुः इत्यादि।

६- भू का अभ्यस्त में बभूव होता है। यथा, बभूव, ब तुः, बभूवुः; बभूविथ, बभूवथुः, बभूव; बभूव, बभूवि बभूविम।

७ अभ्यास के परभाग में जि को गि, हि को घि और चि को विकल्प से कि होता है। यथा, जि-जिगाय, जिग्यतुः, जिग्युः; जिगयिथ-जिगेथ। हि-जिघाय, जिघ्यतुः; जिघयिथ-जिघेथ। चि-चिकाय, चिक्यतुः-चिच्यतुः; चिकयिथ-चिकेथ-चिचयिथ-चिचेथ; चिक्यिव, चिच्यिव। चिक्ये, चिच्ये।

८ परस्मैपद के एकवचन-भिन्न लिट् विभक्तियों में धातु के उपधा-नकार का विकल्प से लोप होता है।

दन्श् धातु।

प्र. पु. ददंश	ददंशतुः-ददशतुः	ददंशुः-ददशुः
म. पु. ददंष्ठ ददंशिथ	ददंशथुः-ददशथुः	ददंश-ददश
उ. पु. ददंश	ददंशिव-ददशिव	ददंशिम-ददशिम

ऐसे ही सञ्ज्—ससञ्ज, ससञ्जतुः, ससजतुः, ससञ्जुः-ससजुः। ससञ्जिथ-ससंक्थ, ससञ्जथुः-ससजथुः, ससञ्ज-ससज। ससञ्ज, ससञ्जिव-ससजिव, ससञ्जिम-ससजिम।

९ अश्, ह्रस्व ऋकारादि और संयोगान्त अकारादि धातुओं के पूर्व भाग के स्थान में आन् होता है।

अश्-आत्मनेपदी।

प्र. पु. आनशे	आनशाते	आनशिरे
म. पु. आनशिषे-आनक्षे	आनशाथे	आनशिध्वे
उ. पु. आनशे	आनशिवहे-आनश्वहे	आनशिमहे-आनश्महे

ऋच्-परस्मैपदी   अर्च्-परस्मैपदी

प्र. पु. आनर्च	आनृचतुः	आनृचुः	आनर्च	आनर्चतुः	आनर्चुः
म. पु. आनर्चिथ	आनृचथुः	आनृच	आनर्चिथ	आनर्चथुः	आनर्च
उ. पु. आनर्च	आनृचिव	आनृचिम	आनर्च	आनर्चिव	आनर्चिम

१० लिट् में [illegible] का पूर्व भाग जि होता है। [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।

११ लिट् में [illegible] धातु का [illegible] होता है। [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।

१२ लिट् में गम्, हन्, जन्, खन्, और घस् धातु के [illegible] के अकार का लोप होता है, पर [illegible] के [illegible] ही नहीं होता। हन् धातु के [illegible] के [illegible] होता है।

गम्-परस्मैपदी | | | जन्-आत्मनेपदी | |
---|---|---|---|---|---
जगाम | जग्मतुः | जग्मुः | जज्ञे | जज्ञाते | जज्ञिरे
जगमिथ-जगन्थ | जग्मथुः | जग्म | जज्ञिषे | जज्ञाथे | जज्ञिध्वे
जगाम-जगम | जग्मिव | जग्मिम | जज्ञे | जज्ञिवहे | जज्ञिमहे

खन्-उभयपदी।

चखान	चख्नतुः	चख्नुः	चख्ने	चख्नाते	चख्निरे
चखनिथ	चख्नथुः	चख्न	चख्निषे	चख्नाथे	चख्निध्वे
चखान	चख्निव	चख्निम	चख्ने	चख्निवहे	चख्निमहे

घस्—जघास, जक्षतुः, जघसिथ, जक्षथुः, जक्षिव, जक्षिम।
हन्—जघान, जघ्नतुः, जघनिथ-जघन्थ जघ्नथुः, जघ्निम।

१३ लिट् के थ परे रहने से दृश् और सृज् धातु के [illegible] के ऋ का र् होता है। इट् होने से नहीं होता।

दृश्—ददर्श, ददृशतुः, ददृशुः, ददर्शिथ-दद्रष्ठ, ददृशिव।
सृज्—ससर्ज, ससृजतुः, ससृजुः, ससर्जिथ, सस्रष्ठ, ससृजिव।

१४ लिट् में व्यध् धातु के पूर्व भाग का वि होता है।
यथा, विव्याध, विविधतुः, विव्यधिथ, विविधथुः, विविधिम।

१५. लिट् में ग्रह् का गृह् होता है; पर परस्मैपद के एक वचन में ऐसा नहीं होता। यथा—

ग्रह् to take उभयपदी।

जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे-ढ्वे
जग्राह	जगृहिव	जगृहिम	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

१६. अभ्यस्तस्य च—लिट् में ह्वे धातु का हु होता है। यथा,

जुहाव	जुहुवतुः*	जुहुवुः	जुहुवे	जुहुवाते	जुहुविरे
जुहविथ-जुहोथ	जुहुवथुः	जुहुव	जुहुविषे	जुहुवाथे	जुहुविध्वे-ढ्वे
जुहाव	जुहुविव	जुहुविम	जुहुवे	जुहुविवहे	जुहुविमहे

१७. परस्मैपद के एकवचन भिन्न अन्य लिट् विभक्तियों में वच्, वद्, वस्, वह्, स्वप्, यज् इत्यादि धातुओं के व का उ और य का इ होता है।

वच्-परस्मैपदी			स्वप्-परस्मैपदी		
उवाच	ऊचतुः	ऊचुः	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
उवचिथ-उवक्थ	ऊचथुः	ऊच	सुष्वपिथ-सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुषुप
उवाच-उवच	ऊचिव	ऊचिम	सुष्वाप-सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम

यज्-उभयपदी।

इयाज	ईजतुः	ईजुः	ईजे	ईजाते	ईजिरे
इयजिथ-इयष्ठ	ईजथुः	ईज	ईजिषे	ईजाथे	ईजिध्वे
इयाज-इयज	ईजिव	ईजिम	ईजे	ईजिवहे	ईजिमहे

* परस्मैपद के एकवचन भिन्न स्वरादि विभक्तियों के आने से ह्रस्व वा दीर्घ इ का इय् और उ का उव् वा व् होता है। यथा, निनी+अतुः=निन्यतुः, शिश्रि + अतुः = शिश्रियतुः।

कुछ धातुओं का लिट् ।

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष
[illegible]	इयाय	ईयतुः	ईयुः	इययिथ-इयेथ
क्षि	चिक्षाय	चिक्षियतुः	चिक्षियुः	चिक्षयिथ-चिक्षेथ
	ऐसे ही क्री-चिक्राय, प्री-पिप्राय			
श्री	शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे	शिश्रियिषे
श्रि	शिश्राय	शिश्रियतुः	शिश्रियुः	शिश्रयिथ
श्वि	शिश्वाय	शिश्वियतुः	शिश्वियुः	शिश्वयिथ
सि	सिषाय	सिष्यतुः	सिष्युः	सिषयिथ सिषे
स्मि	सिष्मिये	सिष्मियाते	सिष्मियिरे	सिष्मियिषे
दु	दुदाव	दुदुवतुः	दुदुवुः	दुदविथ-दुदोथ
द्रु	दुद्राव	दुद्रुवतुः	दुद्रुवुः	दुद्रोथ .
धु	दुधाव	दुधुवतुः	दुधुवुः	दुधविथ-दुधोथ
यु	युयाव	युयुवतुः	युयुवुः	युयविथ
रु	रुराव	रुरुवतुः	रुरुवुः	रुरविथ
प्लु	पुप्लुवे	पुप्लुवाते	पुप्लुविरे	पुप्लुविषे
सू	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे	सुषुविषे
[illegible]	चुक्षाव	चुक्षुवतुः	चुक्षुवुः	चुक्षविथ
क्ष्णु	चुक्ष्णाव	चुक्ष्णुवतुः	चुक्ष्णुवुः	चुक्ष्णुविथ
च्यु	चुच्युवे	चुच्युवाते	चुच्युविरे	चुच्युविषे
दृ	ददार	ददरतुः	ददरुः	ददरिथ
स्तृ	तस्तार	तस्तरतुः	तस्तरुः	तस्तर्थ
कूज्	चुकूज	चुकूजतुः	चुकूजुः	चुकूजिथ
क्रन्द्	चक्रन्द	चक्रन्दतुः	चक्रन्दुः	चक्रन्दिथ
क्रम्	चक्राम	चक्रमतुः	चक्रमुः	चक्रमिथ

ीड्	चिक्रीड्	चिक्रीडतुः	चिक्रीडुः	चिक्रीडिथ
लिद्	चिक्लेद	चिक्लिदतुः	चिक्लिदुः	चिक्लेदिथ-चिक्लेत्थ
लिश्	चिक्लेश	चिक्लिशतुः	चिक्लिशुः	चिक्लेशिथ-चिक्लेष्ठ
म्	चक्षाम	चक्षमतुः	चक्षमुः	चक्षमिथ-चक्षन्थ
	चक्षमे	चक्षमाते	चक्षमिरे	चक्षमिषे-चक्षंसे
र्	चक्षार	चक्षरतुः	चक्षरुः	चक्षरिथ
िप्	चिक्षेप(चिक्षिपे)	चिक्षिपतुः	चिक्षिपुः	चिक्षेपिथ
ाद्	चखाद्	चखादतुः	चखादुः	चखादिथ
ेल्	चिखेल	चिखेलतुः	चिखेलुः	चिखेलिथ
र्ह्	जगर्हे	जगर्हाते	जगर्हिरे	जगर्हिषे
ल्	जगाल	जगलतुः	जगलुः	जगलिथ
ाह्	जगाहे	जगाहाते	जगाहिरे	जगाहिषे-जघाक्षे
ुप्	जुगोप	जुगुपतुः	जुगुपुः	जुगोपिथ-जुगोप्थ
ार	जगार	जगरतुः	जगरुः	जगरिथ-जगर्थ

२ आम् के पूर्व धातु के अन्त्य स्वर गुण प्राप्त है तो उस स्वर का गुण हो जाता है। यथा, जागृ जागरामास, जागराञ्चकार। विद् विदाञ्चकार, विदामास, विदाम्बभूव।

जागृ to be awake परस्मैपदी।

प्र. पु.	जागराञ्चकार	जागराञ्चक्रतुः	जागराञ्चक्रुः
	जागराम्बभूव	जागराम्बभूवतुः	जागराम्बभूवुः
	जागरामास	जागरामासतुः	जागरामासुः
म. पु.	जागराञ्चकर्थ	जागराञ्चक्रथुः	जागराञ्चक्र
	जागराम्बभूविथ	जागराम्बभूवथुः	जागराम्बभूव
	जागरामासिथ	जागरामासथुः	जागरामास
उ. पु.	जागराञ्चकार.चकर	जागराञ्चकृव	जागराञ्चकृम
	जागराम्बभूव	जागराम्बभूविव	जागराम्बभूविम
	जागरामास	जागरामासिव	जागरामासिम

N. B. लिट्-भेद में देखो कि किन किन धातुओं का रूप इस प्रकार से होगा।

दय्-दयाम्बभूव, दयाञ्चक्रे, दयामास।

आस्-आसाम्बभूव, आसाञ्चक्रे, आसामास।

ईह्-ईहाम्बभूव, ईहाञ्चक्रे, ईहामास।

ईन्द्-ईन्दाम्बभूव, ईन्दाञ्चकार, ईन्दामास।

३ आम् के पूर्व हु, भी, ह्री और भृ का अभ्यस्त भी होता है। यथा, हु-जुहवाम्बभूव, भी-बिभयाम्बभूव, ह्री-जिह्रयाम्बभूव, भृ-बिभराम्बभूव।

दरिद्रा-दरिद्राम्बभूव, दरिद्राञ्चकार, दरिद्रामास।

काश्-काशाम्बभूव, काशाञ्चक्रे, काशामास।



विभक्तियाँ केवल जोड़ दी जाती हैं। पर अन् विभक्ति का उस् हो जाता है।

२. इस प्रकार इ, स्था, दा, धा (दा, धा के सदृश वाले धातु), पा to drink और भू धातु के रूप होते हैं।

	दा			स्था		
प्र. पु.	अदात्	अदाताम्	अदुः	अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थुः
म. पु.	अदाः	अदातम्	अदात	अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात
उ. पु.	अदाम्	अदाव	अदाम	अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम

N. B. लुङ् में इ का गा होता है। यथा अगात्, अगाताम्, अगुः। with अधि अध्यगात्, अध्यगाताम्, अध्यगुः।

२. भू में उस् का अन् और स्वरादि विभक्ति में भू के ऊ का ऊव् हो जाता है। यथा, अभूत्, अभूताम्, अभूवन्, अभूः, अभूतम्, अभूत, अभूवम्, अभूव, अभूम।

३. घ्रा, धे, छा, शो और सो के रूप प्रथम और चतुर्थ दोनों प्रकार से बनते हैं। धे के रूप तृतीय प्रकार से भी बनते हैं। यथा, अघ्रात्, अघ्राताम्, अघ्रुः।

N. B. आत्मनेपद—में स्था, दा, धा, के रूप षष्ठ प्रकार से, भू के रूप ७ म प्रकार से, और इ with अधि के रूप षष्ठ प्रकार से बनते हैं।

२ य प्रकार (2nd form)

४ इसमें विभक्ति के पूर्व धातुओं में 'अ' जोड़ा जाता है।

N. B. श्वा के वा तथा धातु के अन्तस्थित ऋ को छोड़ कर अन्य स्वरों का गुण या वृद्धि नहीं होती।

५ इसमें परस्मैपदी तृप् दृप् क्लिद् आप् गम् घस् नश् पत् शुच् श्विद् रुद् लुद् स्विद् क्षुध् सिध् रुप् रप् तम् तुष् दुष् भ्रश् तुष् पिष् क्लिद् लुप् (तुदादि) शक् कुप् शिष् दुह् क्षुप् सृ ... क्लिद् मद् क्षुभ् गृध् ...

स्यच् ध्वन्स् तृप् तम् श्रम् क्षम् मद् रुष् क्लम् अस् (दिवादि) ह् गुप् लुभ् क्षुभ् शुभ् ध्वन्स् भ्रन्श् स्कन्ध् स्तम्भ् और रुध् ादि धातु हैं।

पुष् परस्मैपदी।				गम् परस्मैपदी।		
पु.	अपुषत्	अपुषताम्	अपुषन्	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
पु.	अपुषः	अपुषतम्	अपुषत	अगमः	अगमतम्	अगमत
पु.	अपुषम्	अपुषाव	अपुषाम	अगमम्	अगमाव	अगमाम

६ अस्, ख्या, पत्, वच् or ब्रू, शास्, श्वि और ह्वे का र से अस्थ, ख्य, पप्त्, वोच्, शिष्, श्व और ह्व हो जाता है।

वच्				पत्		
पु.	अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्	अपप्तत्	अपप्तताम्	अपप्तन्
पु.	अवोचः	अवोचतम्	अवोचत	अपप्तः	अपप्ततम्	अपप्तत
पु.	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम	अपप्तम्	अपप्ताव	अपप्ताम

N. B. नश् का विकल्प से नेश् होता है। यथा, अनशत् अनेशत् नेशताम् अनेशन्।

७ धातु के उपधा-सानुनासिक वर्ण का लोप होता है। था, भ्रन्श्-अभ्रशत्, अभ्रशताम्, अभ्रशन् इत्यादि।

८ लिप्, सिच् और ह्वे के रूप परस्मैपद में अवश्य और ात्मनेपद में विकल्प से द्वितीय प्रकार के अनुसार होते हैं। ात्मनेपद में ६ष्ठ प्रकार से रूप बनता है। यथा, असिचत्, सिचताम्, असिचन्; असिचत असिचेताम्, असिचन्त।

ऋ with सम् तथा उपसर्ग सहित ख्या वच् और अस् o throw के रूप आत्मनेपदी होने पर भी इसी प्रकार से नते हैं। यथा, ऋ with सम् to go समारत, समारेताम्, समारन्त; समारथाः, समारेथाम्, समारध्वम्; समारे समारा-वहि, समारामहि।

N. B. अ परे रहने पर ऋ, सृ तथा दृश् का क्रम से अर्, ... तथा दर्श् हो जाता है। यथा, ऋ असरत्, असरताम्, असरन्। ... अदर्शत्, अदर्शताम्, अदर्शन्।

९ भिद् छिद् रिच् विच् निज् विज् मुच् ग्लुच् शुच् ... स्फुट् चुत् च्युत् ज्युत् क्षुद् बुन्द् रुद् बुध् रुध् पुष् ... तुह् वृह् दृश् दृप् तृप् तृद् छृद् श्वि जृ मुच् ग्लुच् ग्लुञ्च् ... श्च्युत् स्कन्द् स्तम्भ और श्लिष् के रूप विकल्प से ... प्रकार के होते हैं। पक्षान्तर में ६ष्ठ या ७म प्रकार से रूप ... हैं। यथा, भिद्-अभिदत्, अभिदताम्, अभिदन्। ... अरुधत्, अरुधताम्, अरुधन्।

१० रुच् घुट् रुट् लुट् लुठ् द्युत् वृत् श्विद् क्ष्विद् ... स्यन्द् स्विद् वृध् शृध् क्लृप् क्षुभ् तुभ् नुभ् शुभ् स्रंभ् भ्रंश् ... ध्वंस् भ्रंस् और स्रंस्, इन २५ आत्मनेपदी धातुओं के रूप ... प्रकार में परस्मैपदी धातुओं के समान होते हैं। आत्मने... में ६ष्ठ या ७म प्रकार से रूप बनते हैं। यथा, रुच्-अरुचत् ... अरुचताम्, अरुचन्।

३ य प्रकार (3rd form)

११. इस प्रकार से चुरादिगणीय, णिजन्त तथा श्रि, ... स्रु और कम् इत्यादि धातुओं के रूप बनते हैं। धे और श्वि ... के रूप विकल्प से इस प्रकार से बनते हैं (see 1st. 2nd ... forms)।

१२. इसमें धातुओं को अभ्यस्त होता है और अभ्यस्त के ... बाद अ जोड़ा जाता है।

पदान्त को का लोप तथा इ उ का क्रम से इय् उव् होता है। ...

१३. चुरादि तथा णिजन्त धातु :—

(क) णिजन्त तथा चुरादिगणीय धातुओं के अय का लोप ...

था ए ऐ का इ, और ओ औ का उ हो जाता है। यथा,

मोचय (मुच्) परस्मैपदी।

थमपुरुष	अमूमुचत्	अमूमुचताम्	अमूमुचन्
ध्यमपुरुष	अमूमुचः	अमूमुचतम्	अमूमुचत
त्तमपुरुष	अमूमुचम्	अमूमुचाव	अमूमुचाम

आत्मनेपदी।

थमपुरुष	अमूमुचत	अमूमुचेताम्	अमूमुचन्त
ध्यमपुरुष	अमूमुचथाः	अमूमुचेथाम्	अमूमुचध्वम्
त्तमपुरुष	अमूमुचे	अमूमुचावहि	अमूमुचामहि

N. B. अभ्यस्त में अभ्यास (जिसका द्वित्व होता है) के अ का इ
ता है। संयुक्ताक्षर या दीर्घ स्वर परे न रहे तो इस इ का ई हो जाता
। यथा, भावय (भू से)-भाव्-भभव्-बिभव्-बीभव्-अबीभवत्-त। चेतय
चित् से)-अचीचितत्। स्खल्-अचिस्खलत्-त। स्यन्द्-असस्यन्दत्-त।
१. धातु की उपधा में ह्रस्व या दीर्घ ऋ रहे तो विकल्प से ज्यों का
रहता है, पर दीर्घ ऋ का ह्रस्व हो जाता है, यथा, वर्तय (वृत् से)-
-अववर्तत्-त, वृत्-अवीवृतत्। कीर्तय (कृत् से)-कीर्त्-अचिकीर्तत्-त,
-अचीकृतत्-त।
(णिजन्त में लुङ् का विवरण देखो)
१४ यहाँ अभ्यस्त के नियम अन्यत्र से कुछ भिन्न और
न हैं। अतएव कुछ धातुओं के रूप प्रथमपुरुष के एकवचन
दिये जाते हैं।
अट्-आटिटत्, आप्-आपिपत्, नु-अनूनवत्-त, दृ-अदूदवत्, पृ-
वत्-त, श्रि-अशिश्रयत्-अशुश्रवत्, श्रु-अशिश्रवत्-अशुश्रवत्, द्रु-अदि-
अदुद्रवत्, स्मृ-असस्मरत्, प्रथ्-अपप्रथम्, स्तृ-अतस्तरत्, पत्-
त्, इ with अधि-अध्यापिपत्-अध्यजीगपत्, गण्-अजगणत्,

अजोगणत्, घ्रा-अजिघ्रपत्-अजिघ्रिपत्, स्था-अतिष्ठिपत्-त।

४ थे प्रकार (4th form)

१५ इस प्रकार से आकारान्त धातु (१म, २य ... धातों को छोड़ कर), यम्, रम् (P with वि, आ, परि) ... नम् के रूप बनते हैं। यम् with उप or उद् A और रम् ... के रूप षष्ठ प्रकार से बनते हैं।

इसमें केवल परस्मैपद की विभक्तियाँ लगती हैं।

N. B. त् और स् विभक्तियों के पूर्व सी और अन्य विभक्तियों ... पूर्व सिष् जोड़ दिये जाते हैं। यथा, यम्-अयंसीत्, अयंसिषम् ...

ध्या-परस्मैपदी			नम्-परस्मैपदी		
अध्यासीत्	अध्यासिष्टाम्	अध्यासिषुः	अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनं...
अध्यासीः	अध्यासिष्टम्	अध्यासिष्ट	अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसि...
अध्यासिषम्	अध्यासिष्व	अध्यासिष्म	अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनं...

विरम्-व्यरंसीत्, घ्रा-अघ्रासीत्, छो-अच्छासीत्, ... अशासीत् इत्यादि।

५ म प्रकार (5 th. form)

१६. जिन अनिट् धातुओं के अन्त में श्, ष्, स् और ह् ... और उपधा में इ उ ऋ या ऌ हो उनके रूप इस प्रकार से बनते हैं। मृश्, स्पृश् और कृष् के रूप विकल्प से इस प्रकार से बनते हैं। पर दृश् के रूप ६ ष्ठ प्रकार से बनते हैं।

N. B. परस्मैपद तथा आत्मनेपद की विभक्तियों के पूर्व स ... दिया जाता है। ५म, ६ष्ठ और ७म प्रकार में आत्मनेपद के ... स्थान् विभक्तियों के स्थान में क्रम से आताम् और आथाम् होते हैं।

दिश्-परस्मैपदी			दिश्-आत्मनेपदी		
दिक्षत्	अदिक्षताम्	अदिक्षन्	अदिक्षत	अदिक्षाताम्	अदिक्षन्त
दिक्षः	अदिक्षतम्	अदिक्षत	अदिक्षथाः	अदिक्षाथाम्	अदिक्षध्वम्
दिक्षम्	अदिक्षाव	अदिक्षाम	अदिक्षि	अदिक्षावहि	अदिक्षामहि

दिह्—अधिक्षत्, अधिक्षताम्, अधिक्षन्। अधिक्षत, धिक्षाताम्, अधिक्षन्त।

लिह्—अलिक्षत्-त, गुह्-* अघुक्षत्-त, रिश्-अरिक्षत्, ह्०-अह्रिक्षत्, रुश्-अरुक्षत्, लिश्-अलिक्षत्, पिश्-अपिक्षत्, श्-अमृक्षत्, स्पृश्-अस्पृक्षत्, मृश्-अमृक्षत्, कुष् with -निरकुक्षत्, क्रुश्-अक्रुक्षत्, त्विष्-अत्विक्षत्, द्विष्-अद्विक्षत्, ष्-अपिक्षत्, श्लिष्-अश्लिक्षत्, गृह्-अघृक्षत्, मिह्-अमिक्षत्, -अतृक्षत्, स्तृह्-अस्तृक्षत्, वृह्-अवृक्षत्, तृह्-अतृक्षत्, अरुक्षत्।

६ष्ठ प्रकार (6th form)

१७ जिन अनिट् धातुओं के रूप उपर्युक्त ५ प्रकारों से बनते उनके रूप ६ष्ठ प्रकार से बनते हैं। जिन अनिट् ओं के रूप विकल्प से उपर्युक्त ५ प्रकारों में से किसी र से बनते हैं उनके तथा वेट् धातुओं के रूप विकल्प से कार से बनते हैं ×।

N. B. न् और त विभक्ति के पूर्व तो और म्म् को छोड़ कर क्तियों के पूर्व स् जोड़ दिया जाता है। (ख) इस प्रकार के पद में 'अन्त' विभक्ति के स्थान में 'अन' हो जाता है।

वेट् गुह्, और क्लिश् के रूप इस प्रकार से बनते हैं।
गु और क्रम् के रूप आत्मनेपद में इस प्रकार से बनते हैं। स्नु, सु, यम् के रूप परस्मैपद में इस प्रकार से बनते हैं। वेट्, दृ, आत्मनेपदी पू, मनेपदी आत्मनेपद (पञ्चम के सर्वनाम कहलाता) धातुओं के इस प्रकार से बनते हैं।

न्, म् परे रहने से वर्गों के प्रथम द्वितीय तृतीय व वर्ग
ङ्, ण्, न् और स्वर वर्ण के परस्थित न् का लोप होता है। यथा,
अहृषत्, गद्-भाष, अगद्‌थाः।

१८. परस्मैपद में धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा
स्वर (धातु के अमन्ती स्वर) की वृद्धि होती है। यथा,
अकार्षीत्, पच्-अपाक्षीत्, मस्‌-अमांक्षीत्।

आत्मनेपद में धातु के अन्तस्थित ह्रस्व या दीर्घ
गुण होता है। अन्तस्थित ऋ तथा उपधा के स्वर का
नहीं होता। अन्तस्थित ऋ का ईर् या ऊर् (पवर्ग
परे रहने से) हो जाता है। यथा, चि-अचेष्ट, नी-अनेष्ट
अस्योष्ट, पू-अपोष्ट, कृ-अकृत, भिदु-अभित्त, स्तृ-अस्तीर्ष्ट
अपूर्ष्ट।

अनिट् धातु के स् का विकल्प से इ् लोप होता है।
कस्‌-अकासीत्, अकासीत्।

कृ-परस्मैपदी			कृ-आत्मनेपदी	
अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः	अकृत	अकृषाताम्
अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	अकृथाः	अकृषाथाम्
अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	अकृषि	अकृष्वहि

... आत्मनेपदी

वह्—अवाक्षीत्, अवोढाम्, अवाक्षुः; अवोढ, अवक्षाताम्।

अनियमित धातु।

१९. आत्मनेपद में दा, धा और स्था इत्यादि के आ का इ हो जाता है और इस इ का गुण नहीं होता। यथा, अदित, अदिषाताम्, अदिषत; अदिथाः; अदिषि।

२०. विभक्ति आने पर हन् (with आ A) के न् का लोप होता है। यथा, आहत, आहसाताम्, आहसत, आहथाः।

२१. गम् और यम् (with उप to marry) के म् का आत्मनेपद में विकल्प से लोप होता है। यथा, यम् to give out के म् का अवश्य लोप होता है। पर गम् with सम्-समगंस्त-समगत। यम् with उप-उपायंस्त-उपायत।

७म प्रकार (7th. form)

२२. सेट् धातुओं के रूप (जिनके रूप उपर्युक्त ६ प्रकारों से नहीं बनते) इस प्रकार से बनते हैं।

N. B. स् और त् विभक्तियों के पूर्व ई, ध्वम् के पूर्व इ और अन्य विभक्तियों के पूर्व इष् जोड़ दिये जाते हैं। यथा, क्रम्-अक्रमीत्, अक्रमिष्टाम् अक्रमिषुः अक्रमीः; अक्रमिष्टम्, अक्रमिष्ट अक्रमिषम्, अक्रमिष्व, अक्रमिष्म।

२३. परस्मैपद में हान्त, मान्त, यान्त, क्षण्, श्वस्, जागृ, श्वि, मथ्, हस् इत्यादि तथा एकार इत् भिन्न धातुओं के उपधा-अकार का विकल्प से आकार होता है। यथा, गद्—

अगादीत् अगादिष्टाम् अगादिषुः अगदीत् अगदिष्टाम् अगदिषुः

अगादीः अगादिष्टम् अगादिष्ट अगदीः अगदिष्टम् अगदिष्ट

अगादिषम् अगादिष्व अगादिष्म अगदिषम् अगदिष्व अगदिष्म

२४. परस्मैपद में धातु के अन्त्य स्वर तथा वद्, र् या ल् अन्त वाले धातुओं के उपधा अ की वृद्धि होती

वद्—अवादीत्, अवादिष्टाम्, अवादिषुः; अवादीः।
चर्—अचारीत्, अचारिष्टाम्, अचारिषुः; अचारीः।
चल्—अचालीत्, अचालिष्टाम्, अचालिषुः; अचालीः
व्रज्—अव्राजीत्, अव्राजिष्टाम्, अव्राजिषुः; अव्राजीः
नु—अनावीत्, अनाविष्टाम्, अनाविषुः; अनावीः
स्नु—अस्नावीत्, अस्नाविष्टाम्, अस्नाविषुः; अस्नावीः
वृ—अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः; अवारीः
तॄ—अतारीत्, अतारिष्टाम्; अतारिषुः; अतारीः

२५ परस्मैपद में धातु के उपधा-लघु स्वर का गुण है। यथा, रुद्-अरोदीत्, अरोदिष्टाम्, अरोदिषुः, अरो अरोदिष्टम्, अरोदिष्ट, अरोदिषम्, अरोदिष्व, अरोदिष्म।

२६ आत्मनेपद में धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा स्वर का गुण होता है।

शी-आत्मनेपदी			द्युत्-आत्मनेपदी		
अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत	अद्योतिष्ट	अद्योतिषाताम्	अद्यो
अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्	अद्योतिष्ठाः	अद्योतिषाथाम्	अद्यो
अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि	अद्योतिषि	अद्योतिष्वहि	अद्यो

अतिरिक्त—स्नु-अस्नावीत्, धू-अधावीत्; अधविष्ट, अस्नावीत्, स्तॄ-अस्तारिष्ट, अस्तारीत्; वृ (वृ) अवरीत्, अवर्षीत्* अवरिष्ट; श्वि-अश्वयीत्, जागृ-अजागरीत्; आर्णीत्, मण्-अमाणीत्, मद्-अमदीत्, अमदीष्ट; गुप् पायीत्, अगोपीत्; शप् अशपीत्, क्षम्-अक्षमिष्ट, व्यय्,

* वृ का वर् हो जाता है।

त्, अव्ययिष्ट; क्षर्-अक्षारीत्, गाह् अगाहिष्ट, गुह् अगूहीत्, गूहिष्ट।

अनियमित धातु।

२७ प्रथमपुरुष के एकवचन में आत्मनेपदी दीप् जन् पूर् प् और प्याय् धातुओं के परे इट् के स्थान में विकल्प से इ ता है। यथा, दीप्-अदीपि, अदीपिष्ट; जन्-अजनि, अजनिष्ट, पूर्-अपूरि, अपूरिष्ट, ताय्-अतायि, अतायिष्ट; प्याय् अप्यायि, प्यायिष्ट।

२८ णकारान्त या नकारान्त तनादि गणीय धातुओं के आत्मनेपदी इट और इष्ठाः के स्थान में विकल्प से यथाक्रम और थाः हो जाता है। यथा, ऋण्-आर्णिष्ट-आर्त, आर्णिष्ठाः-आर्थाः। क्षिण्-अक्षणिष्ट-अक्षित, अक्षेणिष्ठाः-अक्षिथाः। घृण्-अघर्णिष्ट-अघृत, अघर्णिष्ठाः-अघृथाः। तृण्-अतर्णिष्ट-अतृत, अतर्णिष्ठाः अतृथाः। तन्-अतनिष्ट-अतत, अतनिष्ठाः अतथाः। मन्-अमनिष्ट-अमत, अमनिष्ठाः, अमथाः। वन्-अवनिष्ट-अवत, अवनिष्ठाः अवथाः। सन्-असनिष्ट-असात्, असनिष्ठाः-असाथाः।

Exercise—30.

1. Translate into Hindi:—त्रेतायुगे रामरावणयो युद्धमभूत्। सिद्धो राम मवोचत्। कोशलाधिपति र्दशरथ एव मब्रवीत्। स तस्मै हूनि धनान्यदात्। इन्द्रस्य आज्ञया मेघा भूमि मसिचन्। नृपवेशद्वेशेन चोरान् सोऽमुचत्। धर्म्मंतात् शिला पृथिवी मपिस्खलत्। अत्र गोपा गा मुञ्चन्। स वृषभद्वयेन क्षेत्रमकार्षीत्। अभो राज्ञया एतत्कार्यमकार्षुः। वानराणां साहाय्येन रामो रावणं व्यजैष्ट।

2. Translate into Sanskrit:—(a) राजा ने प्रजाओं से कर लिया। ब्रह्मा ने सृष्टि बनायी। रात दिन घंटे का शब्द सुनता था। वानरों की सेना ने समुद्र बाँधा। मैं स्कूल से अपने घर गया। आज रात में उसको

[illegible] हुआ। [illegible] से [illegible]। राजकुमार ने वन में [illegible] गया। मोहन ने मुरारी पुस्तक पढ़ी। जब राजा ने उनकी बात सुनी [illegible] वह बहुत प्रसन्न हुआ।

(b) Ram gave him the book. One day S[illegible] came here and sat on. Yesterday I went the[illegible] and saw him. He learnt Shastras in six months. He studied grammar. He drank milk with his brother. They dwelt in [illegible] town. I cried for the moon in the childhood.

3. Correct:—पूर्वे कोऽयम् नृप। ते सर्वेन [illegible]। [illegible] [illegible] बद्धो राजा भूत्। वयमेषद् कार्यं प्रकाशितम्। [illegible] तस्मै जल [illegible] [illegible] जल प्रताप्। ते गुरु मन्यन्ते। इन्द्री वर्णनात् [illegible]।

णिजन्त-प्रकरण।

१ तत्प्रयोजको हेतुश्च। हेतुमति च—जब कोई किसी को किसी कार्य के करने के लिये प्रेरणा करता है तो उस अर्थ में धातु के परे णिच् प्रत्यय लगता है। णिच् का इ रहता है। णिजन्त धातु उभयपदी होता है। प्रत्येक धातु से णिजन्त बन सकते हैं।

२ चुरादि गणीय धातुओं के समान णिच् होने पर धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा अकार की वृद्धि और उपधा लघु स्वर का गुण होता है। यथा, श्रु + इ = श्रावि, प्लु + इ = प्लावि, कृ-कारि, हृ-हारि, चल्-चालि, दह्-दाहि, पच्-पाचि, ग्रह्-ग्राहि इत्यादि। (२) लिप् + इ = लेपि, सिच् + इ = सेचि, मुच्-मोचि, दुह्-दोहि, दृश् दर्शि, सृप्-सर्पि इत्यादि।

N. B. धातु के परे णिच् प्रत्यय लगाने से जो णिजन्त धातु बनता है, वह स्वतंत्र धातु होता है। यथा, "श्रु + इ = श्रावि" यह 'श्रु' धातु से 'श्रावि' धातु कहलाता है। इसमें धातु के सभी कार्य होते हैं।

णिच् के इ को निकाल कर चुरादि गणीय धातुओं के सदृश णिजन्त धातुओं के रूप बनाये जाते हैं। यथा, श्रावयति-ते।

श्रावि to cause to hear

लट्			लोट्		
श्रावयति	श्रावयतः	श्रावयन्ति	श्रावयतु	श्रावयताम्	श्रावयन्तु
श्रावयसि	श्रावयथः	श्रावयथ	श्रावय	श्रावयतम्	श्रावयत
श्रावयामि	श्रावयावः	श्रावयामः	श्रावयानि	श्रावयाव	श्रावयाम

लङ्			विधिलिङ्		
अश्रावयत्	अश्रावयताम्	अश्रावयन्	श्रावयेत्	श्रावयेताम्	श्रावयेयुः
अश्रावयः	अश्रावयतम्	अश्रावयत	श्रावयेः	श्रावयेतम्	श्रावयेत
अश्रावयम्	अश्रावयाव	अश्रावयाम	श्रावयेयम्	श्रावयेव	श्रावयेम

३ मितां ह्रस्वः – णिच् होने पर अमन्त (अम + अन्त) तथा घटादि धातुओं के अन्त्य स्वर तथा उपधा-अकार की वृद्धि नहीं होती। यथा, अमन्त—गम्-गमयति, दम्-दमयति, नम्-नमयति, रम्-रमयति, शम्-शमयति। घटादि—घट्-घटयति, व्यथ्-व्यथयति, जन्-जनयति, त्वर्-त्वरयति, नप्-नपयति, ज्वल्-ज्वलयति।

घटादि धातु—घट्, व्यथ्, प्रथ्, स्वद्, नट्, त्वर्, स्तु, दृ, श्रा, ज्ञा, चल्, मद्, ध्वन्, क्रन्द्, रह्, जन् और रञ्ज्। पर दल्, स्खल्, नम् तथा उपसर्गहीन ज्वल्, ग्लै, वन्, वम् और स्ना धातु विकल्प से घटादि हैं।

४ णिच् होने पर जॄ और जागृ धातुओं के अन्त्य स्वर का गुण होता है। यथा, जॄ-जरयति, जागृ-जागरयति।

५ हनस्तोऽचिण्णलोः दोषो णौ—णिच् होने पर हन् का घात और दुष् का दूष् होता है। यथा, हन्-घातयति, दुष्-दूषयति।

णिच की अवस्था के धर्म में पुक् का विकल्प से ... है। यथा, क्रोधः चित्तं दूषयति दोषयति वा।

६ शदेरगतौ तः — णिच् होने पर शद् का शात् और गुप् ... गूप् होता है। यथा, शातयति। गूपयति।

७ रुहः पोऽन्यतरस्याम्, स्फुरतिस्फुलत्योः — णिच् होने पर विकल्प से रुह् के ह् का प् और स्फुर् के उ का आ होता है। ... रुह्-रोपयति, रोहयति, स्फुर्-स्फारयति, स्फोरयति।

८ प्रीञ्धूञोर्नुग्वक्तव्यः — णिच् होने पर प्री और धू के ... विकल्प से न होता है। यथा, प्री-प्रीणयति, प्राययति, ... धूनयति, धावयति।

९ अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ्णौ — णिच् होने पर ऋ, ह्री ... तथा आकारान्त धातुओं के परे प होता है और धातुओं ... गुण होता है। यथा, ऋ-अर्पयति, ह्री-ह्रेपयति, क्ष्मा-क्ष्मापयति, ज्या-ज्यापयति, स्ना-स्नापयति।

क्रीङ्जीनां णौ — णिच् होने पर क्री, अधि-इ और जि धातु आकारान्त होते हैं, और उनके परे प् का आगम होता है। यथा क्री-क्रापयति, अधि-इ-अध्यापयति, जि-जापयति।

१० पातेर्लुग्वक्तव्यः — णिच् होने पर पानार्थ पा धातु के परे य् और रक्षार्थ पा धातु के परे ल् होता है। यथा, पानार्थ पाययति; रक्षार्थ पालयति।

११ णिच् होने पर छो, शो, सो, वे, व्ये और ... के परे य् होता है, यथा, छाययति, शाययति, साययति, वाययति, व्याययति, ह्माययति। कम्पनार्थ 'धे' धातु के परे ज् होता है, ... धाजयति।

१२ णिच् परे होने पर जभ्, रभ्, लभ् और रध् का जम्भ्, रम्भ्, लम्भ् और रन्ध् होता है। यथा, जभ-

यति, रम्भयति, लम्भयति, रन्धयति।

१३ भियो हेतुभये षुक्, नित्यं स्मयते, भीस्म्योर्हेतुभये—यदि कर्त्ता स्वयं भय उत्पन्न करे तो णिच् होने से भी का भीष् और स्मि का स्माप् तथा आत्मनेपद होता है। यथा, सर्पः शिशुं भीषयते; पुरुषः सर्पेण शिशुं भाययति। ऐसे ही विस्मापयते, विस्माययति।

१४ रजेर्णौ मृगरमणे नलोपो वक्तव्यः—णिच् होने पर मृगया अर्थ में रञ्ज् के न् का लोप होता है। यथा, रजयति मृगान् व्याधः।

पर मृगया (पशुवध) अर्थ छोड़ कर अन्य अर्थों में न् का लोप नहीं होता। यथा, रञ्जयति मृगान् तृणदानेन; रञ्जयति पक्षिणो व्याधः।

१५ णौ गमिरबोधने—णिच् होने पर इ धातु का गम् हो जाता है, यथा, गमयति। पर ज्ञानार्थ में नहीं होता; यथा, प्रति इ-प्रत्याययति।

आवि-लुट् — आवि-लृट्

आवयिता आवयितारौ आवयितारः आवयिष्यति आवयिष्यतः आवयिष्यन्ति
आवयितासि आवयितास्थः आवयितास्थ आवयिष्यसि आवयिष्यथः आवयिष्यथ
आवयितास्मि आवयितास्वः आवयितास्मः आवयिष्यामि आवयिष्यावः आवयिष्यामः

आशीर्लिङ्। — लृङ्।

आव्यात् आव्यास्ताम् आव्यासुः आवयिष्यत् आवयिष्यताम् आवयिष्यन्
आव्याः आव्यास्तम् आव्यास्त आवयिष्यः आवयिष्यतम् आवयिष्यत
आव्यासम् आव्यास्व आव्यास्म आवयिष्यम् आवयिष्याव आवयिष्याम

लिट्।

१७ कास्प्रत्ययादाम् अमन्त्रे लिटि, आम् वक्तव्यः—लिट् में णिजन्त धातु के परे आम् लगा कर भू, [redacted] और अस् के लिट् का रूप जोड़ दिया जाता है। यथा, आवयाम्बभूव, आवयाञ्चकार, आवयामास।

चित्त की अप्रसन्नता के अर्थ में दुष् का विकल्प से दूष्

है। यथा, क्रोधः चित्तं दूषयति दोषयति वा।

६ शदेरगतौ तः—णिच् होने पर सद् का शत् और गुह्

गूह् होता है। यथा, शातयति। गूहयति।

७ रुहः पोऽन्यतरस्याम्, चिस्फुरोर्णौ—णिच् होने पर वि

से रुह् के ह् का प् और स्फुर् के उ का आ होता है। य

रुह्-रोपयति; रोहयति; स्फुर्-स्फारयति, स्फोरयति।

८ धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्यः—णिच् होने पर प्री और धू के

विकल्प से न होता है। यथा, प्री-प्रीणयति, प्राययति,

धूनयति, धावयति।

९ अर्तिह्रीव्लीरी क्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ्णौ — णिच् होने पर

ह् तथा आकारान्त धातुओं के परे प होता है और धातुओं

गुण होता है। यथा, ऋ-अर्पयति, ह्री-ह्रेपयति, स्था-स्थापय

ज्या-ज्यापयति, ज्ञा-ज्ञापयति।

१० क्रीङ्जीनां णौ—णिच् होने पर क्री, अधि-इ और जि

आकारान्त होते हैं, और उनके परे प् का आगम होता

यथा क्री-क्रापयति, अधि-इ-अध्यापयति, जि-जापयति।

१० पातेर्णौ लुग्वक्तव्यः—णिच् होने पर पानार्थ पा धातु

परे य और रक्षार्थ पा धातु के परे ल् होता है। यथा, पान

पाययति, रक्षार्थ पालयति।

११ णिच् होने पर छो, शो, सो, वे, व्ये और ह्वे के परे

होता है। यथा, छाययति, शाययति, साययति, वायय

व्याययति, ह्वाययति। कम्पनार्थ 'धे' धातु के परे ज् होता

यथा, धाजयति।

१२ णिच् परे होने पर अम्, रम्, क्रम् और रप्

यथाक्रम अम्, रम्, क्रम् और रप् होता है। यथा, अम



१८. लुङ् में णिजन्त धातु के परे अ होता है और अ होने से धातु का अभ्यस्त (द्वित्व) होता है तथा अभ्यन्त के सब कार्य्य इसमें होते हैं।

अ परे होने से णिजन्त धातु के पर भाग के अन्तस्थित इकार का लोप तथा पर भाग की उपधा के दीर्घ स्वर का ह्रस्व होता है *।

णिजन्त धातु के पूर्व्व भाग के लघुस्वर का दीर्घ होता है। यथा, सिच् + इ = सेचि-असीषिचत्, असीषिचताम्, असीषिचन्। भिद् + इ = भेदि-अबीभिदत्, अबीभिदताम्, अबीभिदन्। मुच् + इ = मोचि-अमूमुचत्, अमूमुचताम्, अमूमुचन्।

संयुक्ताक्षर परे हो तो पूर्व्व भाग के लघु स्वर का दीर्घ नहीं होता। यथा, निन्दि-अनिनिन्दत्, अनिनिन्दताम्, अनिनिन्दन्, शिक्षि-अशिशिक्षत्, अशिशिक्षताम्, अशिशिक्षन्।

१९. लुङ् में णिजन्त धातु के पूर्व्वभाग में अकार का ईकार होता है। यथा, चल् + इ = अचीचलत्, पालि-अपीपलत्, भज्-अबीभजत्, हासि-अजीहसत्।

N. B. पर 'दृ-दारि' में ई नहीं होता; यथा, अददरत्। अनेक स्वरयुक्त धातुओं में विकल्प से होता है। यथा, चकास् + इ = चका-सि-अचीचकासत्, अचचकासत्।

२ आगे का वर्ण गुरु (दीर्घ) स्वरयुक्त हो तो ई नहीं होता। यथा,

---

* पर शासि, यूजि, क्रजि, क्रीडि, भ्राजि, भेषि, हीडि, काशि काशि, दीपि, लपि शासि, वेपि, ह्लादि और लोकि इत्यादि धातुओं के दीर्घ स्वर का ह्रस्व नहीं होता। यथा, शासि-अशशासत्, ढौकि-अडुढौकत्।

= शासि-अशशासत् , भक्ष् + इ = भक्षि-अबभक्षत् , रक्ष् + इ=
रक्षत् , लङ्घ् + इ = लङ्घि- अललङ्घत् ।

लुङ् में णिजन्त धातु के पूर्व्व भाग के अकार के प
वर्ण हो तो अ का इ होता है। यथा, व्यथ् + इ =
विव्यथत्, क्षप् + इ = क्षपि-अजिक्षपत् ।

स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशाम्—पर स्मृ, स्तृ और त्वर् धातुओं
र्हीं होता। यथा, स्मृ + इ = स्मारि-असस्मरत् , असस्म-
असस्मरन् । स्तृ+इ=स्तारि-अतस्तरत् , अतस्तरताम्,
। त्वर् + इ = त्वारि-अतत्वरत् , अतत्वरताम् , अत-

भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम्—णिजन्त भ्राज्,
स् , भाष्, जीव् , मील् , पीड् इत्यादि के परभाग
के दीर्घ स्वर का विकल्प से ह्रस्व होता है। भ्राजि-
, अबिभ्राजत् । दीपि-अदीदिपत्, अदिदीपत् ।
(3rd from) ।

ऋकारोपध धातु णिजन्त हो तो लुङ् में विकल्प से
हीं रहता है। यथा, वृत + इ = वर्ति-अवीवृतत् अव-
= लुङ् 3rd form) ।

स्वापेश्चङि—लुङ् में णिजन्त स्वप् का स्वपि होता है।
+ इ = स्वपि-असूषुपत् ।

ष्ठेरित्—लुङ् में णिजन्त स्था के आ का इ होता है।
+ इ = स्थापि-अतिष्ठिपत् ।
ा का विकल्प से इ होता है; यथा, अजिघ्रिपत् ,

पिबतेरीच्चाभ्यासस्य—लुङ् में पायि धातु का अभ्यस्त
है। यथा, अपीप्यत् ।

लुङ्-चिकीर्षिता, लृट्-चिकीर्षिष्यति, लुङ्-अचिकीर्षि
लुङ् अचिकीर्षीत्, आशीर्लिङ्-चिकीर्ष्यात् ।

१२ कित्, तिज्, गुप्, बध् और मान् धातु के
स्वार्थ (उसी अर्थ) में सन् होता है तथा बध् और मान्
के पूर्वभाग के अ और आ के स्थान में ई होता है, य
चिकित्सति तितिक्षते, जुगुप्सते, बीभत्सते, मीमांसते ।

यङन्त प्रकरण ।

१ धातोरेकाचो हलादेः क्रिया समभिहारे यङ्—एक स्वर
धातु के आरम्भ में व्यञ्जन वर्ण हो तो पौनःपुन्य और अति
अर्थ में यङ् प्रत्यय होता है। यङ् का य रहता है और
आत्मनेपदी होता है। यह भी स्वतन्त्र धातु कहलाता है
लट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् में भ्वादिगणीय धातु के
रूप होता है।

२. सन्यङोः—यङ् होने से धातु अभ्यस्त होता है
अभ्यस्त (reduplication) के सब कार्य्य होते हैं।

३. दीर्घोऽकितः—यङ् परे होने से धातु के पूर्व भाग
अकार का दीर्घ होता है। यथा, लप्-लालप्यते, लप्-लालप्य
लप्-लालप्यते, क्रन्द्-चाक्रन्द्यते ।

४. गुणो यङ्लुकोः—यङ् प्रत्ययान्त धातु के पूर्व भाग
गुण होता है। यथा, शुच्-शोशुच्यते, रुद्-रोरुद्यते, दीप्-देदी
प्यते, सिच्-सेसिच्यते, लुप्-लोलुप्यते, भिद्-बेभिद्यते ।

५. जुगतोऽनुनासिकान्तस्य च— यङ् परे होने से नान्त, मान्त
और लान्त धातु के पूर्व भाग के स्वर वर्ण के परे अनुस्वा
होता है। यथा, जन्-जञ्जन्यते, मन्-मम्मन्यते, गम्-जंगम्यते, क्रम्
चंक्रम्यते, चल्-चञ्चल्यते, गल्-जंगल्यते ।

६. रीगृदुपधस्य च—ऋकारोपध धातु के पूर्व्व भाग के परे री होता है। यथा, नृत्-नरीनृत्यते, सृप्-सरीसृप्यते, कृष्-चरीकृष्यते।

७. रीङ् ऋतः—ऋकारान्त धातु के ऋ का री होता है। यथा, कृ-चेक्रीयते, स्मृ-सेस्मीयते।

अतिरिक्त—दा-देदीयते, ज्ञा-जाज्ञायते, भू-बोभूयते, कृ-चेक्रीयते, व्रज्-वाव्रज्यते, ढौक्-डोढौक्यते, ध्वंस्-दनीध्वस्यते, स्वप्-सोषुप्यते, घ्रा-जेघ्रीयते, ध्मा-देध्मीयते, क्लृप्-चलीक्लृप्यते, क्षि-चेक्षीयते, शुभ्-शोशुभ्यते, जप्-जञ्जप्यते, स्रंस्-सनीस्रस्यते, प्रच्छ्-परीपृच्छ्यते, ग्रह्-जरीगृह्यते।

लिट्, लुट्, लृट्, लुङ्, लृङ्, आशीर्लिङ्।

८ यस्य हलः—लुट् इत्यादि विभक्तियों में व्यञ्जन वर्ण के परे यङ् का और स्वरवर्ण के परे य के अ का लोप होता है। यथा, लिट्-शोशुचाम्बभूव, शोशुचामास, शोशुचाञ्चक्रे। लुट्-शोशुचिता, लृट्-शोशुचिष्यते, लुङ्-अशोशुचिष्ट, लृङ्-अशोशुचिष्यत, आशीर्लिङ्-शोशुचिषीष्ट। दा—लिट्-देदीयाञ्चक्रे, लुट्-देदीयिता, लृट्-देदीयिष्यते, लुङ्-अदेदीयिष्ट, लृङ्-अदेदीयिष्यत, आशीर्लिङ्-देदीयिषीष्ट।

यङ् लुगन्त।

१. यङोऽचि च—यङन्त धातु दो प्रकार के होते हैं। एक में य लगाया जाता है (ऊपर देखो) और दूसरे में य नहीं लगाया जाता, पर और सब कार्य्य होते हैं। दूसरे प्रकार को यङ् लुगन्त कहते हैं। यह धातु परस्मैपदी होता है। इसका प्रयोग प्रायः वेद में होता है। इसका रूप ह्वादि गणीय के

ऐसा होता है। लट् के तीनों पुरुष के एकवचन, लङ् के
और मध्यमपुरुष के एकवचन और लोट् के प्रथमपुरु
एकवचन में विकल्प से धातु के परे ई का आगम होता है
के आगम होने से उपधा के ह्रस्व स्वर का गुण नहीं हो
यथा, भू-(बोभवीति) बोभोति, बोभूतः, बोभुवति।

छन्दस् में—चञ्चलः, जङ्गमः, सरीसृपः, लेलिहत् इ
का प्रयोग मिलता है।

नामधातु।

१ शब्दों के परे कई प्रत्ययों के लगाने से धातु के
उनका रूप होता है और उन्हें नामधातु कहते हैं। इनका
भ्वादिगणीय धातु के ऐसा होता है।

१—२ काम्यच्, क्यच्।

२ काम्यच, सुप आत्मनः क्यच्—यदि किसी विषय की (
आत्मसम्बन्धिनी (केवल अपनी आत्मा के लिये) हो तो
विषय के सूचक शब्द के परे काम्यच् और क्यच् प्रत्यय
है। काम्यच् का काम्य और क्यच् का य शेष रहता है।
धातु परस्मैपदी होते हैं। यथा, काम्यच्-आत्मनः पुत्रमिच्छ
पुत्रकाम्यति he wishes for a son; आत्मनो धनमिच्छ
धनकाम्यति, आत्मनो यश इच्छति यशःकाम्यति। पुत्रकाम्य
पुत्रकाम्यतु, अपुत्रकाम्यत्, पुत्रकाम्येत्, पुत्रकाम्यिता, पु
काम्यिष्यति, अपुत्रकाम्यिष्यत्, पुत्रकाम्यात्, पुत्रकाम्याम्ब
पुत्रकाम्यामास पुत्रकाम्याञ्चकार, अपुत्रकाम्यीत्।

३ क्यचि च, रीङृतः—(१) क्यच् प्रत्यय परे होने से
के अन्तस्थित अ का ई, इ उ का दीर्घ, ऋ का री, ओ का
और औ का आव् होता है। यथा, पुत्रमिच्छति पुत्री
कवि-कवीयति, प्रभु-प्रभूयति। कर्तृ-कर्त्रीयति। गो-ग
नौ-नाव्यति।

N. B. अन्यसम्बन्धिनी इच्छा में काम्यच् और क्यच् प्रत्
होते। यथा, 'कुत्रस्य पुत्रमिच्छति' में ये प्रत्यय नहीं लगेंगे।

(२) अशनायोदन्यधनायाबुभुक्षापिपासागर्द्धेषु—बुभुक्षा अ
अशन शब्द के परे और पिपासा अर्थ में उदक शब्द
क्यच् होता है। अशन के अन्त्य अ का आ तथा उद
उदन् हो जाता है। यथा, अशनायति he wishes to
उदन्यति।

(३) नमो वरिवश्चित्रङः क्यच्—नमस्, तपस् और व
शब्दों के उत्तर 'करना' अर्थ में क्यच् होता है। यथा
करोति, नमस्यति; तपस्यति, वरिवस्यति serves.

(४) उपमानादाचारे—आचरण अर्थ में कर्मवाचक उ
के परे क्यच् होता है। यथा, शिष्यं पुत्रमिव आचरति, पु
शिष्यम्। भृत्यं सखायमिव आचरति, सखीयति भृत्यम्।
रिपुमिव आचरति, रिपूयति मित्रम् he treats the f
like an enemy. उपाध्यायं पितरमिव आचरति, पि
उपाध्यायम्।

२ क्यङ्।

५ कर्तुः क्यङ् सलोपश्च—आचरण अर्थ में कर्तृवाचक उ
के परे क्यङ् प्रत्यय होता है। क्यङ् का [illegible] रहता है और
आत्मनेपदी होता है।

(१) क्यङ् परे होने से शब्द के अन्तस्थित न् और स् का लोप होता है।

(२) क्यङ् परे होने से शब्द के अन्तस्थित ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है और पयस् के स् का विकल्प से लोप होता है। यथा, पुत्र इव आचरति, पुत्रायते; शिष्य इव आचरति शिष्यायते; हंस इव आचरति हंसायते; सखा इव आचरति सखायते; पय इव आचरति पयायते, पयस्यते। अन्तस्थित स् का ही होता है। यथा, विनिय आचरति विनीयते।

(३) शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे—'करना' अर्थ में शब्द, वैर, कलह, अभ्र, कण्व, मेघ इत्यादि शब्दों के परे क्यङ् होता है। यथा, शब्दं करोति शब्दायते; वैरायते, कलहायते, अभ्रायते, कण्वायते, मेघायते।

(४) सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् — अनुभव अर्थ में सुख, दुःख और कृच्छ्र शब्दों के परे क्यङ् प्रत्यय होता है। यथा, सुखमनुभवति सुखायते, दुःखायते, कृच्छ्रायते।

(५) बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने, फेनाच्चेति वाच्यम् — उद्वमन अर्थ में बाष्प, फेन, धूम और उष्मन् शब्दों के परे क्यङ् प्रत्यय होता है। यथा, बाष्पमुद्वमति बाष्पायते, फेनायते, धूमायते, उष्मायते।

(६) कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः— उद्गारपूर्वक चर्वण अर्थ में रोमन्थ शब्द के परे क्यङ् होता है। यथा, उद्गीर्य चर्वयति इत्यर्थे रोमन्थायते।

(७) भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः—भृश, शीघ्र, चपल, मन्द, पण्डित, उत्सुक, सुमनस्, दुर्मनस्, उन्मनस् इन शब्दों के परे अभूततद्भाव (जो नहीं है उसका होना) अर्थ में क्यङ्

होता है । यथा, अमृशो भृशो भवति भृशायते । अशीघ्रः शीघ्रो भवति शीघ्रायते । ऐसे ही चपलायते, मन्दायते, पण्डितायते, उत्सुकायते, सुमनायते, दुर्मनायते, उन्मनायते ।

४. क्विप् ।

१. आचरण अर्थ में कर्तृवाचक उपमान के परे क्विप् प्रत्यय होता है । क्विप् में कुछ नहीं रहता और यह परस्मैपद होता है । यथा, पुत्र इव आचरति पुत्रति । शिष्य इव आचरति शिष्यति ।

नकारान्त शब्दों की उपधा के अकार का दीर्घ तथा शब्दों के अन्तस्थित स्वर का गुण होता है । यथा, राजा इव आचरति राजानति । सखि-सखा इव आचरति सखयति । कवि-कवयति, बन्धु-बन्धवति, गुरु-गुरवति, पितृ-पितरति, मातृ-मातरति ।

५. णिच् ।

१. तत्करोति तदाचष्टे—'करना' अर्थ में शब्द के परे णिच् प्रत्यय होता है । णिजन्त के प्रायः सब विधान इसमें होते हैं । यथा, प्रश्नं करोति प्रश्नयति । शब्दं करोति शब्दयति ।

(१) णिच् होने से पृथु, मृदु और दृढ़ शब्दों के ऋ को र् और अन्त्य स्वर का लोप होता है । यथा, पृथुं करोति, प्रथयति, म्रदयति, द्रढयति ।

(२) णिच् होने से स्थूल का स्थव्, दूर का दव्, अन्तिक का नेद् और बहुल का बंह् होता है । यथा, स्थूलं करोति स्थवयति । दूरं करोति दवयति । अन्तिकं करोति नेदयति । बहुलं करोति बंहयति ।

Exercise—31.

1. Give one word for :— (a) पातुमिच्छति । गन्तुमिच्छति । दीवितुमिच्छति । दातुमिच्छति । भृशं तपति । अतिशयेन रुदति । वारं वारं पचति । आत्मनो धनमिच्छति । शिष्यमिव आचरति । पिता इव आचरति । कलहं करोति । दुःखमनुभवति । धूमं उद्वमति । अपपत्रः पक्षी भवति । गुरुरिव आचरति । दर्दं करोति ।

(b) He causes to do. He causes to go. He causes to see. He causes to grow. He causes to drink. He wishes to write. He wishes to dance. He wishes to conceal. He gives repeatedly. He wishes for fame for himself. He treats like a friend.

2 Translate into Hindi:— स मां व्याघ्रमेकं मदर्शयत् । बालको कूरस्य जलं पाययति । राजा धर्मेण पृथिवीमपालयत् । स देवान् कल्याणाय निजसर्वस्वं तस्मै अर्पयति । बालकः पुस्तकं पिपठिषति । स गङ्गायाः जलं पिपासति । पुत्रस्य चरित्रेण पिता दुःखायते । वर्षासु नद्या जलं फेनायते । [illegible] ऋषि निबिडे वने तपस्यति । रात्रौ दीपा देदीप्यन्ते ।

3 Translate into Sanskrit:—(a) पण्डित लोगों को कथा सुनाते हैं । मुझे राजा का दर्शन कराओ । राम श्याम से भात पकवाता है । दूत राजा को सब बातें जनाता है । माता पुत्र को जगाती है । वह घर जाने की इच्छा करता है । वह रोग के कारण मरने की इच्छा करता है । रोगी की दवा करता है । वह बार बार घर आता है । वह बार बार खेत सींचता है । वह धन की इच्छा करता है ।

(b) Mother fed her children. He makes him drink water. Let him wish to kill the tiger. He treats his elder brother as father. He wishes to cause to know. They behave like friend. They two wish to take fruits. The good boy reads his book again and again.

4 Correct:—स जलं पपासति। राजा पृथिवीं पापयति। सर्पः स्त्रियं भाययति। बालकः सुस्वप्सति। स धनामाप्सति। बालका हस्न्ते। बालकं हसयति। हृदयं दयति। शिष्यो गुरुं पप्रच्छिसति। राजा शत्रून् जिजीषति।

परस्मैपद-विधान।

१ व्याङ् परिभ्योरमः—वि आ, परि पूर्वक रम् धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है। यथा, विरमति stop, आरमति rests, 'रिरमति is pleased.

उपाच—उप पूर्वक रम् धातु में विकल्प से परस्मैपद 'त्यय होता है। यथा, उपरमति, उपरमते desists.

२ अनुपराभ्यां कृञः—अनु परा, पूर्वक कृ (उभयपदी) धातु परस्मैपद प्रत्यय होता है। यथा, अनुकरोति imitates पराकरोति rejects.

३ अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः—अभि, प्रति, अति पूर्वक क्षिप् (उभयपदी) धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है। यथा, अभिक्षिपति throws on, प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति।

४ प्राद्वहः—प्र पूर्वक वह् (उभयपदी) धातु में परमैपद प्रत्यय होता है। यथा, प्रवहति flows.

५ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च—लिट्, लुट्, लृट्, लृङ् में मृ धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है। यथा, ममार, मर्त्ता, मरिष्यति, अमरिष्यत्।

६ बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्योणेः—णिजन्त बुध्, युध्, नश्, जन्, अध्ययनार्थ इ, प्रु, द्रु, और स्रु धातुओं में परस्मैपद

प्रत्यय होता है। यथा, शोषयति, बोधयति, मारयति, जनयति अध्यापयति, प्रावयति covers over, द्रावयति, स्रावयति।

(ङ) निगरणचलनार्थेभ्यश्च—णिजन्त भोजनार्थ और चलनार्थ धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है। यथा, भोजयति आशयति, चालयति, कम्पयति।

(च) अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्—अणिजन्त अवस्था में यदि कोई प्राणी (प्राणधारी) कर्त्ता हो तो अकर्मक णिजन्त धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है। यथा, पुत्रः शेते; the son sleeps—माता पुत्रं शाययति the mother makes the son sleep; शिशुः जागर्ति-माता शिशुं जागरयति, वत्स क्रीडति-गोपो वत्सं क्रीडयति।

प्राणी कर्त्ता न हो तो ऐसा नहीं होता। यथा, जलं शुष्यति-सूर्यः जलं शोषयति शोषयते वा = the sun makes the water dry up.

आत्मनेपद विधान।

१. नेर्विशः—नि पूर्व्वक विश् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, निविशते enters in.

२. परिव्यवेभ्यः क्रियः—परि, वि, अव पूर्व्वक क्री (उभयपदी) धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, परिक्रीणीते, अवक्रीणीते buys, विक्रीणीते sells.

३. विपराभ्यां जेः—वि, परा पूर्व्वक जि धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, विजयते, पराजयते conquers, defeats.

४. आङो दोऽनास्य विहरणे—आङ् पूर्वक दा (उभयपदी) तु में विहरण (taking) अर्थ में आत्मनेपद प्रत्यय होता यथा, विद्यामादत्ते, अन्नमादत्ते।

विस्तार अर्थ में नहीं होता। यथा, नदी कूलं व्याददाति nds, पैदो विस्फोटकं (विषफोड़ा) व्याददाति।

५. क्रीडोऽनुसम्परिभ्यश्च—आ, अनु, परि पूर्वक क्रीड् धातु आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, आक्रीडते, अनुक्रीडते, क्रीडते plays.

मोऽकूजने—सम् पूर्वक क्रीड् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय है। यथा, संक्रीडते plays. पर कूजन (शब्द करना) नहीं होता। यथा, संक्रीडति चक्रं = wheel creaks, न्ति विहङ्गमाः = the birds are cooing.

अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने, सुट्—पक्षी तथा चतुष्पद जन्तु है, तथा हर्षप्रकाश, आहारान्वेषण, वासग्रहणेच्छा अर्थ आय तो अप पूर्वक कृ धातु में आत्मनेपद प्रत्यय और धातु के पहले सकार का आगम होता है। यथा, रते वृषभः = the ox throws up the earth with pleasure अपस्किरते कुक्कुटः= the cock searches the earth in search of food. अपस्किरते सारमेयः = the dog searches the earth to make a place to lie down in.

७. आङि नु प्रच्छयोः—आ पूर्वक पृच्छ् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, बन्धून् आपृच्छते = asks his friends.

८. समवप्रविभ्यः स्थः—सम्, अव, प्र, वि पूर्वक स्था धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, सन्तिष्ठते = stays with, अवतिष्ठते = waits, प्रतिष्ठते = sets forth, वितिष्ठते = stands apart.

(क) उदोऽनूर्ध्वकर्मणि—उत् पूर्वक स्था धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, उत्तिष्ठते। पर उत्थान अर्थ में नहीं होता, यथा, आसनादुत्तिष्ठति = rises from his seat.

(ख) उपाद्देवपूजासङ्गतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वाच्यम्—देवपूजा, मिलन, मैत्रीकरण अर्थ में उप पूर्वक स्था धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, देवपूजा-विष्णुमुपतिष्ठते (worships) कृष्णः। मिलन-यमुना गङ्गामुपतिष्ठते (makes friendship with) साधुः।

(ग) वा लिप्सायाम्—लाभेच्छा अर्थबोध हो तो उप पूर्वक स्था धातु विकल्प से आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, धनिनमुपतिष्ठते उपतिष्ठति (धनलाभेच्छया धनिसमीपं गच्छतीत्यर्थः) भिक्षुः।

(घ) अकर्मकाच्च—उप पूर्वक अकर्मक स्था धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, भोजनकाले उपतिष्ठते। परन्तु सकर्मक होने पर ऐसा नहीं होता। यथा, शिष्यो गुरुमुपतिष्ठति।

९. आङो यमहनः—आ पूर्वक अकर्मक हन् और यम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, आहते, आयच्छते। परन्तु सकर्मक में नहीं होता। यथा, आयच्छति कूपाद्रज्जुम्।

ाहन्ति शत्रुम्। आत्म-अवयव कर्म हो तो आत्मनेपद होता । यथा, आयच्छते (strikes) पाणिमात्मीयम् । आहते strikes at) स्वीयं शिरः।

१०. समोगम्यृच्छिभ्याम्—सम् पूर्वक अकर्मक गम्, ऋ और धातु में आत्मनेपद होता है । यथा, सङ्गच्छते, संऋणोति स्वम्, समार्च्छेत् मित्रम्। परन्तु सकर्मक में नहीं होता। ा, संगच्छति मित्रम्, समार्च्छेत् मित्रम्।

११. स्पर्धायामाङ् ह्वः—स्पर्धा (challenging) अर्थ में आ क ह्वे धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, मल्लमाह्-(challenges) मल्लः। स्पर्धा रहित अर्थ में नहीं होता। यथा, पिता पुत्रमाह्वयति (calls)।

१२. वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः—वृत्ति, उत्साह और अप्रतिविद्ध अर्थ समझा जाय तो क्रम् (उभयपदी) धातु से परे आत्मने-पद प्रत्यय होता है। यथा, सतां धीः क्रमते, वर्तते इत्यर्थः। अध्ययनाय क्रमते शिष्यः, उत्सहते इत्यर्थः। शास्त्रेषु क्रमते बुद्धिः न प्रतिहन्यते इत्यर्थः।

परा और उप भिन्न अन्य उपसर्ग में नहीं होता।

(क) वेः पादविहरणे—पद-विक्षेप अर्थ में वि पूर्वक क्रम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, साधु विक्रमते (walking)

(ख) आङ उद्गमने—ग्रह नक्षत्रादि ज्योतिः पदार्थों का ऊर्ध्वगमन अर्थ समझा जाय तो आ पूर्वक क्रम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है, यथा, आक्रमते (rises) सूर्यः।

अन्य पदार्थों के उदुर्ध्वगमन अर्थ में नहीं होता। यथा, आक्राम-माक्रामति (rises) धूमजालम्।

(ग) प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्—आरम्भ अर्थ में प्र और उप पूर्वक क्रम् धातु से आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, प्रक्रमते (commences) भोक्तुम्, उपक्रमते भोक्तुम्।

(घ) अनुपसर्गाद्वा—उपसर्गहीन क्रम् धातु में विकल्प से आत्मनेपद होता है। यथा, क्रामति।

१३ अपह्नवे ज्ञः—अपह्नव (अस्वीकार) अर्थ में ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है। यथा, शतमपजानीते (denies)।

(क) सम्प्रतिभ्यामनाध्याने—सम्, प्रति पूर्वक ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है। यथा, शतं संजानीते, प्रतिजानीते (promises)। स्मरण अर्थ में नहीं होता। यथा, पुत्रं संजानाति स्मरतीत्यर्थः।

(ख) अनुपसर्गाद्वा—उपसर्गहीन ज्ञा धातु में विकल्प से आत्मनेपद होता है। यथा, जानीते, जानाति।

१४ समः प्रतिज्ञाने—प्रतिज्ञा अर्थ में सम् पूर्वक गृ धातु से आत्मनेपद होता है। यथा, सङ्गिरते (Promises)।

१५ उदश्चरः सकर्मकात्—उत् पूर्वक सकर्मक चर् धातु से आत्मनेपद होता है। यथा, गुरुवचनमुच्चरते (disobeys)। अकर्मक में नहीं होता। यथा, उच्चरति (rises) धूमः।

(क) समस्तृतीयायुक्तात्—तृतीयान्त पद के योग में सम् पूर्वक चर् धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, अश्वैः सञ्चरते।

१६ उपाद्यमः स्वकरणे—विवाह अर्थ हो तो उपपूर्वक यम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, सीतामुपयच्छते (marries)।

१७ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु—उपसर्ग पूर्वक युज्‌धातु आत्मनेपद होता है। यथा, प्रयुङ्क्ते, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, अनुयुङ्क्ते, विनियुङ्क्ते। निर्, दुर्, सम् पूर्वक युज् में नहीं होता। यथा, निर्युनक्ति, दुर्युनक्ति।

१८ भुजोऽनवने—रक्षाभिन्न अर्थ में भुज् धातु में आत्मनेपद होता है; यथा, अन्नं भुङ्क्ते। रक्षार्थ में—महीं भुनक्ति राजा।

१९ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले—यदि कर्त्ता अपने लिये क्रिया का अनुष्ठान करे तो उभयपदी धातुओं में आत्मनेपद होता है। यथा, यजते sacrifices for his own benefit. यजति sacrifices for the benefit of some other person.

२० ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः—सनन्त ज्ञा, श्रु, स्मृ और दृश् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, धर्मं जिज्ञासते, गुरुं शुश्रूषते, नष्टं सुस्मूर्षते, चन्द्रं दिदृक्षते।

(क) नानोर्ज्ञः—अनुपूर्वक सनन्त ज्ञा धातु में आत्मनेपद नहीं होता। यथा, अनुजिज्ञासति।

(ख) प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः—प्रति, आ पूर्वक श्रु धातु में आत्मनेपद नहीं होता। यथा, प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति।

२१ वृद्भ्यः स्यसनोः। स्वाङ्गकर्मकाच्च इति वक्तव्यम्—अकर्मक

अथवा स्वाङ्गकर्मक होने पर उत् और वि पूर्वक तप् धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, उत्तपते (shines hot) सूर्यः, वितपते (warms) पाणिम्। अन्यत्र सुवर्णमुत्तपति (heats)।

२२ भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः—भासन (proficiency), उपसम्भाष (pacifying), ज्ञान, यत्न, विमति (difference of opinion), उपमन्त्रण (flattering) अर्थ में वद् धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, मनुः स्मृ वदते (shows brilliance), क्षेत्रे वदते (toils), ज्ञात विवदन्ते (quarrels), उपवदते भिक्षुकः, युद्धे वदते।

(क) अनोरकर्मकात्—अनु पूर्वक अकर्मक वद् धातु आत्मनेपद होता है। यथा, शिष्यः गुरु मनुवदते (imitates)

(ख) विभाषा विप्रलापे—वादानुवाद अर्थ में वि और पूर्वक वद् धातु में विकल्प से आत्मनेपद होता है। यथ विप्रवदन्ते, विप्रवदन्ति वैद्याः।

(ग) वद् धातु के पहले 'उप' उपसर्ग रहने से प्रलो या उपसान्त्वन अर्थ में, 'वि' रहने से विवाद अर्थ में, 'सम् + प्र' रहने से व्यक्तसहोक्ति में आत्मनेपद होता है। यथा; गुरु शिष्य मुपवदते, परस्परं विवदमानानामपि धर्मशास्त्राणाम्, वदते ब्राह्मणा अत्र सम्प्रवदन्ते।

२३. गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः—गन्धन-injury, अवक्षेपण-censure, overcoming; सेवन, साहसिक्य, प्रतियत्न, प्रकथन, उपयोग application, अर्थ में कृ धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, उत्कुरुते-does

injury to, श्येनो वर्तिकां उदाकुरुते censures, हरिमुपकुरुते serves, पान्थं प्रकुरुते outrages, एधोदकस्योपस्कुरुते prepares, गाथाः प्रकुरुते recites, शतं प्रकुरुते employs.

(क) अधेः प्रसहने—क्षमा और अभिभव अर्थ में अधि पूर्वक कृ धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, शत्रु मधिकरोति forgives or overpowers.

(ख) वेः शब्दकर्मणः अकर्मकाच्च—शब्द उच्चारण अर्थ में वि पूर्वक कृ धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, स्वरान् विकुरुते produces. अन्यत्र चित्तं विकरोति क्रोधः। अकर्मक वि पूर्वक कृ धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, छात्रा विकुर्वते (विकारं लभन्ते)।

१४ भावकर्मणोः—भाववाच्य और कर्मवाच्य में धातुओं में आत्मनेपद होता है। यथा, बालकेन गम्यते, शिशुना चन्द्रो दृश्यते।

१५ आशंसेराशंसायाम्—आशा अर्थ में आ पूर्वक शंस् धातु में आत्मनेपद होता है। यथा, विजयाय आशंसे।

Exercise—32

1. Form sentences to illustrate the distinction in meaning between:—आदत्ते & आददाति, संक्रीडते & संक्रीडति, आह्वयते & आह्वयति, विक्रमते & विक्रामति, अपजानीते & प्रतिजानीते, संजानाति & संजानीते, संगच्छते & संगच्छति, उपतिष्ठते & उपतिष्ठति, उत्तिष्ठते & उत्ति-

इति, गुनक्ति & गुडक्ते, भीषयते & भाययति and पजते & यजन्ते।

Translate into Hindi:—व्याख्यायनात् ब्राह्मणो विरमति। स गुरोर्वाक्येन शासिष्यते। यमुना गङ्गामुपतिष्ठते। सा आह्वते स्वयं प्रिय! नृपति पृथिवीमेव केवलं बुभुजे। हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः। अयं पन्थाः राजपथ मुपतिष्ठते। आकाशमाक्रमति धूमजालम्। नदी इदं मद् ददाति। प्रबलेन वेगेन गङ्गा प्रवहति।

3. Translate into Sanskrit:—(a) उसने राम को पढ़ने से निवृत्त किया। राजा प्रजाओं को पालता है। राम ने बहुत दिन तक पृथिवी भोग किया। वह अपने मित्रों के साथ खेलता है। यमुना गङ्गा से मिलती है। लड़के वन में फल एकत्र करते हैं। उसने शत्रु की राजधानी पर आक्रमण कर लिया। वह चन्द्रमा को देखने की इच्छा करता है।

(b) He sets out for the forest. He comes at the time of dinner. The birds are cooing. He defeated his enemies. Po men suffer hundreds of miseries. My heart is touch with anxiety. The servant will come back within a week.

4. Correct:—पठनात् विरमते। ज्ञानं पराकुरुते सः। हिमवतो गङ्गा प्रवहते। सर्व्वे लोका मरिष्यन्ते। माता पुत्रं शाययते। स गृहं निविशति। राजा शत्रुम् विजयति। व्याघ्रो मुखं व्याददते। संक्रीडते चक्रम्। आसन दुत्तिष्ठते। साधुमुपतिष्ठति साधुः। अश्वेन सञ्चरति। शब्दं संगिरति। गु शुश्रूषति।

कर्म्मवाच्य और भाववाच्य।

१. भावकर्म्मणोः—कर्म्मवाच्य और भाववाच्य में धातु

आत्मनेपदी होता है और उसमें केवल आत्मनेपद प्रत्यय होता है।

N. B. कर्मवाच्य के कर्मपद में जो पुरुष और जो वचन होते हैं क्रिया में भी वही पुरुष और वही वचन होते हैं अर्थात् कर्मपद में उत्तम पुरुष हो तो क्रिया में भी उत्तम पुरुष होता है; ऐसे ही मध्यम पुरुष हो तो क्रिया में भी मध्यम पुरुष तथा प्रथम पुरुष हो तो क्रिया में भी प्रथम पुरुष होता है। इसी प्रकार कर्मपद में एकवचन हो तो क्रिया में भी एकवचन, द्विवचन हो तो क्रिया में भी द्विवचन तथा बहुवचन हो तो क्रिया में भी बहुवचन होता है।

१ भाववाच्य की क्रिया में केवल प्रथम पुरुष एकवचन होता है।

२ इन वाक्यों के कर्तृपद में तृतीया और कर्मपद में प्रथमा विभक्ति होती है।

३ सार्वधातुके यक्—कर्मवाच्य और भाववाच्य में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में सब धातुओं के परे य लगाया जाता है। यथा, गम्-गम्यते, भिद्-भिद्यते, पठ्-पठ्यते, छिद्-छिद्यते, त्यज्-त्यज्यते, शुच्-शुच्यते, स्पृश्-स्पृश्यते, मुष्-मुष्यते, लभ्-लभ्यते, सृज्-सृज्यते, नी-नीयते, ज्ञा-ज्ञायते, हन्-हन्यते, सेव्-सेव्यते, ख्या-ख्यायते, लुप्-लुप्यते।

(क) य के आने से धातु के अन्तस्थित ह्रस्व इ और उ का दीर्घ, ऋ का रि, संयुक्त वर्ण युक्त ऋ तथा ॠ धातु का गुण और ॠ का ईर् या (पवर्ग से युक्त होने से) ऊर् हो जाता है। यथा, जि-जीयते, श्रु-श्रूयते, चि-चीयते, स्तु-स्तूयते, धि-धीयते, क्षि-क्षीयते, कृ-क्रियते, मृ-म्रियते, हृ-ह्रियते, धृ-ध्रियते। स्मृ-स्मर्यते, स्तृ-स्तर्यते, ऋ-अर्यते, तॄ-तीर्यते, कॄ-कीर्यते, पॄ-पूर्यते।

(ख) य आने से दा, धा, मा, गा, हा, पा (पानार्थ) और

स्था धातु के आ का ई होता है। यथा, दीयते, धीयते, मीयते, गीयते, हीयते, पीयते, स्थीयते।

(ग) य आने से वच्, वद्, वप्, वस्, वह् और स्वप् धातु के व का उ हो जाता है। यथा, उच्यते, उद्यते, उप्यते, उष्यते, उह्यते, सुप्यते।

(घ) य आने से ग्रह् का गृह्, प्रच्छ् का पृच्छ्, व्यध् का विध्, शास् का शिष्, ह्वे का हू, शी का शय्, जन् का जा और खन् का खन् या खा हो जाता है। यथा, गृह्यते, पृच्छ्यते, विध्यते, शिष्यते, हूयते, शय्यते, जायते, खन्यते या खायते।

(ङ) धातु के उपधा नकार का लोप होता है। यथा, बन्ध्-बध्यते, मन्थ्-मथ्यते।

(च) य आने से णिजन्त धातु के इ का लोप होता है। यथा, कारि-कार्यते, स्थापि-स्थाप्यते, दूषि-दूष्यते, दर्शि-दर्श्यते।

३ लट् इत्यादि चार लकारों को छोड़ कर अन्य लकारों में य नहीं लगाया जाता। पर परस्मैपद प्रत्यय (यदि हो) बदले आत्मनेपद प्रत्यय लगाते हैं। यथा, सेव्-लिट्-सिषेवे, सिषेवाते, सिषेविरे। लुट्-सेविता, सेवितारौ, सेवितारः। लृट्-सेविष्यते, सेविष्येते, सेविष्यन्ते। लृङ्-असेविष्यत, असेविष्येताम्, असेविष्यन्त। आशीर्लिङ्-सेविषीष्ट, सेविषीयास्ताम्, सेविषीरन्।

भुज्—लिट्-बुभुजे। लुट्-भोक्ता। लृट्-भोक्ष्यते। लृङ्-अभोक्ष्यत। आशीर्लिङ्-भुक्षीष्ट।

४ लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ् में स्वरान्त, ग्रह्, दृश् और हन् धातुओं के परे विकल्प से इ होता है।

(क) इ परे रहने से धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा अकार की वृद्धि होती है। यथा, श्रु-लिट्-शुश्रुवे, लुट्-श्रोता, श्राविता; लृट्-श्रोष्यते,

श्राविष्यते; लृङ्-अश्रोष्यत, अश्राविष्यत; आशीर्लिङ्-श्रोषीष्ट, श्रावि

ग्रह्—लिट्-जगृहे, लुट्-ग्रहीता, ग्राहिता; लृट्-ग्रहीष्यते, ग्रा

लृङ्-अग्रहीष्यत, अग्राहिष्यत; आशीर्लिङ् ग्रहीषीष्ट,-ग्राहिषीष्ट ।

(ख) इ परे रहने से उपधा लघुस्वर का गुण होता है । यथा

दृक्षे,द्रष्टा-दर्शिता, द्रक्ष्यते-दर्शिष्यते, अद्रक्ष्यत-अदर्शिष्यत, दृक्षीष्ट-दर्शि

(ग) इ परे रहने से हन् धातु के ह के स्थान में घ होता है

जघ्ने, हन्ता-घानिता, हनिष्यते-घानिष्यते, अहनिष्यत-अघानिष्यत,

षीष्ट-घानिषीष्ट ।

(घ) इ परे रहने से आकारान्त धातु के परे य होता है । यथा

दाता-दायिता, दास्यते-दायिष्यते, अदास्यत-अदायिष्यत, दासीष्ट-दायि

५ कर्मवाच्य और भाववाच्य में लुङ् के त के स्थान

होता है । इ परे रहने से अन्त्य स्वर और उपधा अकार

वृद्धि होती है तथा उपधा-लघुस्वर का गुण होता है ।

पठ्-अपाठि, अपाठिषाताम्, अपठिषत । सिच्-असेचि,

चिषाताम्, असेचिषत । भज्-अभाजि, अभक्षाताम्, अभ

मन्-अमानि, अमंसाताम्, अमंसत ।

६ स्वरान्त ग्रह्, दृश् और हन् धातु में लुङ् के त-

विभक्ति में लुट् इत्यादि के अनुसार कार्य्य होता है ।

श्रु-अश्रावि, अश्रोषाताम्, अश्राविषाताम्, अश्रोषत, अ

षत । ग्रह्-अग्राहि, अग्रहीषाताम्, अग्राहिषाताम्, अग्रह

अग्राहिषत । दृश्-अदर्शि, अदृक्षाताम्-अदर्शिषाताम्, अ

अदर्शिषत । हन्-अवधि, अघानि, अवधिषाताम्, अहंसा

अघानिषाताम्, अवधिषत, अहंसत, अघानिषत । दा-अ

अदिषाताम्, अदायिषाताम्, अदिषत, अदायिषत ।

Exercise—33

1. Change the voice of:—बालको ग्रामं पश्यति ।

[illegible]

1. Translate into Sanskrit [illegible]

(b) [illegible]

[illegible] large [illegible] there.

2. Correct : [illegible]

लकारार्थ-निर्णय।

१. वर्तमाने लट्—वर्तमान काल में धातु के उत्तर लट् (Present tense) विभक्ति होती है। यथा, भवति, तिष्ठति, गच्छति, पश्यति, आसति।

२. अनद्यतने लङ्—भूतकाल में धातु के उत्तर लङ् (Imperfect), लिट् (Perfect) और लुङ् (Aorist) होते हैं। यथा, गम्-अगच्छत्, जगाम, अगमत्। भू-अभवत्, बभूव, अभूत्। दृश्-अपश्यत्, ददर्श, अदर्शत्-अद्राक्षीत्। स्था-अतिष्ठत्, तस्थौ, अस्थात्।

३ भविष्यति अनद्यतने लुट् लृट्।—भविष्यत् काल में धातु

के परे लुट् (Periphrastic future) और लृट् (future) होता है । यथा, गम्-गन्ता, गमिष्यति । भू-भविता भविष्यति । दृश्-द्रष्टा, द्रक्ष्यति । स्था-स्थाता, स्थास्यति ।

४ लट् स्मे—स्म शब्द के योग में भूतकाल में लट् होता है । यथा, स मद्गृहमागच्छतिस्म (वह मेरे घर आया था), व्याकरण मधीते स्म (उसने व्याकरण पढ़ा था) ।

५ माङि लुङ्—मा शब्द के योग में सब काल में विकल्प से लुङ् होता है । यथा, मा भूत् दुःखम्, मा भवतु दुःखम्, मा भविष्यति दुःखम् ।

६ स्मोत्तरे लङ् च—मास्म शब्द के योग में सर्व्वकाल में लङ् और लुङ् होता है । यथा, मास्म भवत् शोकः, मास्म भूत् शोकः ।

७ यावत्पुरानिपातयोर्लट्—यावत् और पुरा शब्द के योग में भविष्यत्काल में लट् होता है । यथा, स यावत् आगच्छति तावत् अहं गमिष्यामि (जब वह आवेगा तब मैं आऊँगा) ।

८ विभाषा कदाकर्ह्योः—कदा और कर्हि शब्दों के योग में भविष्यत् काल में विकल्प से लट् होता है । यथा, कदा ददामि (दास्यामि) न जाने (कब दूँगा नहीं जानता) ।

९ विभाषा कथमि लिङ् च—कथं शब्द के योग में सब काल में विकल्प से लट् और विधिलिङ् होता है । यथा, कथं गच्छसि, कथं गच्छेः ।

१० यदायद्योर्लिङ्—यदा और यदि शब्द के योग में भविष्यत् काल में विधिलिङ होता है । यथा, वक्ष्यामि यदा स आगच्छेत्, दास्यामि यदि [illegible] आगच्छेत् ।

११ आशिषि लिङ् लोटौ—आशीर्वाद (blessing) अर्थ में धातु के उत्तर आशीर्लिङ् (Benedictive mood) और लोट्

(imperative) होता है। यथा, आशीर्लिङ्-तव सुखं भूयात्, सज्जनश्चिरं जीव्यात्। लोट्-तव सुखं भवतु, सज्जनश्चिरं जीवतु।

१२ तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम्—आशीर्वाद अर्थ में लोट् के तु और हि के स्थान में विकल्प से तात् होता है। यथा, तव कुशलं भवतात्, तव कुशलं भवतु। ईश मां पातात्, ईश मां पाहि।

१३ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्—विधि अर्थ में धातु के उत्तर विधिलिङ् (Potential mood) होता है। विधि दो प्रकार की है, प्रवर्त्तना और निवर्त्तना। सत्कर्म में प्रवृत्ति करने को प्रवर्त्तना और असत्कर्म से अलग करने को निवर्त्तना कहते हैं। यथा, प्रवर्त्तना-सत्यं वदेत्, प्रियं ब्रूयात्, गुरुमभ्यर्चयेत्, दीने दयां कुर्य्यात्, क्षुधिताय अन्नं दद्यात्, निवर्त्तना-नानृतं वदेत्, गुरुं न निन्देत्, परस्वं नापहरेत्, लोभं यत्नेन वर्जयेत्, अहङ्कारं परिहरेत्, आलस्यं परित्यजेत्।

N. B. अनुज्ञा (commaud), नियोग (permission), निमन्त्रण (invitation), अनुरोध (entreaty, request), प्रार्थना (Prayer) और जिज्ञासा (asking, question) अर्थ में विधिलिङ् और लोट् होता है। यथा, अनुज्ञा-गच्छतु भवान्। नियोग-करोतु भवान्। निमन्त्रण-इह भुञ्जीत भवान्। अनुरोध-इह शयीत भवान्। प्रार्थना-मत्पुत्रमध्यापयेद्भवान्। जिज्ञासा-किं भो व्याकरणमधीयीय उत साहित्यम्।

१४ हेतुहेतुमतोर्लिङ्—दो क्रियाओं का कार्य्यकारणभाव बोध हो तो दोनों क्रियाओं के भविष्यत् काल में विधिलिङ् होता है। यथा, यदि बाल्ये अधीयत यावज्जीवनं सुखं लभेत। यहाँ बाल्यकाल का अध्ययन यावज्जीवन सुखलाभ का कारण होता है। इसलिये दोनों क्रियाओं में विधिलिङ् हुआ है। ऐसे ही, यदि प्रियं वदेत् सर्व्वेषां प्रियो भवेत्।

तृतीय भाग

कृदन्त-प्रकरण।

साधारण-नियम।

१ धातु के परे तव्य, क्त्वा प्रभृति कई प्रत्यय होते हैं, [illegible] कहते हैं। इनके लगाने के ये नियम हैं—

१ प्रत्यय परे होने से धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के [illegible] गुण होता है। यदि प्रत्यय के क् वा ङ् का लोप हो तो गुण [illegible]

२ प्रत्यय के ञ् वा ण् का लोप हो तो धातु के अन्त्य स्वर [illegible] अकार की वृद्धि होती है। आकारान्त धातुओं के परे य [illegible]

३ प्रत्यय परे हो तो [illegible] का लोप होता है।

४ प्रत्यय के [illegible] का लोप हो तो धातु के [illegible] [illegible] [illegible] होता है।

५ प्रत्यय के [illegible] का लोप हो तो [illegible] [illegible] [illegible]

६ प्रत्यय के [illegible] का लोप हो तो [illegible] [illegible] धातु के परे [illegible]

७ प्रत्यय के [illegible] परे रहने से धातु के [illegible] [illegible] [illegible] होता है।

(b) If my father were here, you would not do th... There may not be any trouble to the people. Let her ... me a book. Let the two books be brought here.

3. Correct:—स व्याघ्रं अपश्यत् । भवानत्र तिष्ठ । ... मः । गुर्वी भवतु त्वम् ।



नीय, यापि-यापनीय, स्थापि-स्थापनीय, रोपि-रोपनीय, ्यापि-क्ष्यापनीय, ज्ञापि-ज्ञापनीय, अध्यापि-अध्यापनीय, पालि-ालनीय।

ण्यत् (य)

१. ऋहलोर्ण्यत्—कर्मवाच्य और भाववाच्य में ऋकारान्त ा व्यञ्जनान्त धातु के परे ण्यत् प्रत्यय होता है। ण्यत् के ्‌ण् का लोप होता है और य रह जाता है। यथा, ऋका- त-कृ-कार्य्य, what is fit to be done. धृ-धार्य्य, सृ- र्य, स्मृ-स्मार्य्य, हृ-हार्य्य। व्यञ्जनान्त वच्-वाच्य, सिच् य, त्यज्-त्याज्य, यज्-याज्य, युज्-योज्य, भज्-भाज्य, भुज्- भाज्य, बुध्-बोध्य, छिद्-छेद्य, भिद्-भेद्य, विद्-वेद्य, मन्-मान्य, भक्ष्-भक्ष्य, श्वस्-श्वास्य, हस्-हास्य, वह्-वाह्य।

७. चजोः कु घिण्ण्यतोः—ण्यत् परे हो तो पच्, यज् इत्यादि धातु के च् का क् और ज् का ग् होता है। यथा, पच्-पाक्य, रुज्-रोग्य।

८. वचोऽशब्द संज्ञायाम्; भोज्यं भक्ष्ये; प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे— विशेष अर्थ में ण्यत् प्रत्यय परे हो तो वच्, भुज्, युज् इत्यादि धातुओं के च् का क् और ज् का ग् होता है। यथा, वच् शब्दार्थ में वाक्य, भुज्-भोग अर्थ में भोग्य, युज्-अर्द अर्थ में योग्य। नि-पूर्वक युज् कर्तृवाच्य में (प्रभु अर्थ में) नियोग।

९. अमावस्यदन्यतरस्याम्—अमावस्या शब्द निपातन से सिद्ध होता है। यथा, अमा सह वसतोऽस्यां चन्द्रार्कौ अमा- ्वस्या।

कृत्य प्रकरण।

२ तव्य, अनीय, यत्, क्यप्, ण्यत्, केलिम, ये कृत्य प्रत्यय हैं।

तव्य।

३ तव्यत्-तव्य—कर्मवाच्य और भाववाच्य में धातु के परे तव्य होता है।

४ लृट् विभक्ति में इट् इत्यादि जो कार्य होते हैं वे कार्य तव्य प्रत्यय में भी होते हैं। यथा, दा-दातव्य what must or ought to be given. ज्ञा-ज्ञातव्य, जि-जेतव्य, शी-शयितव्य, श्रु-श्रोतव्य, स्तु-स्तोतव्य, भू-भवितव्य, कृ-कर्तव्य, स्मृ-स्मर्तव्य, वच्-वक्तव्य, वास्-वासितव्य, प्रच्छ्-प्रष्टव्य, लज्ज्-लज्जितव्य, त्यज्-त्यक्तव्य, वन्-वनितव्य, नृत्-नर्तितव्य, [illegible] छेत्तव्य, सिव्-सेवितव्य, बुध्-बोद्धव्य, नम्-नन्तव्य, [illegible] आप्-आप्तव्य, लभ्-लब्धव्य, लभ्-लब्धव्य, मन्-मन्तव्य, [illegible] वलितव्य, जीव्-जीवितव्य, सेव्-सेवितव्य, दृश्-द्रष्टव्य, दृश्-पेष्टव्य-स्पृश्-स्प्रष्टव्य, मृष्-मर्षितव्य, श्वस्-श्वसितव्य, हस्-हसितव्य, सह्-सहितव्य, गुह्-गोढव्य, वह्-वोढव्य, कारि-कारयितव्य, बोधि-बोधयितव्य, चिकीर्ष्-चिकीर्षितव्य, मीमांस्-मीमांसितव्य।

अनीय।

५ कर्मवाच्य और भाववाच्य में धातु के परे अनीय होता है। यथा, पा-पानीय what must or ought to be drunk. चि-चयनीय, शी-शयनीय, श्रु-श्रवणीय, कृ-करणीय, स्मृ-स्मरणीय, हृ-हरणीय, छिद्-छेदनीय, विद्-वेदनीय, मन्-मननीय, शुभ्-शोभनीय, रम्-रमणीय, सेव्-सेवनीय, दृश्-दर्शनीय, रक्ष्-रक्षणीय, शुष्-शोषनीय, पूजि-पूजनीय, अर्चि-अर्चनीय,

१५. वदः सुपि क्यप् च—कर्मवाच्य और भाववाच्य में सुवन्त शब्द के परवर्ती वद् धातु के परे क्यप् और यत् हो तथा क्यप् के पक्षान्तर में व का उ होता है। यथा, ब्रह्मोद्य, ब्रह्मवद्य expounding the Veda. मृषा के परे हो तो केवल क्यप् होता है; यथा, मृषोद्य speaking falsely.

१६ भुवो भावे —भाववाच्य में सुवन्त पद के परवर्ती भू धातु के परे क्यप् होता है। यथा, ब्रह्मभूयः identification with Brahma, देवभूयः।

१७. हनस्त च—भाववाच्य में सुवन्त पद के परवर्ती हन् धातु के परे क्यप् होता है तथा न् के स्थान में त् और स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, स्त्रीहत्या, गोहत्या, पितृहत्या, ब्रह्महत्या।

१८. राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः—राजसूय इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, राजा सूयते अत्र इति राजसूयः, सरति आकाशे इति सूर्यः, मृषोद्यम् (मृषावद् + क्यप्), रुच्यः, कुप्यः, कृष्टपच्यः, अव्यथ्यः।

केलिम ।

१९. केलिमर उपसंख्यानम्— कर्म-कर्तृ वाच्य में धातु के परे केलिम होता है; इसमें क् का लोप होता है और एलिम रहता है। यथा, भिद्-भिदेलिम what ought to be filled, पच्-पचेलिम, छिद्-छिदेलिम।

N. B. कृत्य प्रत्यय से बने [illegible] शब्द क्रिया की भाँति व्यवहृत हों तो भाववाच्य में क्लीबलिङ्ग की प्रथमा के एकवचनान्त पद होते हैं और कर्मवाच्य में कर्म के विशेषण होते हैं, अतएव कर्म में जो लिङ्ग, जो विभक्ति और जो वचन हों वही उनमें भी हों। यथा, भाववाच्य-मया स्थातव्यम्,

ण्यत् (य)

१०. अचो यत्—कर्मवाच्य और भाववाच्य में स्वरान्त धातु के परे यत् प्रत्यय होता है। यत् के त् का लोप होता है और य रहता है। यथा, चि-चेय what is fit or ought to be collected, जि जेय, नी-नेय, श्रु-श्रव्य, भू-भव्य।

११. ईद् यति—यत् परे होने से धातु के अन्तस्थित आ का ए होता है। यथा, दा-देय, गा-गेय, पा-पेय, स्था-स्थेय, मा-मेय, हा-हेय, धा-धेय।

१२. पोरदुपधात् शकिसहोश्च—कर्मवाच्य और भाववाच्य में शक्, सह् और पवर्गान्त धातु के परे यत् होता है। यथा, शक्-शक्य, सह्-सह्य, शप्-शप्य, रभ्-रभ्य, लभ्-लभ्य, गम्-गम्य, नम्-नम्य, रम्-रम्य।

१३. गदमदचरयमश्चानुपसर्गे—कर्मवाच्य और भाववाच्य में उपसर्ग हीन गद्, मद्, यम्, चर् धातु के परे यत् होता है। यथा, गद्-गद्य, मद्-मद्य, यम्-यम्य, चर्-चर्य। उपसर्ग पूर्व्वक होने से ण्यत् होता है। यथा, नि-गद्-निगाद्य, प्र-मद्-प्रमाद्य, नि-यम्-नियाम्य, वि-चर्-विचार्य्य।

क्यप्।

१४. एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्, ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्—कर्मवाच्य और भाववाच्य में इ, स्तु, भृ, कृ, जुष्, शास् तथा वृ धातु के परे क्यप् होता है। क्यप् के क् और प् का लोप होता है और य रहता है। यथा, इ-इत्य what is ought to be approached, कृ-कृत्य, भृ-भृत्य servant, जुष्-जुष्य, स्तु-स्तुत्य। कृ-धातु में विकल्प से यत् होता है; यथा, कृ-कार्य्य; शिष्यः pupil, scholar.

वह्-वहत्, वहमान । अदादिगणीय-द्विष्-द्विषत्, द्विषाण;
दिहत्, दिहान; दुह्-दुहत्, दुहान; स्तु-स्तुवत्, स्त
मृ-मृण्वत् मृण्वाण । ह्वादिगणीय-दा-ददत्, ददान; धा-
दधान; भृ-बिभ्रत्, बिभ्राण । क्र्यादिगणीय-ज्ञा-जानत्, ज
तनादिगणीय-तन्-तन्वत्, तन्वान; कृ-कुर्वत्, कुर्वाण । क्र
णीय-क्री-क्रीणत्, क्रीणान; ग्रह्-गृह्णत्, गृह्णान।

२६ कर्म्म वाच्य में धातु के परे वर्त्तमान काल में
होता है।

२७ कर्म्मवाच्य में शानच् के स्थान में मान होत
यथा, कृ-क्रियमाण, वच्-उच्यमान, दा-दीयमान, पा-पी
ग्रह्-गृह्यमाण, सेव्-सेव्यमान, वह्-उह्यमान, दृश्-दृश्य
हन्-हन्यमान, सृज् सृज्यमान, ज्ञा-ज्ञायमान।

N. B. शतृ और शानच् प्रत्यय से बने हुए शब्द विशेषण
इसलिये इसमें विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं
पचन् पुरुषः, पचन्तं पुरुषं, पचता पुरुषेण; गच्छन्ती स्त्री, गच्छन्ती
गच्छन्त्या स्त्रिया; पतत् फलम्, पतता फलेन, पततः फलस्य इत्यादि

क्वसु और कानच्।

२८ लिटः कानज् वा। क्वसुश्च—भूतकाल में परस्मैपदी
के परे क्वसु होता है। और क्वसु का वस् रहता है।

२९ लिट् के उत्तमपुरुष के द्विवचन में जो कार्य्य हो
क्वसु होने से इट् भिन्न वे सब कार्य्य धातु में होते हैं। श्रु
वस् having heard, विद्-विविद्वस्, सृप्-ससृप्वस्, स्तु-
वस्, भू-बभूवस्, कृ-चकृवस्।

३० वसेकाजाद् घसाम्—क्वसु होने से घस्, हन् और
कारान्त धातु के परे इट् होता है। यथा, घस्-जक्षिवस्
ईयिवस्, स्था-तस्थिवस्, दा-ददिवस्, पा-पपिवस्।

अदादि-गणीय-अद्-अदत्, रुद्-रुदत्, हन्-घ्नत्, इण्-यत्, या-यात्, अस्-सत्, स्वप्-स्वपत्, श्वस्-श्वसत्, शास्-शासत्, रु-रुवत्। ह्वादिगणीय-हु-जुह्वत्, भी-बिभ्यत्, हृ-जुह्वत्। णिजन्त-कारि-कारयत्, स्मारि-स्मारयत्, स्थापि स्थापयत्, पालि-पालयत्, जनि-जनयत्। सनन्त-विकीर्ष-विकीर्षत्, जिघृक्ष-जिघृक्षत्।

N. B. विदेःशतुर्वसुः—अदादिगणीय विद् धातु के परे विकल्प से शतृ का वस् होता है। यथा, विद्वस्, विदत्।

२२ कर्तृवाच्य में आत्मनेपदीय धातु के परे वर्तमान काल में शानच् होता है और शानच् का आन रहता है।

२३ धातु के परे शानच् होने से लट् आते (मन्ते) विभक्ति के सब कार्य्य होते हैं।

२४. आने मुक्—भ्यादि, दिवादि और तुदादि गणीय धातु के परे शानच् के स्थान में मान हो जाता है। यथा, भ्वादि-गणीय-सेव्-सेवमान, वृत्-वर्त्तमान, वृध्-वर्द्धमान, लभ्-लभमान, सह्-सहमान। दिवादिगणीय-जन्-जायमान, पद्-पद्यमान, युध्-युध्यमान, सिव्-सीव्यमान। तुदादि-गणीय-मृ-म्रियमाण, दृ-द्रियमाण, धृ-ध्रियमाण। अदादि-गणीय-शी-शयान, अधि-इ-अधीयान। तनादिगणीय मन्-मन्वान। ह्वादिगणीय-मा-मिमान। क्र्यादिगणीय-क्री-क्रीणान।

N. B. ईदासः—अदादिगणीय आस् धातु के परे आन् के स्थान में ईन होता है। यथा, आसीन।

२५ कर्तृवाच्य में उभयपदी धातुओं के परे वर्तमान काल में शतृ और शानच् दोनों प्रत्यय होते हैं। यथा, भ्वादिगणीय श्रि श्रयत्, श्रयमाण, नी-नयत्, नयमान, हृ-हरत्, हरमाण, राज्-राजत्, राजमान, भज्-भजत्, भजमान, यज्-यजत्, यजमान।

स्यत्, पा-पास्यत्, दृश्-द्रक्ष्यत्, हन्-हनिष्यत्, मृ-मरिष्यत्, पत्-पतिष्यत्, कारि-कारयिष्यत्, दर्शि-दर्शयिष्यत्, योजि-योजयिष्यत्।

३७ भविष्यत् काल में आत्मनेपदी धातु के परे कर्त्तृवाच्य में स्यमान होता है। स्यमान परे रहने से भी लुट् के सभी कार्य्य होते हैं। यथा, सेव्-सेविष्यमाण, वृत्-वर्त्तिष्यमाण, व्यथ्-व्यथिष्यमाण, जन्-जनिष्यमाण, पद्-पत्स्यमान, सह्-सहिष्यमाण।

३८ भविष्यत् काल में उभयपदी धातु के परे कर्त्तृवाच्य में स्यत् और स्यमान दोनों प्रत्यय होते हैं। यथा, स्तु-स्तोष्यत्, स्तोष्यमाण; दा-दास्यत्, दास्यमान; धा-धास्यत्, धास्यमान; ग्रह्-ग्रहीष्यत्, ग्रहीष्यमाण; कृ-करिष्यत्, करिष्यमाण।

३९ भविष्यत् काल में धातु के परे कर्म्मवाच्य में स्यमान होता है। यथा, ज्ञा-ज्ञापिष्यमाण, ज्ञास्यमान; श्रु-श्राविष्यमाण; श्रोष्यमाण; कृ-कारिष्यमाण, करिष्यमाण; दृश्-दर्शिष्यमाण, द्रक्ष्यमाण; दह्-धक्ष्यमाण, वच्-वक्ष्यमाण।

N. B. स्यत् और स्यमान से बने [illegible] शब्द विशेषण होते हैं, अतएव विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होते हैं। यथा, गमिष्यन् पुरुषः, गमिष्यन्तौ पुरुषौ, गमिष्यन्तः पुरुषाः, गमिष्यन्तं पुरुषं, गमिष्यता पुरुषेण, जनिष्यमाणा कन्या, जनिष्यमाणां कन्याम्, जनिष्यमाणया कन्यया। पतिष्यत् पत्रम्, पतिष्यता पत्रेण, पतिष्यतः पत्रस्य। करिष्यमाणं कर्म्म, करिष्यमाणे कर्म्मणि, करिष्यमाणानि कर्म्माणि, करिष्यमाणेन कर्म्मणा, करिष्यमाणात् कर्म्मणः, करिष्यमाणे कर्म्मणि। वक्ष्यमाणं वचनम्, वक्ष्यमाणेन वचनेन, वक्ष्यमाणात् वचनात्, वक्ष्यमाणस्य वचनस्य, वक्ष्यमाणेषु वचनेषु।

३१ आगमन होने पर जो धातु एक स्वर विशिष्ट हैं, पर होने से उन धातुओं के परे इट् होता है। यथा, गम् , गम्-जैग्मिम्, भृ-आरिमम्, पच्-पेचिमम्, गम् , गम्-ऊगिमम् , वस् ऊषिम् ।

३२ विभाषा गम् हन् विद् विशाम् । ईक्ष—कसु होने से हन् , विश् , दृश् , और विद् धातु के परे विकल्प से इट् होते हैं। यथा, गम्-जग्मिवान्, जगन्वान्; हन्-जघ्निवान्, विश्-विविशिवान्, विविश्वान्; दृश्-ददृशिवान्, विद्-विविदिवान्, विविद्वान् ।

३३ भूतकाल में आत्मनेपदी धातु के परे कानच् होता है और कानच् का आन रहता है।

३४ लिट् के भाने (मध्ये) विभक्ति में जो कार्य होते हैं, कानच् होने से भी वही कार्य्य होते हैं। यथा, बुध्-बुबुधान, पच्-पेचान, लभ्-लेभान, विश्-विविशान, पच्-पेचान, वृत्-ववृतान, सह्-सेहान, कृ-चक्राण, वच्-ऊचान ।

N. B. क्वसु और कानच् प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं वे विशेषण होते हैं; अतएव विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होते हैं। यथा, शुश्रुवान् पुरुषः, शुश्रुवांसं पुरुषम्, शुश्रुवुषा पुरुषेण; विविदुषीं कन्याम् , विविदुष्या कन्यया; पेतिवः पत्रम्, पेतुषा पत्रेण।

स्यत् और स्यमान।

३५ भविष्यत् काल में परस्मैपदी धातु के परे कर्तृवाच्य में स्यत् प्रत्यय होता है और स्यत् का स्यत् रहता है।

३६ लृट् विभक्ति में गुण, इट् इत्यादि जो कार्य्य होते हैं वे सब कार्य्य स्यत् में भी होते हैं। यथा, भू-भविष्यत्, गम्-गमिष्यत् , श्रु-श्रोष्यत्, जि-जेष्यत्, या-यास्यत्,

धातुम्, स्था-स्थातुम्, ध्मा ध्मातुम्, जि-जेतुम्, यज्-यष्टुम्, सृज्-स्रष्टुम्, वह्-वोढुम्, श्रु श्रोतुम्, स्तु-स्तवितुम्, स्तोतुम्; सह्-सहितुम्, सोढुम्; क्रम्-क्रमितुम्, फल्-फलितुम्, गम्-गन्तुम्, हन्-हन्तुम्, तॄ तरितुम्, तरीतुम्; सेव्-सेवितुम्, चल्-चलितुम्, भ्रम् भ्रमितुम्; विद् वेदितुम्, रुद्-रोदितुम्, शास्-शासितुम्, नृत्-नर्तितुम्, कारि-कारयितुम्, याजि-याजयितुम्, मोचि-मोचयितुम्।

४२ पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु—समर्थार्थक शब्द के योग में धातु के परे तुमन् होता है। यथा; बोद्धुं समर्थः, भोक्तुं पटुः, धर्तुं निपुणः, कारयितुं कुशलः।

४३ कालसमयवेलासु तुमन्—कालवाचक शब्द के योग में धातु के परे तुमन् होता है। यथा, गन्तुं समयोऽयम्, अध्येतुं कालोऽयम्, शयितुं वेलेयम्।

णमुल्।

४४ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च—पौनःपुन्य अर्थ समझा जाय तो पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु के परे णमुल् होता है और णमुल् का अम् रहता है। यथा, स्मृ-स्मारम्, श्रु-श्रावम्, स्तु-स्तावम्, नम्-नामम्, ग्रह् ग्राहम्, भुज्-भोजम्, भिद्-भेदम्, क्षिप् क्षेपम्, मृश्-मर्शम्, स्पृश्-स्पर्शम्, हस्-हासम्, गाह्-गाहम्, सेव्-सेवम्।

४५ णमुल् प्रत्यय परे रहने से हन् धातु का घात् होता है।
ा, घातम्।

४६ णमुल् प्रत्यय से बने शब्द प्रयोगकाल में द्वित्व होते हैं।
ा, स्मारं स्मारम् having repeatedly remembered,
ं ग्राहम्, घातं घातम्।

N. B. अन्यथा, एवम्, कथम् और इत्थम् शब्दों के परे कृ धातु में णमुल् होता है। यथा, अन्यथाकारम् in a different manner, एवंकारम्, इत्थंकारम्, कथंकारम्।

२ कर्म्मणि दृशिविदोः साकल्ये—साकल्य अर्थ समझा जाय तो कर्म्मपद के परे दृश् और विद् धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, हरिदर्शं ददाति-सर्वान् हरिजनान् दृष्ट्वा ददातीत्यर्थः, विप्रदर्शं जिघांसति, सर्वान् विप्रान् दृष्ट्वा हन्तुमिच्छतीत्यर्थः, हरिवेदम्, विप्रवेदम्।

३ यावति विन्दजीवोः—यावत् शब्द के परवर्ती जीव धातु के परे णमुल् होता है। यथा, यावज्जीवमधीते।

४ चर्म्मोदरयोः पूरेः—चर्म्मवाचक उदर शब्द के परे पूरि धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, उदरपूरं भुङ्क्ते, उदरं पूरयित्वा भुङ्क्ते इत्यर्थः।

५ निर्मूल समूलयोः कषः। समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः—क्रियाविशेषण वाचक समूल शब्द के परे कष् और हन् धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, समूलकाषं कषति। हन् के ह का घ और न् का त होता है। यथा, समूलघातं हन्ति kills totally. जीव शब्द के परे ग्रह् धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, जीवग्राहं गृह्णाति captures him alive.

६ हस्ते वर्त्तिग्रहोः—करणबोधक हस्तवाचक शब्द के परे ग्रह् धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, हस्तग्राहं गृह्णाति, हस्तेन गृह्णातीत्यर्थः। पाणिग्राहम्, करग्राहम्।

७ स्वेपुषः—करणबोधक स्ववाचक शब्द के परवर्ती ग्रह् धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, स्वपोषं पुष्णाति, स्वेन पुष्णातीत्यर्थः, धनपोषम्, अन्नपोषम्, मातृपोषम्; स्वधनेन, स्वमात्रा पुष्णातीत्यर्थः।

८ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः—कर्त्तृविशेषण ऊर्द्ध्व शब्द के परे शुष् धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, ऊर्द्ध्वशोषं शुष्यति तरुः, तरुरूर्द्ध्व एव तिष्ठन् शुष्यतीत्यर्थः।

६ उपमाने कर्मणि च—उपमानवाचक कर्तृपद और कर्मपद
परवर्ती धातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, विद्युत्प्रणाशं प्रनष्टः,
युदिव क्षणेनैव विनष्ट इत्यर्थः; शलभनाशं नश्यति, शलभ इव अविमृश्य-
ी पुरुषो नश्यतीत्यर्थः; पितृवेदं वेत्ति गुरुम्, गुरुं पितरमिव जानाती-
; पुत्रदर्शं पश्यति शिष्यम्, शिष्यं पुत्रमिव सस्नेहं पश्यतीत्यर्थः ।

क्त्वा (क्त्वाच्) ।

४७ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले—दो क्रियाओं का एक कर्त्ता
तो पूर्वकालिक क्रिया के उत्तर क्त्वा होता है और क्त्वा
त्वा रहता है । सेट् धातुओं में त्वा के पहले इट् लगता है ।
, ज्ञा-ज्ञात्वा Knowing, ध्यै-ध्यात्वा, स्ना-स्नात्वा, पा-पीत्वा,
-स्थित्वा, दा-दत्वा, धा-हित्वा, चि-चित्वा, जि-जित्वा, श्रि-
वा, क्री-क्रीत्वा, श्रु-श्रुत्वा, हु-हुत्वा, भू-भूत्वा, कृ-कृत्वा, धृ-
, स्मृ-स्मृत्वा, मुच्-मुक्त्वा, सिच्-सिक्त्वा, त्यज् त्यक्त्वा,
भुक्त्वा, सृज्-सृष्ट्वा, छिद्-छित्वा, भिद्-भित्वा, युध्-
ा, क्षिप्-क्षिप्त्वा, लभ्-लब्ध्वा, दृश् दृष्ट्वा, दह्-दग्ध्वा, याच्-
त्वा, गर्ज्-गर्जित्वा, पठ्-पठित्वा, क्रीड् क्रीडित्वा,
तित्वा, व्यथ्-व्यथित्वा, सेव्-सेवित्वा, भिक्ष्-भिक्षित्वा,
विद्ध्वा, यज्-इष्ट्वा, ग्रह्- गृहीत्वा, प्रच्छ्-पृष्ट्वा, वस्-उषि-
स्वप्-सुप्त्वा, गम्-गत्वा, नम्-नत्वा, मन्-मत्वा, हन्-हत्वा,
बुद्ध्वा, स्तम्भ्-स्तब्ध्वा ।

८ प्रत्यय के पहले इट् हो तो धातु के अन्त्य स्वर तथा
के लघु स्वर का गुण होता है । यथा, शी-शयित्वा,
वर्धयित्वा, कारि-कारयित्वा, स्थापि-स्थापयित्वा, धारि-
त्वा, वृत्-वर्त्तित्वा, नृत्-नर्त्तित्वा ।

N. B. गृहमृद कुषकुष क्लिशविदमुषः क्त्वा—गृह, मृद,

रुद्, विद् मुष्, और क्लिश् धातुओं में गुण नहीं होता। यथा, मृडित्वा, मृदित्वा, रुदित्वा विदित्वा, मुषित्वा।

२ तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य—मिल्, लिख्, स्तिम्, कुप्, क्षुध्, क्षुद्, द्युत्, रुच्, स्फुट्, कृश्, तृष्, और मृष् धातुओं में विकल्प से गुण होता है। यथा, मिल्-मिलित्वा, मेलित्वा; लिख्-लिखित्वा, लेखित्वा; स्तिम्-स्तिमित्वा, स्तेमित्वा; कुप्-कुपित्वा, कोपित्वा; क्षुध्-क्षुधित्वा, क्षोधित्वा; क्षुद्-क्षुदित्वा, क्षोदित्वा; द्युत्-द्युतित्वा, द्योतित्वा; रुच्-रुचित्वा, रोचित्वा; स्फुट्-स्फुटित्वा, स्फोटित्वा; कृश्-कृशित्वा, कर्शित्वा; तृष्-तृषित्वा, तर्षित्वा; मृष्-मृषित्वा, मर्षित्वा।

४९ नोपधात् थफान्ताद्वा। जान्तनशां विभाषा—क्त्वा प्रत्यय होने से जान्त, थान्त, और फान्त धातु के उपधा नकार का विकल्प से लोप होता है। यथा, भञ्ज्-भक्त्वा, भङ्क्त्वा; रञ्ज्-रक्त्वा, रङ्क्त्वा; ग्रन्थ्-ग्रन्थित्वा ग्रथित्वा, मन्थ्-मथित्वा, मन्थित्वा, गुम्फ्-गुम्फित्वा, गुफित्वा।

वञ्चिलुञ्च्यृतश्च—वञ्च्, लुञ्च्, में भी विकल्प से न का लोप होता है। यथा, वञ्च्-वचित्वा, वञ्चित्वा, लुञ्च्-लुचित्वा, लुञ्चित्वा।

N. B. क्त्वा प्रत्यय होने से पू और क्लिश् धातु के परे विकल्प से इट् होता है। यथा, पू-पवित्वा, पूत्वा; क्लिश्-क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा।

२ उदितो वा। [illegible]—धातुपाठ के समय में जो धातु उकार-संयुक्त हो उसके परे क्त्वा प्रत्यय होने से विकल्प से इट् होता है। यथा, शम्-शमित्वा, शान्त्वा; दम्-दमित्वा, दान्त्वा; भ्रम्-भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा; क्षम्-क्षमित्वा, क्षान्त्वा; दिव्-देवित्वा, द्यूत्वा; सिव्-सेवित्वा, स्यूत्वा; वृत्-वर्तित्वा, वृत्त्वा।

५० जहातेश्च क्त्वि—क्त्वा प्रत्यय होने से त्यागार्थ हा धातु का हि होता है। यथा, हित्वा।

५१ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा—निषेध अर्थ समझा जाय तो अलं और खलु शब्दों के योग में धातु के परे क्त्वा होता है। यथा, अलं गत्वा, अलं स्थित्वा, अलं दृष्ट्वा, अलं स्पृष्ट्वा, अलं श्रुत्वा, खलु उक्त्वा, खलु कृत्वा, खलु भुक्त्वा, खलु क्षिप्त्वा।

ल्यप्।

५२ समासेऽनञ् पूर्वे क्त्वो ल्यप्—नञ् भिन्न अव्यय (उपसर्ग) के साथ समास होने पर धातु के परे क्त्वा के बदले ल्यप् होता है और ल्यप् का य रहता है। यथा, आ-घ्रा-आघ्राय, आ-दा-आदाय। ऐसे ही विधाय, अपिधाय, प्रस्थाय, विहाय, व्याख्याय, विज्ञाय, आलिङ्ग्य, सम्-सन्त्यज्य, विभज्य, प्रणिपत्य, प्राप्य, प्रक्रम्य, आरभ्य, निशम्य, विश्रम्य, आसेव्य, संरक्ष्य, उद्धृत्य, अभ्यस्य, निश्वस्य, विहस्य, विगर्ह्य।

५३ ल्यप् प्रत्यय परे होने से धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा लघुस्वर का गुण नहीं होता। यथा, वि-जि विजित्य, सम्-श्रि-संश्रित्य, अधीत्य, प्रेत्य, आश्रित्य, संश्रित्य, विस्मित्य, आनीय, विनीय, संश्रुत्य, संस्तुत्य, उत्प्लुत्य, विधूय, सम्भूय, प्रभूय, आहृत्य, विधृत्य, आवृत्य, प्रहृत्य, संवृत्य, संस्मृत्य, प्रसृत्य, द्विधाकृत्य, नानाकृत्य, आलिख्य, उन्मुच्य, सम्मुच्य, नियुज्य, वियुज्य, आच्छिद्य, विभिद्य, निरुध्य, संक्षिप्य, प्रकुप्य, विलुप्य, विसृज्य, प्रसृज्य, प्रविश्य, आकृष्य, निर्दिश्य, विदिश्य, आरुह्य, सन्दिह्य, आदह्य, वि-सह्-विषह्य, विगाह्य, अवगाह्य।

५४ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्—ल्यप परे होने से हन्, मन्, तन्

इत्यादि धातुओं के न् का म् होता है। यथा, आ-हन्-आहत्य, आगम्य, निगम्य।

५५ वा ल्यपि—ल्यप् परे होने से यम्, रम्, नम् इत्यादि धातुओं के म् का विकल्प से त् होता है। यथा, सम्-यम्-संयत्य, संयम्य, विरत्य, विरम्य; प्रणत्य, प्रणम्य, आगत्य, आगम्य।

५६ ल्यप् परे होने से सञ्ज् इत्यादि धातुओं के उपधा-नकार का लोप होता है। यथा, आ-सञ्ज्-आसज्य, प्र-शंस्-प्रशस्य, सम्-दंश्-सन्दश्य, वि-ध्वंस्-विध्वस्य, प्र-स्रंस्-प्रस्रस्य, प्र-मन्थ्-प्रमथ्य।

५७ ल्यप् परे होने से शी का शय्, प्रच्छ् का पृच्छ् और ग्रह् का गृह् होता है। यथा, अधि-शी-अधिशय्य, आपृच्छ्य संगृह्य, विगृह्य, निगृह्य।

५८ क्षियः—ल्यप् परे रहने से ह्वे का हू और क्षि का क्षी होता है। यथा, आहूय, प्रक्षीय।

५९ ल्यप् परे होने से स्वप्, वस्, वप्, वच् वह् और वद् धातु के व का उ होता है; यथा, सम्-स्वप् संसुप्य, प्र-वच्-प्रोच्य, सम्-वप्-समुप्य, अधि-वस्-अध्युष्य, प्र-वह्-प्रोह्य, अनु-वद्-अनूद्य।

६० ल्यप् परे होने से धातु के दीर्घ ॠ का ईर् होता है। यथा, वि-कॄ-विकीर्य्य, उद्गीर्य्य, वितीर्य्य, विदीर्य्य, विशीर्य्य, विस्तीर्य्य।

N. B. ल्यप् परे होने से णिच् का लोप होता है। यथा, नि-मीलि-निमील्य, वि-चारि-विचार्य्य, सम्-प्र-धारि-सम्प्रधार्य्य, संस्थाप्य, प्रकाश्य, विनाश्य, आश्वास्य, उत्सार्य्य, अध्याप्य, समर्प्य, विदार्य्य, आलोच्य, सम्पीड्य निष्पीड्य, आच्छाद्य, आस्वाद्य, आराध्य।

२ ल्यपि लघुपूर्व्वात्—णिच् का पूर्ववर्त्ती स्वर यदि लघु हो तो ल्यप् परे रहने से णिच् का अय् होता है। यथा, वि-गणि-विगणय्य, वि-रचि-विरचय्य, प्र-नमि-प्रणमय्य, वि-रमि विरमय्य, सम् घटि संघटय्य, वि-रहि-विरहय्य ।

विभाषापः—ल्यप् परे होने से आप् धातु के णिच् का अय् होता है और पक्षान्तर में णिच् का लोप होता है। यथा, प्र आपि-प्रापय्य, प्राप्य; सम्-आपि-समापय्य, समाप्य ।

तुमुन्, णमुल्, क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय से बने हुए शब्द अव्यय होते हैं। ये असमापिका क्रिया हैं।

Exercise 37.

1. Translate into Hindi:—धर्म्मं श्रोतुमिहागच्छामि । वनं गन्तुमिच्छामि । सीतास्वयम्बरं द्रष्टुं सर्व्वेऽगच्छन् । वत्सान् स्मारं स्मारं गावः गृहं प्रत्यागच्छन्ति । गुरुं नत्वा पाठ मारभस्व । पुत्रस्य वचनं श्रुत्वा प्रसन्नो बभूव। गाढ़ान्धकारमय [redacted] तस्थौ । सर्व्वेषामपि वधं विधाय धर्म्मं विचार्य्य मत्यक्षं प्रेक्ष्य धनं नेष्यामः । त्वमेव विहाय वनमिदं निरुपद्रवं करिष्यामि । राजानं प्रणिपत्य तस्मै सर्व्वं निवेदयामास ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) क्या आप लड़के को [redacted] सकता है? इसे देख कर सब आनन्दित होते हैं। आप को देख कर मेरी सब इच्छा निवृत्त हो गयी। रामचन्द्र को वन से लौटाने के लिये भरत वन गये। राजा दरिद्रों को धन देने की इच्छा करता है। सीता को लेकर रावण लङ्का गया। वह भर पेट खाता है। नीच उच्च पद पाकर स्वामी को मारने की इच्छा करता है।

(b) I am not able to do it. He wants to go there. Having done this I shall go there. He totally killed his enemies. He goes to the forest to collect some flowers. Please give this to

the poor. I shall go there and bring him to you. Having remembered his parents he went home.

3 Correct.—ग्रामं प्रविश्य आगच्छति । स पठनु मिच्छति । स्वयं किञ्चित् धनं प्रदित्सु आगतोऽस्मि । दरिद्रेभ्यो धनं दत्त्वा कीर्तिं समभत । गुरुं प्रणम्य स्थित । शत्रुं विजित्य आगतः । धन मर्जितुं देशान्तरं गमिष्यामि ।

निष्ठा ।

६१ क्त-क्तवतू निष्ठा—भूतकाल में धातु के परे क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं और इनका यथाक्रम त और तवत् रहता है। इन दोनों प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं।

६२ अनिट् धातुओं में इट् नहीं लगता । यथा, ख्या-ख्यातः famous, ख्या-ख्यातवान्, ज्ञा-ज्ञातः known, ज्ञातवान्; ध्यै-ध्यातः, ध्यातवान्; या-यातः, यातवान्; स्ना-स्नातः, स्नातवान्; इ-इतः, इतवान्; चि-चितः, चितवान्; जि-जितः, जितवान्; स्मि-स्मितः, स्मितवान्; क्रीतः, क्रीतवान्; नीतः, नीतवान्; प्रीतः, प्रीतवान्; भीतः, भीतवान्; द्रुतः, द्रुतवान्; धूतः, धूतवान्; श्रुतः, श्रुतवान्; स्तु-स्तुतः, स्तुतवान्; स्रुतः, स्रुतवान्; हुतः, हुतवान्; कृतः, कृतवान्; हृतः, हृतवान्; धृतः, धृतवान्; भृतः, भृतवान्; मृतः, मृतवान्; सृतः, सृतवान्; स्तृतः, स्तृतवान्; स्मृतः, स्मृतवान्; ह्वृतः, ह्वृतवान्।

६३ तिङन्त में जो कार्य्य होते हैं प्रायः वे सब कार्य्य निष्ठा, क्त्वा और क्तिन् प्रत्यय में भी होते हैं। यथा, शक्-शक्तः, शक्तवान्; मुच्-मुक्तः, मुक्तवान्, रिच्-रिक्तः, रिक्तवान्; सिच्-सिक्तः, सिक्तवान्; त्यज्-त्यक्तः, त्यक्तवान्; भज्-भक्तः, भक्तवान्; भुज्-भुक्तः, भुक्तवान्; युज्-युक्तः, युक्तवान्; सृज्-

सृष्टः, सृष्टवान्; क्रुध्-क्रुद्धः, क्रुद्धवान्; बुध्-बुद्धः, बुद्धवान्; युध्-युद्धः, युद्धवान्; राध्-राद्धः, राद्धवान्; रुध्-रुद्धः, रुद्धवान्; शुध्-शुद्धः, शुद्धवान्; सिध्-सिद्धः, सिद्धवान्; आप्-आप्तः, आप्तवान्; क्षिप्-क्षिप्तः, क्षिप्तवान्; तप्-तप्तः, तप्तवान्; तृप्-तृप्तः, तृप्तवान्; लिप्-लिप्तः लिप्तवान्; लुप्-लुप्तः, लुप्तवान्; शप्-शप्तः, शप्तवान्; रभ्-रब्धः, रब्धवान्; लभ्-लब्धः, लब्धवान्; दिश्-दिष्टः, दिष्टवान्; दृश्-दृष्टः, दृष्टवान्; विश्-विष्टः, विष्टवान्; स्पृश्-स्पृष्टः, स्पृष्टवान्; कृष्-कृष्टः, कृष्टवान्; तुष्-तुष्टः, तुष्टवान्; दुष्-दुष्टः, दुष्टवान्; पिष्-पिष्टः, पिष्टवान्; पुष्-पुष्टः, पुष्टवान्, मृष्-मृष्टः, मृष्टवान्; शिष्-शिष्टः, शिष्टवान्; श्लिष्-श्लिष्टः, श्लिष्टवान्; दह्-दग्धः, दग्धवान्; दिह्-दिग्धः, दिग्धवान्, मह्-मग्धः, मग्ध-वान्; रुह्-रूढः, रूढवान्; लिह्-लीढः, लीढवान्।

६४ निष्ठा प्रत्यय परे हो तो सेट् धातुओं के परे इट् होता है। यथा, लिख्-लिखितः, लिखितवान्; लिङ्ग्-लिङ्गितः, लिङ्गित-वान्; लङ्घ्-लङ्घितः, लङ्घितवान्; श्लाघ्-श्लाघितः, श्लाघितवान्; अर्घ्-अर्घितः, अर्घितवान्; चर्च्-चर्चितः, चर्चितवान्; याच्-याचितः, याचितवान्; वञ्च्-वञ्चितः, वञ्चितवान्; वाञ्छ्-वाञ्छितः, वाञ्छितवान्; गर्ज्-गर्जितः, गर्जितवान्; तर्ज्-तर्जितः, तर्जितवान्; राज्-राजितः, राजितवान्; उज्झ्-उज्झितः, उज्झितवान्; घट्-घटितः, घटितवान्; घट्ट्-घट्टितः, घट्टितवान्; चेष्ट्-चेष्टितः, चेष्टितवान्; त्रुट्-त्रुटितः, त्रुटितवान्; वेष्ट्-वेष्टितः, वेष्टितवान्; स्फुट्-स्फुटितः, स्फुटितवान्; कुण्ठ्-कुण्ठितः, कुण्ठितवान्; पठ्-पठितः, पठितवान्; लुण्ठ्-लुण्ठितः, लुण्ठित-वान्; क्रीड्-क्रीडितः, क्रीडितवान्; पिण्ड्-पिण्डितः, पिण्डित-वान्; मुण्ड्-मुण्डितः, मुण्डितवान्; लोड्-लोडितः, लोडितवान्;

घूर्ण्-घूर्णितः, घूर्णितवान्; पण्-पणितः, पणितवान्; पत्-पतितः, पतितवान्; प्रथ्-प्रथितः, प्रथितवान्; स्यम्-स्यमितः, स्यमित-वान्; कन्द्-कन्दितः, कन्दितवान्; मर्द्-मर्दितः, मर्दितवान्; मिन्द्-मिन्दितः, मिन्दितवान्; नन्द्-नन्दितः, नन्दितवान्; मुद्-मुदितः, मुदितवान्; स्यन्द्-स्यन्दितः, स्यन्दितवान्; विद्-विदितः, विदितवान्; बाध्-बाधितः, बाधितवान्; स्पर्ध्-स्पर्धितः, स्प-र्धितवान्; कुप्-कुपितः, कुपितवान्; कम्प्-कम्पितः, कम्पित-वान्; जल्प्-जल्पितः, जल्पितवान्; गुम्फ्-गुम्फितः, गुम्फित-वान्; चुम्ब्-चुम्बितः, चुम्बितवान्; लम्ब्-लम्बितः, लम्बितवान्; क्षुभ्-क्षुभितः, क्षुभितवान्; जृम्भ्-जृम्भितः, जृम्भितवान्; स्तिम्-स्तिमितः, स्तिमितवान्; मथ्-मथितः, मथितवान्; क्षर्-क्षरितः, क्षरितवान्; चर्-चरितः, चरितवान्; स्वर्-स्व-रितः, स्वरितवान्; स्फुर्-स्फुरितः, स्फुरितवान्; ज्वल्-ज्व-लितः, ज्वलितवान्; दल्-दलितः, दलितवान्; मिल्-मिलितः, मिलितवान्; मील्-मीलितः, मीलितवान्; वेल्ल्-वेल्लितः, वेल्लि-तवान्; शल्-शलितः, शलितवान्; शील्-शीलितः, शीलितवान्; स्खल्-स्खलितः, स्खलितवान्; खर्व्-खर्वितः, खर्वितवान्; गर्व्-गर्वितः, गर्वितवान्; जीव्-जीवितः, जीवितवान्; धाव्-धावितः, धावितवान्; सेव्-सेवितः, सेवितवान्; अश्-अशितः, अशितवान्; काश्-काशितः, काशितवान्; ईक्ष्-ईक्षि-तः, ईक्षितवान्; कांक्ष्-कांक्षितः, कांक्षितवान्; तृष्-तृषितः, तृषितवान्; भिक्ष्-भिक्षितः, भिक्षितवान्; रक्ष्-रक्षितः, रक्षि-तवान्; लष्-लषितः, लषितवान्; शिक्ष्-शिक्षितः, शिक्षितवान्; भर्त्स्-भर्त्सितः, भर्त्सितवान्; रस्-रसितः, रसितवान्; लस्-लसितः, लसितवान्; श्वस्-श्वसितः, श्वसितवान्; शंस्-शंसितः, शंसितवान्; हस्-हसितः, हसितवान्; हिंस्-हिंसितः,

हिंसितवान्; ईह्-ईहितः, ईहितवान्; ऊह्-ऊहितः, ऊहित-वान्; गर्ह्-गर्हितः, गर्हितवान्; रह्-रहितः, रहितवान्।

९५ निष्ठा प्रत्यय के प्रयोग में इट् प्रत्यय आवे तो णिच् का लोप होता है। यथा, कारि-कारितः caused to be made, कारितवान्; क्षालि-क्षालितः, क्षालितवान्; पालि-पालितः, पालितवान्; अर्पि-अर्पितः, अर्पितवान्; स्थापि-स्थापितः, स्थापितवान्; याचि-याचितः, याचितवान्; रोपि-रोपितः, रोपितवान्; जनि-जनितः, जनितवान्।

९६ निष्ठा शीङ् स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः—निष्ठा प्रत्यय परे होने से शी का शय् होता है। यथा, शयितः शयितवान्।

९७ निष्ठा प्रत्यय परे होने से श्रि, उकारान्त, ऊकारान्त, और वृ धातु के उत्तर इट् नहीं होता। यथा, श्रि-श्रितः, श्रितवान्; यु-युतः, युतवान्; द्रु-द्रुतः, द्रुतवान्; नु-नुतः, नुतवान्; स्नु-स्नुतः, स्नुतवान्; धू-धूतः, धूतवान्; पू-पूतः, पूतवान्; भू-भूतः, भूतवान्; सू-सूतः, सूतवान्; वृ-वृतः, वृतवान्।

९८ गणपाठ के समय में जो धातु ईकार-संयुक्त हों, निष्ठा प्रत्यय परे रहने से उनके उत्तर इट् नहीं होता। यथा, दीप्-दीप्तः, दीप्तवान्; त्रस्-त्रस्तः, त्रस्तवान्; पृच्-पृक्तः, पृक्तवान्।

९९ दूसरे प्रकरणों में जहाँ धातु के परे विकल्प से इट् होता है वहाँ निष्ठा प्रत्यय परे रहने से इट नहीं होता। यथा, हृष्-हृष्टः, हृष्टवान्; गुप्-गुप्तः, गुप्तवान्; दृप्-दृप्तः, दृप्तवान्; लुभ्-लुब्धः, लुब्धवान्; अस्-अस्तः, अस्तवान्; ग्रस्-ग्रस्तः, ग्रस्त-वान्; घृष्-घृष्टः, घृष्टवान्; धृष्-धृष्टः, धृष्टवान्; मृज्-मृष्टः, मृष्टवान्; गाह्-गाढः, गाढवान्; गुह्-गूढः, गूढवान्; स्निह्-

स्निग्धः, स्निग्धवान्; मुह्-मुग्धः, मूढः, मुग्धवान्, मूढवान्; सह्-सोढः, सोढवान्।

७० निष्ठा और क्तिन् प्रत्यय परे रहने से दिव्, ष्ठिव् और सिव् धातुओं के व् का ऊ होता है। यथा, दिव्-द्यूतः, द्यूतवान्; ष्ठिव्-ष्ठ्यूतः, ष्ठ्यूतवान्; सिव्-स्यूतः, स्यूतवान्।

७१ निष्ठा और क्तिन् प्रत्यय परे होने से क्रम् इत्यादि धातुओं के अ का आ होता है। यथा, क्रम्-क्रान्तः, क्रान्तवान्; क्लम्-क्लान्तः, क्लान्तवान्; क्षम्-क्षान्तः, क्षान्तवान्; वम्-वान्तः, वान्तवान्; तम्-तान्तः, तान्तवान्; दम्-दान्तः, दान्तवान्; शम्-शान्तः, शान्तवान्; भ्रम्-भ्रान्तः, भ्रान्तवान्; श्रम्-श्रान्तः, श्रान्तवान्।

७२ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति—
निष्ठा प्रत्यय परे रहने से गम्, नम्, यम्, रम्, क्षण्, तन्, मन् और हन् के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, गम्-गतः, गतवान्; नतः, नतवान्; यतः, यतवान्; रतः, रतवान्; क्षतः, क्षतवान्; ततः, ततवान्; मतः, मतवान्; हतः, हतवान्।

७३ निष्ठा प्रत्यय परे हो तो खन्, जन् और सन् धातु का यथाक्रम खा, जा और सा होता है। यथा, खन्-खातः, खातवान्; जन्-जातः, जातवान्; सन्-सातः, सातवान्।

७४ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति—
निष्ठा प्रत्यय परे रहने से दन्श् इत्यादि धातुओं [illegible] उपधा-मकार का लोप होता है। यथा, दन्श्-दष्टः, दष्टवान्; रञ्ज्-रक्तः, रक्तवान्; सञ्ज्-सक्तः, सक्तवान्; बन्ध्-बद्धः, बद्धवान्; स्तम्भ्-स्तब्धः, स्तब्धवान्; भ्रंश्-भ्रष्टः, भ्रष्टवान्; ध्वंस्-ध्वस्तः, ध्वस्तवान्; स्रंस्-स्रस्तः, स्रस्तवान्; शंस्-शस्तः, शस्तवान्; ग्रन्थ्-ग्रथितः, ग्रथितवान्; मन्थ्-मथितः, मथितवान्।

N. B. क्त्वा के स्थान में इट् होने पर ७०, ७१, ७२, ७४ का कार्य्य नहीं होता है।

७५ रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्व्वस्य च दः—निष्ठा प्रत्यय परे होने से दकारान्त धातु के द् और उसके परस्थित निष्ठा के त का न होता है। यथा, क्लिद्-क्लिन्नः, क्लिन्नवान्; क्षुद्-क्षुन्नः, क्षुन्नवान्; खिद्-खिन्नः, खिन्नवान्; छिद् छिन्नः, छिन्नवान्; भिद्-भिन्नः, भिन्नवान्; पद्-पन्नः, पन्नवान्, सद्-सन्नः, सन्नवान्। मद् धातु में नहीं होता। यथा, मत्तः, मत्तवान्।

७६ ओदितश्च। स्वादिभ्यः—गणपाठ के समय में जो धातु ओकार-संयुक्त हों उनके परे निष्ठा के त का न होता है। यथा, दस्-दस्नः, दस्नवान्; विज्-विग्नः, विग्नवान्; भुज्-भुग्नः, भुग्नवान्; भज्-भग्नः, भग्नवान्; मस्ज् के स् का लोप होता है-मग्नः, मग्नवान्; दू-दूनः, दूनवान्; सू-सूनः, सूनवान्; लू-लूनः, लूनवान्; दी-दीनः, दीनवान्; डी-डीनः, डीनवान्; क्षि धातु के इ का दीर्घ होता है, क्षीणः, क्षीणवान्।

७७ रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्व्वस्य च दः—र के परे निष्ठा के त का न होता है। यथा, गूर्-गूर्णः, गूर्णवान्, पूर्-पूर्णः, पूर्णवान्, घूर्-घूर्णः, घूर्णवान्।

७८ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः—ग्ला, म्ला, द्रा, स्त्या धातु के परे निष्ठा के त का न होता है। यथा, ग्ला-ग्लानः, ग्लानवान्। म्ला-म्लानः, म्लानवान्; द्रा-द्राणः, द्राणवान्; स्त्या-स्त्यानः, स्त्यानवान्।

७९ निष्ठा प्रत्यय परे हो तो ऋकारान्त धातु के ऋ का ईर् होता है। यथा, कॄ-कीर्णः, कीर्णवान्; गॄ-गीर्णः-गीर्णवान्;

वद्, वप्, वह् और स्वप् धातुओं के व का उ होता है। यथा, उपितः, उपितवान्; उक्तः, उक्तवान्; उदितः, उदितवान्; उप्तः, उप्तवान्; ऊढः, ऊढवान्; सुप्तः, सुप्तवान्।

९१ निष्ठा, क्त क्तिन् प्रत्यय परे हो तो गा (गै), पा और हा धातुओं के आ का ई होता है। यथा, गीतः, गीतवान्; पीतः, पीतवान्; हीनः, हीनवान्।

९२ शुषः कः। पचो वः। क्षायो मः—निष्ठा सहित (क्षै), पच् और शुष् धातुओं का यथाक्रम क्षाम, पक्व और शुष्क होता है। यथा, क्षामः, क्षामवान्; पक्वः, पक्ववान्; शुष्कः, शुष्कवान्।

N. B. कर्तृवाच्य में धातु के परे क्तवतु प्रत्यय होता है और क्तवतु प्रत्यय से बना हुआ पद कर्त्ता का विशेषण होता है, इसलिये कर्त्ता के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होता है। यथा, स पुस्तकं पठितवान्, तौ पुस्तकं पठितवन्तौ, ते पुस्तकं पठितवन्तः, सा चन्द्रं दृष्टवती, ते चन्द्रं दृष्टवत्यौ, ताश्चन्द्रं दृष्टवत्यः। वृक्षात् फलं पतितवत्, वृक्षात् फले पतितवती, वृक्षात् फलानि पतितवन्ति।

२ कर्म्मवाच्य में सकर्मक धातुओं के परे क्त प्रत्यय होता है और क्त प्रत्यय से बने हुए पद कर्म्म के विशेषण होते हैं तथा कर्म्म के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होते हैं। यथा, कुम्भकारेण घटः कृतः, घटौ कृतौ, घटाः कृताः। मित्रेण पत्री लिखिता, पत्र्यौ लिखिते, पत्र्यः लिखिताः। मालिना पुष्पं चितम्, पुष्पे चिते, पुष्पाणि चितानि।

(क) गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च—अकर्मक, गत्यर्थक तथा शी, स्था, आस्, वस्, जन् और रुह् में उपसर्ग योग से सकर्म्मक होने पर कर्तृवाच्य में भी क्त होता है और इनसे बने शब्द कर्त्ता के विशेषण होते हैं। यथा, स आसितः, मा भैना, अर्थं शुद्धम्, शिशुः शयितः, वृद्धो मृतः। स ग्रामं गतः, स गृहं प्रविष्टः,

स विद्यालयं प्रयातः । स गृहमधिशयितः, स शय्यामधिष्ठितः, मुनिराश्रमम् घ्यासितः, स ग्राममनुषितः । पिता पुत्रमाश्लिष्टः, वानरो वृक्षमारूढः ।

३ यदि क्तवतु और क्त प्रत्यय से बने शब्द समापिका क्रिया की भाँति प्रयुक्त न होकर विशेषणरूप में प्रयुक्त हों तो विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होते हैं । यथा, अधीतवान् छात्रः, अधीतवन्तं छात्रम्, अधीतवता छात्रेण, अधीतवते छात्राय इत्यादि । भीतः शिशुः, भीतं शिशुम्, भीतेन शिशुना इत्यादि ।

४ सब धातुओं के उत्तर भाववाच्य में क्त होता है । भाववाच्य में क्त प्रत्यय से बने शब्द समापिका क्रिया की भाँति व्यवहृत हों तो सदा क्लीबलिङ्ग की प्रथमा का एकवचन होता है । यथा, तेन कृतम्, ताभ्यां कृतम्, तैः कृतम्, त्वया कृतम्, युवाभ्यां कृतम्, युष्माभिः कृतम्, मया कृतम्, आवाभ्यां कृतम्, अस्माभिः कृतम्, शिशुना रुदितम्, तेन भुक्तम्, मया ज्ञातम्, त्वया दृष्टम्, कन्यया हसितम् । जब विशेष्य पद की भाँति व्यवहृत होते हैं तब अकारान्त क्लीबलिङ्ग के समान होते हैं । यथा, गतम्, गते, गतानि; रुदितम्, रुदिते, रुदितानि ।

५ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च—मति, बुद्धि और पूजा अर्थ वाले धातु के उत्तर वर्त्तमान काल में क्त होता है । यथा, राज्ञां मतः, इष्टः, बुद्धः, पूजितः ।

Exercise—38

1. Translate into Hindi—एवं कथयित्वा स पुस्तकं गृहीतवान् । अर्जुनः सुभद्रां प्रस्तौढवान् । मृगमादाय गच्छता तेनैक शूकरो दृष्टः । एवं विवदमानौ द्वावपि राजकुलं गतवन्तौ । चौरेण तस्य धनमपहृतम् । कारणमभिहितं भवता । तौ मुनिकुमारौ सभार्यां गतवन्तौ । इत्यवधार्य्य तस्योपरि कुठारं क्षिप्तवान् । त्वत् धर्मं श्रोतुमिहागतोऽस्मि । रामस्य तीक्ष्णेन बाणेन रावणो हतः । वानरेण हतो राजा निशाचरेण रक्षितः ।

2. Translate into Sanskrit—(a) चाणिक्यसे ऐसा कह कर

घर चला गया। भालू देखकर वह वृक्ष पर चढ़ गया। वे अन्नका
लेकर घर चले गये। मैंने तुम्हारे लड़के को एक पत्र लिखा था। वीर ने
शत्रु पर बाण छोड़ा। व्याध ने खेत में जाल फैला दिया। (२) मैंने या
पुस्तक खरीदी। राजा की आज्ञा से चोर फाँसी पर लटका दिये गये
पिता की आज्ञा शिर पर धारण कर रामचन्द्र वन गये।

(b) The king heard the cry of a woman. He sent him a letter. I saw two tigers in the forest. You have been many times tested by me. He asked him many questions. Saying so he came back his home. Brahma has created us and the earth. I have composed this book in two years. I ordered him to go there.

3. Correct:—वयमत्र आगतः। सर्वे तत्र गतः। अहं पुस्तकं क्रीत
न्तः। स धनं दत्तः। तौ व्याघ्रं दृष्टवान्। बालिका पत्र लिखितवान्।
वृक्षात् फलानि पतितवन्तः।

क्तिन् (ति)

६३. स्त्रियां क्तिन्—भाववाच्य में धातु से परे 'क्तिन्' होता है। क्तिन् का ति रहता है और इससे बने शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, ख्या-ख्यातिः, गै-गीतिः, मा-मितिः, स्था-स्थितिः, चि-चितिः, नी-नीतिः। ऐसे ही प्रीतिः, भीतिः, च्युतिः, द्रुतिः, नुतिः, श्रुतिः, स्तुतिः, स्रुतिः, हूतिः, धूतिः, भूतिः, मृतिः death, पूतिः, वृतिः, स्मृतिः, शक्तिः, मुक्तिः, उक्तिः, भक्तिः, मुक्तिः, यज्-इष्टिः, मुक्तिः, सृष्टिः, हतिः, वृत्तिः, छतिः, पत्तिः foot-soldier, भित्तिः, वित्तिः discussion, बुद्धिः, वृद्धिः, पुद्धिः, शुद्धिः, सिद्धिः, क्षतिः, तन-ततिः line, मतिः,

भ्रान्तिः, गुप्तिः, तृप्तिः, दीप्तिः, सुप्तिः, लब्धिः, क्रम्-क्रान्तिः, क्लान्तिः, क्षान्तिः forbearance गतिः, नतिः, भ्रान्तिः, रतिः, शान्तिः, श्रम्-श्रान्तिः, दृष्टिः, क्लिष्टिः, तुष्टिः, पुष्टिः, घृष्टिः, दृष्टिः।

N. B. ग्ला, म्ला, हा, इत्यादि धातुओं के परे ति का नि होता है। यथा, ग्लानिः, म्लानिः weariness, हानिः।

णक (ण्वुल्)

१४ ण्वुल्तृचौ—धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में 'णक' होता है और णक का अक रहता है। यथा, नी-नायकः, धु-धावकः, पू-पावकः कृ-कारकः,। ऐसे ही तारकः, स्मारकः, नाशकः, पाचकः, दाहकः, सिच्-सेचकः, सेवकः, मोचकः, क्षेपकः, रोधकः, शोषकः, दा-दायकः, गायकः, जनि-जनकः, पालि पालकः, योजि-योजकः।

(क) निमित्त अर्थ समझा जाय तो भविष्यत् काल में धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णक होता है। यथा, भुज्-भोजको व्रजति (भोजन करने के निमित्त जाता है), पच् पाचको व्रजति (पाक करने के निमित्त जाता है)।

(ख) ष्क (ष्वुन्)। शिल्पिनि ष्वुन्। नृतिखनिरञ्जिभ्य एव—शिल्पी समझा जाय तो नृत्, खन् और रञ्ज् धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में षक होता है और षक का अक रहता है। यथा, नर्त्तकः, खनकः, रजकः, (रञ्जेर्नलोपो वाच्यः—रञ्ज् के न् का लोप होता है)।

(ग) थकन् और थक (शिल्पिनि) गस्थकन्। ण्युट् च—शिल्पी समझा जाय तो गै धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में ण्युट् और थक होता है और इनका अन और अक रहता है। यथा, गायन्, गाथकः।

तृन्।

५० तृन्तृचौ—धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में तृन् होता है और तृन् का तृ रहता है। यथा, दा-दातृ-दाता, पा-पाता, मा-माता, जि-जेता, नी-नेता, श्रोता, कर्त्ता, हर्त्ता, क्षेता, भर्त्ता, वेत्ता योद्धा, रोद्धा, गन्ता, हन्ता, ।

शील, धर्म और सम्यक्‌करण अर्थ में भी तृन् होता है।

(क) लुट् विभक्ति के अनुसार तृन् परे होने से भी धातु के उत्तर इट् होता है। यथा, भू-भविता, वद्-वदिता, फलिता, चलिता, देविता, नोदिता, नर्तिता, शोचिता, सेविता, कारि-कारयिता, स्थापि-स्थापयिता, जनि-जनयिता, सू सविता, सोता, स्तु-स्तविता, स्तोता; पच्-पचिता, पक्ता; शुच्-शोचिता, शोक्ता, रुद्-रोदिता, रोद्धा।

अण्।

५१—कर्मण्यण्—कर्मवाचक पद के परवर्त्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अण् होता है और अण् का अ रहता है। यथा, कुम्भं करोति इति कुम्भकारः, तन्तून् वयति तन्तुवायः weaver, तन्त्रं वयति तन्त्रवायः weaver, शास्त्राणि करोति शास्त्रकारः, सूत्रकारः, चाटुकारः flatterer, सूत्रधारः, माला-कारः, मायाकारः, कर्मकारः, वारिवाहः cloud.

अट्।

५२ दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिबह्वनान्दीकिलिपिलिविबलि-भक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुष्षु—दिवा इत्यादि कर्म-वाचक पद के परवर्त्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है और अट् का अ रहता है। यथा, दिवाकरः,

विभाकरः, निशाकरः, प्रभाकरः, भास्करः, अन्तकरः, किङ्करः, लिपिकरः, बलिकरः, भक्तिकरः, अहस्करः the sun, चित्रकरः, कर्मकरः (कर्मणि भृतौ-भृत्य अर्थ समझा जाय तो अण् होता है)।

(क) कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु—हेतु और अनुकूल अर्थ समझा जाय तो कर्मवाचक पद के परवर्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है। यथा, हेतु अर्थ में-शोककरः बन्धुनाशः (शोक का हेतु बन्धुनाश), अर्थकरः यशस्करः विद्यालाभः (अर्थ और यश का हेतु विद्यालाभ), क्लेशकरः, क्षोभकरः, रोगकरः। अनुकूल अर्थ में-बलकरं पुष्टिकरं अन्नम् (बल और पुष्टि के अनुकूल अन्न), हितकरः, प्रीतिकरः, मङ्गलकरः।

(ख) पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः—पुरस्, अग्र, अग्रे, अग्रतः, इन कई शब्दों के परवर्ती सृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है। यथा, पुरःसरः, अग्रसरः, अग्रेसरः, अग्रतः सरः।

(ग) चरेः—अधिकरणवाचक पद के परवर्ती चर् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है। यथा, जले चरति जलचरः, वारिणि चरति वारिचरः, स्थले चरति स्थलचरः, भुवि चरति भूचरः, वने चरति वनचरः, निशायां चरति निशाचरः, पार्श्वे चरति पार्श्वचरः, खे चरति खेचरः (कभी कभी अधिकरणवाचक पद सविभक्तिक होता है), रात्रौ चरति रात्रिचरः रात्रिञ्चरः (रात्रि शब्द विकल्प से द्वितीया-एकवचनान्त होता है), वनेचरः।

(घ) कर्मवाचक पद के परवर्ती गै धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है। यथा, साम गायति सामगः।

(च) कर्मवाचक पद के परवर्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है और हन् का घ होता है। यथा,

शत्रुं हन्ति शत्रुघ्नः, पापं हन्ति पापघ्नः, पित्तं हन्ति पित्तघ्नः, वातं हन्ति वातघ्नः, मित्रं हन्ति मित्रघ्नः, गां हन्ति गोघ्नः, पशून् हन्ति पशुघ्नः, त्रिदोषं हन्ति त्रिदोषघ्नः।

अ (अच्)

९८ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः—पच् इत्यादि धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, पचः cook, चलः trembling, सर्पः, द्विष्-द्वेषः, चरः, धृ-धरः mountain.

(क) हरतेरनुद्यमनेऽच्—कर्मवाचक पद के परवर्ती हृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, अंशं हरति अंशहरः, भागं हरति भागहरः, रोगहरः, शोकहरः, दुःखहरः, क्लेशहरः। भारवहन अर्थ में नहीं होता; यथा, भारं हरति भारहारः (अण् लगा है)।

(ख) अर्हः—कर्मवाचक पद के परवर्ती अर्ह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, पूजां अर्हति पूजार्हः, तत् अर्हति तदर्हः, सत्कारं अर्हति सत्कारार्हः, निन्दां अर्हति निन्दार्हः।

(ग) अधिकरणे शेते—अधिकरण वाचक पद के परवर्ती शी धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, शिलायां शेते शिलाशयः, भूमौ शेते भूमिशयः, शय्यायां शेते शय्याशयः।

पार्श्व इत्यादि शब्दों के परवर्ती शी धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, पार्श्वेन शेते पार्श्वशयः, पृष्ठेन शेते पृष्ठशयः, उदरेण शेते उदरशयः, उत्तानः शेते उत्तानशयः, अवमूर्द्धा शेते अवमूर्द्धशयः।

क (अ)

(घ) आतोऽनुपसर्गे कः—कर्मवाचक पद के परवर्ती आकारान्त धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ (क) होता है और धातु के आ का लोप होता है। यथा, अन्नं ददाति अन्नदः, भूमिदः,

करदः, धनदः, जलदः, वारिदः, तनुं त्रायते तनुत्रम् (अपादान के उत्तर त्रा धातु के परे भी अ होता है। यथा, आतपात् त्रायते आतपत्रम्), धर्मं जानाति धर्म्मज्ञः, रसज्ञः, सर्व्वज्ञः, नॄन् पाति नृपः, भुवं पाति भूपः, भूमिपः, मधुपः।

आतश्चोपसर्गे—उपसर्ग के परवर्ती आकारान्त धातु के उत्तर भी क होता है। यथा, विज्ञः, अभिज्ञः, प्रदः, प्रतिपः, व्याघ्रः, निम्नः।

(च) सुपि स्थः—सुबन्त पद या उपसर्ग के परवर्त्ती स्था धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु के आ का लोप होता है। यथा, गृहे तिष्ठति गृहस्थः, मध्यस्थः, धनस्थः, महतिस्थः, सुस्थः, संस्थः, दुस्थः, उस्थः Standing, निष्ठः skilled in.

(छ) सप्तम्यां जनेर्डः। उपसर्गे च संज्ञायाम्—उपसर्ग या सुबन्त पद के परवर्त्ती जन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु के अकार और नकार का लोप होता है। यथा, सरसि जायते सरोजम्, सरसिजम्, (कभी कभी पूर्व्व पद विभक्त्यन्त होता है); मनसि जायते मनोजः, मनसिजः, अप्सु जायते अब्जम्, अङ्गात् जायते अङ्गजः, जले जायते जलजम्, पङ्कात् जायते पङ्कजम्, स्वेदजः, अण्डजः, जरायुजः, सह जायते सहजः, अनु जायते अनुजः, अग्रे जायते अग्रजः, द्वि जायते द्विजः, आत्मजः, प्रजायन्ते प्रजाः।

(ज) अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्व्वानन्तेषु डः—सुबन्त पद के परवर्त्ती गम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु के अकार तथा मकार का लोप होता है। यथा, अन्तं गच्छति अन्तगः, अध्वानं गच्छति अध्वगः, दूरगः, पारगः, सर्वं गच्छति सर्व्वगः, सर्व्वत्रगः, गृहं गच्छति गृहगः, ग्रामगः, तल्पं गच्छति, तल्पगः, खे गच्छति खगः।

[illegible] — [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] और विद्वत् शब्द के परवर्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में ड होता है और निम्नलिखित पद सिद्ध होते हैं। यथा, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]; अथवा [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], विद्वांसः [illegible] [illegible], [illegible], [illegible]।

(ख) अपे क्लेशतमसोः — क्लेश, शोक और तमस् शब्द के परवर्ती अपपूर्वक हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में ड होता है और धातु के नकार तथा मकार का लोप होता है। यथा, क्लेशम् अपहन्ति क्लेशापहः, शोकापहः, तमोपहः।

अङ् (क)

९९ इगुपधज्ञाप्रीकिरः—जिन धातुओं की उपधा में इ, उ, ऋ हो उनके उत्तर कर्तृवाच्य में अङ् होता है और अङ् का अ रहता है। यथा, लिख्-लिखः, बुध्-बुधः, तुद्-तुदः, नृत्-नृतः।

(क) प्री, कृ और गृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अङ् होता है। ई के स्थान में इय् और ऋ के स्थान में इर् होता है। यथा, प्री-प्रियः, कृ-किरः, गृ-गिरः।

(ख) दुहः कप् घश्च—सुबन्त पद के परवर्ती दुह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अङ् होता है। दुह् के ह् का घ् होता है। यथा, कामं दोग्धि कामदुघा धेनुः।

णिन्

१०० नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः—धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णिन् होता है और णिन् का इन् रहता है। यथा, मन्त्र-मन्त्रिन्-मन्त्री, वद्-वादी, प्रतिवादी, परिवादी, वस्-वासी, प्रवासी, अधिवासी, राध्-अपराधी, चर्-व्यभिचारी, सञ्चारी; स्था-स्थायी, सृ-संसारी, द्विष्-द्वेषी, विद्वेषी, रुध्-रोधी,

विरोधी, प्रतिरोधी; द्रुह्-द्रोही, विद्रोही; दिव्-परिदेवी, कृ-अधिकारी, मथ्-प्रमाथी, लप्-अभिलापी।

(क) सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये। व्रते। बहुलमाभीक्ष्ण्ये—उपसर्ग और सुबन्त पद के परवर्त्ती धातु के उत्तर व्रत, शील और पौनःपुन्य अर्थ में णिन् होता है। यथा, व्रत अर्थ में—स्थण्डिले शेते स्थण्डिलशायी, श्राद्धभोजी। शील अर्थ में—उष्णं भुङ्क्ते उष्णभोजी, अनु याति अनुयायी, अनु जीवति अनुजीवी, सोमं पिबति सोमपायी, अग्रे याति अग्रयायी, साधु करोति साधुकारी, प्रमादी, सत्यवादी, प्रियवादी, विकत्थी, मनोहारी, विकारी, हृदयग्राही, कणग्राही, पण्डितमानी, सुभगमानी, अनुगामी, सहगामी। पौनःपुन्य अर्थ में—पुनः पुनः मिथ्या वदति मिथ्यावादी, पापकारी, कलहकारी, मित्रद्रोही।

(ख) करणे यजः—करणवाचक पद के परवर्त्ती यज् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य के भूतकाल में णिन् होता है। यथा, सोमेन इष्टवान् सोमयाजी, अग्निष्टोमेन इष्टवान् अग्निष्टोमयाजी।

(ग) कर्मणि हनः—कर्मवाचक पद के परवर्त्ती हन् धातु के भूतकाल में कर्तृवाच्य में णिन् होता है और हन् धातु के ह का घ और न का [illegible] होता है। यथा, पितरं जघान पितृघाती, पितृव्यं जघान पितृव्यघाती, पुत्रं जघान पुत्रघाती, मित्रं जघान मित्रघाती।

(घ) भविष्यत् काल समझा जाय तो भू, या, स्था, गम्, युध् और रुध् धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में णिन् होता है। यथा, भू-भावी what will be, यायी, स्थायी, प्रस्थायी, गामी, प्रतिरोधी, युध्-प्रतियोधी, प्रतिरोधी।

(ङ) घिनुण्—युज्, त्यज्, भज्, रञ्ज्, वि-पूर्व्वक विच्, सम् पूर्व्वक पृच् और सृज् धातु के उत्तर शील अर्थ के कर्तृ-

वाचक में णिनुण् होता है और णिनुण् का इन् रहता है। यथा, उष्ण भोजी, शीतभोजी, अतिभोजी, स्थायी, परिभ्रमी, मानि विलासी। रुध (रुधत्) धातु के ध् का लोप होता है यथा, रागी, विरागी, अनुरागी, विवेकी, त्यज् युज् आदि, त्यद् युज् स्थायी।

(ख) सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये—जिसका अर्थ समझना ज्ञान हो कर्मवाचक पद के परवर्ती वि पूर्वक क्री धातु के उत्तर भूत-काल के कर्तृवाचक में इन् होता है। यथा, मांस विक्रयी, धान्यविक्रयी, धूपविक्रयी, तैलविक्रयी, घृतविक्रयी, गुडविक्रयी, सोमविक्रयी।

(ग) शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्—शम् इत्यादि धातुओं के उत्तर शील अर्थ के कर्तृवाचक में 'इन्' होता है। यथा, शम् शमी, क्षमी, परिश्रमी, दमी, क्लमी, भ्रमी, प्र-मद्-प्रमादी।

खश्।

१०१ विध्वरुषोस्तुदः—विधु और अरुस् शब्द के परवर्ती तुद् धातु के तथा पर और ललाट शब्द के परवर्ती तप् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खश् होता है और खश् का अ रहता है। यथा, विधुं तुदति विधुंतुदः। अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्—अरुस् के स् का म् होता है, यथा, अरुंतुदति अरुंतुदः wounding the vital parts, परं तपति परन्तपः, ललाटं तपति ललाटन्तपः।

N. B. द्विषत्परयोस्तापे खचि ह्रस्वः—पर शब्द के परवर्ती तापि धातु के उत्तर खच् होता है और धातु के आ का अ होता है। यथा, परं तापयति परन्तपः।

(क) असूर्य्यललाटयोर्दृशितपोः। उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च—असूर्य्य और उग्र शब्द के परवर्ती दृश् धातु के उत्तर कर्तृ-

वाच्य में खश् होता है और दृश् का पश्य होता है। यथा, असूर्य्यम्पश्यः, उग्रम्पश्यः।

(ख) प्रियवशे वदः खच्। वहाभ्रे लिहः—प्रिय और वश शब्द के परवर्त्ती वद् धातु [illegible] और अभ्र शब्द के परवर्त्ती लिह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खश् होता है। यथा, प्रियम्वदः, वशम्वदः, अभ्रंलिहः।

(ग) वाचंयमपुरन्दरौ च—व्रत अर्थ में वाच् शब्द के परवर्त्ती यम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खच् होता है। यथा, वाचंयमः (मौनव्रती)।

(घ) सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः—सर्व्व, कूल, अभ्र और करीष शब्द के परवर्त्ती कष् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खश् होता है। यथा, सर्व्वङ्कषः, कूलङ्कषः, अभ्रङ्कषः, करीषङ्कषः।

उदिकूले रुजिवहोः—कूल शब्द के परवर्त्ती उत् पूर्व्वक रुज् और वह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खश् होता है। यथा, कूलमुद्रुजः breaking down the bank कूलमुद्वहः।

ख—(च) संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहितपिदमः—संज्ञा समझी जाय तो विश्व शब्द के परवर्त्ती भृ, पति और स्वयम् शब्द के परवर्त्ती वृ, सर्व्व शब्द के परिवर्त्ती सह् तथा वसु शब्द के परवर्त्ती धृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में ख होता है और ख का अ रहता है। यथा, विश्वम्भरो विष्णुः, विश्वम्भरा पृथिवी, पतिंवरा, स्वयंवरा कन्या, सर्व्वंसहा पृथिवी। वसु शब्द के परे म् होता है; वसुन्धरा पृथिवी।

खट्—(छ) मेघर्तिभयेषु कृञः। क्षेमप्रियमद्रे हण् च—भय, प्रिय और क्षेम शब्द [illegible] परवर्त्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य [illegible] खट् होता है और खट् का अ रहता है। यथा; भयङ्करः, प्रियङ्करः, क्षेमङ्करः।

(ज) नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः—स्तन शब्द के परवर्त्ती धे धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खट् होता है। यथा, स्तनन्धयः शिशुः स्तनन्धयी कन्या।

खि

१०२ आत्मोदरकुक्षिषु इति खाम्भृः—कुक्षि और उदर शब्द के परवर्त्ती भृ धातु के उत्तर खि प्रत्यय होता है और खि का इ रहता है। यथा, कुक्षिम्भरिः, उदरम्भरिः।

खश्च

१०३ मनआत्ममनने खश्च— आत्ममनन अर्थ में कर्मवाचक पद के परवर्त्ती मन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खश्च होता है और खश्च का य रहता है। यथा, आत्मानं पण्डितं मन्यते पण्डितम्मन्यः, कृतार्थम्मन्यः, धन्यम्मन्यः।

इ

१०४ स्तम्बशकृतोरिन्— शकृत् और स्तम्ब शब्द के परवर्त्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में इ होता है। यथा, शकृत्करिः, स्तम्बकरिः।

(क) फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च— इ प्रत्यय परे होने से फलेग्रहि और आत्मम्भरि पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, फलानि गृह्णाति फलेग्रहिः, आत्मानं बिभर्त्ति आत्मम्भरिः।

खनट्

१०५ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषुच्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन्—अभूततद्भाव अर्थ समझा जाय तो प्रिय इत्यादि शब्द के परवर्त्ती कृ धातु के उत्तर करणवाच्य में खनट् होता है और खनट् का अन रहता है। यथा, अप्रियः प्रियः क्रियतेऽनेन

प्रियङ्करणम्, पलितङ्करणम्, नग्नङ्करणम्, अन्धङ्करणम्, स्थूल-ङ्करणम्, सुभगङ्करणम्, आढ्यङ्करणम् ।

खिष्णु और खुकञ्

१०६ कर्त्तरि भुवः खिष्णुच् खुकञौ—अभूततद्भाव अर्थ में प्रिय इत्यादि शब्दों के परवर्त्ती भू धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खिष्णु और खुकञ् होते हैं और दोनों का यथाक्रम इष्णु और उक रहता है। यथा, अप्रियः प्रियो भवति प्रियम्भविष्णुः, आढ्यम्भविष्णुः, प्रियम्भावुकः, आढ्यम्भावुकः, सुभगम्भावुकः, ।

णि ।

१०७ भजोण्विः—सुबन्त पद के परवर्त्ती भज् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में ण्वि होता है और ण्वि का लोप हो जाता है। यथा, अंशं भजते अंशभाक्, दुःखं भजते दुःखभाक् ।

क्विप् ।

१०८ सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्—सुबन्त पद के परवर्त्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्विप् होता है और इसका बिल्कुल लोप होता है। यथा, सभासद्, संसद्, परिषद्, पुत्रसूः (पुत्र उत्पन्न करने वाला), वीरसूः, प्रसूः, धर्म्मद्विट्, मित्रद्रुट्, शास्त्रवित्, धर्म्मवित्, ब्रह्मवित्, गोत्रभित्, मर्म्मभित्, पक्षच्छित्, मर्म्मच्छित्, शत्रुजित्, इन्द्रजित्, सेनानीः, अग्रणीः, विराट्, स्वराट्, सम्राट्, जलस्पृक् ।

N. B. उदक शब्द के उत्तर नहीं होता । उदकस्पृश. में अच् होता है।

(क) सुकर्म्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः—सु, कर्म्मन्, पाप, मन्त्र और पुण्य शब्द के परवर्त्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य के भूतकाल में क्विप् होता है। यथा, सु कृतवान् सुकृत्, कर्म्म कृतवान् कर्म्मकृत्, पापकृत्, मन्त्रकृत्, पुण्यकृत् ।

(ख) ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्—भ्रूण, ब्रह्मन् और वृत्र शब्द के परवर्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य के भूतकाल में क्विप् होता है। यथा, भ्रूणं जघान भ्रूणहा, ब्रह्महा, वृत्रहा।

(ग) सोमे सुञः। अग्नौ चेः—अग्नि शब्द के परवर्ती चि और सोम शब्द के परवर्ती सु धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्विप् होता है। यथा, अग्निं चितवान् अग्निचित्, सोमं सुतवान् सोमसुत्।

क्विप् और कञ्

१०९ त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च—उपमान वाचक तद्, यद्, एतद्, भवत्, अस्मद्, युष्मद्, अदस्, इदम्, अन्य और समान शब्द के परवर्ती दृश् धातु के उत्तर कर्मवाच्य में क्विप् और कञ् होता है। क्विप् का सब लोप हो जाता है और कञ् का अ रहता है।

(क) क्विप् और कञ् प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहने से तद्, यद्, एतद्, अस्मद्, और युष्मद् शब्द के द् का लोप और उसके पूर्ववर्ती अ का आ होता है। यथा, स इव दृश्यते तादृक्, तादृशः; यादृक्, यादृशः, एतादृक्, एतादृशः; अस्मादृक्, अस्मादृशः; युष्मादृक्, युष्मादृशः।

N. B. अस्मद् और युष्मद् शब्द के स्थान में एकवचन में मद् और त्वद् होने से भी होता है। यथा, मादृक्, मादृशः; त्वादृक्, त्वादृशः।

(ख) क्विप् और कञ् प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहने से अदस् का अमू, इदम् का ई, किम् का की, भवत् का भवा, समान का स और अन्य का अन्या हो जाता है। असौ इव दृश्यते अमूदृक्, अमूदृशः; अयमिव दृश्यते ईदृक्, ईदृशः; क इव दृश्यते कीदृक्, कीदृशः; भवानिव दृश्यते भवादृक्,

मवादृशः, समान इव दृश्यते सदृक्, सदृशः; अन्य इव दृश्यते अन्यादृक्, अन्यादृशः।

क्वनिप्

११० दृशेः क्वनिप्—कर्म्मवाचक पद के परवर्त्ती दृश् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य के भूतकाल में क्वनिप् होता है और क्वनिप् का वन् रहता है। यथा, पारं दृष्टवान् पारदृश्वा।

इष्णु

१११ अलङ्कृञ्, निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच्। सूत्रार्थ—शील, धर्म्म और सम्यक्करण अर्थ में सह्, रुच्, वृध्, अलङ्कृ, निराकृ, प्रजन्, उत्पच्, उत्पत्, उन्मद्, अपत्रप्, वृत्, चर्, और प्र-भू धातुओं के उत्तर कर्त्तृवाच्य में इष्णु होता है। यथा, सह्-सहिष्णुः, रोचिष्णुः, वर्धिष्णुः, अलङ्करिष्णुः, निराकरिष्णुः, प्रजनिष्णुः, उत्पचिष्णुः, उत्पतिष्णुः, उन्मदिष्णुः, अपत्रपिष्णुः, वर्त्तिष्णुः, चरिष्णुः, प्रभविष्णुः।

स्नुक्

११२ ग्लाजिस्थश्चग्स्नुक्—शील इत्यादि अर्थ में जि, भू, स्था और ग्ला धातु के उत्तर कर्त्तृवाच्य में स्नुक् होता है और स्नुक् का स्नु रहता है। यथा, जिष्णुः Victorious, भूष्णुः, स्थास्नुः, ग्लास्नुः languid.

क्नु

११३ त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः—शील इत्यादि अर्थ में त्रस्, गृध्, धृष् और क्षिप् धातु के उत्तर कर्त्तृवाच्य में क्नु होता है और क्नु का [redacted] रहता है। यथा, त्रस्नुः timid, गृध्नुः greedy, धृष्णुः bold, क्षिप्नुः throwing.

उकञ्

११४ लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशॄभ्य उकञ्—शील इत्यादि अर्थ में कम्, लष्, पत्, पद्, स्था, भू, वृष्, हन्, गम् और शॄ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में उकञ् होता है और उकञ् का उक रहता है। यथा, कामुकः, लाषुकः, पातुकः who goes on foot, स्थायुकः, भावुकः, वर्षुकः, गामुकः, शारुकः; हन् का घात् होता है; घातुकः।

आलु

११५ स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच्—शील इत्यादि अर्थ में दय्, नि और तन् पूर्वक द्रा, श्रत् पूर्वक धा, शी, गृहि, स्पृहि और पति धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में आलु होता है। यथा, दयालुः, निद्रालुः, तन्द्रालुः, श्रद्धालुः, शयालुः sleepy, गृहयालुः, स्पृहयालुः, पतयालुः falling.

घुर्

११६ भञ्जभासमिदो घुरच्—शील इत्यादि अर्थ में भञ्ज्, भास् और मिद् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में घुर होता है। और घुर का उर रहता है। यथा, भङ्गुरः, भासुरः, मेदुरः smooth, soft.

क्वरप्

११७ इण्नशजिसर्त्तिभ्यः क्वरप्—शील इत्यादि अर्थ में नश्, इ, जि, सृ और गम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्वरप् होता है और क्वरप् का वर रहता है। यथा, नश्वरः, इत्वरः, जित्वरः, सृत्वरः। गत्वरश्च—गम् के म् का त् होता है; गत्वरः।

र

११८ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः—शील इत्यादि अर्थ
नम्, कम्, हिन्स्, स्मि, कम्प्, अजस्, और दीप् धातु
उत्तर कर्तृवाच्य में र होता है। यथा, नम् नम्रः, हिन्स्-हि
स्मेरः, कम्प्रः, अजस्रः eternal, दीप्रः shining.

उ

११९ सनाशंसभिक्ष उः। चिकीर्षुः—शील इत्यादि अर्थ
आङ्पूर्वक शंस्, इष्, भिक्ष् और सनन्त धातुओं के उत्तर क
वाच्य में उ होता है। यथा, आशंसुः desirous. इष्
इच्छ् होता है; इच्छुः, भिक्षुः, जिज्ञासुः, पिपासुः, मुमुक्षुः,
कीर्षुः, विवक्षुः, जिघृक्षुः, wishing to take, जिगमिषुः,
दीप्सुः, ईप्सुः, दित्सुः, लिप्सुः, जिगीषुः।

वर

१२० स्थेशभासपिसकसो वरच्। यश्च यङः—शील इत्यादि
में स्था, ईश्, भास्, कस् और यङन्त या धातु के उत्तर
कर्तृवाच्य में वर होता है। यथा, स्थावरः, ईश्वरः, भास्व
यङ् का लोप होता है—यायावरः horse.

ऊक

१२१ जागुरूकः। यजजपदशां यङः—शील इत्यादि अर्थ में
धातु तथा यङन्त यज्, जप, वद् और दन्श् धातु के उ
ऊक होता है और यङ् का लोप होता है। यथा, जागरू
यज्-यायजूकः one who performs sacrifices frequen
tly. जञ्जपूकः, वावदूकः, दन्दशूकः।

इष्णु

१२२ शील इत्यादि अर्थ में स्तनि, मदि, दूषि, गदि और हृषि धातुओं के उत्तर इष्णु होता है। यथा, स्तनयिष्णु cloud, मदयिष्णुः a mad man, दूषयिष्णुः vitiating, गदयिष्णुः talkative हर्षयिष्णुः।

क्मर

१२३ सृघस्यदः क्मरच्—शील इत्यादि अर्थ में घस्, अद् और सृ धातु के उत्तर क्मर होता है और इसमें मर रहता है। यथा, घस्मरः, अद्मरः, सृमरः going.

कुर

१२४ विदिभिदिच्छिदेः कुरच्—शील इत्यादि अर्थ में छिद्, भिद्, और विद् धातु के उत्तर कुर् होता है। यथा, छिदुरः cutting, भिदुरः, विदुरः who knows.

त्र

१२५ दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे—करण अर्थ में दा, नी, स्तु, शस्, यु, युज्, तुद्, सि, सिच्, मिह्, पत्, दन्श्, नह् इत्यादि धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में त्र होता है। यथा, नयति अनेन नेत्रम्, दाति अनेन दात्रम्-sickle, शसति अनेन शस्त्रम्, स्तौति अनेन स्तोत्रम्, पतति अनेन पत्त्रम्, दशति अनया दंष्ट्रा-jaw.

इत्र

१२६ अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः—करणवाच्य में पू, चर्, षह्, खन्, लू, ऋ, धू, सू और सह् धातु के उत्तर इत्र होता है।

यथा, पूयते अनेन पवित्रम्, चरित्रम्, वहित्रम्, खनित्रम् इत्यादि।

इ (कि)

१२७ उपसर्गे घोः किः—उपसर्ग और अन्तर् शब्द के परवर्त्ती धा धातु के उत्तर भाववाच्य में इ होता है और धातु के आकार का लोप होता है। यथा, विधिः, निधिः, सन्धिः, आधिः, अन्तर्धिः disappearance.

(क) कर्मण्यधिकरणे च—कर्मवाचक पद के परवर्त्ती धा धातु के उत्तर अधिकरणवाच्य में इ होता है और धातु के आकार का लोप होता है। यथा, जलानि धीयन्तेऽस्मिन् जलधिः, वारिधिः, पयोधिः, जलनिधिः, वारिनिधिः, पयोनिधिः।

त्रिमक्

१२८ ड्वितः क्त्रिः—गणपाठ काल में जो धातु डु-संयुक्त हों उनके उत्तर तन्निर्वृत्त अर्थ में त्रिमक् होता है और इसका त्रिम रहता है। यथा, कृ-क्रियया निर्वृत्तम् कृत्रिमम्, दा का दत् होता है-दानेन निर्वृत्तम् दत्त्रिमम्, पाकेन निर्वृत्तम् पक्त्रिमम्।

अथु

१२९ ट्वितोऽथुच्—गणपाठ काल में जो धातु टु-संयुक्त हों उनके उत्तर भाववाच्य में अथु होता है। यथा, वेप्-वेपथुः, टुम्-टमथुः, श्वि-श्वयथुः swelling.

अनि

१३० आक्रोशे नञ्यनिः—नञ् के परवर्त्ती धातु के उत्तर भाववाच्य के आक्रोश अर्थ में अनि होता है। अनि-प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, जीव्-अजीवनिः non-existence, जन्-अजननिः privation of birth.

अन

१३१ ल्युट् च—भाववाच्य में धातु के उत्तर अन होता है अन-प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिङ्ग होते हैं। यथा, गम्-गमनम्, भुज् भोजनम्, शी-शयनम्, वमनम्, आ-रुह्-आरोहणम्, भक्षणम्, चलनम्, पतनम्, क्षरणम्, स्खलनम्, रक्षणम्, भक्षणम्, गर्जनम्, लङ्घनम्, स्यन्दनम्, तर्पणम्, मननम्, अधि-इ-अध्ययनम्, वञ्चनम्, खण्डनम्, पानम्, दानम्, गानम्, घ्राणम्, ज्ञानम्, विधानम्, आ-धा-आधानम् taking, मानम्, स्नानम्, चि-चयनम्, श्रि-श्रयणम् श्रवणम्, करणम्, भरणम्, मरणम्, वरणम्, स्मरणम्, हरणम्, दर्शनम्, स्पर्शनम्, सेचनम्, रञ्जनम्, नर्त्तनम्, मन्थनम्, रोदनम्।

N. B. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः—नन्दि इत्यादि धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अन होता है। यथा, नन्दि-नन्दनः, मदि-मदनः, साधि-साधनः, वर्द्धि-वर्द्धनः, शोभि-शोभनः, सह-सहनः, तप तपनः-The sun, दम्-दमनः, रमि रमणः, सूदि सूदनः, भीषि भीषणः, नाशि-नाशनः।

क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च—क्रोधार्थ और मण्डनार्थ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में शील इत्यादि अर्थ में अन होता है। यथा, क्रुध्-क्रोधनः, रोषणः, कोपनः, आ-मृज् आमार्जनः, मण्डनः, अलङ्करणः ornament.

३ जु चङ्क्रम्य दन्द्रम्य सृ गृधि ज्वल शुच् लष् पत्-पदः—शील इत्यादि अर्थ में ज्वल् इत्यादि धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में अन होता है। यथा, ज्वलनः fire, शोचनः, वर्द्धनः, चलनः, पतनः।

अनट्।

(क) करण और अधिकरण अर्थ में धातु के उत्तर अनट् होता है और इसका अन रहता है। अनट्-प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिङ्ग होते हैं। यथा, करण अर्थ में—नीयते अनेन नयनम्,

लोच्यते अनेन लोचनम्, चर्य्यते अनेन चरणम्, क्रियते अनेन करणम्, साध्यते अनेन साधनम्, भूष्यते अनेन भूषणम्, मण्ड्यते अनेन मण्डनम्, यायते अनेन यानम्, वाह्यते अनेन वाहनम्, अधिरुह्यते अनया अधिरोहिणी । अधिकरण अर्थ में— शय्यते अस्मिन् शयनम्, भूयते अस्मिन् भवनम्, स्थीयते अस्मिन् स्थानम् ।

घञ

१३२ भावे । अकर्त्तरि च कारके संज्ञायाम्— भाववाच्य में और र्तृ भिन्न कारकवाच्य में धातु के उत्तर घञ् होता है । घञ् ा अ रहता है । यथा; पच्-पाकः, त्यागः, नाशः, शोकः, भुज्-ोगः, योगः, वासः, पातः, वादः, शापः, तापः, दाहः, श्रु-ायः dropping, लाभः, लापः, पाठः, युज्-योगः हासः, ाहः, स्वादः, मादः, हारः, लासः, यागः, भागः, स्पर्शः, इन्ध्-एधः, चि-कायः, घञि च भावकर्मणोः— रञ्ज् न् का लोप होता है—रागः, भञ्ज्-भङ्गः, सञ्ज्-सङ्गः ।

अ (अल्)

१३३ भाववाच्य में और कर्तृ भिन्न कारकवाच्य में धातु के उत्तर अ होता है । यथा, जि जयः, क्षि-क्षयः, स्मि-स्मयः, ली-लयः, नी-नयः, द्रु-द्रवः, रु-रवः, स्रु-स्रवः, स्तु-स्तवः, भू-भवः, भी-भयम्, वृष्-वर्षम्, जपः, श्रि-श्रयः, चि-चयः, ग्रहः, मदः, मोदः, श्लेषः, रोपः, मोहः, द्रोहः, क्रोधः, कोपः, क्षोभः, लोपः, रोधः, खेदः, मर्शः, स्पर्शः, भ्रंशः, भेदः, दर्पः ।

खल्

१३४ ईषद्दुःसुषुकृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्— सु, दुर् और ईषत् शब्द

के परवर्ती धातु के उत्तर कर्मवाच्य और भाववाच्य में ख होता है और इसका अ रहता है । यथा, कृ-सुकरः, दुष्कर ईषत्करः, गम्-सुगमः, दुर्गमः, ईषद्गमः, वह्-सुवहः, दुर्व ईषद्वहः, सुत्यजः, दुस्त्यजः, ईषत्त्यजः, सुलभः, दुर्लभः, ईषल्ल

खल् और अन (युच्)

१३५—भाषायां शासियुधिदृशिधृषिमृषिभ्यो युज्वक्त सु, दुर् और ईषत् शब्द के परवर्ती शास्, युध्, दृश्, ध और मृष् धातु के उत्तर कर्मवाच्य में खल् और अन हो है । यथा, शास्-सुशासः, सुशासनः, दुःशासः दुःशास सुयोधः सुयोधनः, दुर्योधः दुर्योधनः, सुदर्शः सुदर्श दुर्दर्शः दुर्दर्शनः; सुधर्षः सुधर्षणः, दुर्धर्षः दुर्धर्षणः; सुम सुमर्षणः, दुर्मर्षः दुर्मर्षणः ।

अ

१३६ अ प्रत्ययात्— सन् प्रत्ययान्त धातु और नाम धातु उत्तर भाववाच्य में अ होता है । अ-प्रत्यय से बना हुआ श स्त्रीलिङ्ग होता है । यथा, सनन्त-जिज्ञासा, पिपासा, चिकीर्ष जिगीषा, लिप्सा, जिघांसा wishes to kill विवित्सा मीमांसा, जुगुप्सा । नामधातु-तपस्या, परिचर्या service अशनाया hunger, पुत्रकाम्या, कण्डूया itching.

(क) गुरोश्च हलः—गुरु स्वरयुक्त व्यञ्जनान्त धातु के उत्त भाववाच्य में अ होता है । यथा, भिक्षा, सेवा, आकांक्षा परीक्षा, दीक्षा, निन्दा, खेला play, रक्षा, शङ्का, अर्चा, मूर्च्छा लज्जा, व्रीडा, क्रीडा, मेधा apprehension, बाधा, अनुकम्पा ईर्ष्या, हिंसा, असूया, वाञ्छा, प्रदा omission, आशंसा, प्रशंसा ।

(ख) चिन्तिपूजिकथि कुम्बिचर्चश्च—चिन्ति, पूजि, कथि, चर्चि, स्पृहि, दोलि, पीडि और शोभि धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है। यथा, चिन्ता, पूजा, कथा, चर्चा, स्पृहा, पीडा, शोभा।

(ग) षिद्भिदादिभ्योऽङ्—जो धातु गणपाठकाल में षकार-संयुक्त हों उनके उत्तर भाववाच्य में अ होता है। यथा, त्रपा, त्वरा, पचा। मृज् का गुण नहीं होता; मृजा purification.

भिदु इत्यादि धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है। यथा, भिदा separation, छिदा, क्षुपा, क्षमा, दया।

(घ) इच्छा (सः)—अ प्रत्यय होने से इष् का इच्छ् और प्रच्छ् का पृच्छ् होता है। यथा, इच्छा, पृच्छा asking.

(ङ) आतश्चोपसर्गे—उपसर्ग के परवर्ती आकारान्त धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है। यथा, आभा, प्रभा, विभा, प्रतिमा, प्रमा perception, उपमा, अनुमा infirence, उपमा, विधा, व्यथा, अभिधा name, सन्ध्या, उपधा, (श्रत् और अन्तर् के परे भी धात में होता है; श्रद्धा, अन्तर्धा) संज्ञा, प्रज्ञा, अनुज्ञा संज्ञा, अवज्ञा, प्रतिज्ञा, उपज्ञा, आज्ञा, आख्या designation, संख्या, अभिख्या, संस्था, अवस्था, निष्ठा, प्रतिष्ठा, आस्था regard.

अन

१२७ ण्यासश्रन्थो युच्—णिजन्त धातु के उत्तर भाववाच्य में अन होता है। अन प्रत्यय से बना हुआ पद स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, अर्चि-अर्चना कल्पना, कारणा pain, गणना, धारणा, पारणा, वि-मानि-विमानना dishonour, यन्त्रणा,

यातना, वासना। कहीं २ क्लीवलिङ्ग होता है; प्रेरणम् प्रीणन
तर्पणम्, शोधनम्, साधनम्, गोपनम्।

वन्द्, विद्, आस्, इष्, ग्रन्थ् और श्रन्थ् धातु के उत्त
भाववाच्य में अन होता है। यथा, वन्दना, वेदना, आसन
seat, ग्रन्थना, श्रन्थना stringing flower.

न (नङ्)

१३८ यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्—यज्, यत्, स्वप्, प्रच्छ
याच् और तृष् धातु के उत्तर भाववाच्य में न होता है
यथा, यज्ञः, यत्नः, स्वप्नः, प्रश्नः याच्ञा, तृष्णा।

यक्।

१३९ व्रजयजोर्भावे क्यप्—व्रज्, चर् और विद् धातु के उत्त
भाववाच्य में यक् होता है और यक् का य रहता है। य
प्रत्यय से बना हुआ शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, व्रज्
wandering about, प्रव्रज्या, परिव्रज्या, चर्या, परि
चर्या, विद्या।

(क) संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ् भृञिणः। कृञ्श प—
ष्, शी, यज् मृग् धातुओं के उत्तर यक् होता है और निम्न
लिखित पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, क्रिया, कृत्य
शी-शय्या, यज्-इज्या, मृग्-मृगया।

उणादि-प्रत्ययान्त शब्द।

पुंलिङ्ग।

अंशु-अंश् + उ अङ्गुल-अङ्ग् + उलच् अण्ड-अम् + ड
अग्नि-अङ्ग्+नि अञ्जलि-अञ्ज्+अलिच् अतिथि-अत्+इथि
अङ्कुर-अङ्क्+उरच् अणु-अण् * + उ अध्वन्-अद्+क्वनिप्

* व्यञ्जनान्त धातुओं के अन्त में जहाँ अ हो वहाँ इसको समझ
चाहिये। जैसे, 'अण' को अण् समझना चाहिये।

अनल-अन्+कलच्	ऋषभ-ऋष्+अभच्	कुरङ्ग-कृ+अङ्गच्
अनिल-अन्+इलच्	ऋषि-ऋष्+इन्	कुलाल-कुल्+कालन्
अन्त-अम्+तन्	ओदन-उन्द्+युच्	कुष्ठ-कुष्+क्थन्
अब्द-अप्+दन्	ओष्ठ-उष्+क्थन्	कूप-कु+प
अरि-ऋ+इ	कक्ष-कष्+स	कृशानु-कृश्+आनु
अरुण-ऋ+उनन्	कङ्काल-कङ्क्+कालन्	कृपण-कृप्+क्युन्
अर्क-अर्च्+क	कण्ठ-कण्+ठ	केतु-चि+तुन्
अर्चिस्-अर्च्+इस्	कपि-कम्प्+इ	केलि-केल्+इन्
अर्म-ऋ+मन्	कपोत-कब्+ओतच्	कोकिल-कुक्+इलच्
अलि-ऋ+इ	कपोल-कप्+ओलच्	क्रतु-कृ+तुन्
अश्व-अश्+क्वन्	कमठ-कम्+अठ	क्रिमि-क्रम्+इन्
असि-अस्+इ	कमल-कम्+कल	क्षुर-क्षु+रन्
असु(ष)-अस्+उ	करभ-कृ+अभच्	खड्ग-खड्+गन्
असुर-अस्+उरन्	कर्कट-कर्क्+अटन्	खण्ड-खन्+ड
अस्त्र-अस्+ष्ट्रन्	कर्ण-कृ+नक्	खुर-खुर्+क
आत्मन्-अत्+मनिन्	कर्दम-कर्द्+अम्	गण्ड-गम्+ड
इक्षु-इष्+क्सु	कलि-कल्+इन्	गण्डूष-गण्ड्+ऊषन्
इन्दु-उन्द्+उ	कवि-कु+इन्	गरुत्-गॄ+उति
इन्दुर-उन्द्+उरच्	काक-कै+कन्	गर्त-गॄ+तन्
इषु-इष्+उ	कारु-कृ+उण्	गर्दभ-गर्द्+अभच्
उत्स-उन्द्+स	कासार-कास्+आरन्	गर्म-गॄ+मन्
उष्ट्र-उष्+ष्ट्रन्	किशोर-कि-शॄ+ओरन्	गर्ग-गॄ+ग
ऊष्मन्-उष्+मनिन्	कुक्कुर-कुक्+उरच्	गिरि-गॄ+इ
ऊरु-ऊर्णु+कु	कुशिक-कुश्+किक	गुरु-गॄ+कु
ऋक्ष-ऋष्+स	कुन्द-कु+दन्	गुल्फ-गुड्+फक्
ऋतु-ऋ+तुन्	कुमार-कुम्+आरन्	गृध्र-गृध्+क्रन्

गो-गम्+डो	दमन-दम्+मन्	पाणि-पण्+इण्
गोधूम गुध्+ऊम्	दर्दुर-दृ+उरच्	पितृ पा+तृच्
गोमायु-गो-मा+उण्	धर्म धृ+म	पिशाच-पिशित+अश
ग्रन्थि-ग्रन्थ्+इ	दस्यु-दस्+युच्	अण्
ग्राम-ग्रस्+मन्	दिवस-दिव्+असच्	पुमस् पा+डुमसुन्
ग्रावा-गृ+वन्	धर्म-धृ+मन्	पुरुष-पृ+कुषन्
ग्रीष्म-ग्रस्+मक्	धातु-धा+तुन्	पूग-पू+गन्
ग्लौ-ग्लै+डौ	धीवर-धा+ष्वरच्	पोत-पू+तन्
घर्म-घृ+मक्	धूम-धू+मक्	प्लीहन्-प्लिह्+कनि
चण्डाल-चण्ड्+आलच्	धूर्त-धूर्व्+तन्	फेन-स्फाय्+नक्
चन्द्र-चन्द्+रक्	धूलि-धू+लिक्	वणिज्-पण्+इजि
छाग-छो+गन्	ध्वनि-ध्वन्+इ	बदर-बद्+अरच्
जन्तु-जन्+तुन्	नख-नह्+ख	बधिर-बन्ध्+किरच्
जरठ-जृ+अठच्	नापित-न,आप्+तन्	बन्धु-बन्ध्+उ
जरायु-जरा-इ+ञुण्	निशीथ-नि-शी+थक्	बलि-बल्+इन्
तक्षन्-तक्ष्+कनिन्	निष्क-नि-सद्+कन्	बाहु-बह्+ञुण्
तण्डुल-तण्ड्+उलच्	नृ-नी+ऋ	बिन्दु-बिन्द्+उ
तनय-तन्+कयन्	पक्ष-पण्+स	ब्रह्मन्-बृंह्+मनिन्
तन्तु-तन्+तुन्	पतङ्ग-पत्+अङ्गच्	भल्लूक-भल्ल्+ऊक
तमस्+तम्+असुन्	पथिन्-पत्+इथिन्	भवत्-भा+डवतु
तमाल-तम्+कालन्	पनस्-पन+असच्	भानु-भा+नु
तरङ्ग-तॄ+अङ्गच्	परशु-पर-शॄ+कु	भिदु-भिद्+कु
तरु-तॄ+उ	पर्जन्य-पृष्+अन्य	भिषज्-भी+षजि
तालु-तॄ+ञुण्	पर्य्यन्त-पर्य्य+अतच्	भृङ्ग-भृ+गन
तुषार-तुष्+आरन्	पशु-दृश्+कु	भेक-भी+कन
दण्ड-दम्+ड	पांशु-पनश+कु	भेरि-भी+क्रिन्

भ्रमर-भ्रम् + करन्
भ्रातृ भ्राज् + तृच्
मघवन्-मह् + कनिन्
मणि-मण् + इ
मण्ड-मन् + ड
मण्डूक-मण्ड् + ऊक
मत्सर-मद् + सर
मत्स्य-मद् + स्यन्
न्यु-मन् + युच्
यूल मा + ऊल
यूर-मि + ऊरन्
राल-मृ + आलच्
रीचि-मृ + ईचि
रु-मृ + उ
रुत्-मृ + उति
र्कट-मर्क् + अटन्
र्त-मृ + तन
ल्य-मल् + कयन्
सा-मस् + इन्
मसूर-मस् + ऊरच्
महिष-मह् + टिषच्
मार्जार-मृज्+आरन्
मिहिर-मिह्+किरच्
मीन-मी + नक्
मुकुर-मक् + उरच्
मुनि-मन् + [illegible]

मुष्क मुष् + क
मूर्ख-मुह् + ख
मूषिक-मूष + किकन्
मृगायु-मृग-या + कु
मृदङ्ग-मृद् + अङ्गच्
यति-यत् + इन्
याम-या + मन्
युवन्-यु + कनिन्
यूथ-यु + थक्
यूप-यु + प
रज्जु-सृज् + उ
रथ-रम् + क्थन्
रभस-रभ् + असच्
रवि-रु + इ
राजन्-राज + कनिन
राशि-अश् + इण्
रासभ-रास् + अभच्
राहु-रह् + उण्
रिपु-रप् + कु
रेणु-री + णु
वटु-वट् + उ
वत्स-वद् + सलच्
वत्सर-वस् + सर
वरुण-वृ + उनन्
वर्ण-वृ + नक्
वर्व्वर-वृ + ष्वरच्

बर्हिस्-वृहि + इसि
वलय-वल् + कयन्
वसन्त-वस् + झच्
वात वा + त
वापि-वा + इञ्
वायस-वय्+असच्
वायु-वा + उन्
वासर-वास् + अर
विटप-विट् + कपन
विडाल-विद+कालन्
विधु-व्यध् + कु
विप्र-वप् + रन्
वीचि-वे + ईचि
वीर-अज् + रक
वृक-वृ + कक्
वृक्ष-व्रश्च + कस्
वृश्चिक-व्रश्च+किकन्
वृषभ-वृष् + अभच्
वृषल-वृष् + कल
वेणु-अज् + णु
वेतस-वे + असच्
वेत्र-वि + त्र
वेधस्-वि-धा+असि
शकुन-शक् + उन
शकुनि-शक् + उनि
शकुन्त-शक् + उन्त

शक्तु-शक् + तुन्	शोथ-शु + थन्	सेतु-सि + तुन्
शङ्कु-शङ्क् + उ	श्येन-श्यै + इनच्	सोम-सु + मन्
शङ्ख-शम् + ख	श्वन्-श्वि + कनिन्	स्तम्ब-स्था + अम्बच्
शत्रु-शद् + त्रुन्	षण्ड-सन् + ड	स्तूप-स्तु + प
शपथ-शप् + अथच्	सक्थि-स-स्था + इन्	स्तोम-स्तु + मन्
शम्भु-शम् भू + डु	सर्षप-सृ + आप	हंस-हन् + स
शरणि-शृ + अनि	साधु-साध + उण्	हनु-हन् + उ
शलभ-शल् + अभच्	सारथि-सृ + अथिन्	हरि-हृ + इन्
शार्दूल-शॄ + दूलच्	सार्थ सृ + कथन	हरिण-हृ + इनन्
शिशिर-शश् + किरच्	सिन्धु-स्यन्द + उ	हरित-हृ + इति
शिशु-शो + उ	सुर-सु + क्रन्	हविस्-हु + इसि
शुक-शु + कक्	सूनु-सू + नु	हस्त-हस् + तन्
शूर-शू + क्रन्	सूप-सु + प	हेतु-हि + तुन
शृङ्गार-शृ + आरन्	सूरि-सू + क्रिन्	होम-हु + म

क्लीवलिङ्ग

अग्र-अङ्ग् + र	अस्त्र-अस् + ष्ट्रन	कपाल-कप + कालन्
अजिन-अज् + इनच्	अस्थि-अस् + क्थिन्	कमल-कम् + कलच्
अजिर अज् + किरच्	आयुस्-इ + उसि	कर्मन्-कृ + मनिन्
अनीक-अन् + ईकन्	इध्म-इन्ध + मक्	कलुष-कल् + उषच्
अम्बर-अम्ब + अरन्	उरस्-ऋ + असुन्	कवच-कु + अच्
अम्बु-अम्ब + उ	ऊधस्-यद + असि	काष्ठ-काश + कथन्
अम्भस्-आप् + असुन्	[illegible] + थक्	किल्विष-किल + टिषच्
अयस्-इ + असुन्	ओकस्-उच् + असुन्	कुण्डल-कुण्ड् + कलच्
अरण्य-ऋ + अन्य	ओजस्-ओज् + असुन्	कुसीद-कुस् + ईद
अरुस्-ऋ + उसि	कनक-कन् + अक	कृच्छ्र-कृत् + रक्

क्षीर-घस्+ईरन्
क्षेम-क्षि+मन्
क्षेत्र-क्षि+ष्ट्रन्
गगन-गम्+युच्
गह्वर-गाह्+ष्वरच्
गात्र-गम्+ष्ट्रन्
गोत्र-गु+त्र
चक्र-चक्+रक्
चक्षुस्-चक्ष्+उसि
चत्वर-चत्+ष्वरच्
चर्म्मन-चर्+मनिन्
चेतस्-चित्+असुन्
छत्र-छद्+ष्ट्रन्
छद्मन्-छद्+मनिन्
छन्दस्-छन्द्+असुन्
छिद्र-छिद्+रक्
जगत्-गम्+अति
जतु-जन्+उ
जन्तु-जन्+ठ
जन्मन्-जन्+मनिन्
जानु-जन्+उण्
तक्र-तञ्च्+रक्
तन्त्र-तन्+ष्ट्रन्
तरस-तर+असुन्
तल्प तल्+प
ताम्बूल-तम्+ऊलच्

तिमिर-तिम्+किरच्
तुहिन-तुह्+इनन्
तृण-तृह्+क्न
तेजस्-तिज्+असुन्
तोय-तु+कोय
दात्र-दा+ष्ट्रन्
दामन् दो+मनिन्
दारु-दॄ+ञुण्
दिन-दो+किनन्
द्रविण-द्रु+इनन्
धनुस्-धन्+उसि
धान्य-धा+यत्
धामन्-धा+मनिन्
नक्षत्र-न-क्षि+ष्ट्रन्
नभस्-नह्+असुन्
नर्म्मन्-नृ+मनिन्
नलिन-नल+इनच्
नामन्-म्ना+मनिन्
नीर-नी+रक्
पक्ष्मन् पक्ष्+मनिन्
पटल-पट्+कलच्
पत्र-पत्+ष्ट्रन्
पद्म पद्+मन्
पयस्-पय्+असुन्
पर्ण-पॄ+न
पर्वन् पॄ+वनिप्

पाताल-पत्+आलञ्
पात्र-पा+ष्ट्रन्
पाप-पा+प
पाप्मन्-पा+मनिन्
पिशित-पिश्+क्त
पीयूष-पीय+ऊषन्
पुण्डरीक-पुण्ड्+ईक
पुण्य-पु+डुण्य
पुरीष-पॄ+ईषन्
पुलिन-पुल+इनन्
पुष्कर-पुष्+करन्
पृषत्-पृष्+अति
पृष्ठ-पृष्+थक्
बाष्प-बाध्+प
भद्र-भन्द्+र
भस्मन्-भस्+मनिन्
भुवन-भू+क्युन्
मङ्गल-मङ्ग्+अलच्
मधु-मन्+उ
मनस्-मन्+असुन्
मन्दिर-मन्द्+किरच्
मर्म्मन्-मृ+मनिन्
मर्म्मर-मृ+अरन्
मल-मृज्+कल
मस्तु-मस्+तुन्
मांस-मन्+स

मिथुन-मिथ्+उनन्	वंश-वन्+श	शरीर-शॄ+ईरन्
मुकुट-मक्+उट	वक्र-वक्+क्र	शर्मन्-शॄ+मनिन्
मुख-खन्+अच्	वक्षस्-वह्+असुन्	शल्य-शल्+य
मुसल-मुस्+कल	वचस्-वच्+असुन्	शष्प-शस्+प
मेदस्-मिद्+असुन्	वपुसि-वप्+उसि	शस्त्र-शस्+ष्ट्रन्
यक्ष्मन्-यक्ष्+मनिन्	वप्र-वप्+रन्	शालूक-शल+ऊकञ्
यजुस्-यज्+उसि	वयस्-वी+असुन्	शिरस्-श्रि+असुन्
यन्त्र-यम्+त्रन्	वर्चस्-वर्च+असुन्	शिल्प-शील्+प
यशस्-अश्+असुन्	वर्त्मन्-वृत्+मनिन्	शिव-शी+वन्
युग्म-युज्+मक्	वर्मन्-वृ+मनिन्	शिशिर-शी+किरच्
रहस्-रह्+असुन्	वसु-वस्+उ	शीघ्र-शिघ+रक्
रक्षस्-रक्ष्+असुन	वस्तु-वस्+तुन्	शील-शी+लक्
रजस्-रञ्ज्+असुन्	वस्त्र-वस्+ष्ट्रन्	शुषिर-शुष्+किरच्
रत्न-रम्+न्	वारि-वृ+इञ्	शूर्प-शॄ+प
राष्ट्र-राज्+ष्ट्रन्	वासस्-वस्+असुन्	शृङ्ग-शॄ+गन्
रुक्म-रुच्+मक	विपिन-वेप+इनन्	शोचिस्-शुच्+इसि
रुधिर-रुध्+किरच्	विश्व-विश्+क्वन्	श्रोत्र-श्रु+ष्ट्रन्
रूप-रु+प	वृजिन-वृज+इनच्	सदस्-सद्+असुन्
रेतस्-री+असुन्	वेतन-वी+तनन्	सरस्-सृ+असुन्
रोमन्-रु+मनिन्	वेमन्-वे+मनिन्	सलिल-सल्+इलच्
लवङ्ग-लू+अङ्गच्	वेश्मन्-विश+मनिन्	सिन्दुर-स्यन्द्+उरन्
लाङ्गुल-लङ्ग्+उलच्	व्योमन्-व्ये+मनिन्	स्रोतस्-स्रु+असुन्
लाङ्गूल-लङ्ग्+ऊलच्	शकल-शक्+कल	हिम-हन्+मक्
गलोमन्-लू+मनिन्	शकृत्-शक्+ऋतिन्	हृदय हृ+कयन्
लोहित-रुह्+क्त	शत शो+डतच्	हेम-हि+मन्

पुंल्लिङ्ग और क्लीवलिङ्ग

अङ्गार-अङ्ग् + आरन्	कशेरुक-शॄ + उ	पल्वल-पल् + वल
आमिष-अम् + टिषच्	किरीट-कॄ + कीटन्	मुकुल-मुच् + उलच्
कंस-कम् + स	कोदण्ड-कुण् + अण्डच्	वज्र-वज + रन्
कम्बु-कम् + उ	धातु-धट् + तुण्	बिन्दु-बिदु + उ
करीष-कॄ + ईषन्	तीर्थ-तॄ + थक्	शकट-शक् + अटन्
कर्पूर-कृप् + ऊरच्		

स्त्रीलिङ्ग

अङ्गुली-अङ्ग् + उलिच्	छाया-छो + य	पृथ्वी-प्रथ् + षिवन्
आजि-अज् + इन्	जाया-जन् + यक्	पेषणि-पिष् + अनि
आलु-अल् + उण्	जिह्वा-लिह् + वन्	फल्गु-फल् + गुक्
इष्टका-इष् + तकन्	तडित्-तड् + इति	वधू-वह् + उ
ऊर्मि-ऋ + मि	तनु-तन् + उ	वन्ध्या-वन्ध् + यक्
उषस्-उष् + असि	सरणि-सृ + अनि	भ्रमि-भ्रम् + इन्
कर्त्तरी-कृत् + अरन्	तृष्णा-तृष् + न	भ्रू-भ्रम् + डू
कीर्ति-कीर्त् + इन्	त्वच्-तन् + चिक्	मक्षिका-मश् + सिकन्
कृषि-कृष् + इन्	दुहितृ-दुह् + तृच्	मदिरा-मद् + किरच्
खट्वा-खट् + क्वन्	धरणि-धृ + अनि	मसूरी-मस् + ऊरच्
खनि-खन् + इ	धेनु-धे + नु	महिला-मह् + इलच्
गङ्गा-गम् + गन्	नाभि-नह् + इञ्	मही-मह् + इ
गाथा-गै + थकन्	नेमि-नी + मि	मातृ-मा + तृच्
ग्रहणि-ग्रह् + अनि	नौ-नुद् + डौ	माया-मा + य
चञ्चु-चञ्च् + उ	पताका-पत् + आकन्	माला-मा + लन्
चमू-चम् + ऊ	पूतना-पू + तनन्	मुद्रा-मुद् + रक्
छवि-छो + इ	पृथिवी-प्रथ् + षिवन्	यातृ-यत् + ऋन्

योषित्-युष् + इति
रजनी-रञ्ज्+अनि
रशना-अश् + युच्
रात्रि-रा + त्रिप्
लालसा-लल्+असुन्
वर्त्ति-वृत् + इन्
वल्लि-वल् + इ
वसति-वस + अति

वागुरा-वा + उरच्
वीणा-वी + न
वीथि-विथ् + इन्
वेणि-वी + नि
वेदि-विद् + इन्
शरद-शृ + अदि
शर्करा-शृ + करन्
शर्वरी-शृ + ष्वरच्

शलाका-शल्+आकन्
शिखा-शी + ख
श्रेणि-श्रि + नि
सरणि-सृ + अनि
सरित्-सृ + इति
सिकता-सिक्+अतच्
स्नुषा-स्नु + स
स्वसृ-सु+अस्+ऋन्

विशेषण

अम्ल-अम् + क्ल
आर्द्र-अर्द् + रक्
उष्ण-उष् + णक्
ऋजु-अर्ज् + कु
कटु-कट् + उ
कठिन-कठ् + इनच्
कठोर-कठ्+ओरन्
कपिल-कम्+इलच्
करुण-कृ + उनन्
कश्मल-कश् +मल
किंवदन्ति-किम्-वद्
+झिच्
कुटिल-कुट्+किलच्
कृत्स्न-कृत्+क्स्न
कृष्ण-कृष् + नक्
कोमल-कु + मल

क्रूर-कृ + रक्
क्षिप्र क्षिप् + रक्
क्षुद्र-क्षुद् + रक्
गभीर-गम् + ईरन्
गम्भीर-गम् + ईरन्
गौर-गु + रन्
चञ्चल-चञ्च्+अलच्
चटुल-चट्+उलच्
चण्ड-चन् + ड
चतुर-चत्+उरच्
चपल-चुप्+कल
चरम्-चर् + अमच्
चारु-चर् + उण्
चिक्कण-चित्+कण
तरल तृ + कल
तरुण-तृ + उनन्

तिग्म-तिज् + मक्
तीक्ष्ण-तिज् + क्स्न
तीव्र-तीव् + रक्
दक्षिण-दक्ष् + इनन्
दारुण-दृ + उनन्
दीन-दी+नक
धवल-धाव् + कलच्
धूसर-धू + सर
पंगु-पच + उ
पटु-पट् + उ
पाण्डु-पण्ड् + कु
पिशुन-पिश् + उनन्
पीवर-पा + ष्वरच्
पुष्कल-पुष् + कलच्
पृथु-प्रथ् + [illegible]
पेशल पिश् + अलच्

प्रथम-प्रथ + अमच्	रूक्ष-रूक्ष् + क्स	शिथिल-श्रथ+किरच्
बहु-बंह् + कु	रुचिर-रुच्+किरच्	शुक्र-शुच् + रक्
भयानक-भी+आनक	लघु-लङ्घ् + कु	शुचि-शुच् + इन्
भीम-भी + मक्	वक्र-वञ्च् + रक्	शुभ्र-शुभ् + रक्
भीरु-भी + क्रु	वदान्य-वद्+आन्य	श्याम-श्यै + मक
भूरि-भू + क्रिन्	वरेण्य वृ + एन्य	सरल-सृ + कल
मन्थर-मन्थ्+अरच्	वर्त्तुल-वृत्+उलच्	सूक्ष्म-सूच् + मन्
मलिन-मल्+इनच्	याम-या + म	स्थावर-स्था+वरच्
महत्-मह् + अति	विदुर-विद्+कुरच्	स्थिर-स्था + किरच्
मुद्गल-मुद् + गलच्	विशाल-विश्+कालन्	स्वादु-स्वद् + उण
मृदु-मृद् + कु	बृहत्-बृह् + अति	

Exercise—39

1. What is the difference between the use of क्त्वा & ल्यप् and क्त & क्तवतु ?

2. Give one word for— शास्त्राणि करोति इति । प्रभां करोति इति । हितं करोति । पूजामर्हति । ललाटं तपति । शत्रुं अदान । भयमिव दृश्यते । अस्तमुपितम् । नॄन् पाति । वसूनि धरति वा । नीयतेऽनेनेति । अप्रियः प्रियः भवति । प्रियं वदति यः सः । कामं दुग्धि वा । निशायां चरति इति । तमोऽपहन्ति यः ।

3. Derive— ग्लानिः, क्षान्तिः, जनकः, पाचकः, रञ्जकः, हन्ता, सविता, चाटुकारः, दिवाकरः, शत्रुघ्न, अंशहरः, मधुपः, बुधः, विद्रोही, स्थायी, विवेकी, परिश्रमी, परन्तपः, विश्वम्भरा, भयङ्करः, पण्डितम्मन्यः, आत्मम्भरिः, दुस्समाक्, परिषद्, सम्राट्, तस्करः, सहिष्णुः, घातुकः, निद्रालुः, भासुरः, नश्वरः, हिंस्रः, लिप्सुः, ईश्वरः, विदुरः, दात्रम्, चरित्रम्, वारिधिः, वेपथुः, अध्ययनम्, वाहनम्, स्वादः, भयम्, क्रोधः,

सुट्-प्रत्याहार

१ सुट् कात् पूर्वः—कृ धातु के ककार के पहले सम् इत्यादि उपसर्गों के परे सुट् होता है; और सुट् का स् रहता है। यथा, संस्कारः।

२ सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे समवाये च—भूषण और समूह अर्थ में सम्, परि और उप पूर्वक कृ धातु के पहले सुट् होता है। यथा, संस्करोति (भूषयतीत्यर्थः) संस्कुर्वन्ति (सङ्घीभवन्तीत्यर्थः)।

३ उपात् प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु च—प्रतियत्न, विकार वाक्याध्याहार (आकांक्षित एकदेशपूरण) अर्थ में उप पूर्वक कृ धातु के पहले सुट् होता है। यथा, उपस्कृत्य कन्या (अलंकृतेत्यर्थः), उपस्कृत्य ब्राह्मणाः (समुदिता इत्यर्थः), एधोदकस्योपस्कुरुते, गुणाधानं करोति; उपस्कृतं भुंक्ते (विकृतमित्यर्थः) उपस्कृतं ब्रूते (वाक्याध्याहारेण ब्रूते इत्यर्थः)।

४ हिंसायां प्रतेश्च—हिंसा अर्थ में उप और प्रति पूर्वक कृ धातु के पहले सुट् होता है। यथा, उपस्किरति, प्रतिस्किरति।

५ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने—आलेखन अर्थ में अप पूर्वक [illegible] धातु के पहले सुट् होता है। यथा, अपस्किरते वृषो हृष्टः।

६ गोस्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु—सेवित, असेवित और प्रमाण अर्थ में पद शब्द परे हो तो गो शब्द के परे सुट् होता है। यथा, गोभिः सेवितः गोस्पदः। आस्पदं प्रतिष्ठायाम्।



व्याकरण-कौमुदी

चतुर्थ भाग

विभक्ति-निर्णय

१ संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः—जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध हो उसे विभक्ति कहते हैं। यथा, घटः, घटौ, घटाः। यहाँ घट शब्द में प्रथमा विभक्ति रहने से एक घट, दो घट और बहुत घट का बोध होता है। घटं पश्यति, यहाँ घटं में द्वितीया विभक्ति रहने से कर्मकारक का बोध होता है।

२ विभक्तयः सप्त—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी ये सात विभक्तियाँ हैं।

प्रथमा

१ अभिधेयमात्रे प्रथमा—किसी भिन्न वस्तु के नाम का बोध हो तो उस (प्रातिपदिक) में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, घटः, लता, पुष्पम्, गिरिः, नदी, जलम्, रामः, सीता, लक्ष्मणः, एकः, द्वौ, त्रयः, द्रोणः इत्यादि।

२ कर्तरि—कर्तृकारक में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, रामः क्रीडति, गौः शब्दायते, मेघो गर्जति।

३ सम्बोधने—सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, हे पितः, हे भ्रातरौ, हे पुत्राः।

४ अव्ययैर्योगे च (इति-नाम-अव्ययादिभिः)—इति, नामादि कुछ अव्ययों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा अयोध्यानगरे दशरथ इति ख्यातो भूपतिरासीत्, पाण्डवानां

सङ्गः परित्यक्तुं साम्प्रतम्, विषवृक्षोऽपि संवर्द्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्।

द्वितीया

७ कर्मणि द्वितीया—कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, पुष्पं चिनोति, अन्नं भुंक्ते, जलं पिबति।

८ क्रियाविशेषणे च—क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है; एकवचन-क्लीबलिङ्ग में इसका प्रयोग होता है। यथा, सत्वरं धावति, द्रुतं पलायते, मृदु हसति, साधु भाषते।

९ अध्वकालाभ्यामत्यन्तसंयोगे (कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे)—अत्यन्त संयोग अर्थात् व्याप्ति अर्थ में अध्व (मार्ग) वाचक और कालवाचक शब्दों के उत्तर द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, अध्ववाचक—क्रोशं गिरिः स्थितः, योजनं भृत्येनानुगतः। कालवाचक—दिवसमुपवसति, मासमधीते। क्रोशं, योजनं, दिवसं, मासं व्याप्य इत्यर्थः।

१० अभिपरिसर्वोभयैस्तसन्तैः (उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते। अभितः परितः समया निकषाहाप्रतियोगेऽपि)—तस् प्रत्ययान्त अभि, परि, सर्व, और उभय शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, ग्राममभितः, गृहं परितः, उद्यानं सर्वतः, नदीमुभयतः।

११ प्रत्यनुधिक् निकषान्तरान्तरेण-यावद्भिः (उभ...... । अन्तरान्तरेणयुक्ते। कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया। मध्य अर्थ। विना अर्थ)—प्रति, अनु, धिक्, निकषा, अन्तरा, अन्तरेण और यावत् शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, दीनं प्रति दया, राममनुजातो लक्ष्मणः, कृपणं धिक्, ग्रामं निकषा नदी,

स त्वां मां च अन्तरा उपविष्टः, श्रममन्तरेण विद्या न भवति, वनं यावदनुसरति।

तृतीया

१२ तृतीया करणे (कर्तृकरणयोस्तृतीया)—करण कारक और अनुक्त कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, हस्तेन गृह्णाति, चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति। अनुक्त कर्त्ता और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, रामेण बाणेन हतो वालिः।

१३ सहार्थैः (सहयुक्तेऽप्रधाने) सार्कं सार्द्धं समं योगेऽपि)—सहार्थ शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम, केनापि सार्द्धं विरोधो न कर्त्तव्यः। सहार्थ शब्दों के अप्रयोग में भी होता है, यथा, पिता पुत्रेण गच्छति (पुत्रेण सहेत्यर्थः)।

१४ ऊनवारणप्रयोजनार्थैश्च—ऊन (कम), वारण और प्रयोजन अर्थ वाले शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, ऊनार्थ-पदेन ऊनः, विद्यया हीनः, अहङ्कारेण शून्यः। वारणार्थ-अलं विवादेन, कलहेन किम्। प्रयोजनार्थ-धनेन प्रयोजनम्, कोऽर्थः कलहेन।

१५ अध्वकालाभ्यामपवर्गे (अपवर्गे तृतीया)—अपवर्ग अर्थात् क्रियासमाप्ति और फलप्राप्ति अर्थ बोध होने से अध्ववाचक और कालवाचक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, अध्ववाचक-क्रोशेनानुवाकोऽधीतः। कालवाचक—त्रिभिरहोभिः गतम्, मासेन व्याकरणमधीतम्। मासं व्याकरणमधीतम् न तु स्फुरति, इस स्थान में अध्ययन के फल की प्राप्ति

नहीं समझी जाती, इसलिये तृतीया विभक्ति न होकर द्वितीया विभक्ति हुई है।

१६ येनाङ्गविकारः (येनाङ्गविकारः)—जिस अङ्ग के विकार से अङ्गी का विकार लक्षित पड़ता है, उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, अक्ष्णा काणः, पादेन खञ्जः, कर्णेन बधिरः, पृष्ठेन कुब्जः।

१७ इत्थंभूतलक्षणे (इत्थम्भूतलक्षणे)—जिस लक्षण या चिह्न द्वारा कोई व्यक्ति सूचित हो उस लक्षणबोधक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, जटाभिः तापसमपश्यम्, भूषाभिः शिशुमदर्शम्, पुस्तकेन छात्रमद्राक्षम्।

१८ प्रकृत्यादिभ्यश्च (प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्)— स्थलविशेष में प्रकृति प्रभृति शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, प्रकृत्या चारुः, स्वभावेन सरलः, आकृत्या सुन्दरः, जात्या ब्राह्मणः, गोत्रेण शाण्डिल्यः, नाम्ना सोमदत्तः, प्रायेण दुःखितः, वेगेन गच्छति, त्वरया धावति, यत्नेन लिखति, सुखेन स्वपिति, दुःखेन याति, क्लेशेन वदति।

चतुर्थी

१९ चतुर्थी सम्प्रदाने—सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, दरिद्राय धनं ददाति, भिक्षवे भिक्षां ददाति।

२० तादर्थ्ये (तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या)—कोई वस्तु या क्रिया जिसके निमित्त समझी जाती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, यूपाय दारु, कुण्डलाय हिरण्यम्, अश्वाय घासः, रन्धनाय स्थाली, ज्ञानाय अध्ययनम्, दीनाय धनोपार्जनम्, स्नानाय नदीं याति, पाकाय अग्निमाहरति।

२१ निवृत्तौ निवर्तनीयात्—निवृत्ति अर्थ में जिससे निवृत्ति

ते हैं उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, मशकाय
, मशकनिवृत्तये इत्यर्थः, आतपाय छत्रम् (आतपनिवृत्तये),
ासायै जलम् (पिपासानिवृत्तये), तापाय स्नानम्, (ताप-
त्तये), रोगाय औषधम् (रोगनिवृत्तये), पापाय प्रायश्चित्तम्
निवृत्तये)।

२२ सम्पद्यमानात् क्लृप्यादेः (क्लृपि सम्पद्यमाने च)—क्लृपि
दि धातु के प्रयोग में सम्पद्यमान के उत्तर चतुर्थी विभक्ति
है। यथा, भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते, ज्ञानं सुखाय सम्पद्यते,
स्वर्गाय भवति, अधर्मो नरकाय भवति।

३ हितसुखनमोभिः (नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च। हितयोगे
हित, सुख और नमस् शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति
है। यथा, हितं पुत्राय, सुखं शिष्याय, नमः गुरवे।

स्वस्तिस्वाहास्वधावषड्भिः (नमःस्वस्ति……)—स्वस्ति
, स्वधा और वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति
है। यथा, स्वस्ति प्रजाभ्यः; स्वाहा अग्नये; स्वधा
; इन्द्राय वषट्।

समर्थार्थैश्च—समर्थार्थक शब्द के योग में चतुर्थी
होती है। यथा, समर्थो मल्लो मल्लाय, अलं मल्लो
, शक्तो मल्लो मल्लाय, प्रभुर्मल्लो मल्लाय। समर्थार्थक
के योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा, प्रभवति
मल्लाय, शक्नोति मल्लो मल्लाय।

मन्यकर्म्मण्यनादरे विभाषा (मन्यकर्म्मण्यनादरेविभाषाऽप्राणिषु)-
समझे जाने से दिवादिगणीय मन् धातु के अवज्ञा-
कर्म्म में विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा,
तृणाय मन्यते, नाहं त्वां कुक्कुराय मन्ये। पक्षान्तर में
विभक्ति होती है, पर शृगाल, काक, शुक, नौ और

अन्न शब्द कर्म्म हो तो चतुर्थी नहीं होती; यथा त्वामहं शृगालं मन्ये ।

२७ वा गत्यर्थकर्म्मणि चेष्टायाम् (गत्यर्थकर्म्मणि द्वितीया-चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि)—चेष्टा समझे जाने से गत्यर्थ धातु के कर्म में विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, ग्रामाय गच्छति, व्रजाय व्रजति । पक्षान्तर में द्वितीया होती है; पर चेष्टा न समझी जाने से नहीं होती; यथा, मनसा मथुरां गच्छति । अध्ववाचक कर्म्म हो तो नहीं होती; यथा, अध्वानं गच्छति, पन्थानं गच्छति ।

२८ क्रियार्थोपपदस्य च कर्म्मणि स्थानिनः—अप्रयुज्यमान तुमन्त धातु के कर्म्म में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, फलेभ्यो याति, फलान्याहर्त्तुं याति इत्यर्थः ।

२९ तुमर्थाच्च भाववचनात्—तुमर्थयुक्त भाववाच्य में विहित प्रत्ययान्त शब्द के उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, यागाय याति, यष्टुं याति इत्यर्थः ।

पञ्चमी

३० अपादाने पञ्चमी—अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, अश्वात् पतितः, गृहाच्चलितः, जलादुत्थितः ।

३१ ल्यब्लोपे कर्म्मण्यधिकरणे च—ल्यप् प्रत्ययान्त पद के अप्रयोग में कर्म और अधिकरण कारक में पञ्चमी होती है। यथा, प्रासादात् प्रेक्षते, प्रासादमारुह्य इत्यर्थः; आसनात्प्रेक्षते, आसने उपविश्य इत्यर्थः ।

[illegible]—कालपरिमाण और अध्वपरिमाण के अर्थबोधक शब्द के उत्तर पञ्चमी विभक्ति

ते है। यथा, कालपरिमाण—अग्रहायणात् पञ्चमासाः, माघात्
ये मासि, विवाहात् सप्तमे दिने। अध्वपरिमाण—पाटलि-
त् शतक्रोशाः, प्रयागात् त्रिंशत्क्रोशाः, कुरुक्षेत्रात् दश-
नानि।

३३ निकृष्टादेकोत्कर्षे (पञ्चमी विभक्ते)—दो या अधिक वस्तुओं
च में किसी एक वस्तु की उत्कर्षता (अधिकता) प्रकट
ाय तो निकृष्ट वस्तु में पञ्चमी होती है। यथा, धनात्
गरीयसी, चैत्रो मैत्रात् बलीयान्, माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्यः
तराः।

मर्यादाभिविध्योराङ्योगे (पञ्चम्यपाङ्परिभिः आङ् मर्यादाभि-
आङ् मर्यादावचने)—मर्यादा और अभिविधि (व्याप्ति)
मझे आने पर 'आ' अव्यय के योग में पञ्चमी होती है।
मर्यादा—आ जन्मनः, आ शैशवात्, आ समुद्रात्, आ
लात्। अभिविधि—आ वनात् वृष्टो देवः, वनस्य प्रान्तं
त्यर्थः, आ सकलात् ब्रह्म, सकलं व्याप्य इत्यर्थः।

अन्यार्थैः (अन्यारादितरर्त्ते दिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते)—
शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा,
यः कः परित्रातुं समर्थः, घटः पटादितरः, इदमस्मा-
अन्यार्थ क्रिया के योग में भी होती है; यथा, स्वर्पो
यते।

दिग्देशकालवाचिभिः (अन्यारादितरर्त्ते......)—दिग्वाचक,
क और कालवाचक शब्द के योग में पञ्चमी होती है।
ग्वाचक—पूर्वो ग्रामात्, उत्तरो गृहात्। देशवाचक—
त्रात् पूर्वदेशे। कालवाचक—चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः,
प्राक्, शयनात् पूर्वम्, उत्थानम् परतः, प्रस्थाना-
।

३७ बहिरारात्प्रभृतिभिः— बहिस्, आरात् और प्रभृति शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, गृहात् बहिः, ग्रामात् बहिः (मतदीश्वर के मत से बहिः शब्द के योग में पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति होती है), आरात् वनात्, आरात् उद्यानात्, जन्मतः प्रभृति, शैशवात् प्रभृति।

३८ आ-आहिभ्याञ्च (अन्यारादितरर्ते……)— आ और आहि प्रत्ययान्त शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, उद्यानात् उत्तरा गृहम्, गृहादुत्तराहि सरः, हिमालयात् दक्षिणा भारतवर्षम्, प्रयागात् दक्षिणाहि विन्ध्यः।

३९ ऋतेयोगे द्वितीया च—ऋते शब्द के योग में पञ्चमी और द्वितीया होती है। यथा, ज्ञानादृते, ज्ञानमृते।

४० पृथग्विनाभ्यां द्वितीयातृतीये च (पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्)—पृथक् और विना शब्द के योग में पञ्चमी, द्वितीया और तृतीया होती है। यथा, चैत्रात् पृथक्, चैत्रं पृथक्, चैत्रेण पृथक्; श्रमात् विना, श्रमं विना, श्रमेण विना।

४१ स्तोककृच्छ्राल्पकतिपयेभ्यस्तृतीया च (करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य)—स्तोक, कृच्छ्र, अल्प और कतिपय शब्द में पञ्चमी और तृतीया होती है। यथा, स्तोकान्मुक्तः, स्तोकेन मुक्तः, कृच्छ्रान्मुक्तः, कृच्छ्रेण मुक्तः, अल्पान्मुक्तः, अल्पेन मुक्तः, कतिपयान्मुक्तः, कतिपयेन मुक्तः। विशेषण होने से नहीं होता। यथा, स्तोकः पाकः, स्तोकं पचति।

४२ हेतौ च—हेतु अर्थ बोध होने से हेतुबोधक शब्द के योग में तृतीया और पञ्चमी होती है। यथा, धनात् कुलम्, धनेन कुलम्, भयात् कम्पः, भयेन कम्पः, हर्षात् नृत्यति, नृत्यति, दुःखात् रोदिति, दुःखेन रोदिति।

षष्ठी।

४३ षष्ठी सम्बन्धे (षष्ठी शेषे)—सम्बन्ध में षष्ठी होती है। यथा, मम पिता, तव पुत्रः, तस्य भ्राता, महिषस्य शृङ्गम्, गोदुग्धम्, नद्या जलम्, वृक्षस्य छाया, अग्नेः शिखा, वायोर्वेगः, जलस्य प्रवाहः।

४४ कर्तृकर्मणोः कृति—कृत् प्रत्यय के प्रयोग में कर्त्ता और कर्म्म में षष्ठी होती है। यथा; कर्त्ता में–शिशोः शयनम्, अश्वस्य गतिः, तव पिपासा, मम बुभुक्षा। कर्म्म में–अन्नस्य पाकः, पयसः पानम्, सुखस्य भोगः, धनस्य दाता, वृक्षस्य छेदकः।

४५ उभयप्राप्तौ कर्म्मणि—यदि कर्त्ता और कर्म्म दोनों को प्राप्ति हो तो केवल कर्म्म में षष्ठी होती है। यथा, गवां दोहो गोपेन, पयसः पानं शिशुना, धनस्य दानं नृपेण, जलस्य शोषणं सूर्य्येण, अर्थस्य हरणं चौरेण।

(क) क्वचिद्विभाषा कर्त्तरि—कहीं कहीं कर्त्ता में विकल्प से षष्ठी होती है। यथा, घटस्य कृतिः, कुम्भकारेण कुम्भकारस्य वा, चन्द्रस्य विदृक्षा मया मम वा, शिष्यस्य प्रशंसा गुरुणा गुरोर्वा, शब्दानामनुशासनम्, आचार्य्येण आचार्य्यस्य वा।

४६ न लोकाद्देः (न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृणाम्)। –शतृ, शानच् क्वसु, कानच्, स्यतृ और स्यमान प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी नहीं होती। यथा, शतृ–गृहं गच्छन्, अन्नं पिबन् (द्विषो विभाषा–द्विष् धातु में विकल्प से होती है; यथा, सुरं द्विषन्, सुरस्य द्विषन्)। शानच्–अन्नं भुञ्जानः, व्याकरणमधीयानः। क्वसु–ओदनं पेचिवान्, ग्रामं जग्मिवान्। कानच्–गुरुं ववन्दानः, शास्त्रं शुश्रुवाणः। स्यतृ-गृहं गमिष्यन्, वेदं पठिष्यन्। स्यमान-गुरुं सेविष्यमाणः, धनं दास्यमानः।

५७ न तुमुनादिः (न लोका...)— तुमुन्, क्त्वा, ल्यप् और णमुल् प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति नहीं होती। यथा, तुमुन्—गृहं गन्तुम्, चन्द्रं द्रष्टुम्। क्त्वा—जलं पीत्वा, फलं गृहीत्वा। ल्यप्—व्याकरणमधीत्य, गृहमागत्य। णमुल्—गुरुं सेवं सेवम्, शास्त्रं श्रावं श्रावम्।

५८ ओकारान्त (न लोका...) उकारान्त कृत् प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी नहीं होती। यथा, जलं पिपासुः, रिपून् जिष्णुः, शिलां क्षिप्नुः, विपदां निराकरिष्णुः, फलं गृहयालुः।

५९ उकशीलतृन्भविष्यण्णिनाम् (न लोका.... । —अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः) उक, शीलार्थ तृन् और भविष्यदर्थ णिन् प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी नहीं होती। यथा, उक—गृहं गामुकः, जलं पातुकः, शत्रुं घातुकः (कामुक शब्द के प्रयोग में होती है; यथा, धनस्य कामुकः)। शीलार्थ तृन्—धनं दाता, अन्नं दाता, विपदां निराकर्ता। भविष्यदर्थ णिन्—धनं दायी, पूर्तं भोजी, गृहं गामी।

६० न खलर्थानाम् (न लोका...)—खलर्थ प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी नहीं होती। यथा, नैतत् सुकरं भवता, नैतद्दुष्करं तेन, सर्वमीषत्कारं सुधिया, मया सुमर्षणः शत्रुः, त्वया दुःशासनो रिपुः।

N. B. सु, दुर् और ईषत् शब्द के योग में धातु के उत्तर जो ख और अन होता है उसे खलर्थ प्रत्यय कहते हैं।

६१ न निष्ठायाः—निष्ठा प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी नहीं होती। यथा, क्त—तेन व्याकरण मधीतम्, मया जलं पीतम्, त्वया चन्द्रो दृष्टः। क्तवतु—स गृहं गतवान्, अहं चन्द्रं दृष्टवान्, त्वं वेदं अधीतवान्।

६२ क्तस्य वर्तमाने (क्तस्य च वर्तमाने)—वर्तमान काल में विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी होती है। यथा, राज्ञां मतः

राजभिर्मन्यते इत्यर्थः, सतां पूजितः; सद्भिः पूज्यते इत्यर्थः।

५३ अधिकरणवाचिनश्च— अधिकरण कारक में विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी होती है। यथा, इदमेषां शयितम्; एतद्देषामासितम्।

५४ विभाषा भावे—भाववाच्य विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में कर्त्ता में विकल्प से षष्ठी होती है। यथा, मम स्नातम्, मम स्थितम्, मम शयितम्, मम जागरितम्। पक्षान्तर में तृतीया होती है।

५५ कृत्यानां कर्त्तरि वा—कृत्य प्रत्यय के प्रयोग में कर्त्ता में विकल्प से षष्ठी होती है। यथा, पुस्तकं तव पाठ्यम्, चन्द्रो मम द्रष्टव्यः, गुरुस्तस्याराधनीयः। पक्षान्तर में तृतीया होती है।

५६ कर्मणि जासि-पिष्-निप्रहणां हिंसायाम् (जासि निप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्)—हिंसा अर्थ समझे जाने से जासि, पिष् या नि वा प्र पूर्वक हन् धातु के कर्म में षष्ठी होती है। यथा, चौरस्य उज्जासयति; शत्रोऽपिनष्टि। नि प्र [illegible] व्यस्त, समस्त और विपर्यस्त भाव में होने से भी होता है; यथा, निहन्ति, प्रहन्ति, निप्रहन्ति, प्रणिहन्ति वा चौरस्य।

५७ वा स्मृत्यर्थदयेशां कर्मणि (अधीगर्थदयेशां कर्मणि)—स्मरणार्थ दय् और ईश् धातु के कर्म में विकल्प से षष्ठी होती है। यथा, पुत्रो मातुः स्मरति, दाता दरिद्रस्य दयते, पिता पुत्रस्य ईष्टे। पक्षान्तर में द्वितीया होती है।

५८ तृप्त्यर्थानाम् विभाषा करणे—तृप्त्यर्थ धातु के करण कारक में विकल्प से षष्ठी होती है। यथा, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानाम्, अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा। पक्षान्तर [illegible] तृतीया होती है।

५९ अस्तादृस्वतस्यतदर्थः (षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन)—अस्तात्, अति, आति और अतसु प्रत्यय के योग में षष्ठी होती है। अस्तात्—

पुरस्तादुद्यानस्य, उपरिष्टात् मञ्चस्य । अति-पुरो नगरस्य, अधोवृक्षस्य । अति-उत्तरात् समुद्रस्य, दक्षिणात् हिमालयस्य अतह-दक्षिणतो ग्रामस्य, उत्तरतो गृहस्य ।

६० कृत्वसुचोःकालाधिकरणे (कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे)—कृत्वसु और सुच् प्रत्यय के प्रयोग में कालवाचक शब्द के अधिकरण में षष्ठी होती है (वोपदेव और क्रमदीश्वर के मत से विकल्प से होती है ।) यथा, कृत्वसु—पञ्चकृत्वो दिवसस्याधीते, सप्तकृत्वो दिवसस्यागच्छति । सुच्-द्विर्दिवसस्य भुङ्क्ते, त्रिर्दिवसस्य स्वपिति ।

६१ एनपा द्वितीया च—एनप् प्रत्ययान्त शब्द के योग में षष्ठी और द्वितीया होती है । यथा, दक्षिणेन वाटिकायाः सरः, दक्षिणेन वृक्षवाटिकां सरः ।

६२ तुल्यार्थैस्तृतीया च (तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्)—तुल्यार्थ शब्द के योग में षष्ठी और तृतीया होती है । यथा, मम तुल्यः; मया तुल्यः; तव समः; त्वया समः; तस्य सदृशः तेन सदृशः ।

६३ आशिषि कुशलादिभिश्चतुर्थी च (चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः)—आशीर्वाद समझे जाने से कुशल, निरामय, हित, सुख, अर्थ, आयुष्य और वैसे अर्थ के शब्दों में षष्ठी और चतुर्थी होती है । यथा, कुशलं देवदत्तस्य भूयात्, कुशलं देवदत्ताय भूयात्; निरामयं देवदत्तस्य भूयात्, निरामयं देवदत्ताय भूयात्; सुखं देवदत्तस्य भूयात्, सुखं देवदत्ताय भूयात् ।

६४ विवक्षया षष्ठी—कर्त्ता कर्म्म कर्म आदि कारकों में षष्ठी विभक्ति होती है उसे 'विवक्षया षष्ठी' कहते हैं । यथा, सतां मतम्, मातुः स्मरति, शम्भोधरणयोर्नतेः, फलानां तृप्तः इत्यादि ।

१५ दूरान्तिकार्थैः पञ्चमी च (दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्)—दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्द के योग में षष्ठी और पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा, दूरं ग्रामात्, अन्तिकं नगरस्य, अन्तिकं नगरात् ।

१६ निमित्तार्थे हेतुप्रयोगे (षष्ठी हेतुप्रयोगे)— हेतु शब्द के प्रयोग में निमित्तबोधक शब्द के उत्तर षष्ठी विभक्ति होती है। (वोपदेव और भट्टोजि दीक्षित इस स्थान में तृतीया आदि पाँच विभक्तियों का विधान करते हैं) । यथा, अन्नस्य हेतोर्वसति, अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन् ।

१७ सर्वनाम्नस्तृतीया च—हेतु शब्द के प्रयोग होने से निमित्त-बोधक सर्वनाम शब्द के उत्तर षष्ठी और तृतीया होती है (वोपदेव, क्रमदीश्वर और भट्टोजि दीक्षित प्रथमा इत्यादि सातो विभक्तियों का विधान करते हैं)। यथा, कस्य हेतोः स आगतः; केन हेतुना स आगतः ।

सप्तमी

१८ सप्तम्यधिकरणे—अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, गृहे तिष्ठति, शय्यायां शेते, नद्यां स्नाति ।

१९ यस्य च भावेन भावलक्षणम्—यदि एक क्रिया के काल द्वारा दूसरी क्रिया का काल निश्चित हो तो उस क्रिया और उसके कर्त्ता में भावे सप्तमी होती है। यथा, रवावस्तं गते गतः, रवेरस्तगमनसमकालं गत इत्यर्थः । विधावुदिते समागतः, विधूदयसमकालं समागत इत्यर्थः ।

२० साधुनिपुणाभ्यामर्चायाम् (साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः)— प्रशंसा समझी जाने से साधु और निपुण शब्द के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, व्याकरणे साधुः, साहित्ये निपुणः (वोपदेव के मत से षष्ठी और सप्तमी दोनों होती है) ।

७१ क्तस्य सहेनिनाकर्मणि (क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम्)—इनि सहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में कर्म्म में सप्तमी होती है। यथा, अधीतं व्याकरणमनेन अधीती व्याकरणे, अवकीर्णं व्रत-मनेन अवकीर्णी व्रते।

७२ अध्वनो व्यवधौ प्रथमा च (यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी। तद्युक्तोदध्वनः प्रथमा-सप्तम्यौ)—व्यवधान समझे जाने से अध्व-वाचक शब्द के उत्तर सप्तमी और प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, ग्रामो वनात् पञ्चसु क्रोशेषु पञ्चक्रोशा वा, पञ्चक्रोश व्यवधाने विद्यते इत्यर्थः। प्रयागः पाटलिपुत्रात् दशसु योजनेषु दश योजनानि वा, दशयोजनव्यवधाने विद्यते इत्यर्थः।

७३ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च—प्रसित और उत्सुक शब्द के योग में सप्तमी और तृतीया विभक्ति होती है। यथा, धनेषु प्रसितः, धनैः प्रसितः, विद्यायामुत्सुकः विद्ययोत्सुकः।

७४ क्रियामध्येऽध्वकालाभ्यां पञ्चमी च (सप्तमी पञ्चम्यौकारकमध्ये)—दो क्रियाओं के मध्यवर्त्ती अध्ववाचक और कालवाचक शब्द के उत्तर सप्तमी और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, अध्व-वाचक— अयमिह स्थित्वा क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत्। कालवाचक—अयमद्य भुक्त्वा द्व्यहे द्व्यहाद्वा भोक्ता।

७५ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया तृतीयापञ्चम्यश्च (दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च)— दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्द के उत्तर सप्तमी, द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, दूरे ग्रामस्य, दूरं ग्रामस्य, दूरेण ग्रामस्य, दूरात् ग्रामस्य। अन्तिके गृहस्य, अन्तिकं गृहस्य, अन्तिकेन गृहस्य, अन्तिकात् गृहस्य। विशेषण होने से नहीं होता है। यथा, दूरो ग्रामः, दूरः पन्थाः।

७६ षष्ठी चानादरे—क्रिया द्वारा निरादर समझा जाय तो जिसका निरादर हो उसमें और क्रिया में सप्तमी और षष्ठी

होती है। यथा, रुदति शिशौ जगाम, रुदतः शिशोर्जगाम; रुदन्तं शिशुमनादृत्येत्यर्थः।

७६ स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च (स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च)—साक्षिन्, प्रतिभू, कुशल, स्वामिन्, ईश्वर, अधिपति, प्रसूत, आयुक्त और दायाद शब्द के योग में सप्तमी और षष्ठी होती है। यथा, विवादे साक्षी, विवादस्य साक्षी; व्यवहारे प्रतिभू, व्यवहारस्य प्रतिभू; मीमांसायां कुशलः, मीमांसायाः कुशलः; स्त्रियां प्रसूतः, स्त्रियाः प्रसूतः।

७७ यतश्च निर्द्धारणम्—जाति, गुण, क्रिया अथवा संज्ञा द्वारा समुदय-स्वजातीय से एक के पृथक्करण को निर्द्धारण कहते हैं। जिससे निर्द्धारण (पृथक्करण) किया जाय उसमें सप्तमी और षष्ठी होती है। यथा, मनुष्येषु क्षत्रियः शूरः, मनुष्याणां क्षत्रियः शूरः, गोषु कृष्णा बहुक्षीरा, गवां कृष्णा बहुक्षीरा; अध्वगेषु धावन्तः शीघ्रगामिनः, अध्वगानां धावन्तः शीघ्रगामिनः, छात्रेषु मैत्रः प्रवीणः, छात्राणां मैत्रः प्रवीणः।

७८ निमित्तात् कर्मसमवाये (निमित्तात् कर्मयोगे)— कर्म के साथ सम्बन्ध होने से निमित्तबोधक शब्द के उत्तर सप्तमी होती है। यथा, चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्, केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको (कस्तूरीमृगः) हतः। पक्षान्तर में चतुर्थी होती है, यथा, मुक्ताफलाय करिणम्, हरिणं पलाय इत्यादि।

N. B. अथवा 'मुक्ताफलमाहर्तुं' ऐसा करके 'क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः' सूत्र से इसमें चतुर्थी सिद्ध करते हैं।

कारक

१ क्रियान्वयि कारकम्— क्रिया के साथ जो सम्बन्ध है उसे कारक कहते हैं।

२ षट् कारकाणि— कर्त्ता, कर्म्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण, ये छः कारक हैं।

कर्त्ता

३ क्रियासम्पादकः कर्त्ता (स्वतन्त्रः कर्त्ता)—क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कारक कहते हैं। यथा, शिशुः क्रीड़ति, गौः शब्दायते, मेघो गर्ज्जति, गोपो दुग्धं दोग्धि, मालाकारः पुष्पं चिनोति, वानरो वृक्षमारोहति, राजा प्रजाः पालयति।

४ प्रयोजकश्च (तत्प्रयोजको हेतुश्च)— जो दूसरे को क्रिया के करने के लिये प्रवृत्त करता है उसे भी कर्त्ता कारक कहते हैं।

५ तृतीया प्रयोज्ये (कर्त्तृकरणयोस्तृतीया)— क्रिया की अणिजन्त अवस्था के कर्त्ता को णिजन्त होने पर प्रयोज्य कर्त्ता कहते हैं। प्रयोज्य कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, देवदत्त ओदनं पचति-यज्ञदत्तो देवदत्तेन ओदनं पाचयति। यहाँ देवदत्त 'पच्' क्रिया का अणिजन्त अवस्था में कर्त्ता था, णिजन्त अवस्था में प्रयोज्य कर्त्ता हुआ और तृतीया विभक्ति हुई है। यज्ञदत्त देवदत्त को 'पच्' क्रिया के लिये प्रवर्त्तित करता है इसलिये वह प्रयोजक कर्त्ता हुआ और इसमें प्रथमा विभक्ति हुई है।

६ गत्यर्थानां कर्म्मसंज्ञा प्रयोज्यस्य (गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्म्माकर्म्मकाणामणिकर्त्ता स णौ)— गमनार्थ धातु के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में कर्म्म-संज्ञा होती है। यथा, देवदत्तो गृहं गच्छति, यज्ञदत्तो देवदत्तं गमयति।

७ ज्ञानार्थानाञ्च (गतिबुद्धि......)— ज्ञानार्थ तथा भक्षार्थ धातु, शब्द्, नित्य अकर्मार्थ धातु के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में [illegible] है। यथा, ज्ञानार्थ—शिष्यो धर्मं बुध्यते, गुरुः

शिष्यं धर्मं बोधयति। अशनार्थ—पुत्रोऽन्नमश्नाति, माता पुत्रं मन्नं आशयति।

८ शब्दकर्म्मकाणामकर्म्मकाणाञ्च (गतिबुद्धि......)—पद, वाक्य, ग्रन्थ, उपदेश, तिरस्कार, प्रशंसा, प्रभृति शब्दकर्म्मक और ह्वे, क्रन्द, शब्दाय, जल्प्, भाष्, लप्, श्रु, वि-ज्ञा, उप-लभ् भिन्न अकर्म्मक धातु के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता की कर्म्म संज्ञा होती है। यथा शब्दकर्म्मक—शिष्यो वेदमधीते, गुरुः शिष्यं वेदमध्यापयति। अकर्म्मक—शिशुः शेते, माता शिशुं शाययति।

९ विभाषा हृकृञोः (हृक्रोरन्यतरस्याम्)—हृञ् और कृञ् धातु के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में विकल्प से कर्म्मसंज्ञा होती है। यथा, भृत्यो भारं हरति, प्रभुर्भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति, कुम्भकारो घटं करोति, यज्ञदत्तः कुम्भकारं कुम्भकारेण वा घटं कारयति।

१० कर्म्मभावयोस्तृतीया (कर्त्तृकरणयोस्तृतीया)— कर्म्मवाच्य और भाववाच्य के प्रयोग में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा; कर्म्मवाच्य—गोपेन दुग्धं दुह्यते, मालाकारेण पुष्पं चीयते, राज्ञा धनं दीयते। भाववाच्य—शिशुना रुद्यते, पुत्रा हस्यते, वृद्धेन सुप्यते।

११ कर्म्मसंज्ञायां प्रयोज्यकर्म्मणोः प्रथमाद्वितीये कर्म्मणि (बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्म्मकाणां निजेच्छया। प्रयोज्यकर्म्मण्यन्येषां ण्यन्तानां लादयो मताः)—जहाँ प्रयोज्य कर्त्ता की कर्म्म-संज्ञा हो वहाँ कर्म्मवाच्य के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में प्रथमा और कर्म्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, शिष्येण वेदोऽधीयते, गुरुणा शिष्यो वेदमध्याप्यते। यहाँ प्रयोज्य कर्त्ता 'शिष्य' में प्रथमा और कर्म्म 'वेद' में द्वितीया विभक्ति हुई। इसके अतिरिक्त, देवदत्तेन ओदनं पच्यते, यज्ञदत्तेन ओदनं पाच्यते।

१२ निवृत्तौ च प्रवृत्तिवत् विधानम्—क्रिया-प्रवृत्ति स्थल में ही समान कारक का विधान होता है, किन्तु क्रिया-प्रवृत्ति के सदृश क्रिया निवृत्ति में भी अर्थ विशेष तत्तत् कारक का विधान होता है। यथा, अश्वात् पतितः, अश्वान्न पतितः; अध्ययनाद्विरमति, अध्ययनान्न विरमति; भिक्षवे भिक्षां ददाति, भिक्षवे भिक्षां न ददाति; महामिदं स्वदते, महामिदं न स्वदते; हस्तेन गृह्णाति, हस्तेन न गृह्णाति; वस्त्रेणाच्छादयति, वस्त्रेण नाच्छादयति; गृहे तिष्ठति, गृहे न तिष्ठति; शय्यायां शेते, शय्यायां न शेते; जलं पिबति, जलं न पिबति; चन्द्रं पश्यति, चन्द्रं न पश्यति; मेघो वर्षति, मेघो न वर्षति; नदी वहति, नदी न वहति।

१३ विवक्षावशात् कारकाणि—जहाँ जो कारक विहित है वहाँ विवक्षावशतः (वक्ता के इच्छानुसार) दूसरा कारक भी होता है। यथा; गृहं गच्छति, गृहे गच्छति; गृहं प्रविशति, गृहे प्रविशति; पुष्पेभ्यः स्पृहयति, पुष्पाणि स्पृहयति; पुष्पेभ्यः स्पृहा, पुष्पेषु स्पृहा; भार्ये कुप्यति, भरी कुप्यति; गां दोग्धि, गोर्दुग्धं दोग्धि; नृपं धनं याचते, नृपाद्धनं याचते; वृक्षं पुष्पं चिनोति, वृक्षात् पुष्पं चिनोति; पुत्रं गृहं नयति, पुत्रं गृहे नयति; जलधिममृतं ममन्थुः, जलधेरमृतं ममन्थुः; शिष्याय विद्यां वितरति, शिष्ये विद्यां वितरति; हिमवतो गङ्गा प्रभवति, हिमवति गङ्गा प्रभवति।

कर्म

१४ क्रियया आक्रान्तं कर्म (कर्तुरीप्सिततमं कर्म)—क्रिया द्वारा जो आक्रान्त हो उसे कर्मकारक कहते हैं। यथा, गृहं प्रविशति, चन्द्रं पश्यति, ग्रामं गच्छति, अन्नं भुङ्क्ते, जलं पिबति,



पुष्पं चिनोति, वस्त्रं ददाति, वेदमधीते, वृक्षमारोहति, शाखां छिनत्ति, काष्ठं भिनत्ति।

१५ अधिशीङ्स्थासामधिकरणम् (अधिशीङ्स्थासां कर्म)—अधि पूर्वक शी, स्था और आस् धातुओं के अधिकरण की कर्म-संज्ञा होती है। यथा, शय्यामधिशेते गृहमधितिष्ठति, ग्राम-मध्यास्ते।

१६ उपान्वध्याङ्वसः—उप, अनु, अधि और आङ् पूर्वक वस् धातु के अधिकरण की कर्मसंज्ञा होती है। यथा, ग्राम-मुपवसति (उपवास अर्थ में होता है, उपवसति वने), गृहमनुवसति, नगरमधिवसति, गुरोरालयमावसति।

१७ अभिनिविशो विभाषा (अभिनिविशश्च)—अभि पूर्वक और नि पूर्वक विश् धातु के अधिकरण को विकल्प से कर्मसंज्ञा होती है। यथा, धर्म्ममभिनिविशते, धर्म्मेऽभिनिविशते।

१८ क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः सम्प्रदानम् (क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म)—उप-सर्ग पूर्वक क्रुध् और द्रुह धातु के सम्प्रदान कारक की कर्म-संज्ञा होती है। यथा, भृत्यमभिक्रुध्यति, शत्रुमभिद्रुह्यति।

१९ विभाषा दिवः करणम् (दिवः कर्म च)—दिव् धातु के करणकारक की विकल्प से कर्मसंज्ञा होती है। यथा; अक्षान् दीव्यति, अक्षैर्दीव्यति।

२० द्वे कर्म्मणि दुहादेः (अकथितम् च। दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छि-चिब्रूशासुजिमन्थमुषाम्। कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्)—दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मन्थ्, मुष् इत्यादि (दुहादि) और नी, हृ, कृष्, वह्, (न्यादि) धातुओं में दो कर्म्म होते हैं, प्रधान और अप्रधान। क्रिया के साथ प्रधान रूप से जिसका सम्बन्ध हो उसे प्रधान कर्म्म कहते हैं। यथा, गोपो गां दुग्धं दोग्धि, दरिद्रो राजानं धनं

ग्रामं, मालाकारो वृक्षं पुष्पं चिनोति, शिष्यो गुरुं धर्मं पृच्छति, पिता पुत्रं गृहं नयति, देवा जलधिममृतं ममन्थुः। यहाँ दुग्ध, धन, पुष्प, धर्म, गृह, अमृत प्रधान कर्म हैं और गौ, राजा, वृक्ष, गुरु, पुत्र, जलधि अप्रधान कर्म हैं। इन अप्रधान कर्मों को अकथित या अविवक्षित कर्म कहते हैं अर्थात् दोनों कर्मों में जिनमें अन्य कारक की प्राप्ति थी [illegible] और वक्ता की इच्छा विरुद्ध उन कारकों में प्रयुक्त न होकर कर्मकारक में प्रयुक्त होता है, उसीको अकथित, अविवक्षित या अप्रधान कर्म कहते हैं किन्तु विवक्षा होने से गोर्दुग्धं दोग्धि, राज्ञः धनं याचते, वृक्षात् पुष्पं चिनोति, गुरोर्धर्मं पृच्छति, पुत्रं गृहे नयति, जलधेरमृतं ममन्थुः इस प्रकार अपादानादि कारक भी हो सकते हैं।

२१ कर्मणि वाच्ये प्रथमा—कर्मवाच्य के प्रयोग में कर्मकारक की प्रथमा विभक्ति होती है। यथा; ग्रामो गम्यते चन्द्रो दृश्यते, वृक्ष आरुह्यते, शत्रुरभिद्रूयते।

२२ न्यादेः प्रधाने (गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्। बुद्धिभिक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया। प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां ण्यन्तानां लादयो मताः)—कर्मवाच्य के प्रयोग में नी, हृ, कृष् और वह् धातु के प्रधान कर्म में प्रथमा होती है। यथा; गौर्ग्रामं नीयते, ह्रियते, कृष्यते, उह्यते वा।

२३ दुहादेरप्रधाने (गौणे....)—कर्मवाच्य के प्रयोग में दुहादि धातुओं के अप्रधान कर्म में प्रथमा होती है। यथा, गौर्दुग्धं दुह्यते, राजा धनं याच्यते, चौरः शतं दण्ड्यते, गुरुर्धर्मं पृच्छ्यते, वृक्षः पुष्पं चीयते, शिष्यो धर्ममनुशिष्यते, जलधिरमृतं ममन्थे।

तण्डुलानोदनं पचति। गर्गान् शतं दण्डयति। व्रजमवरुणद्धि गाम्।

माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा । शतं जयति देवदत्तम् । देवदत्तं शतं मुष्णाति ।

करण

२४ साधकतमं करणम्—क्रिया के करने का जो सर्व्वप्रधान उपाय है उसे करणकारक कहते हैं। यथा; चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति, हस्तेन गृह्णाति, दात्रेण लुनाति, यष्ट्या प्रहरति, शरेण विध्यति, अश्वेन सञ्चरते, वस्त्रेण आच्छादयति।

सम्प्रदान

२५ यस्मै दानं सम्प्रदानम् (कर्म्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्)—जिसको कुछ दिया जाता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। यथा; दरिद्राय धनं ददाति, भिक्षवे भिक्षां ददाति, सर्वस्वं गुरवे दद्यात्।

२६ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः—रुच्यर्थक धातु के प्रयोग में प्रीयमाण (जिसकी प्रीति, तृप्ति या प्रसन्नता हो अथवा जिस पर उसका असर पहुँचता हो) में सम्प्रदान होता है। यथा; मोदकः शिशवे रोचते, इदं मह्यं स्वदते।

२७ स्पृहेरीप्सितः—स्पृहि धातु के प्रयोग में जिसके निमित्त स्पृहा की जाय उसमें सम्प्रदान होता है। यथा; धनाय स्पृहयति, पुष्पेभ्यः स्पृहयति।

२८ धारेरुत्तमर्णः—धारि धातुओं के प्रयोग में ऋण देनेवाला सम्प्रदान में होता है। यथा; तुभ्यं शतं धारयति, स्वं मह्यं सहस्रं धारयति।

२९ क्रियया यमभिप्रैति (क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्)—क्रिया द्वारा जिसको अभिप्रेत किया जाय उसमें सम्प्रदान

होता है। यथा, शिशवे ओदनमानयति, गुरवे दक्षिणामाहरति, पुत्राय चन्द्रं दर्शयति।

१० क्रोधद्रोहेर्ष्यासूयार्थानां तद्योगः (क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः)—क्रोधार्थक, द्रोहार्थक, ईर्ष्यार्थक और असूयार्थक धातु के प्रयोग में जिस पर क्रोध इत्यादि हो वह सम्प्रदान होता है।

११ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः प्रवर्त्तकः (प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता)—प्रति पूर्वक और आङ् पूर्वक श्रु धातु के प्रयोग में जिसको देने की प्रतिज्ञा की जाय वह सम्प्रदान में होता है। यथा; दरिद्राय धनं प्रतिशृणोति, आशृणोति वा; दरिद्राय मह्यं धनं देहीति प्रार्थितः प्रतिजानीते इत्यर्थः।

अपादान

१२ यतो विश्लेषोऽपादानम् (ध्रुवमपायेऽपादानम्)—जिससे कोई वस्तु अलग हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। यथा, अश्वात् पतितः, हस्तात् भ्रष्टः, जलादुत्थितः, गृहात् प्रस्थितः, विदेशात् प्रत्यागतः।

१३ भीत्रार्थानां भयहेतुः—भयार्थ और त्राणार्थ धातु के प्रयोग में भय के हेतु में अपादान होता है। यथा; भयार्थ—व्याघ्राद् बिभेति, महीपात् त्रस्यति। त्राणार्थ—भल्लूकात् त्रायते, भल्लूकात् रक्षति।

१४ हेतुरुत्पत्तेः (जनिकर्त्तुः प्रकृतिः)—उत्पत्ति के कारण में अपादान होता है। यथा; बीजादङ्कुरो जायते, पितुः पुत्रो जायते, दुग्धात् घृतमुत्पद्यते, धर्मात् सुखं भवति, अधर्मात् दुःखमुद्भवति।

१५ आविर्भवनमुर्भुवः (भुवः प्रभवः)—भू धातु के प्रयोग में

जिस स्थान में (जहाँ से) किसी वस्तु का प्रकाश या आविर्भाव हो उसमें अपादान होता है। यथा, हिमवतो गङ्गा प्रभवति, वाल्मीकाग्रात् धनुःखण्डमाखण्डलस्य, आविर्भवतीत्यर्थः।

३६ विरामार्थानां यतो विरतिः (जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्)—विरामार्थक धातु के प्रयोग में जिससे विराम हो उसमें अपादान होता है। यथा, अध्ययनाद्विरमति, कलहान्निवर्तते।

३७ पराजेरसह्यम् (पराजेरसोढः)—परा पूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य विषय में अपादान होता है। यथा, अध्ययनात् पराजयते, पापात् पराजयते, अध्ययनं पापाञ्च सोढुमसमर्थ इत्यर्थः।

३८ यस्यादर्शनमिच्छति (अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति)—जिससे कोई वस्तु छिपाना चाहते हैं उसमें अपादान होता है। यथा, गुरोरन्तर्धत्ते पितुर्निलीयते, दस्योर्लुकायते, गुरुः पिता दस्युर्वा न मां पश्येदिति, लज्जया भयेन वा तद्दर्शनपथादपसरतीत्यर्थः।

३९ यतो जुगुप्सा तदर्थानाम् (जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्)—जुगुप्सा (hating) अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा हो उसमें अपादान होता है। यथा, पापाज्जुगुप्सते, नरकात् बीभत्सते।

४० लज्जार्थानां यतस्त्रपा—लज्जार्थक धातु के प्रयोग में जिससे लज्जित हो उसमें अपादान होता है। यथा, गुरोर्लज्जते, पितुस्त्रपते, मातुर्जिह्रेति।

४१ अधीत्यर्थानामध्यापयिता (आख्यातोपयोगे)—अध्ययनार्थ धातु के प्रयोग में अध्यापक में अपादान होता है। यथा, उपाध्यायादधीते, गुरोः पठति।

४२ वारणार्थानामीप्सितः—धारण अर्थ के धातु के प्रयोग में जिससे निवारण करता हो उसमें अपादान होता है। यथा; अग्नेभ्यः काकं वारयति, यवेभ्यश्छागं निषेधति, व्यसनात् पुत्रं निवारयति।

४३ श्रुत्यर्थानां श्रावयिता (आख्यातोपयोगे)—श्रवणार्थक धातु के प्रयोग में जो सुनाने वाला है उसमें अपादान होता है। यथा, गुरोः शास्त्रं शृणोति, नटात् गीतमाकर्णयति, कस्मात् श्रुतं भवता, मया श्रुतमिदं तातात्।

४४ ग्रहणप्राप्त्यर्थानां तत्स्थानम् (जुगुप्सा ...)—ग्रहणार्थक और प्राप्त्यर्थक धातु के प्रयोग में ग्रहण स्थान और प्राप्तिस्थान में अपादान होता है। यथा; ग्रहणार्थक-आचार्यात् उपदेशं गृह्णाति, प्रजाभ्यः करमादत्ते। प्राप्त्यर्थक-उपाध्यायात् विद्यां प्राप्नोति, गुरोर्ज्ञानं लभते।

४५ प्रमादार्थानां यतः प्रमादः (जुगुप्सा ...)—प्रमाद अर्थ के धातु के प्रयोग में जिससे प्रमाद हो उसमें अपादान होता है। यथा; धर्मात् प्रमाद्यति, अध्ययनादनवधानम्।

अधिकरण।

४६ आधारोऽधिकरणम्—कर्ता और कर्म के आधार को अधिकरण कहते हैं। आधार तीन प्रकार के होते हैं, ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। यथा ऐकदेशिक—वने वसति, वनैकदेशे इत्यर्थः, नद्यां स्नाति, गृहे स्वपिति, शय्यायां शिशुं शाययति। वैषयिक—जले इच्छा, जलविषये इत्यर्थः; विद्यायामनुरागः। अभिव्यापक—दुग्धे माधुर्यमस्ति, दुग्धस्य सर्वांशमभिव्याप्य इत्यर्थः; तिलेषु तैलमस्ति, दध्नि वाहिका- [illegible]।

Exercise—40

1. What is the difference between कारक & विभक्ति ?

2. Use the following words in your own Sentences:— सर्वतः, प्रति, धिक्, अन्तरेण, सह, स्वधा, अन्तरा, विना, अलम्, बहिः, ऋते, निपुणः, पृथक्, नमः, स्वस्ति, उभरा, वषट्, निकषा, परितः, भयम्, प्रासादात्, उपवने ।

3. What case-endings are governed by अध्यास्ते, उपवसति, अधिवसति, अभिनिविशते, रोचते, धारयति, प्रतिशृणोति, अभिद्रुह्यति and अधितिष्ठति ।

4. Illustrate the following:— अत्यन्तसंयोगे द्वितीया, अपवर्गे तृतीया, हेतौ तृतीया पञ्चमी च, ल्यब्लोपे पञ्चमी, भावे सप्तमी, तादर्थ्ये चतुर्थी, निर्धारणे षष्ठी सप्तमी च, विवक्षया षष्ठी, लक्षणात् तृतीया and तृतीया प्रयोज्ये ।

5. Translate into Hindi and account for the case-endings of black words.— अह मद्य यमुनातटं गमिष्यामि । राजानं प्रति एवं सा उवाच । धिक् त्वां पापकारिणम् । रामो लक्ष्मणेन सीतया च वनं जगाम । बालका बालिकाश्च स्वभावेन चञ्चला भवन्ति । अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानाञ्च रक्षणे । साधवः सर्वभूतेषु दयां कुर्वन्ति । राजा चर्मणि मृगं हन्ति । गोषु कृष्णा बहुक्षीरा भवन्ति । ग्रामं निकषा नदी वर्तते । भ्रातरि आगतेऽहं वाराणसीं यास्यामि । विद्यां विना सुखं न भवति । महता कष्टेनोपार्जितं वित्तं हेलया क्षपितम् । माता शिशुं शय्यायां शाययति । चन्द्रदत्तः देवदत्तेन ओदनं पाचयति । अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् । जात्या ब्राह्मणः कर्मणा ऋषिस्तु । चरमे वयसि पुत्राय राज्यभारं दत्वा स वनं जगाम । जननी

अनयमेव [illegible] नश्यति । [illegible] निरस्य [illegible] [illegible] । पौरुषाः बहूनि विकर्माणि कुर्वन्ति । उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये । परोपकाराय हि सतां जीवनम् । [illegible] [illegible] [illegible] यो नरः । यत्नेऽकृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः । यो नियतिं [illegible] न एव [illegible] । तेन मुनिना मूर्खः शिष्यः कृतः । कोऽपि पुत्रेण जनेन योग्य [illegible] पुरा [illegible] पुण्यवती नाम राजा बभूव ।

6. Translate into Sanskrit:— (a) मैं भाई के साथ घर जाता हूँ। राजा दरिद्रों को धन देता है। बानर वृक्ष पर चढ़ते हैं। यह पुस्तक के लिये सोना चाहिता है। बिना परिश्रम के विद्या नहीं होती। लोभ से क्रोध और क्रोध से पाप होता है। क्रोध से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है। वृक्ष फल से और मनुष्य विद्या से नम्र होते हैं। दान से विद्या का ह्रास नहीं होता सूर्योदय होने पर मैं आऊँगा। कूएँ का जल ग्रीष्मकाल में ठंडा होता है।

(b) I have come to learn Dharmshastras *from you.* Do not be angry with me. I have no friend except you. A tree is known by its fruits. Knowledge without modesty is useless. In ancient time, there lived in Mithila a virtuous king. Every one of the world worships God for absolution.

7. Correct— ग्रामस्य निकषा । ग्रामस्य परितः नदी वर्त्तते । स मां क्रुध्यति । पिता मह्यमभिक्रुध्यति । पशुभ्यः सिंहो बलिष्ठः । श्रमस्य विना किमपि न सिध्यति । तव ऋते कोऽपि मम सहायको नास्ति । बलात् किं यो न रिपून् बाधते । ईश्वरेण भिन्नः को सहायकोऽस्ति । त्वया आगते अहं तत्र गमिष्यामि । ग्रामस्य उत्तरा हि सरः । अहं तव प्रति न सन्तुष्टः । सर्वे जना धनं स्पृहयन्ति । पितुराज्ञां शिरसादाय वनं [illegible]

अन्तरा मम तव च हरिः। आसनेऽधितिष्ठति। इदं मां न रोचते। धनात् हीनं न किमपि आद्रियते। स मम शतं धारयति। पयः पानः शिशुना। विद्यस्यस्य अन्तिकस्य।

तद्धित

१ तद्धित—संज्ञा के परे जिन प्रत्ययों के लगाने से दूसरी संज्ञायें बनती हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

साधारण नियम

१ णितिवृद्धिराद्यस्य (तद्धितेष्वचामादेः)—जिस प्रत्यय के ण् का लोप होता है उसके आने से प्रातिपदिक के आदि स्वर को वृद्धि होती है।

२ सुभगादेरुभयोः (हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च। अनुशतिकादीनाञ्च)—सुभगा, दुर्भगा, अधिदेव, अधिभूत, परलोक, सर्वलोक, अनुशतिक, परस्त्री इत्यादि प्रातिपदिक के अन्तर्गत दोनों पदों के आदि स्वर की वृद्धि होती है।

३ सुपञ्चालादेर्द्वितीयस्य—सुपञ्चाल, अर्द्धपञ्चाल, अतिकेशवत्, त्रिवेदवत्, द्विवर्ष, त्रिवर्ष, चतुर्वर्ष, पञ्चवर्ष इत्यादि प्रातिपदिक के अन्तर्गत द्वितीय पद के आदि स्वर की वृद्धि होती है।

४ न णित्कार्यं सर्वत्र—जिस प्रत्यय के ण् का लोप होता है उसके आने से प्रातिपदिक के आदि स्वर को सर्वत्र वृद्धि नहीं होती।

५ ईयोऽवर्णवर्णयोर्यस्वरयोः—तद्धित प्रत्यय के य और स्वर वर्ण परे रहने से प्रातिपदिक (शब्द) के अन्तस्थित अ और इ का लोप होता है।

६ गुण उवर्णान्तस्य (ओर्गुणः)—तद्धित प्रत्यय के य और स्वर परे रहने से प्रातिपदिक के अन्तस्थित उ का गुण होता है।

७ अशोरोऽभ्यो यः स्वरवत्—ऋकार, ओकार और औकार स्थित तद्धित प्रत्यय का य स्वर का कार्यनिर्वाह करता है।

८ टेर्लोपोडिति (टेः)—ड-इत् वाले तद्धित प्रत्यय के परे रहने से प्रातिपदिक के टि (अन्त्य स्वर को पूर्ववर्ती व्यञ्जन वर्ग सहित टि कहते हैं) का लोप होता है।

९ तेर्विंशतेः (तिर्विंशतेर्डिति)—ड-इत् वाले तद्धित प्रत्यय के परे रहने से विंशति के ति का लोप होता है।

१० इयुवौ यवयोश्चः पदान्ते णिनि—ण्-इत् वाले तद्धित प्रत्यय के परे रहने से पद के अन्तस्थित आदि स्वर के स्थान में उत्पन्न य का इय् और व् का उव् होता है।

११ द्वारादीनाञ्च—द्वार, स्वर, स्वाध्याय, व्यल्कश, स्वस्ति, स्वर्, स्वादु, मृदु, श्वस्, श्वन् और स्व इत्यादि प्रातिपदिक के स्थान में य् और व् का क्रम से इय् और उव् नहीं होता।

१२ न स्यागतादीनाम्—स्वागत, स्वध्वर, स्वङ्ग, व्यङ्ग, व्यड, व्यवहार और स्वपति प्रातिपदिक के आद्य य् और व् का इय् और उव् नहीं होता।

वा श्वापदव्यल्कफोः—श्वापद, व्यल्कश इन दोनों प्रातिपदिकों [redacted] विकल्प से होते हैं।

१३ अव्ययाश्रितः—ष्-इत् वाले तद्धित प्रत्ययों से बने हुए शब्द अव्यय होते हैं।

१४ अपत्ये (तस्यापत्यम्)—वक्ष्यमाण (कहे जाने वाले) प्रत्यय अपत्य अर्थ [redacted] विहित हैं।

१ अदन्तात् विञ् (अत इञ्)—अपत्य अर्थ में अकारान्त शब्द के परे णिञ् प्रत्यय होता है। इस के ण्, ञ् का लोप होता है और इ रहता है। यथा, शूरस्य अपत्यं शौरिः, दशरथस्यापत्यं दाशरथिः, द्रोणस्यापत्यं द्रौणिः, युधिष्ठिरस्यापत्यं यौधिष्ठिरिः, अर्जुनस्यापत्यं आर्जुनिः, विकर्णस्यापत्यं वैकर्णिः, कृष्णस्यापत्यं कार्ष्णिः।

(क) बाह्वादिभ्यश्च—अपत्य अर्थ में बाहु इत्यादि शब्दों के परे पिञ् होता है। यथा, बाहोरपत्यं बाहविः, उपबाहोरपत्यं उपबाहविः, सुमित्राया अपत्यं सौमित्रिः, दुर्मित्राया अपत्यं दौर्मित्रिः।

(ख) इको व्यासवधात्रोःपिञि (सुधातुरकङ् च। व्यासवरुडनिषाद-चण्डालबिम्बानां चेति वक्तव्यम्)—पिञ् प्रत्यय परे होने से व्यास और सुधातृ शब्दों के परे डक होता है और इसका अक रहता है। यथा; व्यासस्यापत्यं वैयासकिः, सुधातुरपत्यं सौधातकिः।

३ नडादिभ्यः फायनण् (नडादिभ्यः फक्)—अपत्य अर्थ में नड् इत्यादि शब्द के उत्तर फायनण् होता है और इसका आयन रहता है। यथा; नडस्यापत्यं नाडायनः, चरस्यापत्यं चारायणः, दासस्यापत्यं दासायनः, शकटस्यापत्यं शाकटायनः, द्रोणस्यापत्यं द्रौणायनः, पर्व्वतस्यापत्यं पार्व्वतायनः, बदरस्यापत्यं बादरायणः, दक्षस्यापत्यं दाक्षायणः।

४ गर्गादिभ्यः ष्यण् (गर्गादिभ्यो यञ्)—अपत्य अर्थ में गर्ग इत्यादि शब्दों के परे ष्यण् होता है और इसका य रहता है। यथा, गर्गस्यापत्यं गार्ग्यः, वत्सस्यापत्यं वात्स्यः, अगस्ति-आगस्त्यः, पुलस्ति-पौलस्त्यः, मण्डु-माण्डव्यः, मधु-माधव्यः, जिगीषु-जिगीषव्यः, कुण्डिनी-कौण्डिन्यः, यज्ञवल्क-याज्ञवल्क्यः, शण्डिल-शाण्डिल्यः, चणक-चाणक्यः, जमदग्नि-जामदग्न्यः, पराशर-पाराशर्य्यः, अग्निवेश-आग्निवेश्यः, दिति-दैत्यः, अदिति-आदित्यः, प्रजापति-प्राजापत्यः।

५ शिवादिभ्यः षण् (शिवादिभ्योऽण्)—अपत्य अर्थ में शिव इत्यादि शब्दों के परे षण् होता है और इसका अ रहता है। यथा, शिवस्यापत्यं शैवः, ककुत्स्थ-काकुत्स्थः, विश्रवण-वैश्रवणः,

रमण-रामणः, ऊर्णनाभ-और्णनाभः, पृथाया अपत्यं पार्थः, इला-ऐलः, मरुत-मारुतः।

(क) शिवादेः—अपत्य अर्थ में शिव इत्यादि शब्द के परे अण् होता है। यथा, शिवस्यापत्यं शैवः, उर्व-और्वः, कश्यप-काश्यपः, कुशिक-कौशिकः, भरद्वाज-भारद्वाजः, विश्वानर-वैश्वानरः, शरद्वत्-शारद्वतः, शुनक-शौनकः, पुत्र-पौत्रः, दुहितृ-दौहित्रः।

(ख) ऋष्यादेश्च—अपत्य अर्थ में भृगु इत्यादि शब्द के परे अण् होता है। यथा, भृगोरपत्यं भार्गवः, मरीचि-मारीचः, वसिष्ठ-वासिष्ठः, कुत्स-कौत्सः, गोतम-गौतमः, अङ्गिरस-आङ्गिरसः, विश्वामित्र-वैश्वामित्रः, धृतराष्ट्र-धार्तराष्ट्रः, पाण्डु-पाण्डवः, वसुदेव-वासुदेवः, यदु-यादवः, पुरु-पौरवः, रघु-राघवः, कुरु-कौरवः, मनु-मानवः, द्रुपद-द्रौपदः, पर्वत-पार्वतः।

(ग) ऐक्ष्वाककौरव्य मनुष्यमानुषाः (जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्। कुर्वादिभ्यो ण्यः। मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च)—ऐक्ष्वाक इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, इक्ष्वाकोरपत्यम् ऐक्ष्वाकः, कुरु-कौरव्यः, मनु-मनुष्यः, मानुषः।

(घ) मातुरुत्संख्यायाः (मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः)—अण् प्रत्यय परे होने से संख्यावाचक शब्द के परवर्ती मातृ शब्द के परे डुर् होता है और इसका उर् रहता है। यथा; द्वयोर्मात्रोरपत्यं द्वैमातुरः षण्णां मातृणामपत्यं षाण्मातुरः। सम् और भद्र शब्द के परे रहने पर भी होता है; यथा, साम्मातुरः, भाद्रमातुरः।

(च) कन्यायाः कनीनः (कन्यायाः कनीन च)—अण् प्रत्यय परे रहने से कन्या का कनीन होता है। यथा, कन्यायाः अपत्यं कानीनः।

१ स्त्रीभ्यः ढेयण् (स्त्रीभ्यो ढक्)—अपत्य अर्थ में स्त्री प्रत्ययान्
शब्द के परे ढेयण् होता है और इसका एय रहता है। यथ
गङ्गाया अपत्यं गाङ्गेयः, राधाया अपत्यं राधेयः, विनता-वैन
तेयः, ताड़का-ताड़केयः, सरमा-सारमेयः, भगिनी-भागिनेय
कुन्ती-कौन्तेयः, गोधा-गौधेयः ।

गौधेरगौधारौ (गोधाया ढ्रक्, आरगुदीचाम्)—गोधाप
आर्थ, इस अर्थ में गौधेर और गौधार निपातन से सिद्ध होते हैं ।

(क) शुभ्रादिभ्यश्च—अपत्य अर्थ में शुभ्र इत्यादि शब्द के प
ढेयण् होता है । यथा; शुभ्रस्यापत्यं शौभ्रेयः अत्रि-आत्रेयः
विमातृ-वैमात्रेयः, शकुनि-शाकुनेयः, इतर-ऐतरेयः ।

(ख) लोपः ढेयण्युवर्णस्य—ढेयण् प्रत्यय होने से प्रातिपदिक
के अन्तस्थित उवर्ण का लोप होता है । यथा; मृकण्डोरपत्यम्
मार्कण्डेयः, कमण्डलोः अपत्यं कामण्डलेयः ।

(ग) न पाण्डुकद्र्वोः—पाण्डु और कद्रु शब्द के उवर्ण का लो
नहीं होता । यथा; पाण्डोरपत्यं पाण्डवेयः, कद्रु-काद्रवेयः ।

(घ) सुभगादेरिन् ढेयणि—ढेयण् प्रत्यय होने से सुभगा इत्यादि
शब्दों के उत्तर इन् होता है । यथा; सुभगाया अपत्यं सौभागि
नेयः, दुर्भगा-दौर्भागिनेयः, बन्धकी-बान्धकिनेयः, कनिष्ठा-कानि
ष्ठिनेयः ।

कुलटाया वा—कुलटा शब्द के उत्तर विकल्प से होता है
यथा, कुलटाया अपत्यं कौलटिनेयः, कौलटेयः ।

N. B. यहाँ कुलटा का अर्थ भिक्षोपजीवनी सती स्त्री है, व्यभिचारिणी
नहीं । व्यभिचारिणी अर्थ में कौलटेयः, कौलटेरः होता है ।

* श्वशुरादिभ्यः ईयण्—अपत्य अर्थ में श्वशुर इत्यादि शब्द के
उत्तर ईयण् होता है और इसका ईय रहता है । श्वशुरपत्यं
श्वशुर्यः ।

पितृमातृभ्यस्त्रोः पैयण् वा ऋल्लोपश्च—पितृस्वसृ और मातृस्वसृ शब्द के उत्तर विकल्प से पैयण् होता है । पैयण् होने से ऋकार का लोप होता है । यथा; पितृष्वसुरपत्यं पैतृष्वसेयः, पैतृष्वस्रीयः मातृष्वसृ-मातृष्वसेयः, मातृष्वस्रीयः ।

८ रेवत्यादिभ्यः ठिकण् (रेवत्यादिभ्यष्ठक्)—अपत्य अर्थ में रेवती इत्यादि शब्द के उत्तर ठिकण् होता है और इसका इक रहता है । यथा, रेवत्या अपत्यं रैवतिकः, अश्वपाली-आश्वपालिकः ।

लोपोगर्गादेर्बहुवचने—बहुवचन में गर्ग इत्यादि के परे अपत्य प्रत्यय का लोप होता है । यथा; गर्गस्य अपत्यानि गर्गाः, वत्सस्य अपत्यानि वत्साः, अगस्ति-अगस्तयः, विश्वावसु-विश्वावसवः, बभ्रु-बभ्रवः, मुद्गल-मुद्गलाः, जमदग्नि-जमदग्नयः ।

यस्कादेः—बहुवचन में यस्कादि के परे अपत्य प्रत्यय का लोप होता होता है । यथा, यस्कस्य अपत्यानि यस्काः, द्रुह्यस्य अपत्यानि द्रुह्याः, तृणकर्ण-तृणकर्णाः, जह्नारथ-जह्नारथाः ।

विदादेः—बहुवचन में विद इत्यादि के उत्तर अपत्य प्रत्यय का लोप होता है । यथा, विदस्य अपत्यानि विदाः, उर्व-उर्वाः, कश्यप-कश्यपाः कुशिक-कुशिकाः, भरद्वाज-भरद्वाजाः, उपमन्यु-उपमन्यवः, विश्वानर-विश्वानराः, शरद्वत्-शरद्वतः, शुनक-शुनकाः ।

अत्र्यादेश्च (अत्रिभृगुकुत्सवशिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च)—बहुवचन में अत्रि इत्यादि के उत्तर अपत्य प्रत्यय का लोप होता है । यथा, अत्रेरपत्यानि अत्रयः, भृगु-भृगवः, कुत्स-कुत्साः, वशिष्ठ-वशिष्ठाः, गोतम-गोतमाः, अङ्गिरस्-अङ्गिरसः ।

राजसंज्ञाभ्यो विभाषा (तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्)—बहुवचन में राजसंज्ञक शब्द के उत्तर अपत्य प्रत्यय का विकल्प से लोप होता है । यथा रघोरपत्यानि रघवः, राघवाः, कुरु-कुरवः, कौरवाः

यदु-यादवः, यादवाः; इक्ष्वाकु-इक्ष्वाकवः, ऐक्ष्वाकाः; वृष्णि-वृष्णयः, वार्ष्णेयाः।

न स्त्रियाम् (तद्राजस्य........) स्त्रीलिङ्ग में अपत्य प्रत्यय का लोप नहीं होता। यथा, यस्कस्य अपत्यानि स्त्रियः यास्क्यः, बिदस्यापत्यानि स्त्रियः बैदः, अत्रेः अपत्यानि स्त्रियः आत्रेय्यः, रघोरपत्यानि स्त्रियः राघव्यः

६ अर्थं विशेषे चापत्यानि—अपत्य अर्थ में जो प्रत्यय होते हैं वे अन्य विशेष अर्थों में भी होते हैं।

ईय-कण्-खीन-चीकणश्च—अर्थविशेष में ईय, कण्, खीन और चीकण् प्रत्यय भी होते हैं। कण् का क, खीन का ईन और चीकण् का इक रहता है।

(क) तद्वेत्ति तदधीते (तदधीते तद्वेद)—तत् वेत्ति, तत् अधीते इन दो अर्थों में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, तर्कं वेत्ति अधीते वा तार्किकः, न्यायं वेत्ति अधीते वा नैयायिकः, वेदान्तं वेत्ति अधीते वा वैदान्तिकः, पुराण-पौराणिकः, वेद-वैदिकः, अलङ्कार-आलङ्कारिकः, ज्योतिस्-ज्योतिषिकः, व्याकरण-वैयाकरणः, क्रम-क्रमकः, पद-पदकः।

ह्रस्वोऽन्त्यः शिक्षादेः—शिक्षा इत्यादि के अन्त्य स्वर का ह्रस्व होता है। यथा, शिक्षां वेत्ति अधीते वा शिक्षकः, मीमांसा-मीमांसकः।

(ख) तेन प्रोक्तम्—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, ऋषिणा प्रोक्तं आर्षम्, मनुना प्रोक्तम् मानवं, मानवीयम्, विष्णुना प्रोक्तं वैष्णवं, पतञ्जलि-पातञ्जलम्, कणाद-काणादम्, पाणिनि-पाणिनीयम् जैमिनि-जैमिनीयम्, अत्रि-आत्रेयम्, उशनस्-औशनसम्, अङ्गिरस्-आङ्गिरसम्, पराशर-पाराशरीयम्, बृहस्पति-बार्हस्पत्यम्, नारद-नारदीयम्, वाल्मीकि-वाल्मीकीयम्, बौधायन-बौधायनम्।

(ग) तेन कृतम्—इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथा-

यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, कारेण कृतम् कारिकम्, अह्ना कृतम् आह्निकम्, शरीर-शारीरिकम्, गात्र-गात्रिकम्, पुरुष-पौरुषेयम्, मक्षिका-माक्षिकम्, क्षुद्र-क्षौद्रम्।

(ङ) तेन रक्तम् (तेन रङ्गे रागम्)—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, कषायेण रक्तं काषायम्, कुसुमेन रक्तं कौसुमम्, नीली-नीलम्, हरिद्रा-हारिद्रम्, मञ्जिष्ठा-माञ्जिष्ठम्, लाक्षा-लाक्षिकम्, रोचना-रौचनिकम्, शोण-शौणम्।

(च) तस्य देवता—वह जिसका देवता, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, शिवोऽस्य देवता शैवः, विष्णुरस्य देवता वैष्णवः, शक्तिः अस्य देवता शाक्तः, गणपति-गाणपत्यः, प्रजापति-प्राजापत्यः, वायु-वायव्यः, अग्नि-आग्नेयः, सोम-सौम्यः, द्यावापृथिवी-द्यावापृथिवीयम्, द्यावापृथिव्यम्; अग्नीषोम-अग्नीषोमीयम्, अग्नीषोम्यम्।

(छ) तस्य समूहः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, भिक्षाणां समूहः भैक्षम्, अङ्गाराणां समूहः आङ्गारम्, मयूर-मायूरम्, धेनु-धैनुकम्, कलाप-कालापकम्, राजन्य-राजन्यकम्, राजपुत्र-राजपुत्रकम्, मनुष्य-मानुष्यकम्, अपूप-आपूपिकम्, गणिका-गाणिक्यम्, ब्राह्मण-ब्राह्मण्यम्।

N. B. समूहे खण्ड-काण्ड-तलः—समूह अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव खण्ड, काण्ड और तल् प्रत्यय होते हैं। यथा, कमलानां समूहः कमलखण्डम्, कुमुदानां समूहः कुमुदखण्डम्, दूर्वाणां समूहः दूर्वाकाण्डम्, कर्म्मणां समूहः कर्म्मकाण्डम्। तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जनानां समूहः जनता, बन्धूनां समूहः बन्धुता।

(ज) तत्र भवः—इस अर्थ में (यहां-भव शब्द से जात,

स्थित, संक्रान्त, आविर्भूत इत्यादि कई अर्थ समझे जाते हैं) शब्द के परे यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, मथुरायां भवः माथुरः, कलिङ्गे भवः कालिङ्गः, शरद्-शारदः, वसन्त-वासन्तिकः, हेमन्त-हैमन्तिकः, समुद्र-सामुद्रिकः, द्वीप-द्वैपायनः, द्वैप्यः; अकाल-आकालिकः, शश्वत्-शाश्वतिकः, कुल-कुलीनः, दुष्कुल-दौष्कुलेयः, दुष्कुलीनः; प्राच्-प्राच्यम्, दिश्-दिश्यम्, वर्ग-वर्ग्यम्, कण्ठ-कण्ठ्यम्, दन्त-दन्त्यम्, तालु-तालव्यम्, ओष्ठ-औष्ठ्यम्, जिह्वामूल-जिह्वामूलीयम्, अन्तर-आन्तरिकम्, मनस्-मानसं, मानसिकम्; शरीर-शारीरिकम्, अरण्य-आरण्यकः, कोश-कौशेयम्, इह भवं ऐहिकम्; लोक-लौकिकम्, भूमि-भौमः, दिव्-दिव्यः, अग्र-अग्र्यम्, आदि-आद्यम्, अन्त-अन्त्यम्, वेशे भवा वेश्या, सर्वकाल-सार्वकालिकम्, कदाचित्-कादाचित्कम्, सम्प्रति-साम्प्रतिकम्, अध्यात्म-आध्यात्मिकम्, अधिभूतं भवं आधिभौतिकम्, अधिदैवे भवं आधिदैविकम्, मध्यन्दिने भवं माध्यन्दिनम्।

टिलोपोऽकस्माद्बहिषोः—अकस्मात् और बहिस् के टि का लोप होता है। यथा, अकस्माद्भवं आकस्मिकम्, बहिः भवं बाह्यम्, बाहिकम्।

स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्—भव इत्यादि अर्थ में स्त्री और पुमस्; के परे ञ् होता है और इसका न रहता है। यथा, स्त्रीषु भवं स्त्रैणम् पुमस्-पौंस्नम्।

हैमन-शौवस्तिकपौनःपुनिकाः—हैमन, शौवस्तिक और पौनः-पुनिक निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, हेमन्ते भवं हैमनम्, श्वः भवं शौवस्तिकम्; पुनः पुनर्भवं पौनःपुनिकम्।

प्रतीच्योदीच्यतिरश्चीनाः—प्रतीच्य, उदीच्य और तिरश्चीन निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, प्रतीचि भवं प्रतीच्यम्, उदीचि भवं उदीच्यम्, तिरश्चि भवं तिरश्चीनम्।

(ञ) तत्र साधुः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, सभायां साधुः सभ्यः, समाजे साधुः सामाजिकः, अतिथौ साधुः आतिथेयः, वेदे साधुः वैदिकः, संग्रामे साधुः सांग्रामिकः, संयुगे साधुः सांयुगीनः, वितण्डा-वैतण्डिकः, संकथा-सांकथिकः, संग्रह-सांग्रहिकः।

(ट) देये कालादवश्यम्भावे (देयमृणं)—अवश्यम्भाव अर्थ समझा जाय तो देय अर्थ में कालवाचक शब्द के परे यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, मासे देयं मासिकम्, वर्षे देयं वार्षिकम्, संवत्सर-सांवत्सरिकम्, आग्रहायण-आग्रहायणिकम्, श्रावण-श्रावणिकम्।

निर्वृत्ते च (तेन निर्वृत्तम्)—निर्वृत्त अर्थ में भी होता है। यथा, दिनेन निर्वृत्तं दैनिकम्, मासेन निर्वृत्तं-मासिकम्, वर्ष-वार्षिकम्, संवत्सर सांवत्सरिकम्।

अह्नोऽह्नः—अहन् शब्द का अह्न होता है। यथा, अह्ना निर्वृत्तम्, आह्निकम्।

व्याप्तौ च—व्याप्ति अर्थ में भी होता है। यथा, दिनं व्याप्य स्थितं दैनिकम्, मासं व्याप्य स्थितम् मासिकम्; वर्षम्-वार्षिकम्, चतुरो मासान् व्याप्य स्थितं चातुर्मास्यम्।

वयसि च—वयस् अर्थ में भी होता है। यथा, द्वे वर्षे अस्य वयः द्विवर्षीणः, द्विवर्षीयः, द्विवार्षिकः, द्विवर्षः; पञ्च वर्षाण्यस्य वयः पञ्चवर्षीणः, पञ्चवर्षीयः, पञ्चवार्षिकः, पञ्चवर्षः; षोडश वर्षाण्यस्य वयः षोडशवर्षीणः, षोडशवर्षीयः, षोडशवार्षिकः, षोडशवर्षः।

(ठ) तत आगतः—इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, मथुराया आगतः माथुरः, नगरादागतः नागरिकः, आपण-आपणिकः, उपाध्याय-औपाध्यायकम्, पितामह-पैतामहकम्, मातृ-मातृकम्,

सवितृ-सावित्रम्, भ्रातृ-भ्रातृकम्, पितृ-पैतृकम्, पित्र्यम्; स्त्रिया आगतं स्त्रैणम्, पुंस आगतं पौंस्नम्।

(ङ) तदर्हति—तत् अर्हति, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, शतमर्हति शतिकः, सहस्रमर्हति साहस्रिकः, छेदम् अर्हति छेद्यः, भेदम् अर्हति भेद्यः, दण्ड-दण्ड्यः अर्घ-अर्घ्यः, वध-वध्यः, यज्ञ-यज्ञीयः, दक्षिणा-दक्षिणीयः,दक्षिण्यः।

(ढ) तस्मादनपेतम् (धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते)—तस्मात् अनपेतम्, इस अर्थ में शब्द के परे यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, धर्मादनपेतं धर्म्यम् according to justice or morality, न्यायात् अनपेतं न्याय्यम्, अर्थ-अर्थ्यम्, पथ-पथ्यम्, विधि-वैधम्।

(ण) तस्येदम्—तस्य इदम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, विष्णोरिदं वैष्णवम्, शिवस्येदं शैवम्, जनपद-जानपदम्, तस्य इदं तदीयम्, एतस्य इदं एतदीयम्, देव-दैवम्, असुर-आसुरम्, सम्राज्-साम्राज्यम्, इन्द्र-ऐन्द्रम्, महेन्द्र-माहेन्द्रम्, मनस्-मानसम्, शरीर-शारीरम्, पितृ-पित्र्यम्; गो-गव्यम्, महिष-माहिषम्, वेणु-वैणवम्, पलाश-पालाशम्, खदिर-खादिरम्, बिल्व-बैल्वम्, मुञ्ज-मौञ्जम्, स्त्री-स्त्रैणम्, पुमस्-पौंस्नम्, गङ्गा-गाङ्गम्, हिमवत्-हैमवतम्, पशुपति-पाशुपतम्, शङ्कर-शाङ्करम्, सुर-सौरम्, चन्द्र-चान्द्रम्, वेद-वैदिकम्, उपनिषद्-औपनिषदम्, पृथिवी-पार्थिवम्, जल-जलीयम्, तेजस्-तैजसम्, वायु-वायवीयम्, शत्रु-शात्रवम्, रुद्र-रौद्रम्, न्यङ्कु-नैयङ्कवम्, न्याङ्कवम्; श्वापद-शौवापदम्, श्वापदम्; भरत-भारतम्, भारतवर्ष-भारतवर्षीयम्, युष्माकमिदं-युष्मदीयम्, अस्माकमिदम्,

अस्मदीयम् ।

त्वमावेकवचने—एकवचन में युष्मद् का त्वद् और अस्मद् का मद् होता है। यथा, तव इदं त्वदीयम्, मम इदं मदीयम् ।

युष्माकास्माकौ खञणोः (युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्-)—खञ् और अण् प्रत्यय परे रहने से युष्मद् का युष्माक और अस्मद् का अस्माक होता है। यथा, युष्माकमिदं यौष्माकीणम्, यौष्माकम्। अस्माकमिदं आस्माकीनम् आस्माकम् ।

तवकममकावेकवचने—एकवचन में तवक और ममक होता है। यथा, तव इदं तावकीनम्, तावकम्; मम इदं मामकीनम्, मामकम् ।

परादेः कन् छीयणि—छीयण् प्रत्यय परे रहने से पर, स्व, शब्द इत्यादि शब्द के उत्तर, कन् होता है और इसका क रहता है। यथा, परस्येदं परकीयम्। स्व शब्द के परे विकल्प से होता है; स्वस्येदं स्वकीयम् स्वीयम् ।

सौरसारव-स्वायम्भुवाः—सौर, सारव और स्वायम्भुव निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, सूर्यस्येदं सौरं दिनम्, सरय्वा इदं सारवं जलम्, स्वयम्भुव इदं स्वायम्भुवं धाम।

भवदीयान्यदीयौ—भवदीय और अन्यदीय निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, भवत इदं भवदीयम्, अन्यस्येदं अन्यदीयम् ।

(ख) तस्य विकारः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, सुवर्णस्य विकारः सौवर्णः, रजतस्य विकारः राजतः, सीसस्य विकारः सैसः, दारु-दारवः, देवदारु-देवदारवः, पयस्-पायसः; अग्नि-आग्नेयः, मुद्ग-मौद्गः, इक्षु-ऐक्षवः, गुड-गौडः, पिष्ट-पैष्टः, तिल-तैलम् ।

(ग) तस्य पण्यम्—तत् अस्य पण्यम् इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, लवण-

स्य पण्यं लावणिकः, तैलमस्य पण्यं तैलिकः, अपूपा अस्य पण्यं आपूपिकः, तण्डुल-ताण्डुलिकः, मोदक-मोदकिकः, उशीर-औशीरिकः, ताम्बूल-ताम्बूलिकः।

(३) तदस्य प्रहरणम्— तत् अस्य प्रहरणम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा; धनुरस्य प्रहरणं धानुष्कः, असिः अस्य प्रहरणं आसिकः a swordsman, प्रास-प्रासिकः, परश्वध-पारश्वधिकः, परशु-पारशविकः, तरवारि-तारवारिकः, शक्ति-शाक्तीकः, यष्टि-याष्टीकः, (शक्तियष्ट्योरीकक्)।

(४) तदस्य प्रयोजनम्—तत् अस्य प्रयोजनम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, स्वर्गः प्रयोजनमस्य स्वर्ग्यम्, यशः प्रयोजनमस्य यशस्यम्, आयुस्-आयुष्यम्, काम-काम्यम्, गृहप्रवेशन-गृहप्रवेशनीयम्, अनुप्रवचन-अनुप्रवचनीयम्, संवेशन-संवेशनीयम्।

(५) तदस्य शीलम्—तत् अस्य शीलम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, तपोऽस्य शीलं तापसः, छत्रमस्य शीलं छात्रः, शिक्षा अस्य शीलं शैक्षः, आरोह-आरोहः, चुरा-चौरः।

(६) तदस्य प्राप्तं कालात्—तत् अस्य प्राप्तम्, इस अर्थ में कालवाचक शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, समयोऽस्य प्राप्तः सामयिकः, कालोऽस्य प्राप्तः कालिकः, दिष्टोऽस्य प्राप्तः दैष्टिकः, ऋतुरस्य प्राप्तः आर्तवः।

(७) अधिकृत्य कृते ग्रन्थे—ग्रन्थ समझे जाने पर 'अधिकृत्य कृतम्' इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, राममधिकृत्य कृतं रामायणम्, भगवन्तमधिकृत्य कृतं भागवतम्, भारतानधिकृत्य कृतं भारतम्,

वाक्यं पदञ्चाधिकृत्य कृतं वाक्यपदीयम्, राघवान् पाण्डवा-ञ्चाधिकृत्य कृतं राघवपाण्डवीयम्, किरातमर्ज्जुनञ्चाधिकृत्य कृतं किरातार्ज्जुनीयम्, अनुशासनमधिकृत्य कृतं आनुशासनिकम्, अश्वमेध-अश्वमेधिकम्, आश्रमवास-आश्रमवासिकम्, मुषल-मौषलम्, महाप्रस्थान-महाप्रस्थानिकम्, स्वर्गारोहण-स्वार्गारोहणिकम्।

(च) तस्मै प्रभवति (तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः)—तस्मै प्रभवति, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा; सन्तापाय प्रभवति सान्तापिकः, सन्नाहाय प्रभवति सान्नाहिकः, संग्रामाय प्रभवति सांग्रामिकः, सङ्घात-साङ्घातिकः, उत्पात-औत्पातिकः।

कार्म्मुकं धनुषि (कर्म्मण उकञ्)—धनु अर्थ में कार्म्मुक शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; कर्म्मणे प्रभवति कार्म्मुकं धनुः।

(छ) तस्मै हितम्—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा; यज्ञाय हितं यज्ञीयम्, अध्वराय हितं अध्वरीणम्, ब्रह्मणे हितं ब्राह्मण्यम्, विश्वजनेभ्यो हितं विश्वजनीनम्, सर्व्वजनेभ्यो हितं सार्व्वजनीनम् (आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः।

(ज) काले नक्षत्रयोगे (नक्षत्रेण युक्तः कालः)—काल और नक्षत्र योग समझा जाय तो नक्षत्रवाचक शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा; विशाखया नक्षत्रेण युक्तो मासः वैशाखः, राधया नक्षत्रेण युक्तो मासः राधः, ज्येष्ठा-ज्यैष्ठः, आषाढा-आषाढः, श्रवणा-श्रावणः, श्रावणिकः, मघा-माघः, भद्रपदा-भाद्रपदः, प्रोष्ठपदा-प्रौष्ठपदः, अश्विनी-आश्विनः, अश्वयुज्-आश्वयुजः, कृत्तिका-कार्त्तिकः, कार्त्तिकिकः, अग्रहायणी-अग्रहायणः, आग्रहायणः, आग्रहायणिकः; पुषी

मार्गः, मृगशीर्ष-मार्गशीर्षः, मृगशिरस्-मार्गशिरसः, मघा-माघः, फल्गुनी-फाल्गुनः, फाल्गुनिकः, चित्रा-चैत्रः, चैत्रिकः।

यलोपस्तिष्यपुष्ययोः—तिष्य और पुष्य शब्द के य का लोप होता है। यथा; तिष्येण नक्षत्रेण युक्तो मासः तैषः, पुष्येण नक्षत्रेण युक्तो मासः पौषः।

(ष) तद्वहति—तत् वहति, इस अर्थ में यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा; धुरं वहति धुर्य्यः, धौरेयः, सर्व्वधुरं वहति सर्व्वधुरीणः, चतुर्धु रा-चतुर्धु रीणः, हल-हालिकः, सीर-सैरिकः, रथ-रथ्यः, युग-युग्यः, शकट-शाकटः।

(स) तेन जीवति—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा; वेतनेन जीवति वैतनिकः, वाहनेन जीवति वाहनिकः, जालेन जीवति जालिकः, उपदेशेन जीवति औपदेशिकः, धनुषा जीवति धानुष्कः, क्रयविक्रयाभ्यां जीवति क्रयविक्रयिकः, आयुध-आयुधिकः, आयुधीयः, वागुरा-वागुरिकः, नौ-नाविकः, व्यवहार-व्यवहारिकः।

(ह) तदस्मिन् दीयते—तत् अस्मिन् दीयते, इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, द्वावस्मिन् वृद्धि :दीयते द्विकंशतम्, त्रिकंशतम्, चतुष्कंशतम्, पञ्चकंशतम् वृद्धिः। आय, लाभ इत्यादि के ज्ञान में होता है।

(क्ष) तादर्थ्ये—तादर्थ्य समझे जाने पर शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा; पादार्थम् उदकं पाद्यम्, अर्घार्थम् उदकं अर्घ्यम्, बलये इदम् बालेयम्, अतिथये इदं आतिथ्यम्, अग्निदेवतायै इदं अग्निदैवत्यम्, पितृदेवतायै इदं पित्रदैवतम्।

(ज्ञ) स्वार्थे—इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय होने से शब्द के अर्थ में परि-

वर्तन नहीं होता, पहला ही अर्थ रहता है। यथा; धनुर्धर धानुष्कः, चोर एव चौरः, चण्डाल एव चाण्डालः, मन एव मानसम्, देवता एव दैवतम्, प्रज्ञ एव प्राज्ञः, कुतुक-कौतुकम्, कुतूहल-कौतूहलम्, भस्म्-भास्मः, रक्षस्-राक्षसः, भेषज-भैषज्यम्, इतिहैय-ऐतिह्यम्, त्रिलोकी-त्रैलोक्यम्, करुणा-कारुण्यम्, द्विगुण-द्वैगुण्यम्, त्रिगुण-त्रैगुण्यम्, षड्गुण-षाड्गुण्यम्, चत्वारो वर्णा एव चातुर्वर्ण्यम्, सेना-सैन्यम्, सन्निधि-सान्निध्यम्, समीप-सामीप्यम्, उपमा-औपम्यम्, सुख-सौख्यम्, सोदर-सोदर्य्यः, एक-ऐककः, अत्यय-आत्यायिकः, सूर एव सूर्य्यः, मर्त्त एव मर्त्यः, समान-सामान्यम्, वाच-वाचकः, बाल-बालकः, नौ-नौका, नव-नव्यम्, नवीनम्, एवमेव वाचिकं सन्देशवचनम्।

देवात्तल्—स्वार्थ में देव शब्द के उत्तर तल् होता है। यथा; देव एव देवता।

भागरूपनामभ्यो धेयः—स्वार्थ में भाग, रूप, नामन् इनके परे धेय प्रत्यय होता है। यथा; भाग एव भागधेयः, नाम एव नामधेयम्।

मृदस्तिकन्—स्वार्थ में मृद् शब्द के उत्तर तिकन् प्रत्यय होता है। यथा; मृदेव मृत्तिका।

सस्नौ प्रशंसायाम्—प्रशंसा समझी जाय तो स्वार्थ में मृद् शब्द के उत्तर स और स्न प्रत्यय होते हैं। यथा; प्रशस्ता, मृत् मृत्स्ना, मृत्सा।

नूत्ननूतनौ—नूत्न और नूतन शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, नवमेव नूत्नं, नूतनम्।

औपयिकश्च—औपयिक शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, उपाय एव औपयिकः

(प) सोऽस्य निवासोऽभिजनो वा (सोऽस्य निवासः अभिजनश्च)—सः अस्य निवासः। (निवासोनाम यत्र सम्प्रत्युष्यते), सः अस्य

अभिजनः (अभिजनो नाम यत्र पूर्वैरुषितम्) इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, मथुरा अस्य निवासः माथुरः, मिथिला अस्य निवासः मैथिलः, कम्बोज-काम्बोजः, कश्मीर-काश्मीरः, गन्धार-गान्धारः, कलिङ्ग-कालिङ्गः, उत्कल-औत्कलः, सिन्धु-सैन्धवः, तक्षशिला-ताक्षशिलः, विदेह-वैदेहः, पञ्चाल-पाञ्चालः, मगध-मागधः, अयोध्या-आयोध्यिकः, मद्र-माद्रः, अङ्ग-आङ्गः, वङ्ग-वाङ्गः । अभिजन अर्थ में भी ऐसा ही होता है । यथा, गान्धारोऽस्य अभिजनः गान्धारः इत्यादि ।

लोपो बहुवचने (तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्)—बहुवचन में निवास और अभिजन अर्थ में विहित प्रत्यय का लोप होता है । यथा, अङ्ग एषां निवासः अङ्गाः; वङ्ग एषां निवासः वङ्गाः, कलिङ्ग एषां निवासः कलिङ्गाः, विदेह एषां निवासः विदेहाः, उत्कल-उत्कलाः, कम्बोज-कम्बोजाः, मगध-मगधाः, पञ्चाल-पञ्चालाः, कश्मीर-कश्मीराः ।

न स्त्रियाम् (तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्)—स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता । यथा, मगध आसां निवासः मागध्यः, पञ्चाल-पाञ्चाल्यः, विदेह-वैदेह्यः, कलिङ्ग-कालिङ्ग्यः ।

सोऽस्य राजेत्येवम्—सः अस्य राजा, इस अर्थ में भी वे ही प्रत्यय और कार्य्य होते हैं जो 'सोऽस्यऽनिवासः, सोऽस्याभिजनः' अर्थ में होते हैं । यथा, कश्मीरस्य राजा काश्मीरः, कलिङ्गस्य राजा कालिङ्गः, विदेहस्य राजा वैदेहः, पञ्चाल-पाञ्चालः, मगध-मागधः, निषध-नैषधः । बहुवचन में कश्मीराः, कलिङ्गाः, विदेहाः, पञ्चालाः, मगधाः, निषधाः ।

(ख) तस्य भावः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, कुमारस्य भावः

कौमारम्, शिरोमणिः शैरसम्, वृद्धस्य भावः वार्द्धक्यम्, स्थविर-स्थाविरम्, गुरु-गौरवम्, लघु-लाघवम्, सुष्ठु-सौष्ठवम्, ऋजु-आर्जवम्, मृदु-मार्दवम्, पटु-पाटवम्, सुरभि-सौरभम्, रमणीय-रामणीयम्, कमनीय-कामनीयम्, स्थिर-स्थैर्य्यम्, धीर-धैर्य्यम्, गम्भीर-गाम्भीर्य्यम्, कृश-कार्श्यम्, जड-जाड्यम्, शीत-शैत्यम्, उष्ण-औष्ण्यम्, दृढ-दार्ढ्यम्, मन्द-मान्द्यम्, सुभग-सौभाग्यम्, दुर्भग-दौर्भाग्यम्, मधुर-माधुर्य्यम्, माधुरी; मूर्ख-मौर्ख्यम्, विषम-वैषम्यम्, सम-साम्यम्, कातर-कातर्य्यम्, कर्कश-कार्कश्यम्, बाल-बाल्यम्, शुक्ल-शौक्ल्यम्, सुमनस्-सौमनस्यम्, दुर्मनस्-दौर्मनस्यम्, प्रवीण-प्रावीण्यम्, उदासीन-औदासीन्यम्, कृपण-कार्पण्यम्, मध्यस्थ-माध्यस्थ्यम्, उदार-औदार्य्यम्, विगुण-वैगुण्यम्, सुजन-सौजन्यम्, स्थूल-स्थौल्यम्, अधिक-आधिक्यम्।

(ढ) तस्य भावः कर्म्म च (गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च)—तस्य भावः, तस्य कर्म्म, इन अर्थों में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, ब्राह्मणस्य भावः कर्म्म वा ब्राह्मण्यम्, चोरस्य भावः कर्म्म वा चौर्य्यम्, अलस-आलस्यम्, सेनापति-सैनापत्यम्, अधिपति-आधिपत्यम्, सखि-सख्यम्, शूर-शौर्य्यम्, वीर-वीर्य्यम्, दूत-दूत्यं, दौत्यम्; पुरोहित-पौरोहित्यम्, सुहित सौहित्यम्, सारथि-सारथ्यम्, आस्तिक-आस्तिक्यम्, नास्तिक-नास्तिक्यम्, पण्डित-पाण्डित्यम्, वणिज्-वाणिज्यम्, शुचि-शौचम्, अशुचि-अशौचम्, मुनि-मौनम्, अकुशल-अकौशलम्, अनुकूल-आनुकूल्यम्, प्रतिकूल-प्रातिकूल्यम्, पुरुष-पौरुषम्, सुभ्रातृ-सौभ्रात्रम्, दुर्भ्रातृ-दौर्भ्रात्रम्, सुहृद्-सौहार्द्दम्, दुर्हृद्-दौर्हार्द्दम्, अनृशंस-आनृशंस्यम्, निपुण-कुशल-कौशल्यं, कौसलम्, चपल-चापल्यम्, चापलम्;

नैपुण्यम्, नैपुणम्; सहाय-साहाय्यम्, साहायकम्; चतुर्-चातुर्य्यम्, चातुरी।

(अ) इतरेष्वपि दृश्यन्ते—षिण् इत्यादि प्रत्यय जो अपत्य अर्थ में आते हैं वे तद्धित अनेक अर्थों में आते हैं। यथा, धर्मं चरति धार्मिकः, धर्मं गतः धर्म्यः, पृथिव्या ईश्वरः पार्थिवः, सर्व्वभूमेः ईश्वरः सार्व्वभौमः, चक्षुषा गृह्यते चाक्षुषं रूपम्, श्रवणेन गृह्यते श्रावणः शब्दः, रसनया गृह्यते रासनो रसः, त्वचा गृह्यते त्वाचः स्पर्शः, चक्षुषा निष्पन्नं चाक्षुषं प्रत्यक्षम्, श्रवणेन निष्पन्नं श्रावणम्, रसनया निष्पन्नं रासनम्; त्वचा निष्पन्नं त्वाचम्, पारं गतवान् पारीणः, पारावारं गतवान् पारावारीणः, अर्थेन क्रीतः आर्थः, विद्यया लब्धं वैद्यम्, विद्यायां कुशलः वैद्यः, स्त्रिया जितः स्त्रैणः, द्वारे नियुक्तः दौवारिकः, भाण्डागारे नियुक्तः भाण्डागारिकः, हिमवतः प्रभवति हैमवती गङ्गा, विदूरात् प्रभवति वैदूर्य्यो मणिः, रथेन सञ्चरते रथिकः, अश्वेन सञ्चरते आश्विकः, शकुनीन् हन्ति शाकुनिकः, शकुन्तान् हन्ति शाकुन्तिकः सहसा वर्त्तते साहसिकश्चौरः, जलेन वर्त्तते जलीयो मत्स्यः, अनुकूलं वर्त्तते आनुकूलिकः, प्रतिकूलं वर्त्तते प्रातिकूलिकः, नावा तार्य्या नाव्या नदी, वयसा तुल्यः वयस्यः, तुलया सम्मितं तुल्यम्, गृहपतिना संयुक्तः गार्हपत्योऽग्निः, समाने तीर्थे वसति सतीर्थ्यः, समाने उदरे शयितः समानोदर्य्यः, अग्रे दीयते अग्रियम्, अग्रीयम्, लोके विदितः लौकिकः, सर्व्वलोके विदितः सार्व्वलौकिकः, नित्यं क्रियते दीयते वा नैत्यम्, नैत्यकम्, नैत्यिकम्; निमित्तेन क्रियते दीयते वा नैमित्तिकम्, प्रवेशेन दीयते प्रावेशनम्, प्रावेशनिकम्; सर्व्वाङ्गाणि व्याप्नोति सर्व्वाङ्गीणस्तापः; आप्रपदं-प्राप्नोति आप्रपदीनः पटः, अनुपदं बद्धा अनुपदीना उपा-

नत्, अभ्यमित्रं सम्यक् गच्छति अभ्यमित्रीयः, अभ्यमित्रीणः a soldier who faces the enemy valiantly, सप्तभिः पदैरवाप्यते साप्तपदीनं सख्यम्, इन्द्रस्य आत्मनो लिङ्गं इन्द्रियम्, कुशाग्रमिव कुशाग्रीया बुद्धिः, काकतालमिव (काकागमनमिव तालपतनमिव काकतालम्) काकतालीयम्, प्राक् सम्मुखः प्राचीनः eastern, अवाक् सम्मुखः अवाचीन. southern, सुस्नातं पृच्छति सौस्नातिकः, सुखशयनं पृच्छति सौखशायनिकः, परदारान् गच्छति पारदारिकः, याचितेन निर्वृत्तं याचितकम्, अर्घं गृह्णाति आर्घिकः, आपणस्य धर्म्यं आपणिकम्, नरस्य धर्म्या नारी, वातस्य शमनं कोपनं वा वातिकम्, पित्तस्य शमनं कोपनं वा पैत्तिकम्, सन्निपातस्य शमनं कोपनं वा सान्निपातिकम्, अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य आस्तिकः, नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य नास्तिकः, अस्ति दिष्टमिति मतिः यस्य दैष्टिकः, आमलक्याः फलं आमलकम्, बदर्याः फलं बादरम्, अश्वत्थस्य फलं आश्वत्थम्, न्यग्रोधस्य फलं नैयग्रोधम्।

लोपः क्वचित् प्रत्ययस्य—कहीं कहीं प्रत्यय का लोप होता है। व्रीहीणां फलानि व्रीहयः, यवानां फलानि यवाः, माषाणां फलानि माषाः, मल्लिकायाः पुष्पं मल्लिका, मालत्याः पुष्पं मालती, करवीरस्य पुष्पं करवीरम्, पाटलस्य पुष्पं पाटलं, जात्याः पुष्पं जाती, यूथ्याः पुष्पं यूथी।

जम्ब्वा विभाषा—जम्बु शब्द के उत्तर विकल्प से होता है। यथा; जम्ब्वा। फलं जम्बु जाम्बवम्।

हैयङ्गवीनायस्त्रीनौ—हैयङ्गवीन और आयस्त्रीन निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, ह्यो गोदोहाद् उद्धृतं हैयङ्गवीनम्,

अद्य श्वो वा घटते अद्यश्वीनं मरणम्, अद्यश्वीनो वियोगः, अद्य श्वो वा प्रसूता अद्यश्वीना स्त्री।

पान्थसाक्षिवार्द्धुषिकाः— पान्थ, साक्षिन् और वार्द्धुषिक निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; पथि कुशलः पान्थः, साक्षाद् द्रष्टा साक्षी, वृद्ध्या जीवति वार्द्धुषिकः।

आमुष्मिकामुष्यायणौ—ष्णिकण् और ष्फायनण् प्रत्यय सहित अदस् का आमुष्मिक और आमुष्यायण निपातन से होता है। यथा; अमुष्मिन् (परलोके) हितं आमुष्मिकम्, अमुष्य (मृतस्य) पुत्र आमुष्यायणः।

पौनःपुन्यम्—पौनःपुन्य निपातन से सिद्ध होता है। यथा; पुनः पुनरनुष्ठानं सङ्घटनं वा पौनःपुन्यम्।

N. B. नस्यलोपोऽन्त्यस्य—तद्धित प्रत्यय होने शब्द के अन्तस्थित न् का लोप होता है। यथा; अग्निशर्म्मणोऽपत्यं आग्निशर्म्मिः, उडुलोम्नोऽपत्यं औडुलोमिः, राज्ञां समूहः राजकम्, हस्तिनां समूहः हास्तिकम्, पथि कुशलः पथिकः, सर्व्वकर्म्मसु कुशलः सर्व्वकर्म्मीणः नामैव नामधेयम्, श्वो अद्य भवः श्वस्तनः, सामवेदं अधीते वा सामकः, आत्मन् आत्मीयम्।

२ मानःतस्य पणि—ष्ण् प्रत्यय परे होने से अन्-भागान्त शब्द के न् का लोप नहीं होता है। यथा, यूनो भावः यौवनम्, मघोन इदं माघवनम्, यूनां समूहः यौवनम्, पर्व्वणि क्रियते दीयते वा पार्व्वणम्, सामनि कुशलः सामनः, सुत्वन इदं सौत्वनम्, यज्वनोऽपत्यं याज्वनः, चर्म्मणा परिवृतः चार्म्मणः, कर्म्माणि शीलं कार्म्मणः, अश्मनो विकारः आश्मनः।

३ ये च भावकर्म्मवर्ज्जे—तद्धित के य परे रहने से अन् भागान्त शब्द के न् का लोप होता है। यथा, सामनि साधुः सामन्यः, मूर्द्धनि साधुः मूर्द्धन्यः, अध्वनि साधुः अध्वन्यः, राजनि साधुः राजन्यः कर्म्मणि दमवर्ति कर्म्मण्यः, मूर्द्धनि भवः मूर्द्धन्यः। कर्म्म और भाव अर्थ में न् का लोप

होता है। यथा, राज्ञो भावः कर्म्म वा राज्यम्।

४ नाध्वात्मनोर्खीने—खीन् प्रत्यय होने से अध्वन् और आत्मन् के न् का लोप होता है। यथा, अध्वनि साधुः अध्वनीनः, आत्मने हितं आत्मनीनम्।

५ मनन्तस्यापत्यण्णि—अपत्य अर्थ में विहित णण् प्रत्यय परे रहने से मन् भागान्त शब्द के न् का लोप होता है। यथा, सुनाम्नोऽपत्यं सौनामः, दुर्नाम्नोऽपत्यं दौर्नामः, हस्तनाम्नोऽपत्यं हास्तनामः।

६ वा हितनाम्नः—हितनामन् के परे विकल्प से न का लोप होता है। यथा, हितनाम्नोऽपत्यं हैतनामः, हैतनामनः।

७ हेमाश्मनोर्विकारे—विकारार्थे विहित णण् प्रत्यय परे रहने से हेमन् और अश्मन् के न् का लोप होता है। यथा, हेम्नो विकारः हैमः, अश्मनो विकारः आश्मः।

८ चर्म्मणः कोषे—कोष अर्थ में चर्म्मन् के न् का लोप होता है। यथा, चर्म्मणो विकारः चार्म्मः कोषः।

९ ब्रह्मणोऽजातौ—जाति भिन्न अर्थ में ब्रह्मन् के न् का लोप होता है। यथा, ब्रह्मा अस्य देवता ब्राह्मं अस्त्रम्, ब्राह्मं हविः, ब्राह्मी ओषधिः, ब्रह्म उपास्ते ब्राह्मः, ब्रह्मण इयं ब्राह्मी तनुः। जाति अर्थ में नहीं होता। यथा, ब्रह्मणोऽपत्यं ब्राह्मणः।

१० नेनन्तस्य चणि—णण् प्रत्यय होने से इन्-भागान्त शब्द के न् का लोप नहीं होता है। यथा, वर्म्मिण इदं वार्म्मिणम्, हस्तिन इदं हास्तिनम्, मेधाविन इदं मेधाविनम्, दण्डिन इदं दाण्डिनम्, अपत्य अर्थ में होता है; यथा, मेधाविनोऽपत्यं मेधावः, मायाविनोऽपत्यं मायावः। गाथिन् इत्यादि में नहीं होता, यथा, गाथिनोऽपत्यं गाथिनः, केशिनोऽपत्यं कैशिनः।

इन् संयुक्तवर्ण से मिला हो तो नहीं होता; यथा, शङ्खिनोऽपत्यं शाङ्खिनः, शार्ङ्गिणोऽपत्यं शार्ङ्गिणः, चक्रिणः अपत्यं चाक्रिणः।

१० तस्य भावस्त्वतलौ—तस्य भावः, इस अर्थ में शब्द के उत्तर त्व और तल् प्रत्यय होते हैं। तल् का त रहता है। त्व प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग और तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्री-लिङ्ग होते हैं। यथा, प्रभोर्भावः प्रभुत्वम्, प्रभुता; भीरोर्भावः भीरुत्वम्, भीरुता; मनुष्य-मनुष्यत्वम्, मनुष्यता, अमर अमरत्वम्, अमरता; पशु-पशुत्वम्, पशुता, शूर-शूरत्वम्, शूरता; चपल-चपलत्वम्, चपलता; नास्तिक-नास्तिकत्वम्, नास्तिकता; अलस-अलसत्वम्, अलसता; अन्ध-अन्धत्वम्, अन्धता; मूर्ख-मूर्खत्वम्, मूर्खता; मूक-मूकत्वम, मूकता; राज-राजत्वम, राजता; युवन्-युवत्वम्, युवता; न्यून-न्यूनत्वम्, न्यूनता।

११ वा नीलादेरिमनिः—तस्य भावः, इस अर्थ में नील इत्यादि प्रातिपदिक के उत्तर इमनि होता है और इसका इमन् रहता है। इमन् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। पक्षान्तर में त्व और तल् होते हैं। यथा, नीलस्य भावः नीलिमा, नीलत्वम्, नीलता; पीत-पीतिमा, पीतत्वम्, पीतता; रक्त रक्तिमा, रक्तत्वम्, रक्तता; शुक्ल-शुक्लिमा, शुक्लत्वम, शुक्लता; उष्ण-उष्णिमा, उष्णत्वम्, उष्णता; जड-जडिमा, जडत्वम्, जडता; मधुर-मधुरिमा, मधुरत्वम्, मधुरता।

(क) ओर्लोपोऽन्त्यस्य—इमन् प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित उ का लोप होता है (इष्ठ और ईयसु प्रत्यय में भी यही नियम लगता है)। यथा, लघोर्भावः लघिमा, लघुत्वम्, लघुता; अणु-अणिमा, अणुत्वम्, अणुता; तनु-तनिमा, तनुत्वम्, तनुता; स्वादु-स्वादिमा, स्वादुत्वम्, स्वादुता, पटु-पटिमा, पटुत्वं, पटुता, ऋजु-ऋजिमा, ऋजुत्वम्, ऋजुता।

(ख) ऋतो रः पृथ्वादेः (र ऋतो हलादेर्लघोः)—इमनि, इष्ठ,

और ईयस् प्रत्यय होने से पृथु, मृदु, दृढ, कृश, भृश और परिवृढ के ऋ का र् होता है। यथा, पृथोर्भावः प्रथिमा, पृथुत्वम्, पृथुता; मृदु-म्रदिमा, मृदुत्वम्, मृदुता; दृढ-द्रढिमा, दृढत्वम्, दृढता; कृश-क्रशिमा, कृशत्वम्, कृशता; भृश-भ्रशिमा, भृशत्वम्, भृशता; परिवृढ-परिव्रढिमा, परिवृढत्वम्, परिवृढता।

(ग) प्रिय-महतोः प्र-महौ (प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः)—इमन्, इष्ठ और ईयसु प्रत्यय होने से प्रिय का प्र और महत् का मह होता है। यथा, प्रियस्य भावः प्रेमा, प्रियत्वम्, प्रियता; महतो भावः महिमा, महत्त्वम्, महत्ता।

(घ) गुरु-ह्रस्व-दीर्घाणां गर् ह्रस-द्राघाः (प्रियस्थिर... । स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः)—इमनि, इष्ठ और ईयसु प्रत्यय होने से गुरु का गर्, ह्रस्व का ह्रस् और दीर्घ का द्राघ् होता है। यथा, गुरोर्भावः गरिमा, गुरुत्वम्, गुरुता; ह्रस्व-ह्रसिमा, ह्रस्वत्वम्, ह्रस्वता; दीर्घ-द्राघिमा, दीर्घत्वम्, दीर्घता।

(च) भूमा बहोर्लोपो भू च बहोः)—बहु शब्द के परे इमनि होने से भूमन् निपातन से सिद्ध होता है। यथा, बहोर्भावः भूमा।

१२ औपम्ये वतिच् (तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः)—सादृश्य समझा जाय तो शब्द के उत्तर वतिच् होता है और इसका वत् रहता है। यथा, चन्द्र इव मुखं चन्द्रवन्मुखम्, हिममिव शीतलं हिमवत् शीतलम्, समुद्र इव गम्भीरः समुद्रवद्गम्भीरः, पर्वत इव उन्नतः पर्वतवदुन्नतः, ब्राह्मण इव अधीते ब्राह्मणवदधीते, क्षत्रिय इव युध्यते क्षत्रियवद्युध्यते, पितरमिव पूजयति पितृ-

वत् पूजयत्युपाध्यायम्, पुत्रमिव स्निह्यति पुत्रवत् स्निह्यति शिष्यम्, गृहे इव वसति गृहवद्वसति वने, शय्यायामिव शेते शय्यावत् शेते भूतले, देवदत्तस्य इव भवनं देवदत्तवद्भवनं यज्ञदत्तस्य, रामस्येव पितृभक्तिः रामवत् पितृभक्तिर्भरतस्य, राजेव राजवत्, आत्मेव आत्मवत्।

११ तेन वित्तश्चुञ्चुपचणपौ (तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ)—तेन वित्तः, इस अर्थ में शब्द के उत्तर चुञ्चु और चण होते हैं। यथा, अर्थेन वित्तः अर्थचुञ्चुः, अर्थचणः famous for wealth, विद्यया वित्तः विद्याचुञ्चुः, विद्याचणः, ज्ञानेन वित्तः ज्ञानचुञ्चुः, ज्ञानचणः। माया-मायाचुञ्चुः, मायाचणः, अस्त्र-अस्त्रचुञ्चुः अस्त्रचणः, कर्मन्-कर्मचुञ्चुः, कर्मचणः।

१४ तदस्यास्मिन् वा संजातं तारकादिभ्य इतः (तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच्)—तत् अस्य संजातम्, तत् अस्मिन् संजातम्, इन अर्थों में शब्द के परे इत होता है। यथा, तारका अस्मिन् सञ्जाताः तारकितं नभः, पल्लवाः अस्य सञ्जाताः पल्लवितः तरुः, फलानि अस्य संजातानि फलितो वृक्षः, पुष्प-पुष्पिता लता, तरङ्ग-तरङ्गिता नदी, उत्कण्ठा-उत्कण्ठितं मनः, अन्धकार-अन्धकारितं जगत्, कलङ्क-कलङ्कितश्चन्द्रः, कर्द्दम-कर्द्दमिताः सन्ध्याः, पुलकानि अस्मिन् सञ्जातानि पुलकितं शरीरम्, अङ्कुर-अङ्कुरितं धान्यम्, व्याधि-व्याधितो मनुष्यः, मञ्जरी-मञ्जरितः, कुड्मल-कुड्मलितः, स्तवक-स्तवकितः, किसलय-किसलयितः, मुकुल-मुकुलितः, कुवलय-कुवलयितः, कोरक-कोरकितः, निद्रा-निद्रितः, मुद्रा-मुद्रितः, बुभुक्षा-बुभुक्षितः, पिपासा-पिपासितः, सुख सुखितः, दुःख-दुःखितः, व्रण-व्रणितः, तिलक-तिलकितः, गर्व-गर्वितः, दर्प-दर्पितः, क्षुध (क्षुधा)-क्षुधितः, सीमन्त-सीमन्तितः, ज्वर-ज्वरितः, रोग-रोगितः, रोमाञ्च-रोमाञ्चितः,

पण्डा-पण्डितः, कण्टक-कण्टकितः, क्षुधा-क्षुधितः, कल्लोल-कल्लोलितः, शीतल-शीतलितः, कज्जल-कज्जलितः, पिण्ड-पिण्डितः, प्रतिबिम्ब-प्रतिबिम्बितः, मूर्च्छा मूर्च्छितः, दीक्षा-दीक्षितः।

१५ प्रमाणे मात्र दघ्न द्वयसः (प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः)—परिमाण अर्थ में शब्द के उत्तर मात्रच्, दघ्नच्, और द्वयसच् प्रत्यय होते हैं और इनका यथाक्रम मात्र, दघ्न और द्वयस् रहता है। यथा, हस्तः प्रमाणमस्य हस्तमात्रम्, हस्तदघ्नम्, हस्तद्वयसम्; जानु प्रमाणमस्य जानुमात्रम्, जानुदघ्नम्, जानुद्वयसम्; ऊरुमात्रम्, ऊरुदघ्नम्, ऊरुद्वयसम्, वितस्ति-वितस्तिमात्रम्, वितस्तिदघ्नम्, वितस्तिद्वयसम्। ताल-तालमात्रम्, तालदघ्नम्, तालद्वयसम्, गज-गजमात्रम्, गजदघ्नम्, गजद्वयसम्।

१६ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्—परिमाण अर्थ में यद्, [illegible] और एतद् के परे वतुप् होता है और इसका वत् रहता है।

(क) आ घः (आ सर्वनाम्नः)—वतुप् होने से यद्, तद्, एतद् के द का आ होता है। यथा, यत् परिमाणमस्य यावान्, [illegible] परिमाणस्य तावान्, एतत् परिमाणमस्य एतावान्।

(ख) कियदियतौ (किमिदंभ्यां वो घः)—किम् और इदम् शब्द [illegible] उत्तर घतुप् होने से कियत् और इयत् निपातन [illegible] सिद्ध होते हैं। यथा, किं परिमाणमस्य कियान्, इदं परिमाणम[illegible] इयान्।

१७ किमः संख्यापरिमाणे डतिः (संख्यापरिमाणे डति च)—संख्या-परिमाण समझा जाय तो किम् शब्द के उत्तर डति होता है और इसका अति रहता है। यथा, का संख्या परिमाण-[illegible]ं कति। कति शब्द बहुवचनान्त है।

१८ अवयवे तयप् संख्यायाः (संख्याया अवयवे तयप्)—अवयव

अर्थ में संख्यावाचक शब्द के उत्तर तयट् होता है और इसका तय रहता है। यथा, चत्वारो अवयवा अस्य चतुष्टयम्, पञ्च अवयवा अस्य पञ्चतयम्, शत-शततयम्, सहस्र-सहस्रतयम्।

(क) द्वयट् वा द्वित्रिभ्याम् (द्वित्रिभ्यां तयस्यायच् वा)—अवयव अर्थ में द्वि और त्रि के परे विकल्प से ङयट् होता है और इसका अय रहता है। पक्षान्तर में तयट् होता है। यथा, द्वौ अवयवौ अस्य द्वयं, द्वितयम्; त्रयोऽवयवा अस्य त्रयम्, त्रितयम्।

(ख) उभाद्यः (उभादुदात्तो नित्यम्)—अवयव अर्थ में उभ के उत्तर य होता है। यथा, उभौ अवयवौ अस्य उभयम्।

(ग) तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः—तत् अस्मिन् अधिकम्, इस अर्थ में दशन् भागान्त शब्द के उत्तर ड होता है और इसका अ रहता है। यथा, एकादश अधिका अस्मिन् एकादशं शतम्, द्वादशं शतम्, त्रयोदशं शतम्, चतुर्दशं शतम्।

(घ) शदन्त विंशतेश्च—तत् अस्मिन् अधिकम्, इस अर्थ में शत् भागान्त और विंशति शब्द के उत्तर ड होता है। यथा, त्रिंशत् अधिका अस्मिन् त्रिंशं शतम्, चत्वारिंशं शतम्, पञ्चाशं शतम्, एकत्रिंशं शतम्, चतुश्चत्वारिंशं शतम्, पञ्चपञ्चाशं शतम्, विंशं शतम्, एकविंशं शतम्।

१२ संख्यायाः पूरणे डट् (तस्य पूरणे डट्)—पूरण अर्थ में संख्यावाचक शब्द के उत्तर डट् होता है और इसका अ रहता है। यथा, एकादशानां पूरणः एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः, चतुर्दशः, पञ्चदशः, षोडशः, सप्तदशः, अष्टादशः।

(क) नान्तादसंख्यादेर्मट्—पूरण अर्थ में नकारान्त संख्यावाचक शब्द के उत्तर मट् होता है। मट् का म रहता है। यथा, पञ्चानां पूरणः पञ्चमः, सप्तानां पूरणः सप्तमः, अष्टमः,

नवमः, दशमः । अन्य संख्यावाचक शब्द में नहीं होता; यथा, एकादशानां पूरणः एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः ।

(ख) षट्-चतुर्-षष्-कतिभ्यः (षट्कति कतिपयचतुरां थुक्)-पूरण अर्थ में चतुर्, षष् कति और कतिपय के उत्तर थट् होता है और इसका थ रहता है । यथा, चतुर्णां पूरणः चतुर्थः, षष्ठः, कति-कतिथः, कतिपय-कतिपयथः ।

(ग) द्वेस्तीयः—पूरण अर्थ में द्वि. के उत्तर तीय होता है । यथा, द्वयोः पूरणः द्वितीयः ।

(घ) तृतीय-तुर्य-तुरीयाः—पूरण अर्थ में तृतीय, तुर्य और तुरीय निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, त्रयाणां पूरणः तृतीयः, चतुर्णां पूरणः तुर्यः, तुरीयः ।

(च) विंशत्यादेस्तमट् वा (विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम्)—पूरण अर्थ में विंशति इत्यादि संख्यावाचक शब्द के उत्तर विकल्प से तमट् होता है और इसका तम रहता है । पक्षान्तर में डट् होता है । यथा, विंशतेः पूरणः विंशतितमः, विंशः, एकविंशतितमः, एकविंशः; द्वाविंशतितमः, द्वाविंशः, त्रयोविंशतितमः, त्रयोविंशः; त्रिंशत्तमः, त्रिंशः; चत्वारिंशत्तमः, चत्वारिंशः; पञ्चाशत्तमः, पञ्चाशः ।

नित्यं शतादेः (नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च)-शत इत्यादि शब्द के उत्तर नित्य तमट् होता है । यथा, शतस्य पूरणः शततमः, सहस्र-सहस्रतमः, अयुत अयुततमः, मासतमः, अर्धमासतमः, संवत्सरतमः ।

षष्ट्यादेश्चासंख्यादेः—षष्टि प्रभृति संख्यावाचक शब्द के उत्तर नित्य तमट् होता है । यथा, षष्टेः पूरणः षष्टितमः, सप्ततितमः, अशीतितमः । नवतितमः । अन्य संख्यावाचक शब्द पहले रहने से विकल्प से होता है; यथा, एकषष्टेः पूरणः एकषष्टितमः, एकषष्टः, द्विषष्टितमः, द्विषष्टः ।

(छ) बहु-गण-पूग-संघेभ्यस्तिथुक् (बहुपूगगणसंघस्य तिथुक्)-पूरण

अर्थ में बहु, गण, पूग और संघ के उत्तर तिथुक् होता है और इसका तिथ रहता है। यथा, बहूनां पूरणः बहुतिथः, गणानां पूरणः गणतिथः, पूगतिथः, संघतिथः।

(ञ) वत्वन्तादिथुक् (वतोरिथुक्)— पूरण अर्थ में वतु प्रत्ययान्त शब्द के उत्तर इथुक् होता है और इथ रहता है। यथा, यावतां पूरणः यावतिथः, तावतिथः, कियतिथः, एतावतिथः।

२१ तदस्यास्मिन्वास्ति मतुप् (तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्)—तत् अस्य अस्ति, तत् अस्मिन् अस्ति इन अर्थों में शब्द के उत्तर मतुप् होता है और इसका मत् रहता है। यथा, मतिरस्यास्ति मतिमान्, बुद्धिः अस्मिन् अस्ति बुद्धिमान्, धी-धीमान्, श्री-श्रीमान्, अंशु-अंशुमान्, पितृ-पितृमान्, धनुस्-धनुष्मान्, वपुस्-वपुष्मान्, अग्नि-अग्निमान्, वायु-वायुमान्, नदी-नदीमान् देशः, गावोऽस्यां सन्ति गोमती शाला।

N. B. अवर्णान्तात्मो वः (मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः)—अवर्णान्त शब्द के उत्तर विहित मतुप् के म का व होता है। यथा, ज्ञानं अस्य अस्ति ज्ञानवान्, धन-धनवान्, बल-बलवान्, विद्या-विद्यावान्, दया-दयावान्, क्षमा-क्षमावान्।

२ मतु म वान-स्पर्शान्तात् (झयः। संज्ञायाम्;—जिन शब्दों के अन्त में ङ, ञ, ण, म भिन्न स्पर्श वर्ण हों उनके उत्तर विहित मतुप् के म का व होता है। यथा; तडित् अस्मिन्नस्ति तडित्वान्, विद्युत् अस्मिन्नस्ति विद्युत्वान्।

३ मवर्णोपधात् (मादुपधायाश्च...)—जिन शब्दों की उपधा में मवर्ण हो उनके उत्तर विहित मतुप् के म का व होता है। यथा, आत्मा अस्यास्ति आत्मवान्, भासोऽस्य सन्ति भास्वान्।

४ मकारोपधाच्च (मादुपधायाश्च...)—जिन शब्दों की उपधा

में म हो उनके उत्तर विहित मतुप् के म का व होता है। यथा, लक्ष्मीर-स्त्यस्मिन् लक्ष्मीवान्, शमी-शमीवान्।

५ ■ यवादेः (मादुपधायाश्च....)—यव इत्यादि शब्दों के उत्तर विहित मतुप् के म का व नहीं होता। यथा, यवमान्, कुशमान्, वटामान्, ध्राक्षामान्, गरुत्मान्, हरित्मान्, ककुद्मान्, ऊर्मिमान्, भूमिमान्, कृमिमान्।

६ उदन्वदादयः संज्ञायाम्—मतुप् प्रत्यय होने से और संज्ञा अर्थ बोध होने से उदन्वत् इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, उदकमस्मिन्नस्ति उदन्वान् समुद्रः, अन्यत्र उदकवान्, चर्म अस्यामस्ति चर्मण्वती नाम नदी, अन्यत्र चर्मवती; अस्थि अस्मिन्नस्ति अष्ठीवान्, जानुसन्धिः, अन्यत्र अस्थिमान्; चक्रमस्यास्ति चक्रीवान् नाम राजा, अन्यत्र चक्रवान्, कक्ष्या अस्यास्ति कक्षीवान् नाम ऋषिः, अन्यत्र कक्ष्यावान्; लवणमस्मिन्नस्ति लवणवान् नाम पर्वतः, अन्यत्र लवणवान्।

(क) कुमुद नड-वेतस-महिषेभ्यो ड्मतुप्—कुमुद, नड, वेतस और महिष के उत्तर ड्मतुप् होता है और इसका मत् रहता है। यथा, कुमुदान्यस्मिन् सन्ति कुमुद्वान्, नडान्यस्मिन् सन्ति नड्वान् वेतसान्यस्मिन् सन्ति वेतस्वान्, महिषा अस्मिन् सन्ति महिष्मान्।

(ख) अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिर्वा—अस् भागान्त, माया, मेधा और स्रज् के उत्तर विकल्प से विनि होता है और उसका विन् रहता है। पक्षान्तर में मतुप् होता है। यथा, यशोऽस्यास्ति यशस्वी, यशस्वान्; तेजोऽस्यास्ति तेजस्वी, तेजस्वान्; पयोऽस्या अस्ति पयस्विनी, पयस्वती धेनुः माया अस्यास्ति मायावी, मायावान्; मेधा अस्यास्ति मेधावी, मेधावान्; स्रक् अस्यास्ति स्रग्वी, स्रग्वान्।

नित्यं तपसः—तपस् शब्द के उत्तर नित्य विनि होता है। यथा, तपोऽस्यास्ति तपस्वी।

(ग) इन् वा नैकस्वरादवर्णात्—एकाधिक स्वरविशिष्ट अवर्णान्त शब्द के उत्तर विकल्प से इन् होता है। पक्षान्तर में यथासम्भव मतुप् और विनि होता है। यथा, ज्ञानं अस्यास्ति ज्ञानी, ज्ञानवान्; बल-बली, बलवान्; धन-धनी, धनवान्; शिखा शिखी, शिखावान्; चूडा-चूडी, चूडावान्; माया-मायी, मायावी, साहस-साहसी, साहसवान्; विवेक-विवेकी, विवेकवान्; उत्साह-उत्साही, उत्साहवान्।

नित्यं सुखादेः—सुख इत्यादि के उत्तर नित्य इन् होता है। यथा, सुखमस्यास्ति सुखी, दुःख-दुःखी, प्रणय-प्रणयी, कृच्छ्र-कृच्छ्री, सहस्र-सहस्री।

हस्तकराभ्यां जातौ—जाति समझे जाने से हस्त और कर के उत्तर नित्य इन् होता है। यथा, हस्तोऽस्यास्ति हस्ती (गजः), करोऽस्यास्ति करी (गजः)। अन्यत्र हस्तवान् पुरुषः।

वर्णाद् ब्रह्मचारिणि—ब्रह्मचारी समझे जाने से वर्ण शब्द के उत्तर नित्य इन् होता है। यथा, वर्णः अस्यास्ति वर्णी (ब्रह्मचारी)। अन्यत्र वर्णवान्।

पुष्करादिभ्यो देशे—स्थान समझे जाने से पुष्कर इत्यादि शब्द के उत्तर नित्य इन् होता है, यथा, पुष्कराण्यस्यां सन्ति पुष्करिणी (दीर्घिका), पद्मान्यस्यां सन्ति पद्मिनी, उत्पलिनी, पङ्कजिनी, सरोजिनी, सरोरुहिणी, अरविन्दिनी, अम्भोजिनी, अब्जिनी, कमलिनी, कुमुदिनी, कैरविणी, बिसिनी, मृणालिनी, समालिनी, नलिनी, तरङ्गिणी, कल्लोलिनी, तटिनी, प्रवाहिनी।

अर्थाद् याचके—याचक समझे जाने से अर्थ शब्द के उत्तर

नित्य इन् होता है। यथा, अर्थोऽस्यास्ति अर्थी (याचकः)। अन्यत्र अर्थवान्।

अर्थान्तेभ्यश्च—अर्थ अन्त वाले शब्दों के उत्तर नित्य इन् होता है। यथा, विद्यारूपोऽर्थः, प्रयोजनमस्यास्ति विद्यार्थी, धनार्थी, धान्यार्थी, हिरण्यार्थी, गुरुदक्षिणार्थी।

(घ) मांसादेर्लो विभाषा—मांस इत्यादि शब्द के उत्तर विकल्प से ल होता है। यथा, मांसमस्यास्ति मांसलः, श्री-श्रीलः Prosperous, पक्ष्म-पक्ष्मलः having eye-lash, स्नेह-स्नेहलः, शीत-शीतलः, पिङ्गलः, पित्तलः bilious, पृथुलः, मृदुलः, मण्डलः, वत्सुलः, कपिलः, मन्थिलः, कुशलः, पांशुलः, श्लेष्मलः, पेशलः dexterous, तुण्डलः, अंशलः, वत्सलः। पक्षान्तर में मतुप् होता है।

(ङ) फेनादिलच्च—फेन के उत्तर विकल्प से ल और इल होता है। यथा, फेनोऽस्मिन्नस्ति फेनलः, पक्षान्तर में फेनायन्।

(छ) लोमादेःशः (लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः)—लोमन् इत्यादि शब्द के उत्तर श होता है। यथा, लोमान्यस्य सन्ति लोमशः, रोमशः, गिरिशः, कर्कशः, कपिशः।

(ज) पिच्छापङ्काभ्यामिलः (लोमादि.... ...)—पिच्छा और पङ्क के उत्तर इल होता है। यथा, पिच्छा अस्यास्ति पिच्छिलः, पङ्किलः।

(झ) दन्तादुरः (दन्त उन्नत उरच्)—दन्त के उत्तर उर होता है। यथा, उन्नता दन्ताः सन्त्यस्य दन्तुरः।

(ट) ऊष-सुषि मुष्क-मधुभ्यो रः (ऊषसुषिमुष्कमधो रः)—ऊष, सुषि, मुष्क और मधु के उत्तर र होता है। यथा, ऊषर, सुषिरः, मुष्करः, मधुरः।

मुखादेश्च—मुख इत्यादि के उत्तर र होता है। यथा, मुखं अस्यास्ति मुखरः, कुञ्जरः, नगरम्, पाण्डुरः।

(ड) नड-शादाभ्यां ड्वलप्—नड और शाद के उत्तर ड्वलप् होता है और इसका वल रहता है। यथा; नडा अस्मिन् सन्ति नड्वलः, a bounding in reeds, शादा अस्मिन् सन्ति शाद्वलः muddy.

(ढ) कृष्यादेर्वलः (रजः कृष्यासुतिपरिषदो वलच्)—कृषि इत्यादि के उत्तर वल होता है।

दीर्घोऽन्त्यस्य (वले)—वल प्रत्यय होने से अन्त्य स्वर का दीर्घ होता है। यथा, कृषिरस्यास्ति कृषीवलः, पारषद्वलः पर्षद्वलः spectator, रजस्वला, ऊर्ज्जस्वलः powerful, दन्तावलो हस्ती, शिखावलो (मयूरः)।

(ट) केशादेर्वः स'ज्ञायाम्—संज्ञा समझे आने से केश इत्यादि के उत्तर व होता है। यथा; केशा सन्त्यस्य केशवः (विष्णुः), मणिरस्यास्ति मणिवः (नागविशेषः), अजगव-अजगवं (पिनाकः) गाण्डिवम्, इकार का दीर्घ भी होता है; गाण्डीवम्।

(ण) स्वात् आमिन्नैश्वर्य्ये (स्वामिन्नैश्वर्य्ये)—ऐश्वर्य्य समझे जाने से स्व के उत्तर आमिन् होता है। यथा; स्वं (ऐश्वर्य्य) अस्यास्ति स्वामी।

(त) शीतोष्णाभ्यामालुरसहने—असहन अर्थ में शीत और उष्ण के उत्तर आलु होता है। यथा; शीतं न सहते शीतालुः, उष्णं न सहते उष्णालुः।

(थ) वातातीसाराभ्यां रोगे किन् (वातातीसाराभ्यां कुक् च)—रोग समझे जाने से वात और अतीसार के उत्तर किन् होता है। यथा; वातोऽस्यास्ति वातकी, अतीसार-अतीसारकी।

(द) बल्यादेर्भः (तुन्दिवलिवटेर्भः—वलि इत्यादि के उत्तर भ होता है। यथा, वलयोऽस्मिन् सन्ति वलिभम्।

(ग) अर्श आदेरच् (अर्शआदिभ्योऽच्)—अर्शस् इत्यादि के उत्तर मत् होता है और इसका अ रहता है। यथा, अर्शांसि अस्य सन्ति अर्शसः, उरस्-उरसः, पलित-पलितः greyhaired, जट-जटः, अम्ल-अम्लः, घट-घटः, लवण-लवणः।

(घ) अहंशुभमोर्युः (अहं शुभमोर्युस्)—अहम् और शुभम् के उत्तर यु होता है। यथा; अहं अस्यास्ति अहंयुः, शुभंयुः।

(ङ) ज्योत्स्नादयः (ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः)—ज्योत्स्ना इत्यादि शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, ज्योतिरस्यास्ति ज्योत्स्ना, तमस्-तमिस्रा, शृङ्ग-शृङ्गिणः, मल-मलिनः, मलीमसः, अर्णस्-अर्णवः।

(च) वाग्मिन् वाचाल-वाचाटाः (वाचो ग्मिनिः। आलजाटचौ बहुभाषिणि)—वाग्मिन्, वाचाल, और वाचाट निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, वाचोऽस्य सन्ति वाग्मी, यः कुत्सितं बहु भाषते स वाचालः, वाचाटः।

२४ मूले जाहः कर्णादिः—मूल अर्थ में कर्ण इत्यादि के उत्तर जाह होता है। यथा; कर्णस्य मूलं कर्णजाहम्, अक्ष्णोः मूलं अक्षिजाहम्, भ्रूजाहम्, नखजाहम्, केशजाहम्, पादजाहम्, शृङ्गजाहम्, दन्तजाहम्।

(क) पक्षात्तिः—मूल अर्थ में पक्ष के उत्तर ति होता है। यथा, पक्षस्य मूलं पक्षतिः।

२५ मातृपितृभ्यां डुलव्यौ भ्रातरि (पितुर्भ्रातरि व्यत्। मातुर्डुलच्)—भ्रातृ अर्थ में मातृ के उत्तर डुल और पितृ के उत्तर व्य होता है। डुल का उल रहता है। यथा; मातुर्भ्राता मातुलः, पितुर्भ्राता, पितृव्यः।

२६ डामहः पित्रोः मातृपितृभ्यां पितरि डामहच्)—पितृ और मातृ अर्थ में मातृ, पितृ के उत्तर डामह होता है और इसका

आमह रहता है। यथा; मातुः पिता मातामहः, पितामहः, मातामही, पितामही।

२७ ठः कर्म्मणः कुशले (कर्म्मणि घटोऽठच्) कुशल अर्थ में कर्म्मन् के उत्तर ठ होता है। यथा; कर्म्मणि कुशलः कर्म्मठः।

२८ पूर्व्वादिनिस्तृतीयार्थे (पूर्व्वादिनिः। सपूर्व्वाच्च)—तृतीया के अर्थ में पूर्व्व के उत्तर इनि होता है और इसका इन् रहता है। यथा; पूर्व्वमनेन कृतं (भुक्तं, पीतं, गतं वा) पूर्व्वी, कृतं पूर्व्वमनेन कृतपूर्व्वी कटम्, भुक्तं पूर्व्वमनेन भुक्तपूर्व्वी ओदनम्, पीतं पूर्व्वमनेन पीतपूर्व्वी पयः, गतं पूर्व्वमनेन गतपूर्व्वी गृहम्।

(क) इष्टादिभ्यश्च— तृतीया के अर्थ में इष्ट इत्यादि के उत्तर इनि होता है। यथा; इष्ट मनेन इष्टी यज्ञे, अधीत-अधीती शास्त्रे, श्रुत-श्रुती वेदे, गृहीत-गृहीती उपदेशे, अज्ञात-अज्ञाती इतिहासे, आसेवित-आसेवितो गुरो, निराकृत-निराकृती शत्रौ, उपकृत-उपकृती मित्रे, अवकीर्ण-अवकीर्णी व्रते।

२९ अतिशायने तमबिष्ठनौ—अनेक में से एक का उत्कर्ष जाना जाय तो तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं और इनका यथाक्रम तम और इष्ठ रहता है। यथा; अयमेषामतिशयेन पटुः पटुतमः, पटिष्ठः; अयमेषां अतिशयेन लघुः लघुतमः, लघिष्ठः; गुरु-गुरुतमः, गरिष्ठः; प्रियतमः, प्रेष्ठः; दीर्घतमः, द्राघिष्ठः; दृढतमः, द्रढिष्ठः; मृदुतमः म्रदिष्ठः; कृशातमः, क्रशिष्ठः।

३० द्वयोस्तरबीयसुनौ (द्विवचनविभज्योपपदेतरबीयसुनौ)—दो में से एक का उत्कर्ष समझा जाय तो शब्द के उत्तर तरप् और ईयसुन् होते हैं और इनका तर और ईयस् रहता है। यथा; अयमनयोरतिशयेन पटुः पटुतरः, पटीयान्; लघु-लघुतरः, लघीयान्; गुरु-गुरुतरः, गरीयान्; प्रियतरः, प्रेयान्; दीर्घ-

तरः, द्राघीयान्; दृढतरः, द्रढीयान्; मृदुतरः, म्रदीयान्; कृशतरः क्रशीयान् ।

N. B. श्रज्यौ प्रशस्यस्य (प्रशस्यस्य श्रः । ज्य च)—इष्ठन् और ईयसुन् प्रत्यय होने से प्रशस्य शब्द का श्र और ज्य होता है । यथा; अयमेषामतिशयेन प्रशस्यः श्रेष्ठः, ज्येष्ठः; अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः श्रेयान् ।

२ आ ज्यादीयसुनः (ज्यादादीयसः)—ज्या आदेश के परवर्ती ईयसुन के ई का आ होता है । यथा; ज्यायान् ।

३ वर्षज्यौ वृद्धस्य (वृद्धस्य च)— इष्ठन् और ईयसुन् परे रहने से वृद्ध का वर्ष और ज्य होता है । यथा; अयमेषामनयोर्वा अतिशयेन वृद्धः वर्षिष्ठः, वर्षीयान्; ज्येष्ठः ज्यायान् ।

४ अन्तिकबाढयोर्नेद-साधौ—अन्तिक का नेद और बाढ का साध होता है । यथा; नेदिष्ठः, नेदीयान्; साधिष्ठः, साधीयान् ।

५ अल्पस्य कन् विभाषा (युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्)—अल्प का विकल्प से कन् होता है । यथा; कनिष्ठः, कनीयान्; अल्पिष्ठः अल्पीयान् ।

६ यूनः कयनौ (स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादि परं पूर्वस्य च गुणः)—युवन् का विकल्प से कन् और यव् होता है । यथा; कनिष्ठः, कनीयान्; यविष्ठः, यवीयान् ।

७ स्थूलदूरयोः स्थवदवौ (स्थूलदूर ...)—स्थूल का स्थव और दूर का दव होता है । यथा; स्थविष्ठः, स्थवीयान्; दविष्ठः, दवीयान् ।

८ उरुगुरुयोर्वरगरौ (प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः)—उरु का वर और गुरु का गर होता है ।

९ प्रियबहुलयोः प्रेबंहौ (प्रियस्थिर ....)—प्रिय का प्रे और बहुल का बंह होता है । यथा; प्रेष्ठः, प्रेयान्; बंहिष्ठः, बंहीयान् ।

१० स्थिरस्य स्थः (प्रियस्थिर···)—स्थिर का स्थ होता है। यथा, स्थेष्ठः, स्थेयान्।

११ विन्मतुपोर्लुक्—इष्ठन् और ईयसुन् परे रहने से विन् और मतुप् प्रत्यय का लोप होता है। यथा, अयमेषामतिशयेन मायावी, मायिष्ठः मायीयान्; बलिष्ठः, बलीयान्।

१२ भूयोभूयिष्ठौ (बहोर्लोपो भू च बहोः)—बहु शब्द का ईयसुन् परे रहने से भूयस् और इष्ठन् परे रहने से भूयिष्ठ निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; अयमनयोरतिशयेन बहुः भूयान्, अयमेषा मतिशयेन बहुः भूयिष्ठः।

११ किंयत्तदां द्वयोरेकस्य डतरः (किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच्)—दो में से एक का निर्धारण समझा जाय तो किम्, यद् और तद् के उत्तर डतर होता है और इसका अतर रहता है। यथा; अनयोः कतरः वैष्णवः, अनयोर्यतरो ब्राह्मणः, ततर आगच्छतु।

१२ बहूनां डतमः (वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच्)—अनेक में से एक का निर्धारण समझा जाय तो किम्, यद् और तद् के उत्तर डतम होता है और इसका अतम रहता है। यथा; एषां कतमः शैवः, एषां यतमः क्षत्रियः ततमः प्रयातु।

N. B. एकान्यान्याञ्च (एकाच्च प्राचाम्)—एक और अन्य के उत्तर डतर और डतम होता है। यथा; भवतोरेकतरः पठतु, भवतामेकतमः शृणोति, तयोरन्यतरो यातः, तेषामन्यतमो मृतः।

१३ किमेत्तिङव्ययेभ्योऽद्रव्ये तरां तमामेकोत्कर्षे—दो और अनेक में से एक का उत्कर्ष समझा जाय तो किम्, एकारान्त और अव्यय शब्द के उत्तर तराम् और तमाम् होता है और इन का तराम् और तमाम् रहता है। यथा; किन्तराम्, किन्तमाम्;

प्राह्णेतराम्, प्राह्णेतमाम्, उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्। द्रव्य समझे जाने से नहीं होता। यथा, उच्चैस्तरस्तरुः।

१४ प्रशंसायां रूपः—प्रशंसा समझे जाने से शब्द के उत्तर रूप होता है। यथा, प्रशस्तो वैयाकरणः वैयाकरणरूपः, नैयायिकरूपः, सांख्यिकरूपः, मीमांसकरूप.।

१५ ईषदूने कल्पदेश्यदेशीयाः (ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः)—ईषत् न्यून अर्थ में शब्द के उत्तर कल्प, देश्य और देशीय होता है। यथा; ईषदूनो विद्वान् विद्वत्कल्पः, विद्वद्देश्यः विद्वद्देशीयः।

N. B. तिङन्ताच्च (तिङश्च)—ऊपर के तीन सूत्रों के प्रत्यय तिङन्त पद के परे होते हैं। यथा; पठतितराम्, पठतितमाम्, पठतिरूपम्, पठतिकल्पम्, पठतिदेश्यम्, पठतिदेशीयम्।

(क) वा सुपो बहुः पुरस्तात्—ईषत् (थोड़ा) ऊन अर्थ में सुबन्त पद के पहले विकल्प से बहु प्रत्यय होता है। यथा; ईषदूनः पटुः बहुपटुः, पटुकल्पः, पटुदेश्यः, पटुदेशीयः।

१६ तेन तुल्यः स्थानस्थानीयौ—तेन तुल्यः, इस अर्थ में शब्द के उत्तर स्थान और स्थानीय होता है। यथा; पित्रा तुल्यः पितृस्थानः, पितृस्थानीयः, भ्रातृस्थानः, भ्रातृस्थानीयः, मातृस्थाना, मातृस्थानीया:, मातृष्वसा।

(क) जातौ जातीयः—जाति अर्थ में शब्द के उत्तर जातीय होता है। यथा; ब्राह्मणजातीयः, क्षत्रियजातीयः, पुरुषजातीयः, स्त्रीजातीयः, वणिग्जातीयः, रजकजातीयः, तार्किकजातीयः, वैयाकरणजातीयः।

१७ संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच्—क्रिया के अभ्यावृत्तिगणन (कै बार क्रिया अनुष्ठित हुई है, उसकी गणना) समझी जाय तो संख्यावाचक शब्द के उत्तर कृत्वसुच् होता है और इसका कृत्वस् रहता है। यथा; पञ्चवारान् भुङ्क्ते,

पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते, सप्तवारान् स्वपिति सप्तकृत्वः स्वपिति; शतकृत्व. पठति ।

(ङ) द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्—क्रिया के अभ्यावृत्तिगणन समझे जाने से द्वि, त्रि और चतुर् के उत्तर सुच् होता है और इस का स् रहता है। यथा, द्वौ वारौ भुङ्क्ते द्विर्भुङ्क्ते, त्रीन् वारान् भुङ्क्ते त्रिर्भुङ्क्ते ।

N. B. लोपोऽन्त्यस्य चतुरः—सुच् होने से चतुर् के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, चतुरो वारान् भुङ्क्ते चतुर्भुङ्क्ते ।

२ एकस्य सकृच्च—सुच् होने पर एक का सकृत् पद बनता है। यथा, एकं वारं भुङ्क्ते सकृद् भुङ्क्ते; एकं वारं अधीते सकृदधीते । यहाँ अभ्यावृत्ति नहीं है। केवल गणनामात्र समझी जाती है।

(च) विभाषा बहोर्विप्रकृष्टकाले धाच् (विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले)—क्रिया के अभ्यावृत्तिगणन तथा क्रिया के अनुष्ठान के काल की परस्पर निकटता समझी जाय तो बहु के उत्तर विकल्प से धाच् होता है और इसका धा रहता है। पक्षान्तर [illegible] कृत्व. सुच् होता है। यथा, बहुधा दिवसस्य भुङ्क्ते, बहुकृत्वो दिवसस्य भुङ्क्ते। निकटता नहीं समझी जाय तो नहीं होता; यथा, बहुकृत्वो मासस्य गच्छति ।

(छ) बह्वल्पार्थाच्छस् (बह्वल्पार्थाच्छस् कारकादन्यतरस्याम्)—बहु और अल्पार्थ शब्दों के उत्तर विकल्प से शस् होता है और इसका शस् रहता है। यथा, बहु ददाति, बहुशो ददाति, भूरि ददाति, भूरिशो ददाति; अल्पं ददाति, अल्पशो ददाति, स्तोकशो ददाति ।

N. B. संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् (संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम्)—वीप्सा समझी जाय तो संख्यावाचक और एक वचन शब्द के उत्तर विकल्प से शस् होता है। यथा, संख्यावाचक—

द्वौ द्वौ ददाति द्विशो ददाति, पत्र पत्र ददाति पत्रशो ददाति । परिमाण-वाचक—पादं पादं ददाति पादशो ददाति, अर्धमर्धं ददाति अर्धशो ददाति ।

३४ विकारे मयट्—विकार अर्थ में शब्द के उत्तर मयट् होता है और इसका म रहता है । यथा, स्वर्णस्य विकारः स्वर्णमयो घटः, स्वर्णमयी प्रतिमा, मृदः विकारः मृन्मयो घटः, मृन्मयी प्रतिमा ।

(क) हिरण्मयः—हिरण्मय निपातन से सिद्ध होता है। यथा, हिरण्यस्य विकारः हिरण्मयः।

(ख) अवयवे—अवयव समझे जाने से शब्द के उत्तर मयट् होता है। यथा, दारुण्यस्यावयवाः दारुमयम् आसनम्, दर्भा अस्यावयवाः दर्भमयो ब्राह्मणः, काष्ठान्यस्यावयवाः काष्ठमयो हस्ती, ऊर्णामयं वासः, अन्नमयो यज्ञः, अपूपमयं श्राद्धम्।

(ग) व्याप्तौ (तत्प्रकृतवचने मयट्। समूहस्य वुञ्)—व्याप्ति अर्थ में शब्द के उत्तर मयट् होता है। यथा, जलेन व्याप्तं जलमयं जगत् प्रलये, रोगमयं शरीरम्।

(घ) संसर्गे (तत्प्रकृत……)—संसर्ग समझे जाने से शब्द के उत्तर मयट् होता है । यथा, तिलेन संसृष्टं तिलमयं तर्पणम्, घृतमयं व्यञ्जनम्, पापमयं शरीरम् ।

(ङ) अपृथग्भावे च (तत्प्रकृत……)—अपृथग्भाव में शब्द के उत्तर मयट् होता है। यथा, विष्णोरपृथग्भूतं विष्णुमयं जगत्, वाग्भ्योऽपृथग्भूतं वाङ्मयं शास्त्रम्; चितोऽपृथग्भूतः चिन्मयः पुरुषः ।

(छ) गोश्च पुरीषे—पुरीष (मैल) अर्थ में गो के उत्तर मयट् होता है। यथा, गोः पुरीषं गोमयम् ।

३५ स्नेहे तैलच् (स्नेहे तैलच्)—स्नेह अर्थ में शब्द के उत्तर

तैलच् होता है और इसका तैल रहता है। यथा, तिलस्य स्नेहः तिलतैलम्, सर्षपतैलम्, एरण्डतैलम्।

५० धाच् संख्याया विधार्थे—विधा (प्रकार) अर्थ में संख्या-वाचक शब्द के उत्तर धाच् होता है और इसका धा रहता है। यथा, एका विधा एकधा, द्वे विधे द्विधा, तिस्रो विधाः त्रिधा वा भुङ्क्ते।

(क) भावान्तरापादने च—भावान्तरापादन अर्थात् अन्यभा-वसम्पादन अर्थ में धाच् होता है। यथा, पञ्चराशीन् एकधा कुरु, एकं राशिं पञ्चधा कुरु।

(ख) ऐकध्यादयो वा—ऐकध्य इत्यादि (विकल्प से) निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, एका विधा ऐकध्यम्, द्वे विधे द्वैधं द्वेधा; त्रैधम्, त्रेधा; षोढा। पक्षान्तर में एकधा, त्रिधा, चतुर्धा।

५१ पाशः कुत्सिते—कुत्सित अर्थ में शब्द के उत्तर पाश होता है। यथा, कुत्सितो वैयाकरणः वैयाकरणपाशः, मीमांस-कपाशः भिषक्पाशः, वैदिकपाशः, लेखकपाशः।

५२ भूतपूर्वे चरट्—भूतपूर्व अर्थ में शब्द के उत्तर चरट् होता है और इसका चर रहता है। यथा, आढ्यो भूतपूर्वः आढ्यचरः, दृष्टो भूतपूर्वः दृष्टचरः, अर्पितो भूतपूर्वः अर्पित-चरः, अधीतो भूतपूर्वः अधीतचरः।

(क) सम्बन्धे रूप्यश्च—सम्बन्ध समझा जाय तो भूतपूर्व अर्थ में चरट् और रूप्य प्रत्यय होते हैं। यथा, देवदत्तस्य भूत-पूर्वं देवदत्तरूप्यम्, देवदत्तचरं वा भवनम्।

५३ एकादाकिनिरसहाये—सहायशून्य अर्थ में एक शब्द के उत्तर आकिनि प्रत्यय होता है और इसका आकिन् रहता है। यथा, एक एव एकाकी।

४४ प्राक्टीक स्वार्थे—स्वार्थ समझे जाने से शब्द के टि का अक होता है। यथा, कन्या एव कन्यका, तारा एव तारका।

(क) वालादिरिक (प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः)—स्वार्थ समझे जाने से वाला इत्यादि के टि का इक होता है। यथा, वाला एव वालिका, सरला एव सरलिका, निपुणा-निपुणिका, चतुरा-चतुरिका, चपला-चपलिका, लता-लतिका, गोधा-गोधिका।

(ख) अज्ञाते कन्—अज्ञात अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है और इसका क रहता है। यथा, कस्यायमश्वः अश्वकः, उष्ट्रकः, गर्दभकः।

कुत्सिते—कुत्सित अर्थ में शब्द के उत्तर कन् होता है। यथा, कुत्सितोऽश्वः अश्वकः, कुत्सितो महिषः महिषकः।

(ग) अल्पे—अल्प अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, अल्पं तैलं तैलकम्, क्षीरकम्, सलिलकम्।

(घ) ह्रस्वे—ह्रस्व अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, ह्रस्वः वृक्षः वृक्षकः, ह्रस्वः पटः पटकः, स्तम्भ-स्तम्भकः, दण्ड-दण्डकः।

(च) अनुकम्पायाम्—अनुकम्पा अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, अनुकम्पितः पुत्रः पुत्रकः, वत्सकः, दुर्बलकः।

(छ) संज्ञायाम्—संज्ञा अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, करभकः, रोहितकः, शाण्डिल्यकः।

(ज) स्त्रियामन्त्यो ह्रस्वः—स्त्रीलिङ्ग शब्द के उत्तर कन् होने से अन्त्य स्वर ह्रस्व होता है। यथा, मालती-मालतिका, नागरी-नागरिका, लवङ्गी-लवङ्गिका, माधवी-माधविका, चण्डी-चण्डिका, कुशाण्डी-कुशाण्डिका, शेफाली-शेफालिका,

मृणाली-मृणालिका, यूथी-यूथिका, वदरी-वदरिका, दूती-दूतिका, काली-कालिका, शारी-शारिका, सूची-सूचिका।

N. B. ह्रस्वे कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः (कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः)—ह्रस्व अर्थ में कुटी, शमी और शुण्डा के उत्तर र होता है। यथा, ह्रस्वा कुटी कुटीरः, शमीरः, शुण्डारः distiller.

२ अश्वोक्षवत्सर्षभेभ्यस्तरट् (वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे)— ह्रस्व अर्थ में अश्व, उक्षन्, वत्स और ऋषभ शब्द के उत्तर तरट् होता है और इस का तर रहता है। यथा, ह्रस्वोऽश्वः अश्वतरः, उक्षतरः, वत्सतरः, ऋषभतरः।

४। पञ्चम्यास्तसिल् वा—पञ्चमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से तसिल् होता है और इसका तस् रहता है। यथा, गृहात्, गृहतः; ग्रामात्, ग्रामतः; नगरात्, नगरतः; सर्व्वस्मात्, सर्व्वतः; विश्वस्मात्, विश्वतः; उभयस्मात्, उभयतः, भवतः, भवत्तः, एकस्मात्, एकतः; अन्यस्मात्, अन्यतः; पूर्व्वस्मात्, पूर्व्वतः; परस्मात्, परतः; दक्षिणस्मात्, दक्षिणतः; उत्तरस्मात्, उत्तरतः; हस्तात्, हस्ततः; वृक्षात्, वृक्षतः; मेघात्, मेघतः; जलात्, जलतः।

सप्तम्याश्च—सप्तमी के स्थान में विकल्प से तसिल् होता है। यथा, पूर्व्वस्मिन्, पूर्व्वतः; दक्षिणस्मिन्, दक्षिणतः; उत्तरस्मिन्, उत्तरतः। प्रथमे, प्रथमतः; परस्मिन्, परतः; अग्रे, अग्रतः; आदौ, आदितः; मध्ये, मध्यतः; अन्ते, अन्ततः; पृष्ठे, पृष्ठतः; पार्श्वयोः, पार्श्वतः, सर्व्वस्मिन्, सर्व्वतः।

नित्यं पर्य्यभिभ्याम् (पर्य्यभिभ्यां च)—परि और अभि उपसर्ग के उत्तर तसिल् होता है। यथा, परितः, अभितः।

N. B. न हाकरुहोः (अपादाने चाहीयरुहोः)—हा और रुह् धातु के प्रयोग में तसिल् नहीं होता। यथा, स्वर्गात् हीयते, पर्व्वतादवरोहति।

४६ सप्तम्यास्त्रल् वा सर्वनाम्नः—द्वि, अस्मद्, युष्मद् भिन्न सर्वनाम की सप्तमी के स्थान में विकल्प से त्रल् होता है और इसका त्र रहता है । यथा, सर्वस्मिन्, सर्वत्र; उभयस्मिन्, उभयत्र; एकस्मिन्, एकत्र; अन्यस्मिन्, अन्यत्र; इतरस्मिन्, इतरत्र; पूर्वस्मिन्, पूर्वत्र; परस्मिन्, परत्र; अपरस्मिन्, अपरत्र ।

N. B. अ-य-ता एतद्-यद् तदाम् (एतदोऽश् । सर्वनाम्नः) —तसिल् और त्रल् होने से एतद् का अ, यद् का य और तद् का त होता है । यथा, एतस्मात् अतः, एतस्मिन् अत्र; यस्मात् यतः, यस्मिन्-यत्र; तस्मात् ततः, तस्मिन् तत्र ।

२ किमः कुः— किम् का कु होता है । यथा कस्मात् कुतः, कस्मिन्-कुत्र ।

३ क्वकुहौ— क्व और कुह निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, कस्मिन्, क्व, कुह ।

४ इदमिशः—इदम् का इ होता है ([illegible] में भी होता है) । यथा, अस्मात्, इतः ।

५ [illegible] हः (इदमो हः)— सप्तमी के स्थान में ह होता है । यथा, अस्मिन्, इह ।

(६) इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते— पञ्चमी, सप्तमी भिन्न अन्यान्य विभक्ति के स्थान में भी तसिल् और त्रल् प्रत्यय होते जाते हैं । यथा, [illegible] भवान् ततोभवान्, तत्रभवान् । ते भवन्तः [illegible], [illegible] । [illegible] ततोभवन्तः, तत्रभवन्तः, [illegible] भवन्तं ततोभवन्तं, तत्रभवन्तं, [illegible] — [illegible] तत्रभवन्तम् ।

[illegible] — [illegible] सप्तमी आने से [illegible] और

सर्व्वे सर्व्वनाम शब्दों के उत्तर सप्तमी के स्थान में दा होता है। यथा, एकस्मिन् काले एकदा।

सो वा सर्वस्य (सर्व्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि)—दा होने से सर्व्व का विकल्प से स होता है। यथा, सर्व्वस्मिन् काले सदा, सर्व्वदा।

(क) अन्यकियद्भ्यो हिल्च (अनद्यतनेर्हिलन्यतरस्याम्)—अन्य, किम् और यद् की सप्तमी के स्थान में दा और हिल् होता है और हिल् का हि रहता है। यथा; सर्व्वस्मिन् काले अन्यर्हि, अन्यदा।

कियदोः कर्यौ—दा और हिल् होने से किम् का क और यद् का य होता है। यथा, कस्मिन् काले कर्हि, कदा; यस्मिन् काले यर्हि, यदा।

(ख) तदो दानीं च—तद् की सप्तमी के स्थान में दा, हिल और दानीम् होता है।

तस्तदः—दा, हिल् और दानीम् होने से तद् का त होता है। यथा, तस्मिन् काले तदा, तर्हि, तदानीम्।

इदमो दानीम्—इदम् की सप्तमी के स्थान में दानीम् होता है। यथा; अस्मिन् काले इदानीम्।

अधुनैतर्हौ—अधुना और एतर्हि पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, अस्मिन् काले अधुना, अस्मिन् एतस्मिन् वा काले एतर्हि।

४८ एद्युस् पूर्व्वादेरहनि—दिन समझे जाने से पूर्व्व इत्यादि के उत्तर एद्युस् होता है। यथा; पूर्व्वस्मिन्नहनि पूर्व्वेद्युः, अन्यस्मिन्नहनि अन्येद्युः, अपरस्मिन्नहनि अपरेद्युः, इतरेद्युः, अन्यतरेद्युः, अधरेद्युः, उत्तरेद्युः, उभयेद्युः। उभय के उत्तर द्युस् अन्यय भी होता है; यथा उभयस्मिन् अहनि उभयद्युः।

N. B. द्यसद्योऽद्यश्वः परेद्यवयः—दिन समझे जाने से विभक्ति रहित पूर्व्व का परुत्, समान का सद्यस्, इदम् का अद्य और पर का परुत्

तथा परेद्यवि होता है। यथा; पूर्व्वस्मिन्नहनि ह्यः, समानेऽहनि सद्यः, अस्मिन्नहनि अद्य, परस्मिन् अहनि श्वः, परेद्यवि।

२ ऐषमः-परुत्-परारयो वर्षे—वत्सर समझे जाने से विभक्ति सहित इदम् का ऐषमस्, पूर्व्व का परुत्, और पूर्व्वतर का परारि होता है। यथा, अस्मिन् वर्षे ऐषमः, पूर्व्वस्मिन् वर्षे परुत्, पूर्व्वतरे वर्षे परारि।

४९ थाल् प्रकारे तृतीयायाः—प्रकार अर्थ में तृतीया विभक्ति के स्थान में थाल् होता है और इसका था रहता है। यथा; सर्व्वैः प्रकारैः सर्व्वथा, अन्येन प्रकारेण अन्यथा, इतरेण प्रकारेण इतरथा, उभयथा, अपरथा।

N. B. य-तौ यत्तदोः—थाल् होने से यद् का य और तद् का त होता है। यथा; येन प्रकारेण यथा, तेन प्रकारेण तथा।

२ कथमित्थमौ—कथम् और इत्थम् निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; केन प्रकारेण कथम्, अनेन एतेन वा प्रकारेण इत्थम्।

५०—परादेरस्तात् सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमानाम्—पर इत्यादि शब्द के उत्तर सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के स्थान [redacted] अस्तात् होता है। यथा; परस्मिन् परस्मात् परो वा परस्तात्, पश्चिमे पश्चिमात् पश्चिमो वा पश्चिमस्तात्।

पश्चात्—अस्तात् सहित अपर का पश्चात् निपातन से सिद्ध होता है। यथा; अपरस्मिन् अपरस्मात् अपरो वा पश्चात्।

उपर्य्युपरिष्टात्—अस्तात् सहित ऊर्द्ध्व का उपरि और उपरिष्टात् निपातन से सिद्ध होता है। यथा; ऊर्द्ध्वे ऊर्द्ध्वात् ऊर्द्ध्वो वा उपरि उपरिष्टात्।

(क) पूर्व्वाधरावराणामसिच—पूर्व्व, अधर और अवर के सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के स्थान में अस्तात् और असि प्रत्यय होते हैं; असि का अस् रहता है।

पुराधोपूर्व्वाधरयोः—अस्तात् और असि होने पर पूर्व्व का पुर

ौर अवर का अव होता है। यथा, पूर्व्वस्मिन् पूर्व्वस्मात् पूर्व्वो वा स्तात्, पुरः; अधरस्मिन् अधरस्मात् अधरो वा अधस्तात्, अधः।

अस्तो विभाषावरस्य—अस्तात् और असि होने से अवर का स्थान में अव होता है। यथा, अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरो वा अवस्तात्, रस्तात्, अवः, अवरः।

(ख) दिग्देशयोर्दक्षिणोत्तरयोरतसुः—दिग्वाचक और देशवाचक दक्षिण और उत्तर शब्द की सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के स्थान में अतसु होता है और इसका अतस् रहता है। यथा; दक्षिणस्मिन् दक्षिणस्मात् दक्षिणो वा दक्षिणतः, उत्तरस्मिन् उत्तरस्मात् उत्तरो वा उत्तरतः।

(ग) उत्तराधरदक्षिणानामातिः—उत्तर अधर और दक्षिण की सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के स्थान में आति होता है और इसका आत् रहता है। यथा, उत्तरस्मिन् उत्तरस्मात् उत्तरो वा उत्तरात्, अधरात्, दक्षिणात्।

५१ एनप्, चादूरेऽपञ्चम्याः—अदूर अर्थ में सप्तमी और प्रथमा के स्थान में एनप् होता है और इसका एन रहता है। यथा, उत्तरस्मिन् उत्तरो वा उत्तरेण, अधरेण, दक्षिणेन।

५२ दक्षिणोत्तरयोराचाही च—दक्षिण और उत्तर शब्द की सप्तमी और प्रथमा के स्थान में आत् और आहि प्रत्यय होते हैं, आत् का आ रहता है। यथा, दक्षिणा, दक्षिणाहि; उत्तरा, उत्तराहि।

५३ अनेककालाव्ययेभ्यस्तनप्—भव अर्थ में कालवाचक अव्यय शब्द के उत्तर तनप् होता है और इसका तन रहता है। यथा, अद्य भवं अद्यतनम्, प्रातर्भवं प्रातस्तनम्, सायं भवं सायन्तनम्, दोषातनम्, दिवातनम्, पुरातनम्, चिरन्तनम्, ह्यस्तनम्, अधुनातनम्, इदानीन्तनम् तदानीन्तनम्।

(क) प्राह्णे-प्रगेभ्याम् (सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च)—प्राह्णे, प्रगे, [illegible] सप्तम्यन्त शब्दों के उत्तर भी होता है। यथा, प्राह्णेतनम् (दोपहर के पहले का), प्रगेतनम् (प्रातःकाल का)।

(ख) विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्यां सप्तम्याम्—सप्तमी विभक्ति में पूर्वाह्ण और अपराह्ण शब्दों के उत्तर विकल्प से तनप् होता है। यथा, पूर्वाह्णे भवं पूर्वाह्णेतनम्, पौर्वाह्णिकम्; अपराह्णे भवं अपराह्णेतनम्, आपराह्णिकम्।

(ग) नित्यमूर्ध्वादिः—ऊर्ध्व इत्यादि के उत्तर नित्य तन होता है। यथा, ऊर्ध्वे भवः ऊर्ध्वतनः, उपरि भवः उपरितनः, अधः भवः अधस्तनः, प्राक्तनः, पूर्व्वे भवः पूर्वतनः।

(घ) आदिमध्याभ्यां मन्—सप्तमी विभक्ति में आदि और मध्य के उत्तर मन् होता है और इसका म रहता है। यथा आदौ भवः आदिमः, मध्ये भवः मध्यमः।

(च) अग्रान्तपश्चात्भ्यो डिमः—अग्र, अन्त और पश्चात् के उत्तर डिम होता है और इसका इम रहता है। यथा, अग्रे भवः अग्रिमः, अन्ते भवः अन्तिमः, पश्चात् भवः पश्चिमः।

(छ) चिर-परुत्-परारिभ्यस् त्नः—चिर, परुत् और परारि के उत्तर त्न होता है। यथा; चिरत्नम् ancient, परुत्नम्, परारित्नम्।

(ज) दक्षिणापश्चात्पुरोभ्यस्त्यण्—दक्षिणा, पश्चात् और पुरस् के उत्तर त्यण् होता है और इसका त्य रहता है। यथा, दाक्षिणात्यः, पाश्चात्यः, पौरस्त्यः।

(झ) अमेहक्वतसिल्त्रल्भ्यस्त्यः—अमा, इह, क और तसिल् तथा त्रल् प्रत्ययान्त शब्दों के उत्तर त्य होता है। यथा, इहत्यः, क्वत्यः। तसिल् प्रत्ययान्त—ततस्त्यः, अतस्त्यः। त्रल् प्रत्ययान्त—तत्रत्यः, अत्रत्यः, कुत्रत्यः।

५४ किमश्चिच्चनौ विभक्त्यन्तात्—अनिश्चय अर्थ में विभक्त्यन्त किम् शब्द के उत्तर चित् और चन होता है। यथा, कश्चित्, केनचित्, कस्मैचित्, कस्माच्चित्, कस्यचित्, कस्मिंश्चित्, कुतश्चित्, क्वचित्, कुत्रचित्, कश्चन, किञ्चन, काचन, कुतश्चन, क्वचन, कुत्रचन।

५५ कृभ्वस्तियोगेऽभूततद्भावे च्विः—कृ, भू, और अस् धातु के योग में अभूततद्भाव (जो वस्तु नहीं है उसके होने के) अर्थ में शब्द के उत्तर च्वि होता है और इसका सम्पूर्ण लोप होता है।

(क) दीर्घोऽन्त्यस्य—अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित ह्रस्व का दीर्घ होता है। यथा, अलघुं लघुं करोति लघूकरोति, अलघुर्लघुः भवति लघूभवति, अलघुर्लघुः स्यात् लघूस्यात्।

(ख) ईदवर्णस्य—अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित अ का ई होता है। यथा, अशुक्लं शुक्लं करोति शुक्लीकरोति, अशुक्लः शुक्लो भवति शुक्लीभवति, अशुक्लः शुक्लः स्यात् शुक्लीस्यात्।

(ग) ऋतो रीः—अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित ऋ का री होता है। यथा, अधोतारं धोतारं करोति धोत्रीकरोति, धोत्रीभवति, धोत्रीस्यात्।

(घ) लोपोऽरुरादेरन्त्यस्य—अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने से अरुस्, मनस्, चक्षुस्, चेतस्, रहस् और रजस् के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, अरूकरोति, अरूभवति, अरूस्यात्, विमनीकरोति, विमनीभवति, विमनीस्यात्, उच्चक्षूकरोति, उच्चक्षूभवति, उच्चक्षूस्यात्, सुचेतीकरोति,

सुचेतीभवति, सुचेतीस्यात्, विरहीकरोति, विरहीभवति, विरहीस्यात्, विरजीकरोति, विरजीभवति, विरजीस्यात्।

(घ) विभाषा साति कार्त्स्न्ये—कार्त्स्न्य (सम्पूर्ण) समझे जाने से अभूततद्भाव अर्थ में कृ, भू और अस् धातु के योग में विकल्प से सातिच् होता है और इसका सात् रहता है। यथा, कृत्स्नं लवणं जलं करोति जलसात् करोति, कृत्स्नं लवणं जलं भवति जलसाद्भवति, कृत्स्नं लवणं जलं स्यात् जलसात् स्यात्। भस्मसात् करोति, भस्मसाद्भवति, भस्मसात् स्यात्। पक्षान्तर में च्वि होता है; यथा, जलीकरोति, जलीभवति, जलीस्यात्, भस्मीकरोति, भस्मीभवति, भस्मीस्यात्।

(ङ) अभिविधौ सम्पदा च—अभिविधि (व्याप्ति) समझे जाने से अभूततद्भाव अर्थ में कृ, भू, अस् और सम् पूर्वक पद् धातु के योग में विकल्प से सातिच् होता है। यथा, अग्निसाद्भवति, अग्निसात् स्यात्, अग्निसात् सम्पद्यते। पक्षान्तर में च्वि होता है; यथा, अग्नीकरोति, अग्नीभवति, अग्नीस्यात्, अग्नीसम्पद्यते।

अधीनतावाच्य (तदधीनवचने)—अधीनता अर्थ में भी होता है। यथा, राज्ञोऽधीनं करोति राजसात् करोति, राज्ञोऽधीनं भवति राजसाद्भवति, राज्ञोऽधीनं स्यात्-राजसात् स्यात्, राज्ञोऽधीनं सम्पद्यते-राजसात् सम्पद्यते। राजीकरोति, राजीभवति, राजीस्यात्, राजीसम्पद्यते।

५९ देये त्राच् च—देय अर्थ में कृ, भू, अस् और सम् पूर्वक पद् धातु के योग में सातिच् और त्राच् होता है और त्राच् का त्रा रहता है। यथा, ब्राह्मणाय देयं करोति ब्राह्मणसात् करोति, ब्राह्मणत्रा करोति; ब्राह्मणसाद्भवति, ब्राह्मणत्रा

भवति, ब्राह्मणसात् स्यात्, ब्राह्मणत्रा स्यात्, ब्राह्मणसात् सम्पद्यते, ब्राह्मणत्रा सम्पद्यते।

५७ कृञो द्वितीयादेः कृञो डाच्—कृ धातु के योग में द्वितीय, तृतीय, शम्ब और बीज के उत्तर कर्षण अर्थ में डाच् होता है और इसका आ रहता है। यथा; द्वितीया करोति, तृतीया करोति, द्वितीयं तृतीयं कर्षणं करोतीत्यर्थः, शम्बाकरोति अनुलोमकृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षतीत्यर्थः; बीजाकरोति, बीजेन सह कर्षतीत्यर्थः।

(क) संख्यायाश्च गुणान्तायाः—गुण शब्द अन्त में रहने से संख्यावाचक शब्द के उत्तर कृ धातु के योग में कर्षण अर्थ में डाच् होता है। यथा; द्विगुणाकरोति, त्रिगुणाकरोति क्षेत्रम्, द्विगुणं त्रिगुणं कर्षतीत्यर्थः।

(ख) समयाच्च यापनायाम्— यापन समझे जाने से समय शब्द के उत्तर डाच् होता है। यथा; समयाकरोति समयं यापयतीत्यर्थः।

(ग) सपत्र-निष्पत्राभ्यां व्यथने (सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने)—व्यथन अर्थ में सपत्र और निष्पत्र के उत्तर डाच् होता है। यथा, सपत्राकरोति मृगं व्याधः, सपत्रं शरं अस्य शरीरे प्रवेशयन् व्यथयतीत्यर्थः; निष्पत्राकरोति, शरीरात् शरं अपरपार्श्वे निष्क्रामयन् व्यथयतीत्यर्थः।

(घ) निष्कुलान्निष्कोषणे—निष्कोषण (कोष से बाहर करना) अर्थ में निष्कुल के उत्तर डाच् होता है। यथा; निष्कुलाकरोति दाडिमम्, दाडिमस्य अन्तरवयवान् बहिर्निःसारयतीत्यर्थः।

(च) सुखप्रियाभ्यामानुलोम्ये—आनुलोम्य अर्थ में सुख और प्रिय के उत्तर डाच् होता है। यथा, सुखाकरोति, प्रियाकरोति मित्रम्, अनुकूलाचरणेन आनन्दयतीत्यर्थः।

(छ) दुःखात्प्रातिलोम्ये—प्रातिलोम्य अर्थ में दुःख के उत्तर डाच् होता है। यथा; दुःखाकरोति भृत्यः, स्वामिनं पीडयतीत्यर्थः।

(ज) शूलात्पाके—पाक अर्थ में शूल के उत्तर डाच् होता है। यथा; शूलाकरोति मांसम्, शूलेन पचतीत्यर्थः।

(झ) सत्यादशपथे—शपथभिन्न अर्थ में सत्य के उत्तर डाच् होता है। यथा; सत्याकरोति भाण्डं वणिक्, क्रेतव्यमिति प्रतिजानीते इत्यर्थः।

(ट) भद्रात् परिवापणे—मुण्डन अर्थ में भद्र के उत्तर डाच् होता है। यथा; भद्राकरोति, साकल्यं मुण्डनं करोतीत्यर्थः।

N. B. पुंवत्तसिलादिषु भाषितपुंस्कस्य—तसिल्, त्रल्, चरट्, जातीय, देशीय और पाश प्रत्यय परे रहने से स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा, उत्तरस्याः दिशः उत्तरतः, उत्तरस्यां दिशि उत्तरत्र, सर्वस्यां दिशि सर्वत्र, अर्पिता भूतपूर्वा अर्पितचरी, जाल्या ब्राह्मणी ब्राह्मणजातीया, ईषदूना पण्डिता पण्डितदेशीया, कुत्सिता पाचिका पाचकपाशा।

२ कल्पादिषु च—कल्प, रूप, तर और तम प्रत्यय परे रहने से स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा; ईषदूना पण्डिता पण्डितकल्पा, प्रशस्ता गायिका गायकरूपा, इयमनयोरतिशयेन निपुणा निपुणतरा, इयमासामतिशयेन चपला चपलतमा।

३ ईदूतोर्विभाषा—कल्प इत्यादि प्रत्यय परे रहने से ईदन्त और ऊदन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का विकल्प से पुंवद्भाव होता है। यथा; ईषदूना विदुषी विदुषीकल्पा, विद्वत्कल्पा; ईषदूना मेधाविनी मेधाविनीरूपा, मेधाविरूपा इयमनयोरतिशयेन मायाविनी, मायाविनीतरा, मायावितरा; इयमासामतिशयेन मनोहारिणी मनोहारिणीतमा, मनोहारितमा; वामोरूकल्पा, वामोरुकल्पा; वामोरूरूपा वामोरुरूपा; वामोरूतरा; वामोरुतरा; वामोरूतमा, वामोरुतमा।

वैयाकरण लोग ऊदन्त के पुंवद्भाव को निषेध करके विकल्प से ऊर्

का ह्रस्वविधान करते हैं; पुंवद्भाव के अभाव में ऊङ् का कहीं विकल्प
और कहीं नित्य ह्रस्व विधान करते हैं। यथा, विदुषीकल्पा, विदुषिक
विद्वत्कल्पा; ब्राह्मणिकल्पा, ब्राह्मणकल्पा ।

४ शस्यिबह्वल्पार्थस्य—शस् प्रत्यय परे रहने से बह्वर्थ औ
अल्पार्थ स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा; बह्वीभ्यो देहि, बहु
देहि, अल्पाभ्यो देहि, अल्पशो देहि ।

५ त्वतलोर्गुणवचनस्य:—त्व और तल् प्रत्यय परे रहने से गु
वाचक स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा, निपुणाया भावः निपु
त्वम्, निपुणता; चपलाया भावः चपलत्वम्, चपलता; मेधाविन्या भाव
मेधावित्वम्, मेधाविता; प्रियवादिन्या भावः प्रियवादित्वम्, प्रियवादिता

Exercise—41

1 Give the comparative and superlative forms o
बलिन्, मतिमत्, लघु, बहु, उरु, दीर्घ, गुरु and दृढ ।

2 Derive—दाशरथिः, भस्मसात्, अन्तिमः, सौमित्रिः, अमात्यः
वत्सर, पार्वतायनः, सायन्तनम्, आश्विनः, आदितेयः, पौत्रः, पाण्डवः
अधस्तात्, अन्यथा, मनुष्यः, भागिनेयः, वैदान्तिकः, पाणिनीयम्
कार्ष्णम्, तर्हि, अन्येद्युः, सर्वत्र, यत्र, कालिका, दण्डकः, चपलिका
द्विधा, आग्नेयः, जनता, द्वैपायनः, आध्यात्मिकम्, स्वयः, मासिकम्
दृश्य, मानसम्, पार्थिवम्, सांघातिकः, बान्धवः, माधुर्यम्, यौवनम्
and प्रभुत्वम् ।

3. Substitute single words for—न्यूनस्य भावः, पुत्रमिव
पक्वता अस्मिन् संजाताः, गज प्रमाणमस्य, पंच अवयवा अस्य,
रसानां पूरणः, स्त्रीरस्यास्ति, माया अस्य अस्ति, उष्णं न सहते,
वाग्मोऽस्य सन्ति, मानुर्मातः, अयमेषामतिशयेनप्रियः, अयमनयोरति-
शयेन प्रियः, स्वर्णस्य विकारः, दूर्वा अस्य अवयवाः, द्वे विधे, कुस्मिन

अश्व, मर्यै प्रकारे, पृथ्वीस्मिन्नहनि, ग्रामसंघम् अशुक्लं शुक्लं भवति, भगुंनस्य अग्रजम्, मनोरपत्यम्, वाक्यस्य अवयवानि, वेदं अर्थते, शरीरेण कृतम्, विष्णुरस्य देवता, अर्धमर्हति, भरतस्य इदम्, रघुनस्य विकार, चेतनेन जीवति, धर्मं चरति, अन्येन प्रकारेण and बाला पुत्र।

4. Translate into Hindi:—दाशरथिः तस्य वचनं श्रुत्वा हृष्टो बभूव। पाण्डवकौरवयोर्महान् युद्धोऽभूत्। अस्मिन् वने महातपा नाम तापस आसीत्। तस्य ज्येष्ठ पुत्रो बुद्धिमानस्ति। बाणवृष्टिमवलोक्य सर्वे यत्र तत्र पलायिताः। अस्मिन् मठे बहवो वैष्णवाः सन्ति। अद्वितीयपराणि आख्यितेया दिते ईश्याखात्र मस्ति।

5. Translate into Sanskrit:—(a) मातापिता सन्तान की रक्षा करते हैं। देशभक्त अपने देश को प्राण से भी अधिक प्यार करते हैं। आप समुद्रपर्यन्त पृथ्वी के राजा हैं। कौशिक ने रामचन्द्र से कहा। हिमालय भारतवर्ष के उत्तर में है।

(b) I will go there and see your brother. You have sent me three books. The army of the enemy was defeated. The royal officers went to the tree. He works all day and never wastes time. Please come to my house to-morrow.

6. Correct:—कोशलराजः कति पुत्राः सन्ति। दाशरथिस्य भार्या पालय। धनिनां सेवा सर्वे कुर्वन्ति। मधुस्तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदे तस्य हलाहल.। बालकेन चन्द्रं पश्यते। मां धनस्य प्रयोजनं नास्ति। धनेन विद्या गरीयसी। पतिना नीयते वधू। सप्तमोमासाऽस्ति।

स्त्री-प्रत्यय

१ नियम्—इस प्रकरण में पुंलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के नियम का उल्लेख किया जाता है।

२ अदन्तादाप् (अजाद्यतष्टाप्)—अकारान्त प्रातिपदिक के उत्तर आप् होता है और इसका आ रहता है। यथा; कृश-कृशा, दीन-दीना, मलिन-मलिना, कृपण-कृपणा, क्रूर-क्रूरा, सरल-सरला, प्रबल-प्रबला, अचल-अचला, निपुण-निपुणा, चतुर-चतुरा, तरल-तरला, चपल-चपला, दक्षिण-दक्षिणा, उत्तर-उत्तरा, पूर्व-पूर्वा, पश्चिम-पश्चिमा, प्रथम-प्रथमा, द्वितीय-द्वितीया, तृतीय-तृतीया, अनुकूल-अनुकूला, प्रतिकूल-प्रतिकूला, मनोहर-मनोहरा।

(क) आपि प्रत्ययकात् पूर्वस्यात इत् (प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः)—आप् होने से प्रत्यय के ककार के पूर्ववर्ती अकार का इकार होता है। यथा; नायक-नायिका, पाचक-पाचिका, नाटक-नाटिका, पालक-पालिका, कारक-कारिका, बोधक-बोधिका, साधक-साधिका, पालक-पालिका।

(ख) नाष्टकादेः (त्यकनश्च निषेधः। तारका ज्योतिषि। अष्टका पितृदैवत्ये। क्षिपकादीनां च न)—अष्टका इत्यादि के ककार के पूर्ववर्ती अकार का इकार नहीं होता। यथा; अष्टका, इष्टका, कन्यका, करका, चटका, तारका, अधित्यका, उपत्यका।

३. ईप् गौरादिभ्यः—गौर इत्यादि अकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् होता है और इसका ई रहता है।

ईपि लोपोऽवर्णस्य (यस्येति च)—ईप् होने से शब्द के अन्तस्थित अ का लोप होता है। यथा, गौर-गौरी, कुमार-कुमारी, किशोर-किशोरी, सुन्दर-सुन्दरी, तरुण-तरुणी, पितामह-पितामही, मातामह-मातामही, नद-नदी, तट-तटी, नट-नटी, पट-पटी, कदल-कदली, स्थल-स्थली, काल-काली, नाग-नागी, मण्डल-मण्डली, सल्लक-सल्लकी, वेतस-वेतसी, आमलक-आमलकी,

मृग-मृगी, द्रोण-द्रोणी, बदर-बदरी, कबर-कबरी a braid of hair.

(क) जातौ अतोऽदन्तादीप् (जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्)—जाति अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् होता है। यथा; सिंह-सिंही, व्याघ्र-व्याघ्री, भल्लूक-भल्लूकी, मृग-मृगी, हरिण-हरिणी, कुरङ्ग-कुरङ्गी, गर्दभ-गर्दभी, शूकर-शूकरी, कुक्कुर-कुक्कुरी, जम्बूक-जम्बूकी, शृगाल-शृगाली, बिडाल-बिडाली, घोटक-घोटकी, महिष-महिषी, हंस-हंसी, सारस-सारसी, चमत्थाक-चमत्थाकी, मानुष-मानुषी, ब्राह्मण-ब्राह्मणी, गोप-गोपी, चण्डाल-चण्डाली, पिशाच-पिशाची, राक्षस-राक्षसी, निशाचर-निशाचरी।

N. B. माजादेः—जातिवाचक शब्दों में अज इत्यादि के परे ईप् नहीं लगता। यथा; अज-अजा, कोकिल-कोकिला, चटक-चटका, अश्व-अश्वा, मूषिक-मूषिका, पुत्रक-पुत्रिका, बाल-बाला, वत्स-वत्सा, ज्येष्ठ-ज्येष्ठा, कनिष्ठ-कनिष्ठा, शूद्र-शूद्रा, (महत् शब्द पहले रहने से ईप् होता है; यथा; महाशूद्री)।

२ न योपधाद्गवयादिवर्ज्जात् (जाते ·······)—जातिवाची शब्दों की उपधा में य हो तो ईप् नहीं होता। यथा; वैश्य-वैश्या। गवय a species of ox, हय, मुकय, मत्स्य और मनुष्य के उत्तर ईप् होता है; यथा; गवयी, हयी, मुकयी।

३ लोपो मत्स्यमनुष्ययोर्यस्य (सूर्य्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः)—ईप् होने से मत्स्य और मनुष्य के य का लोप होता है। यथा; मत्स्य-मत्सी, मनुषी।

(ख) ऋदन्तादीप् (ऋन्नेभ्यो ङीप्)—ऋकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् होता है। यथा; दातृ-दात्री, धातृ-धात्री, कर्तृ-कर्त्री, जनयितृ-जनयित्री, प्रसवितृ-प्रसवित्री।

N. B. न स्वस्रादेः (न षट् स्वस्रादिभ्यः)—स्वसृ इत्यादि ऋकारान्त शब्दों में ईप् नहीं होता। यथा; स्वसा, माता, दुहिता, याता, ननान्दा, तिस्रः, चतस्रः।

(ग) नान्तादीप् (ऋन्नेभ्यो ङीप्)—नकारान्त शब्दों के परे ईप् होता है। यथा; कामिन्-कामिनी, मानिन्-मानिनी, मायाविन्-मायाविनी, तपस्विन्-तपस्विनी, विलासिन्-विलासिनी, अधिकारिन्-अधिकारिणी, उपकारिन्-उपकारिणी, अनुरागिन्-अनुरागिणी, प्रियवादिन-प्रियवादिनी, मनोहारिन्-मनोहारिणी।

N. B. उपधाया लोपोऽनः (अल्लोपोऽनः) ईप् होने से अन् भागान्त शब्दों की उपधा का लोप होता है। यथा; राजन्-राज्ञी, पर म् और व् संयुक्त उपधा का लोप नहीं होता।

२ संख्यायाः—संख्यावाची नकारान्त शब्दों के परे ईप् नहीं होता है। यथा; पञ्च, सप्त, अष्ट, नव, दश।

३ न मनन्तात्—मन् भागान्त शब्दों के परे ईप् नहीं होता। यथा; सीमा, धामा, सुदामा, अतिमहिमा।

४ नानन्ताद्बहुव्रीहौ (अनो बहुव्रीहेः)—बहुव्रीहि समास होने से अन् भागान्त शब्दों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा; बहूनि सन्त्यस्याः पर्व्वाणि बहुपर्व्वा वेणुयष्टिः।

विभाषा डाप् (डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्)—बहुव्रीहि समास होने से अन् भागान्त शब्दों के उत्तर विकल्प से डाप् होता और इसका आ रहता है। यथा; बहुपर्व्वा, बहुपर्व्वे, बहुपर्व्वाः, पक्षान्तर में बहुपर्व्ना, बहुपर्व्नाणौ, बहुपर्व्नाणः।

ईप् चोपधालोपिनो वा (अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम्)—जिन अन् भागान्त शब्दों की उपधा का लोप होता है उनके परे बहुव्रीहि समास होने से विकल्प से डाप् और ईप् होता है।

यथा, बहवः राजानः यस्य राजानः बहुराजा, बहुराज्ञी, बहुराजाः, बहुराज्ञ्यौ, बहुराज्यौ, बहुराजयः। पक्षान्तर में बहुराजा, बहुराजानौ, बहुराजानः।

N. B. गुणवाचकाः (पूर्ववत्। अनुपसर्जनादिति)—गुर्वि इत्यादि विकल्प से सिद्ध होते हैं। यथा, गुरु-गुर्वी, गुर्वी, गुर्वि; ग्लह-ग्लही, मघवन्-मघोनी, मघवरी।

(घ) उगितश्च—उ और ऋ लोप होने वाले प्रत्ययों के योग से बने शब्दों के उत्तर ईप् होता है। यथा, उगितः भवत् भवती, दयत्-दयती, कियत्-कियती, धीमत्-धीमती, बुद्धिमत्-बुद्धिमती, पुत्रवत्-पुत्रवती, लज्जावत्-लज्जावती, बलवत्-बलवती, प्रभावत्-प्रभावती, रूपवत्-रूपवती, प्रेयस्-प्रेयसी, श्रेयस्-श्रेयसी, गरीयस्-गरीयसी, लघीयस्-लघीयसी, कनीयस्-कनीयसी। अपवाद-सत्-सती, ददत्-ददती, शृण्वत्-शृण्वती, द्वियत्-द्वियती, बिभ्रत्-बिभ्रती, कुर्वत्-कुर्वती, गृह्णत्-गृह्णती, जानत्-जानती।

N. B. शतुर्नुम् भू-दिवादिभ्याम्—ईप् होने से भ्वादि, दिवादि और चुरादि गणीय धातु के उत्तर शतृ प्रत्यय को नुम् का आगम होता है। नुम् का न् रहता है और शतृ के त् के पूर्व लगता है। यथा; भ्वादि-धावत्-धावन्ती, गच्छत्-गच्छन्ती, पतत्-पतन्ती, तिष्ठत्-तिष्ठन्ती, चलत्-चलन्ती, चुरादि—पचयत्-पचयन्ती, धारयत्-धारयन्ती, स्मारयत्-स्मारयन्ती, स्थापयत्-स्थापयन्ती, पालयत्-पालयन्ती। दिवादि-दीव्यत्-दीव्यन्ती, नश्यत्-नश्यन्ती, जीर्य्यत्-जीर्य्यन्ती, मुह्यत्-मुह्यन्ती।

२ वा तुदादेः (आच्छीनद्योर्नुम्)—तुदादिगणीय धातुओं के परे विकल्प से नुम् होता है। यथा; तुदत्-तुदन्ती, तुदती; इच्छत्-इच्छन्ती, इच्छती; पृच्छत्-पृच्छन्ती, पृच्छती; स्पृशत्-स्पृशन्ती, स्पृशती, सिञ्चत्-सिञ्चन्ती, सिञ्चती।

३ अदादेश्चादन्तात् (आच्छीनद्योर्नुम्)—अदादिगणीय आ-कारान्त धातु के परे विकल्प से नुम् होता है । यथा; यात्-यान्ती, याती; भात्-भान्ती, भाती; भात्-भान्ती, भाती; स्नात्-स्नान्ती, स्नाती ।

४ विभाषा स्यतुः (आच्छीनद्योर्नुम्)—ईप् होने से स्यतु प्रत्ययान्त शब्दों का विकल्प से नुम् होता है । यथा; भविष्यत्-भविष्यन्ती, भविष्यती; करिष्यत्-करिष्यन्ती, करिष्यती; दास्यत्-दास्यन्ती, दास्यती; शास्यत्-शास्यन्ती, शास्यती ।

(ख) टित्-षिद्भ्यामीप् (षिद् गौरादिभ्यश्च । टिड्ढाणञ् द्वयस-ज्दघ्नञ् मात्रच् तयप् ठक् ठञ्कञ्क्वरपः)—ट् और ष् लोप होने वाले प्रत्ययों से बने हुए शब्दों के परे ईप् होता है । यथा; टकारेत्—गायन-गायनी, कर्म्मकर-कर्म्मकरी, अर्थकर-अर्थकरी, यशस्कर-यशस्करी, निशाचर-निशाचरी, भयङ्कर-भयङ्करी, चतुर्थ-चतुर्थी, पञ्चम-पञ्चमी, षष्ठ-षष्ठी, सप्तम-सप्तमी, अष्टम-अष्टमी, नवम-नवमी, दशम-दशमी, एकादश-एकादशी, द्वादश-द्वादशी, त्रयो-दश-त्रयोदशी, चतुर्द्दश-चतुर्द्दशी, षोडश-षोडशी, द्वय-द्वयी, त्रय-त्रयी, चतुष्टय-चतुष्टयी, दयामय-दयामयी, स्वर्णमय-स्वर्ण-मयी, मृन्मय-मृन्मयी, हिरन्मय-हिरन्मयी । षकारेत्—नर्त्तक-नर्त्तकी, रजक-रजकी, मानव-मानवी, वैष्णव-वैष्णवी, द्रौपद-द्रौपदी, पाञ्चाल-पाञ्चाली, मागध-मागधी, मैथिल-मैथिली, पार्श्वत-पार्श्वती, चातुर-चातुरी, माधुर माधुरी, भागिनेय-भागि-नेयी, पौत्र-पौत्री, दौहित्र-दौहित्री, ईदृश-ईदृशी, तादृश-तादृशी, यादृश-यादृशी, कीदृश-कीदृशी, सदृश-सदृशी, एतादृश-एतादृशी, अन्यादृश-अन्यादृशी ।

N. B. ईपि लोपः य्यणो हलः (हलस्तद्धितस्य)—ईप् होने से हल् वर्ण के परवर्त्ती य्यण् प्रत्यय का लोप होता है । यथा; गार्ग्य-गार्गी,

के उत्तर ईप् होता है। यथा, द्वे अस्या दाम्नी द्विदाम्नी A cow tied with two ropes, त्रीण्यस्या दामानि त्रिदाम्नी; द्वे अस्या हायने द्विहायनी A cow two years old, त्रिहायणी, चतुर्हायणी गौः। हायन शब्द वयोवाचक न हो तो ईप् और णत्व नहीं होता। यथा, द्विहायना, त्रिहायना, चतुर्हायना शाला।

(ण) इदन्तादिभाषा (कृदिकारादक्तिनः)—इकारान्त शब्द के उत्तर विकल्प से ईप् होता है। यथा, श्रेणी, श्रेणिः; राजी, राजिः; आली, आलिः; घटी, घटिः; रात्री, रात्रिः; रजनी, रजनिः; शारी, शारिः; यष्टी, यष्टिः; अही, अहिः; कपी, कपिः; मुनी, मुनिः; शकटी, शकटिः।

N. B. नित्यं सख्युः (सख्यशिश्वीति भाषायाम्)—सखि में नित्य होता है। यथा, सखी।

२ न क्ते (कृदिकारादक्तिनः)—क्ति प्रत्यय से बने हुए इकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् नहीं होता है। यथा, गतिः, स्थितिः, कृतिः, मतिः, भक्तिः, मुक्तिः, बुद्धिः।

३ वा शक्ति-पद्धतिभ्याम् (बह्वादिभ्यश्च)—शक्ति और पद्धति शब्द के उत्तर विकल्प से होता है। यथा, शक्ती, शक्तिः (अस्त्र अर्थ में), पद्धती, पद्धतिः।

(त) पत्युर्नो यज्ञसंयोगे—यज्ञसंयोग -अर्थात् यज्ञ के फलभागित्व अर्थ में पति [redacted] उत्तर ईप् और इकार के स्थान में न होता है। यथा, वशिष्ठस्य पत्नी, वशिष्ठानुष्ठितयज्ञफलभोक्त्री-त्यर्थः। ग्रामस्य पतिरियम् (यहाँ पति का अर्थ अधिकारिणी है, फलभोक्त्री नहीं है; इसी से ईप् और न नहीं होता)।

N. B. सपत्नीप्रभृतयः (नित्यं सपत्न्यादिषु)—सपत्नी इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, समानः पतिरस्याः सपत्नी, एकः पतिरस्या

एकपत्नी साध्वी, वीरः पतिरस्याः वीरपत्नी, वृद्धः पतिरस्याः वृद्धपत्नी, भद्रः पतिरस्याः भद्रपत्नी, पञ्च पतयोऽस्याः पञ्चपत्नी द्रौपदी, पतिरस्त्यस्याः पतिवत्नी, जीवद्भर्तृका, अन्तरस्त्यस्याः अन्तर्वत्नी गर्भिणी।

(ग) पदो बहुव्रीहौ (पादोऽन्यतरस्याम्)— बहुव्रीहि समास होने पर पद् के उत्तर ईप् होता है। यथा, द्वावस्याः पदौ द्विपदी, त्रयोऽस्याः पदः त्रिपदी, चतुष्पदी, बहुपदी, शतपदी।

(घ) दन्त—बहुव्रीहि समास होने पर दन्त् के उत्तर ईप् होता है। यथा, सुदती, चारुदती, शुभ्रदती, कुन्ददती।

(ङ) पाणिगृहीतात् पत्न्याम् (पाणिगृहीती भार्यायाम्)— पत्नी अर्थ में पाणिगृहीत शब्द के उत्तर ईप् होता है। यथा, पाणिगृहीतोऽस्याः पाणिगृहीती पत्नी अन्यत्र पाणिगृहीता नारी।

(च) वा गुणवाचकादुदन्तात् (वोतो गुणवचनात्) — गुणवाचक उकारान्त शब्दों के उत्तर विकल्प से ईप् होता है। यथा, मृद्वी, मृदुः; साध्वी, साधुः; पट्वी, पटुः; गुर्वी, गुरुः; लघ्वी, लघुः; तन्वी, तनुः; स्वाद्वी, स्वादुः; बह्वी, बहुः (बह्वादिभ्यश्च)। खरु—a girl who chooses her husband शब्द में नहीं होता (खरुसंयोगोपधात्)।

न संयुक्तोपधात् (खरुसंयोगोपधात्)—जिन उकारान्त शब्दों की उपधा में संयुक्त वर्ण हो, उनके उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, पाण्डुः।

(छ) शिश्वप्रतिषेधानडुहश्च (शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्)—अशिशु और अनडुह् शब्द के उत्तर नित्य ईप् होता है। यथा, अशिश्वी, नास्त्यस्याः शिशुरित्यर्थः; अनडुही।

अनड्वाही—निपातन से सिद्ध होता है।

६ भवेन्द्राणी (इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणामानुक्)— जाया अर्थ में भव, शर्व, रुद्र, मृड, इन्द्र, वरुण, यवन, मातुल, हिम, उपाध्याय और आचार्य

के उत्तर आन् व ईप् होता है । यथा; भवस्य जाया भवानी, शर्व्वस्य जाया शर्व्वाणी, रुद्र-रुद्राणी, मृड-मृडानी, इन्द्र-इन्द्राणी, वरुण-वरुणानी, इत्यादि ।

(क) न लोपो ब्रह्मणः—आन् होने से ब्रह्मन् के नकार का लोप होता है । यथा, ब्रह्मणो जाया ब्रह्माणी ।

(ख) मातुलादान् विभाषा (मातुलोपाध्याययोरानुग्वा)—मातुल शब्द के उत्तर विकल्प से आन् होता है । यथा, मातुलस्य जाया मातुलानी, मातुली ।

(ग) वा क्षत्रियादेरानीपौ (अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे)— क्षत्रिय इत्यादि शब्द के उत्तर विकल्प से आन् और ईप् होते हैं । यथा, क्षत्रिय-क्षत्रियाणी क्षत्रिया A woman of the Kshatriya caste, क्षत्रियी the wife of a Kshatriya, अर्य-अर्याणी, अर्या, अर्यी; उपाध्याय-उपाध्यायानी, उपाध्यायी The wife of a teacher, उपाध्यायी, उपाध्याया— a female preceptor, आचार्य्या, आचार्य्यानी the wife of an Acharya or holy teacher (न मूर्द्धन्य नहीं होता) आचार्य्या a spiritual preceptress.

(घ) अर्थविशेषे हिमादेः (हिमारण्ययोर्महत्त्वे । यवाद्दोषे । यवनाल्लिप्याम्)— अर्थ विशेष में हिम, अरण्य, यव और यवन के उत्तर नित्य आन् और ईप् होता है । यथा, महत् हिमं हिमानी, महत् अरण्यम् अरण्यानी, दुष्टो यवः यवानी, यवनानां लिपि यवनानी ।

५ ऊङुतः—उकारान्त शब्द के उत्तर ऊङ् होता है और इसका ऊ रहता है । यथा, कुरु-कुरूः, कद्रूः, प्रजाद्रूः, कर्कन्धूः ब्रह्मबन्धूः ।

न रज्ज्वादेः—रज्जु इत्यादि के उत्तर ऊप् नहीं होता । यथा, रज्जुः, धेनुः, आलुः, हनुः, कमण्डलुः, इक्ष्वाकुः, भृतबाहुः, अध्वर्युः ।

(क) विभाषा तन्वादेः—तनु इत्यादि के उत्तर विकल्प से ऊप् होता है । यथा, तनूः, तनुः, चञ्चूः, चञ्चुः ।

श्वश्रूः श्वशुरस्य—श्वशुर का निपातन से श्वश्रू होता है । यथा, श्वशुरस्य जाया श्वश्रूः ।

(ख) ऊरोरौपम्ये (ऊरूत्तरपदादौपम्ये)—उपमा अर्थ में ऊरु के उत्तर ऊप् होता है । यथा, रम्भे इवास्या ऊरू रम्भोरूः, करभाविवास्या ऊरू करभोरूः, करिकराविवास्या ऊरू करिकरोरू ।

(ग) वामादिपूर्वाच्च (संहितशफलक्षणवामादेश्च)—वाम इत्यादि परवर्ती ऊरु के उत्तर में ऊप् होता है । यथा, वामोरूः, हितोरूः, सहोरूः, संहितोरूः, लक्षणोरूः, शफोरूः ।

Exercise—42

1 Give the feminine forms of:—प्रथम, मनुष्य, तपस्विन्, महत्, राजन्, युवन्, श्रीमत्, पतत्, नर्तक, गार्ग्य, उक्षन्, आचार्य, उपाध्याय, मृगनयन, पति, मृदु, गुरु, श्वशुर, भविष्यत्, मनोहारिन्, कामिन्, शूद्र, गायक and क्षत्रिय ।

2. Give single words for:—आचार्यस्य जाया, श्वशुरस्य मातुलस्य जाया, वीरः पतिरस्याः, मृग इव नयनेऽस्याः, महतो गणकस्य जाया, समानः पतिरस्याः, पत्र पत्योऽस्याः, करभाविवास्या ऊरू A woman of Gop class, The wife of Indra.

3. Translate into Sanskrit—राजा द्रुपद ने अपनी कन्या द्रौपदी का स्वयम्बर किया । उसने एक मत्स्य टाँग दिया । नीचे जल

में मत्स्य की परछाईं देख कर जो उसे वेधेगा, उसी के साथ द्रौपदी का विवाह होगा। अनेक वीर राजाओं ने मत्स्य वेधने की चेष्टा की, पर कोई भी सफल न हुआ। अन्त में ब्राह्मण वेषधारी अर्जुन ने मत्स्य को मार गिराया और द्रौपदी को लेकर भाइयों सहित अपने स्थान को चले। पर दुर्योधन इत्यादि सब राजाओं ने युद्ध करके द्रौपदी को छीन लेने का विचार किया। युद्ध में अर्जुन ने सब को परास्त किया। द्रौपदी सहित पाँचो पाण्डव अपने घर पहुँचे और द्वार से ही माता को पुकार कर कहा कि हे माता, हम लोग एक फल लाये हैं। माता ने कहा कि आपस में बाँट लो। माता, के ऐसा कहने के कारण द्रौपदी पाँचो पाण्डवों की स्त्री हुई।

समास

१ एकार्थीभावः समासः—दो या अधिक पद आपस में मिल जाते हैं तो उन्हें समास कहते हैं। समास में केवल अन्त के पद में विभक्ति होती है।

N. B. लुक् विभक्तेः—समास के अन्तर्गत विभक्ति का लोप होता है।

२ नस्यलोपः पूर्वस्य (न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य)—समास होने पर पूर्वपद के अन्तस्थित न का लोप होता है।

३ परस्य स्वरे (मस्ताद्धिते)—स्वर वर्ण परे रहने से परपद के अन्तस्थित न् का लोप होता है (यप् प्रत्यय परे रहने से भी परपद के अन्तस्थित न् का लोप होता है।

४ लोपोऽवर्णवर्णयोः (यस्येति च)—स्वरवर्ण परे रहने से अ और इ का लोप होता है।

५ अकारो नञो हलि (नलोपो नञः)—व्यञ्जन वर्ण परे रहने से नञ् का अ होता है।

६ अन् स्वरे (तस्मान्नुडचि)—स्वरवर्ण परे हो तो नञ् का अन् होता है।

७ टेर्लोपो डिति (टेः)—ड्-इत् वाले प्रत्यय के परे रहने से टि का लोप होता है।

८ तेर्विंशतेः (ति विंशतेर्डिति)—विंशति के ति का लोप होता है।

९ ह्रस्वोऽन्ते गोस्त्रियावन्यार्थे (गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य)—जहाँ अन्य पदार्थ का बोध हो वहाँ अन्तस्थित गो शब्द और स्त्री प्रत्यय का ह्रस्व होता है।

स्त्री नेयसुनः—ईयसुन् के परवर्ती स्त्रीप्रत्यय का ह्रस्व नहीं होता।

१० समासाः प्रातिपदिकानि (कृत्तद्धितसमासाश्च)—समास होने पर समस्त भाग प्रातिपदिक होता है अर्थात् उसके उत्तर फिर विभक्तियाँ लगती हैं।

११ विशेष्यलिङ्गमन्यार्थे—जहाँ अन्य पदार्थ का बोध हो वहाँ समस्त भाग विशेष्य के लिङ्ग को प्राप्त होता है।

१२ नपुंसकैकवचने समाहारे—समाहार समास होने पर समस्त भाग नपुंसकलिङ्ग और एकवचनान्त होता है।

१३ पुंवद्भावः सर्वनाम्नः—समास में स्त्रीलिङ्ग सर्वनाम का पुंवद्भाव (पुंल्लिङ्ग के समान आकार) होता है।

१४ महतो महा विशेष्ये (आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः) विशेष्य पद परे हो तो महत् का महा होता है।

अव्ययीभाव समास

१ पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः—जिस समास में पूर्वपद प्रधान हो उसे अव्ययीभाव कहते हैं।

(क) नपुंसकमव्ययीभावे (अव्ययीभावश्च)—अव्ययी भाव समास होने पर समस्त भाग क्लीबलिङ्ग होता है।

(ख) [illegible] (नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः)—

पञ्चमी को छोड़ कर अकारान्त अव्ययीभाव के परे विभक्ति के स्थान में म् होता है । यथा; राममधिकृत्य प्रवृत्ता कथा अधिरामं कथा, कृष्णस्य समीपात् गतः उपकृष्णात् गतः ।

(ग) विभाषा तृतीयासप्तम्योः (तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्)—तृतीया और सप्तमी विभक्ति में विकल्प से म् होता है । यथा; रामस्य समीपेन कार्यं इति उपरामम्, उपरामेण वा कार्यम् । रामस्य समीपे स्थितः इति उपरामम्, उपरामे वा स्थितः ।

(घ) लुक् स्यात् (अव्ययीभावश्च । अव्ययादाप्सुपः)—अकारान्त भिन्न अव्ययीभाव के परवर्ती विभक्ति का लोप होता है ।

१ गुरुस्वाद्यर्थं समीपादौ (अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु)—समीप, अभाव, अत्यय, असम्प्रति, पश्चात्, योग्यता, वीप्सा, अनतिवृत्ति, आनुपूर्व्य, विभक्ति, सादृश्य, यौगपद्य, साकल्य, समृद्धि, पर्य्यन्त इत्यादि अर्थ में सुबन्त पद के साथ अव्यय का समास होता है । यथा; समीप—गृहस्य समीपं उपगृहम्, गङ्गायाः समीपं उपगङ्गम्; अभाव—विघ्नस्य अभावः निर्विघ्नम्, मक्षिकाणां अभावः निर्मक्षिकम्; अत्यय—हिमस्यात्ययः अतिहिमम्, बाधाया अत्ययः अतिबाधम्; असम्प्रति—निद्रा सम्प्रति न युज्यते अतिनिद्रम्; शोकः सम्प्रति न युज्यते अतिशोकम्; पश्चात्—रथस्य पश्चात् अनुरथम्, अनुगृहम्; योग्यता—रूपस्य योग्यं अनुरूपम्, अनुकूलम्; वीप्सा—दिनं दिनं प्रतिदिनम्, प्रतिगृहम्; अनतिवृत्ति—शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति, यथाज्ञानम्; आनुपूर्व्य—ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण अनुज्येष्ठम्, अनुवर्णम्; विभक्त्यर्थ—हरौ अधिहरि, गृहे अधिगृहम् ।

सहः स्तोऽकाले (अव्ययीभावे चाकाले)—अव्ययीभाव समास में सह शब्द के स्थान में [redacted] होता है । यथा; सादृश्य—हरेः सदृशं

सहरिः; यौगपद्य—चक्रेण युगपत् सचक्रम्; साकल्य—तृणमपि अपरित्यज्य सतृणम्; समृद्धि—मद्राणां समृद्धिः समद्रम्; पर्यन्त—अग्निग्रन्थपर्य्यन्तमधीते साग्नि। काल अर्थ में स नहीं होता; यथा, सहपूर्व्वाह्णम्, सहापराह्णम्।

४ यावदवधारणे—अवधारण अर्थ में सुबन्त के साथ यावत् का समास होता है। यथा, यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व, यावन्त्यमत्राणि सन्ति तावत् आमन्त्रयस्वेत्यर्थः; यावन्तः श्लोकास्तावन्तोऽच्युतप्रणामा यावच्छ्लोकम्।

५ विभाषा बहिरादिः पञ्चम्या (अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्याः)—पञ्चम्यन्त पद के साथ बहिस्, प्राच्, अपाच्, प्रत्यञ्च्, अप, परि इत्यादि शब्दों का विकल्प से समास होता है। यथा, बहिर्ग्रामम्, ग्रामाद्बहिः; प्रागुपवनम्, उपवनात् प्राक्।

६ आङ्मर्य्यादाभिविध्योः—मर्य्यादा और अभिविधि (तेन विना मर्य्यादा, तत्सहितोऽभिविधिः) अर्थ में सुबन्त पद के साथ आङ् अव्यय का विकल्प से समास होता है। यथा, आपाटलिपुत्रम् (आपाटलिपुत्रात्) वृष्टो देवः; आकुमारं (आ कुमारेभ्यः) यशः कालिदासस्य; आमुक्ति (आमुक्तेः) संसारः।

७ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये—आभिमुख्य (सम्मुख) अर्थ में लक्षणवाचक सुबन्त पद के साथ अभि और प्रति अव्ययों का विकल्प से समास होता है। यथा, अभ्यग्नि (अग्नि अभि) शलभाः पतन्ति, प्रत्यग्नि (अग्नि प्रति)।

८ यस्य चायामस्तेनानुः (यस्य चायामः)—जिसकी दीर्घता का बोध हो उसके साथ अनु अव्यय का विकल्प से समास होता है। यथा; अनुगङ्गम् (गंगाया अनु) वाराणसी, गंगा दैर्घ्य-सदृशदैर्घ्योपलक्षिता इत्यर्थः।

९ पारमध्यौ षष्ठ्या (पारे मध्ये षष्ठ्या वा)—षष्ठ्यन्त पद के साथ पार और मध्य शब्दों का विकल्प से अव्ययीभाव होता है। यथा; समुद्रस्य पारं पारेसमुद्रम्, गङ्गायाः मध्यं मध्येगङ्गम् (निपातन से ए का आगम होता है)। पक्षान्तर में षष्ठी समास होता है।

१० संख्या नदीभिः समाहारे (नदीभिश्च। समाहारे चायमिष्यते)—समाहार समझे जाने से नदीवाचक सुबन्त पद के साथ संख्यावाचक शब्द का अव्ययीभाव समास होता है। यथा; तिसृणां गंगानां समाहारः त्रिगङ्गम्, पञ्चनदम्, सप्तगोदावरम्।

अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्—संज्ञा अर्थ में और अन्य पदार्थ का बोध होने से नदीवाचक सुबन्त पद का अव्ययीभाव समास होता है। यथा; उन्मत्ता गङ्गा यस्मिन् उन्मत्तगङ्गम्, लोहितगङ्गम्, तुष्णीगङ्गम्, शनैर्गङ्गम्, इमानि देशविशेषनामानि।

११ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि (च)—अव्ययीभाव समास में तिष्ठद्गु वहद्गु, आयतीगवम्, खलेयवम्, खलेबुसम्, लूनयवम्, लूयमानयवम्; पूतयवम्, पूयमानयवम्, संहितयवम्, संह्रियमाणयवम्, संहृतबुसम्, संह्रियमाणबुसम्, समभूमि, समपदाति, सुषमम्, विषमम्, दुःषमम्, निःषमम्, अपसमम्, आयतीसमम्, प्रौढम्, पापसमम्, पुण्यसमम्, प्राह्णम्; प्ररथम्, प्रमृगम्, प्रदक्षिणम्, अपरदक्षिणम् सम्प्रति और असम्प्रति निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; तिष्ठन्ति गावो यस्मिन् काले दोहाय तिष्ठद्गु, आयान्ति यस्मिन् काले गावो गोष्ठम् आयतीगवम्।

N. B. शरदादिभ्यः (अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः)—अव्ययीभाव समास में शरद्, विपाश्, अनस्, मनस्, उपानह्, अनडुह्, दिव्, हिमवत्, हिरुक्, विद्, सद्, दिश्, दृश्, विश्, चतुर्, त्यद्, तद्, यद्, कियत् और जरा शब्दों के उत्तर अच् होता है और अन् का अ होता

है। यथा; शरदः समीपम् उपशरदम्, प्रतिदिशम्, आहिमवतम्, अनुदिशम्।

२ जराया जरस् (जराया जरस् च)—अन् होने से जरा का जरस् होता है। यथा; जरायाः समीप उपजरसम्।

३ सरजसोपशुने (अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तन्दिवरात्रिन्दिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः) — सरजस और उपशुन निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; रजोऽपि अपरित्यज्य सरजसम्, शुनः समीपं उपशुनम्।

४ प्रतिपरसमनुभ्योऽक्ष्णः—प्रति, पर, सम् और अनु के परवर्ती अक्षि शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा; प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, समक्षम्, अन्वक्षम्।

५ अनन्तात् (अनश्च)—अन् भागान्त शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा; उपराजम्, अध्यात्मम्, प्रत्यध्वम्।

६। नपुंसकात् (नपुंसकादन्यतरस्याम्)—नपुंसक अन्नन्त शब्द के उत्तर विकल्प से अन् होता है। यथा; उपचर्मम्, उपचर्म।

। गिरि-नदी-पौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः (नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः। गिरेश्च सेनकस्य)—गिरि, नदी, पौर्णमासी और आग्रहायणी के उत्तर विकल्प से अन् होता है। यथा; उपगिरम्, उपगिरि; उपनदम्, उपनदि; उपपौर्णमासम्, उपपौर्णमासि; उपाग्रहायणम्, उपाग्रहायणि।

७ स्पर्शान्ताच्चापञ्चमात् (झयः)—पञ्चमभिन्न स्पर्श-वर्णान्त शब्दों के उत्तर विकल्प से अन् होता है। यथा, उपदृशम्, उपदृशत्; अनुसमिधम्, अनुसमित्।

८ प्रतेरुरः सप्तमीस्थानात्—प्रति शब्द के परवर्ती सप्तम्यर्थ में वर्तमान उरस् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा; उरसि, प्रत्युरसम्।

६ अनुगवमायामे—दीर्घता अर्थ में अनुगवम् निपातन से सिद्ध होता है। यथा; गोः पश्चात् अनुगवम्।

तत्पुरुष-समास

१२ उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः—जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

N. B. परलिङ्गं तत्पुरुषे (परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः)—तत्पुरुष समास होने पर समस्त भाग उत्तर पद के लिंग को प्राप्त होता है।

२ रात्राह्नाहाः पुमांसः (रात्राह्नाहाः पुंसि)—तत्पुरुष समास होने में समस्त भाग के अन्तस्थित रात्र, अह्न और अह शब्द पुंलिङ्ग होते हैं।

३ रात्रं नपुंसकं संख्यापूर्व्वम्—संख्यावाचक शब्द पहले हो तो रात्र शब्द नपुंसक होता है।

४ पुण्यादहः (पुण्यसुदिनाभ्यामह्नो नपुंसकत्वंवक्तव्यम्)—पुण्य शब्द के परवर्ती अह नपुंसक होता है।

१३ द्वितीया श्रितादिभिः (द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः)—श्रित इत्यादि सुबन्त पद के साथ द्वितीयान्त पद का समास होता है और उसे द्वितीया तत्पुरुष कहते हैं। यथा; कष्टं श्रितः कष्टश्रितः, दुःखमतीतः दुःखातीतः, कूपं पतितः कूपपतितः, गृहं गतः गृहगतः, तुहिनमत्यस्तः तुहिनात्यस्तः, सुखं प्राप्तः सुखप्राप्तः, सुखमापन्नः सुखापन्नः, ग्रामं गामी ग्रामगामी (गम्यादीनामुपसंख्यानम्), अन्नं बुभुक्षुः अन्नबुभुक्षुः, वेदं विद्वान् वेदविद्वान्।

(क) खट्वा क्तेन कुत्सायाम् (खट्वा क्षेपे)—निन्दा अर्थ में क्त प्रत्यय से बने सुबन्त पद के साथ द्वितीयान्त खट्वा शब्द का समास होता है; यथा; खट्वां आरूढः खट्वारूढः।

(ख) कालाः अत्यन्तसंयोगे (कालाः । अत्यन्तसंयोगे च)—अत्यन्त संयोग अर्थ में सुबन्त पद के साथ द्वितीयान्त कालवाचक सुबन्त पद का समास होता है। यथा; मुहूर्त्तं सुखं मुहूर्त-

सुखम्, मासं गम्यः मासगम्यः, वर्षं भोग्यः वर्षभोग्यः; मुहूर्त्तं सुखं मासं सुखं व्याप्य इत्यर्थः ।

१० तृतीया पूर्वादिभिः (पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः)—पूर्व इत्यादि सुबन्त पद के साथ तृतीयान्त पद का समास होता है और इसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं। यथा, मासेन पूर्वः मासपूर्वः, वर्षेण अवरः वर्षावरः, वाचा कलहः वाक्कलहः, गुडेन मिश्रः गुडमिश्रः, आचारेण श्लक्ष्णः (निपुणः) आचारश्लक्ष्णः, धान्येन अर्थः धान्यार्थः, मात्रा सदृशी मातृसदृशी, पित्रा समः पितृसमः ।

(क) ऊनार्थेन (पूर्व ……)—ऊनार्थ सुबन्त पद के साथ तृतीयान्त पद का समास होता है । यथा, एकेन ऊनः एकोनः, विद्यया हीनः विद्याहीनः, धर्मेण रहितः धर्मरहितः, गन्धेन शून्यः गन्धशून्यः, अङ्गेन विकलः अङ्गविकलः ।

(ख) कर्त्तृकरणयोः (कर्त्तृकरणे कृता बहुलम्)— कृत्-प्रत्यय वाले सुबन्त पद के साथ कर्त्ता और करण में विहित तृतीयान्त का समास होता है । यथा; कर्त्ता में—व्याघ्रेण हतः व्याघ्रहतः, अहिना दष्टः अहिदष्टः, व्यासेन रचितः व्यासरचितः, पाणिनिना प्रणीतं पाणिनिप्रणीतम्, नारदेन प्रोक्तं नारदप्रोक्तम्, द्विजेन भक्ष्यं द्विजभक्ष्यम्, पुत्रेण देयं पुत्रदेयम् । करण में—नखैः भिन्नः नखभिन्नः, असिना छिन्नं असिछिन्नम्, अग्निना दग्धः अग्निदग्धः, जलेन सिक्तः जलसिक्तः, अञ्जलिना पेयं अञ्जलिपेयम्, शिरसा धार्य्यं शिरोधार्य्यम् ।

११ चतुर्थी बलि-हित सुखैः (चतुर्थीतदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः । तदर्थेन प्रकृतिविकृतिभावे एवेष्यते । अश्वघासादयः षष्ठीसमासा विशेषलिङ्गता चेति वक्तव्यम्)—सुबन्त बलि, हित सुख शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है और इसे चतुर्थी तत्पुरुष कहते हैं । यथा; भूताय बलिः भूत-

यलिः, पुत्राय हितं पुत्रहितम्, भ्रात्रे सुखं भ्रातृसुखम्।

(क) अर्थेन च (चतुर्थीतदर्थार्थ ....)—अर्थ शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। समस्त भाग विशेष्य के लिंग को प्राप्त होता है। यथा; द्विजाय अयं द्विजार्थः सूपः, द्विजार्था यवागूः, द्विजार्थं पयः।

(ख) विकृतिः प्रकृत्या तादर्थ्ये (चतुर्थीतदर्थार्थ ....)—तादर्थ्य अर्थ में प्रकृतिस्थलीय सुबन्त पद के साथ विकृतिस्थलीय चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। यथा, कुण्डलाय हिरण्यं कुण्डलहिरण्यम्, यूपाय दारु यूपदारु—wood for sacrificial post.

१६ पञ्चमी भयादिभिः (पञ्चमी भयेन । भयभीतभीतिभीभिरिति वाच्यम्। अपेतापोढ मुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः)—भय इत्यादि सुबन्त पद के साथ पञ्चम्यन्त पद का समास होता है उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं। यथा, व्याघ्रात् भयं व्याघ्रभयम्, व्याघ्रात् भीतः व्याघ्रभीतः, व्याघ्रात् भीः व्याघ्रभीः, व्याघ्रात् भीतिः व्याघ्रभीतिः, गृहात् निर्गतः गृहनिर्गतः, अधर्मात् जुगुप्सुः अधर्मजुगुप्सुः, सुखात् अपेतः सुखापेतः, बन्धनात् मुक्तः बन्धनमुक्तः, रथात् पतितः रथपतितः, तरङ्गात् अपत्रस्तः तरङ्गापत्रस्तः, विदेशात् आगतः विदेशागतः।

१७ षष्ठी समर्थेन (षष्ठी)—समर्थसुबन्त पद के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास होता है उसे षष्ठी तत्पुरुष कहते हैं। यथा; गंगायाः जलं गंगाजलम्, तरोः छाया तरुच्छायाः, अग्नेः शिखा अग्निशिखा, वायोः वेगः वायुवेगः, जलस्य प्रवाहः जलप्रवाहः, सुखस्य भोगः सुखभोगः, पयसः पानं पयःपानम्, कन्यायाः दानं कन्यादानम्, गवां दोहः गोदोहः, आज्ञायाः भङ्गः आज्ञाभङ्गः, दशायाः अन्तः दशान्तः, सूर्य्यस्य उदयः सूर्य्योदयः, वृष्टेः पातः वृष्टि-

पात:, शिरस: छेद: शिरश्छेद:, गवां वध: गोवध:, पितु: गृहं पितृगृहम्, राज्ञ: भवनं राजभवनम्, मनो: वचनं मनुवचनम्, अर्थस्य नाश: अर्थनाश:, कूपस्य उदकं कूपोदकम्।

N. B. न निर्द्धारणे—निर्द्धारण अर्थ में विहित षष्ठी का समास नहीं होता। यथा, मनुष्याणां क्षत्रिय: शूर:, गवां कृष्णा बहुक्षीरा।

२ न पूरणार्थै: (पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन)—पूरणार्थ पद के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास नहीं होता। यथा, रात्रां प्रथम:, पुत्रयो: द्वितीय:, भ्रातॄणां तृतीय:, शिष्याणां चतुर्थ:, छात्राणां पञ्चम:।

३ न गुणवाचिभि: (पूरण ....)—गुणवाचक पद के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास नहीं होता। यथा, पटस्य शौक्लम्, कोकनदस्य लौहित्यम्, आकाशस्य नीलिमा, द्राक्षाया माधुर्य्यम्। कहीं कहीं होता है, यथा, अर्थस्य गौरवम् अर्थगौरवम्, बुद्धे: मान्द्यम् बुद्धिमान्द्यम्, अर्थस्य कार्श्यम् अर्थकार्श्यम्।

४ मतुप्स्यर्थै: (पूरण ......)—तृप्त्यर्थक पद के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास नहीं होता। यथा, अपां तृप्त:, फलानां सुहित:, अन्नस्य आशित:।

५ न तृजकाभ्यां याजकादिवर्ज्जम् (तृजकाभ्यां कर्त्तरि)—तृ और अक प्रत्यय से बने शब्दों के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास नहीं होता। यथा, तृच्—जगत: स्रष्टा, सुखस्य दाता, दु:खस्य हर्त्ता; अक—लोकानां पालक:, वृक्षाणां छेदक:, शत्रूणां घातक:। याजक इत्यादि का समास होता है; यथा, शूद्रयाजक:, देवपूजक:, राजपरिचारक:, वेदाध्यापक:, सर्व्वोत्साहक:, देवस्नातक:, जलपरिषेचक:, भुवनभर्त्ता, हविर्होता, गुणग्राहक:।

१६ सप्तमी शौण्डादिभि: (सप्तमी शौण्डै:)—शौण्ड, धूर्त्त, किंतव, प्रवीण, संवीत, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, सिद्ध, शुष्क, पक्व इत्यादि शब्द के साथ सप्तम्यन्त पद का

समास होता है और सप्तमी तत्पुरुष कहलाता है। यथा, दाने शौण्डः दानशौण्डः, शास्त्रे प्रवीणः शास्त्रप्रवीणः, रणे पण्डितः रणपण्डितः, क्रीडायां कुशलः क्रीडाकुशलः, कर्म्मणि निपुणः कर्म्मनिपुणः, आतपे शुष्कः आतपशुष्कः, स्थाल्यां पक्वः स्थालीपक्वः।

(क) कृत्यैर्ऋणे— ऋण अर्थ में कृत्य प्रत्यय से बने शब्द के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है। यथा, मासे देयं मासदेयं ऋणम्, वर्षे परिशोध्यं वर्षपरिशोध्यं ऋणम्।

(ख) क्तेनाहोरात्रावयवाः—क्त प्रत्यय से बने शब्द के साथ दिन और रात्रि के अवयव बोधक सप्तम्यन्त पद का समास होता है। यथा, पूर्व्वाह्णे कृतं पूर्व्वाह्णकृतम्, अपराह्णे कृतं अपराह्णकृतम्, पूर्व्वरात्रे कृतं पूर्व्वरात्रकृतम्, अपररात्रे कृतं अपररात्रकृतम्।

(ग) [illegible] (ध्वाङ्क्षेण क्षेपे)— निन्दा अर्थ में काकवाचक सुबन्त शब्द के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है। यथा, तीर्थे काक इव तीर्थकाकः, तीर्थवायसः, तीर्थध्वाङ्क्षः, अनवस्थित इत्यर्थः।

१७ पूर्व्वादिरेकदेशिनैकवचने (पूर्व्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे)— एकवचनान्त अवयवी के साथ पूर्व्व, अपर, अधर और उत्तर का समास होता है। यथा, पूर्व्वं कायस्य पूर्व्वकायः, अपरकायः, अधरकायः, उत्तरकायः। एकवचन नहीं होने से नहीं होता। यथा, पूर्व्वं छात्राणामामन्त्रयस्व।

१८ अर्द्धं नपुंसकम्—एकवचनान्त अवयवी के साथ क्लीवलिङ्ग अर्द्ध शब्द का समास होता है। यथा, अर्द्धं पिप्पल्याः अर्द्धपिप्पली। अन्य लिङ्ग में नहीं होता; यथा, ग्रामस्य अर्द्धः। एकवचन नहीं होने से नहीं होता। यथा, अर्द्धं पिप्पलीनाम्।

१९ कालाः परिमाणिना—परिच्छेदवाचक पद के साथ कालवाचक पद का समास होता है । यथा; मासो जातस्य मासजातः, वर्षो मृतस्य वर्षमृतः ।

२० एकदेशवाचिना च—एकदेशवाचक पद के साथ कालवाचक पद का समास होता है ।

अह्नोऽह्न एकदेशात् (अह्नोऽह्न एतेभ्यः)—एक देशवाचक पद के परवर्ती अहन् का अह्न होता है । यथा; पूर्व्वं अह्नः पूर्व्वाह्नः, मध्यं अह्नः मध्याह्नः, अपरं अह्नः अपराह्नः, सायं अह्नः सायाह्नः ।

N. B. रात्रेरन् (अहः सर्व्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः)—एकदेशवाचक शब्द के परवर्ती रात्रि शब्द के उत्तर अन् होता है और इसका अ रहता है । यथा; पूर्व्वं रात्रेः पूर्व्वरात्रः, मध्यं रात्रेः मध्यरात्रः, अपरं रात्रेः अपररात्रः ।

२१ विभाषा द्वितीय तृतीय-चतुर्थ-तुर्य्याणि (द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्य्याण्यन्यतरस्याम्)— षष्ठ्यन्त अवयवी के साथ द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और तुर्य्य का विकल्प से समास होता है । यथा, द्वितीयं भिक्षायाः द्वितीयभिक्षा, तृतीयभिक्षा, चतुर्थभिक्षा, तुर्य्यभिक्षा । पक्षान्तर में षष्ठी तत्पुरुष होता है, यथा, भिक्षायाः द्वितीयं भिक्षाद्वितीयम्, भिक्षातृतीयम्, भिक्षाचतुर्थम्, भिक्षातुर्य्यम् ।

२२ अलं चतुर्थ्यां पुंवच्च—चतुर्थ्यन्त पद के साथ अलं अव्यय का समास होता है और चतुर्थ्यन्त स्त्रीलिंग पद का पुंवद्भाव होता है । यथा; अलं जीविकायै अलंजीविकः ।

२३ अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया—क्रान्त इत्यादि अर्थ में द्वितीयान्त पद के साथ अति इत्यादि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग द्वितीयान्त पद का पुंवद्भाव होता है । यथा, अतिक्रान्तः खट्वां अतिखट्वः, उत्क्रान्तो वेलां उद्वेलः ।

२४ अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीया—क्रुष्ट इत्यादि अर्थ में तृतीयान्त पद के साथ अव इत्यादि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग तृतीयान्त पद का पुंवद्भाव होता है। यथा, अवक्रुष्टः कोकिलया अवकोकिलः।

२५ पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या—ग्लान इत्यादि अर्थ में चतुर्थ्यन्त पद के साथ परि इत्यादि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग चतुर्थ्यन्त पद का पुंवद्भाव होता है। यथा, परिग्लानः अध्ययनाय पर्यध्ययनः, परिग्लानः सेवायै परिसेवः।

२६ निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या—क्रान्त इत्यादि अर्थ में पञ्चम्यन्त पद के साथ निर् इत्यादि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग पञ्चम्यन्त पद का पुंवद्भाव होता है। यथा, निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः, उत्थितो निद्रायाः उन्निद्रः।

२७ सामिस्वयमौ क्तेन (स्वयक्तेन)—क्त प्रत्यय से बने सुबन्त पद के साथ सामि और स्वयम् अव्ययों का समास होता है। यथा; सामिकृतम्, सामिघटितम्, स्वयङ्कृतम्, स्वयन्दत्तम्।

२८ नञ् सुपा (नञ्)—सुबन्त पद के साथ नञ् का समास होता है। इसे नञ् समास या नञ् तत्पुरुष कहते हैं। यथा; न ब्राह्मणः अब्राह्मणः, न मोघः अमोघः, न प्रियः अप्रियः, न विकृतः अविकृतः, न सिद्धः असिद्धः, न सुखं असुखम्, न दर्शनम् अदर्शनम्, न उपलम्भः अनुपलम्भः।

२९ ईषदकृता—कृदन्तभिन्न सुबन्त पद के साथ ईषत् अव्यय का समास होता है। यथा; ईषत्पिङ्गलः, ईषद्विकचः, ईषन्मुकुलितः।

३० आङीषदर्थे (कुगतिप्रादयः)—ईषत् अर्थ में सुबन्त पद के साथ आङ् अव्यय का समास होता है। यथा; आपाण्डुरः, [illegible], आलोहितः।

११ स्वती पूजायाम् (कुगति प्रादयः)—प्रशंसा अर्थ में सुबन्त पद के साथ सु और अति अव्यय का समास होता है। यथा, सुपुरुषः, सुब्राह्मणः, अतिमृदुः, अतिदयालुः।

१२ दुर्निन्दायाम् (कुगति प्रादयः)—निन्दा अर्थ में सुबन्त पद के साथ दुर् अव्यय का समास होता है। यथा, दुष्कुलम्, दुर्नीतिः, दुश्चरितम्।

१३ कुः पापार्थे (कुगति प्रादयः)—कुत्सित अर्थ में सुबन्त पद के साथ कु अव्यय का समास होता है। यथा, कुब्राह्मणः, कुपुरुषः, कुसंस्कारः।

१४ धातुभिरुपपदानि (उपपदमतिङ्)—धातु के साथ उपपद (जिन सुबन्त पदों के परे धातु के उत्तर कृत् प्रत्यय हो उन्हें उपपद कहते हैं) का समास होता है। इसको उपपद समास कहते हैं। यथा, कुम्भकारः, प्रभाकरः, निशाकरः, हितकरः, प्रीतिकरः, अग्रसरः, जलचरः, पार्श्वचरः, शिलाशयः, सरसिजम्, पङ्कजम्, अण्डजः, जलजः, पतगः, भुजगः।

१५ उपसर्गाश्च (कुगतिप्रादयः) — धातु के साथ उपसर्ग का समास होता है। यथा, सम् — संस्करोति, संस्कारः, संस्कृत्य; वि—विजयते, विजयः, विजित्य; अभि—अभिषिञ्चति, अभिषेकः, अभिषिच्य; आ—आरभते, आरम्भः, आरभ्य।

ऊर्यादि च्विडाचश्च — धातु के साथ ऊरी, उररी, आविस्, प्रादुस्, स्वधा, स्वाहा, वषट्, वौषट् इत्यादि शब्दों और च्वि डाच् प्रत्यय का समास होता है। यथा, ऊरी—ऊरीकरोति, ऊरीकरणम्, ऊरीकृत्य; आविस्—आविष्करोति, आविष्क्रिया, आविष्कृत्य; प्रादुस्—प्रादुर्भवति, प्रादुर्भावः, प्रादुर्भूय। च्वि—स्वीकरोति, स्वीकारः, स्वीकृत्य; भस्मीभवति, भस्मीभावः, भस्मीभूय; डाच्—समयाकरोति, समयाकरणम्, समयाकृत्य; दुःखाकरोति, दुःखाक्रिया, दुःखाकृत्य।

अनुकरणञ्चानिति परम—धातु के साथ अनुकरण शब्दों का समास होता है। यथा; खाट् करोति, खाट्करणम्, खाट्कृत्य। द्राङ्करोति,द्राङ्क्रिया, द्राङ्कृत्य। इति शब्द परे होने से नहीं होता। यथा, खाडिति कृत्वा निष्ठीवति, द्रागिति कृत्वा पतितः।

आदरानादरयोः सदसती—यथाक्रम आदर और अनादर अर्थ में धातु के साथ सत् और असत् शब्द का समास होता है। यथा; सत्करोति, सत्कारः, सत्कृत्य; असत्करोति, असत्क्रिया, असत्कृत्य।

अलं भूषणे (भूषणेऽलम्)—भूषण अर्थ में धातु के साथ अलं का समास होता है। यथा अलङ्करोति, अलङ्कारम्, अलङ्कृत्य।

अन्तरपरिग्रहे—धातु के साथ अन्तर् शब्द का समास होता है। यथा; अन्तर्भवति, अन्तर्भावः, अन्तर्भूय। परिग्रह अर्थ में नहीं होता, यथा, अन्तर्हत्वा गतः, हतं परिगृह्य गत इत्यर्थः।

पुरोऽव्ययम्—धातु के साथ पुरस् अव्यय का समास होता है। यथा; पुरस्करोति, पुरस्कारः, पुरस्कृत्य।

अस्तं च—धातु के साथ अस्त अव्यय का समास होता है। यथा, अस्तङ्गच्छति, अस्तङ्गतः, अस्तङ्गत्य।

अच्छ गत्यर्थवदेषु (अच्छगत्यर्थवदेषु)—वदु और गत्यर्थ धातु के साथ अच्छ अव्यय का समास होता है। यथा, अच्छवदति, अच्छोद्य, अच्छगच्छति, अच्छगत्य, अभिमुखमित्यर्थः।

अन्तर्धौ तिरः (तिरोऽन्तर्धौ)—व्यवधान अर्थ में धातु के साथ तिरस् अव्यय का समास होता है। यथा; तिरोभवति, तिरोभावः, तिरोभूय।

विभाषा कृञि (विभाषा कृञि)—कृ धातु के साथ विकल्प से होता है। यथा, तिरस्कृत्य, तिरःकृत्वा।

साक्षात् प्रभृतीनि च—कृ धातु के साथ साक्षात्, मिथ्या,

नमस्, प्रादुस्, अर्थे, वशे, अमा, अद्धा, उष्णम्, शीतम्, आर्द्रम्, विकसने, प्रहसने इत्यादि शब्दों का विकल्प से समास होता है। यथा, साक्षात्कृत्य, साक्षात् कृत्वा; नमस्कृत्य, नमः कृत्वा; वशेकृत्य, वशे कृत्वा; मिथ्याकृत्य, मिथ्या कृत्वा।

अनुपश्लेष उरसिमनसी (अनत्याधान उरसि-मनसी)—कृ धातु के साथ उरसि और मनसि सप्तम्यन्त पद का विकल्प से समास होता है। यथा, उरसिकृत्य, उरसि कृत्वा स्वीकृत्येत्यर्थः। मनसि कृत्य, मनसि कृत्वा, निश्चित्येत्यर्थः। उपश्लेष अर्थ में नहीं होता; यथा, उरसि शयित्वा।

मध्येपदे निवचने च—कृ धातु के साथ मध्ये पदे और निवचने सप्तम्यन्त पदों का विकल्प से समास होता है। यथा, मध्येकृत्य, मध्ये कृत्वा; पदेकृत्य, पदे कृत्वा; निवचनेकृत्य, निवचने कृत्वा। उपश्लेष अर्थ में नहीं होता है। यथा, मध्ये शयित्वा, ...कृत्वा।

नित्यं हस्ते पाणावुपयमने—विवाह अर्थ में कृ धातु के साथ हस्ते और पाणौ सप्तम्यन्त पद के साथ नित्य समास होता है। यथा, हस्तेकृत्य, पाणौकृत्य, दारकर्म कृत्वेत्यर्थः।

कर्मधारय-समास

३६ तत्पुरुषः समानाधिकरणपदः कर्मधारयः (तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः)—जिस तत्पुरुष समास में समास होने वाले पद समानाधिकरण अर्थात् विशेष्य-विशेषण भाव को प्राप्त हों उसे कर्मधारय कहते हैं।

३७ विशेषणं विशेष्येण (विशेषणं विशेष्येण बहुलम्)—विशेष्य पद के साथ विशेषण पद का समास होता है। यथा, नीलं उत्पलं नीलोत्पलम्, नवः पल्लवः नवपल्लवः, मधुरं वचनं मधुरवचनम्, नवं अन्नं नवान्नम्, सर्वे लोकाः सर्वलोकाः, विश्वे-

देवाः निरादेवाः, दुष्टो जनाः दुर्जनाः, सुगन्धि गन्धं सुगन्धि गन्धम्, मत्तः जनाः मत्तजनाः, मन पुरुषः मनुपुरुष, महान् देवः महादेवः, महान् वीरः महावीरः, परमः पुरुषः परमपुरुषः, केवलः वैयाकरणः केवलवैयाकरणः, जात नैयायिकः अम्लेवायिकः, सत अवयः समर्थः, अर्द्ध पथः अर्द्धपथः, नव ग्रहाः नवग्रहाः।

३७ ॥ पुंवत् कृत्वे मानिनपुंस्कं कर्मधारये (पुंवत्कर्मधारय जातिदेशीयेषु)—कर्मधारय समास होने से पूर्वपद को (यदि उस पद का पुंलिंग और स्त्रीलिंग दोनों होता हो) पुंवद्भाव होता है। यथा, सुन्दरी महिला सुन्दरमहिला, कृष्णा चतुर्दशी कृष्णचतुर्दशी, पाचिका स्त्री पाचकस्त्री, पञ्चमी कन्या पञ्चमकन्या, सुन्दरी भार्या सुन्दरभार्या, कल्याणी भार्या कल्याणभार्या। ऊङ्-प्रत्ययान्त का नहीं होता यथा, वामोरू भार्या वामोरूभार्या।

३८ क्तेन नञ् विशिष्टेनानञ्—नञ् युक्त क्त-प्रत्ययान्त पद के साथ नञ्भिन्न क्त-प्रत्ययान्त पद का समास होता है। यथा, कृतञ्च तत् अकृतञ्च कृताकृतम्, भुक्तञ्च तत् अभुक्तञ्च भुक्ताभुक्तम्, पीतञ्च तत् अपीतञ्च पीतापीतम्, क्लिष्टञ्च तत् अक्लिष्टञ्च क्लिष्टाक्लिष्टम्, पक्वञ्च तत् अपक्वञ्च पक्वापक्वम्। समान प्रकृति वाले शब्दों ही में होता है। सिद्धञ्च अभुक्तञ्च, ऐसे स्थान में समास नहीं होता।

३९ वर्णो वर्णेन—वर्णवाचक पद के साथ वर्णवाचक पद का समास होता है। यथा, नीलश्च स लोहितश्च नीललोहितः लोहितश्च स धवलश्च लोहितधवलः; पीतश्च स धवलश्च पीतधवलः।

४० पूर्वोत्तरकालयोः क्तः (पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन)—पूर्वकाल और उत्तरकाल समझे जाने से क्त-प्रत्ययान्त पद का समास होता है। यथा, पूर्वं स्नातः पश्चा-

दत्तुलितः, स्नातानुलिप्तः, यातायातः, शयितोत्थितः, दत्तापहृतम्, भुक्तोद्गीर्णम्।

४१ उपमानानि सामान्यवचनैः (उपमानानि सामान्यवचनैः)—उपमान और उपमेय के समानधर्मवाचक पद के साथ उपमानवाचक पद का उपमान समास होता है। यथा, घन इव श्यामः घनश्यामः, अर्णव इव गभीरः अर्णवगभीरः, शैल इव उन्नतः शैलोन्नतः, अनल इव उज्ज्वलः अनलोज्ज्वलः, नवनीतमिव कोमलं नवनीतकोमलम्।

जिसके साथ उपमा दी जाती है उसे **उपमान** और जिसके लिये उपमा दी जाती है उसे **उपमेय** कहते हैं। जो धर्म उपमान और उपमेय दोनों में होता है उसे **समान धर्म** कहते हैं।

४२ उपमेयानि व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे (उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे)—समान धर्म का प्रयोग न हो तो व्याघ्र, सिंह, ऋक्ष, ऋषभ, वृक, वृष, वराह, कुञ्जर, चन्द्र, कमल, किसलय, रुरु, शार्दूल, पल्लव इत्यादि उपमान वाचक पदों के साथ उपमेय का उपमित समास होता है। यथा, पुरुषो व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः, पुरुषः सिंह इव पुरुषसिंहः, राजा चन्द्र इव राजचन्द्रः, मुखं कमलम् इव मुखकमलम्, करः किसलयमिव करकिसलयम्, अधरः पल्लव इव अधरपल्लवः, वदनं सुधाकर इव वदनसुधाकरः। उपमान और उपमेय का समान धर्म हो तो नहीं होता। यथा, पुरुषो व्याघ्र इव शूरः, मुखं कमलमिव सुन्दरम्।

४३ श्रेण्यादयः कृतादिभिरभूततद्भावे (श्रेण्यादयः कृतादिभिः)—अभूततद्भाव अर्थ में कृत, मित, मत, भूत, उक्त, युक्त, समाज्ञात, समाम्नात, समाख्यात, सम्भावित, संसेवित, अवधारित, अवकल्पित, निराकृत, उपकृत, उपाकृत, दृष्ट, कलित, दलित, उदाहृत, विश्रुत और उदित शब्दों के साथ श्रेणि, पूग, मुकुन्द,

राशि, निगम, निगम, नियम, पद, इन्द्र, देव, मुण्ड, भूत, श्रमण, वदान्य, अध्यापक, अभिरूपक, ब्राह्मण, [redacted]प्रिय, विशिष्ट, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण और कृपण शब्दों का समास होता है। यथा, अश्रेणयः श्रेणयः कृताः श्रेणिकृताः, अपूगाः पूगाः कृताः पूगकृताः, अराशयः राशयः कृताः राशिकृताः, अश्रेणयः श्रेणयो भूताः श्रेणिभूताः, अनिपुणाः निपुणाः भूता निपुणभूताः, अकुशलाः कुशलाः भूताः कुशलभूताः।

श्रेण्यादिषु च्व्यर्थवचनं कर्तव्यम् —च्वि प्रत्यय होने से अपने विग्रह का कार्यसमुदाय भी होता है। यथा, श्रेणीकृताः, पूगीकृताः, राशीकृताः, श्रेणीभूताः, निपुणीभूताः, राशीभूताः, कुशलीभूताः इत्यादि।

जब पूर्वपद उत्तरपद का रूपक हो जाय तो उसे रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। यथा, देह एव पिञ्जरं देहपिञ्जरम्, मानसमेव विहंगः मानसविहंगः।

द्विगु समास

४४ संख्यापूर्वो द्विगु—जिस कर्मधारय के पूर्व [redacted] संख्यावाचक शब्द हो उसे द्विगु कहते हैं।

४५ तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेषु (तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च)—तद्धितार्थ, उत्तरपद परे और समाहार अर्थ में द्विगु समास होता है। यथा, तद्धितार्थ—पञ्चभिर्गोभिः क्रीतः पञ्चगुः, उत्तर पद परे—पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य पञ्चहस्तप्रमाणः।

४६ अकारान्तादीप् समाहारे (आकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः)—समाहार द्विगु होने से अकारान्त शब्द के उत्तर ईप् होता है। यथा, त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, चतुर्णां पदानां समाहारः चतुष्पदी, पञ्चानां नलानां समाहारः पञ्चनली, .: शतानां समाहारः सप्तशती।

४७ [redacted] भुवनादेः (पात्राद्यन्तस्य न)—भुवन इत्यादि के उत्तर नहीं होता। यथा, त्रयाणां भुवनानांसमाहारः त्रिभुवनम्

चतुर्णां युगानां समाहारः चतुर्युगम्, पञ्चानां पात्राणां स...
हारः पञ्चपात्रम्।

४८ मयूरव्यंसकादयः (मयूरव्यंसकादयश्च)—मयूरव्यंसक, छा... व्यंसक, यवनमुण्डः, उच्चावचम्, उच्चनीचम्, अकिञ्चन... अकुतोभयः, राजान्तरम्, प्राणान्तरम्, चिन्मात्रम्, अश्नी... तपिबता, खादतमोदता, अहमहमिका, अहंपूर्विका इत्यादि... निपातन से सिद्ध होते हैं। इन्हें मयूरव्यंसकादि समास कहते हैं। यथा... मयूरो व्यंसकः मयूरव्यंसकः a cunning peacock, उदक्... अवाक् उच्चावचम्, नास्ति किञ्चन यस्य अकिञ्चनः, नास्ति... कुतोऽपि भयं यस्य अकुतोभयः, अन्योऽर्थः अर्थान्तरम्, अन्यो... देशः देशान्तरम्। इसे नित्यसमास भी कहते हैं।

४९ आख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये—क्रिया का सतत अनुष्ठान समझे जाने से आख्यात पद के साथ आख्यात का समास होता है। ये पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, अश्नीत पिबत इत्येवं सततमभिधीयते यस्यां सा क्रियायां अश्नीतपिबता, पचतभृज्जता, खादतमोदता, खादताचामता।

N. B. सर्वैकदेश पुण्यसंख्याव्ययेभ्यो रात्रेरच् (अहःसर्वैकदेश-संख्यातपुण्याच्च रात्रेः)—सर्व, पुण्य, संख्यावाचक और अव्यय शब्द के परवर्ती रात्रि शब्द के उत्तर अच् होता है। यथा, सर्वा रात्रिः सर्वरात्र, पुण्या रात्रिः पुण्यरात्र, द्विरात्रम्, त्रिरात्रम्, पञ्चरात्रम्, दश-रात्रम् (संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्), अतिरात्रः।

२ अह्नोऽह्नः (अह्नोऽह्न एतेभ्यः)—सर्व, पुण्य संख्यावाचक और अव्यय के परवर्ती अहन् शब्द के उत्तर अच् होता है और अहन् का अह्न होता है। यथा, सर्वमहः सर्वाह्नः, द्वयोरह्नोः भवः द्व्यह्नः, पञ्चसु अहःसु भवः पञ्चाह्नः।

३ न सङ्ख्यादेः समाहारे (न संख्यादेः समाहारे)—समाहार होने से संख्यावाचक शब्द के परवर्ती अहन् का अह्न नहीं होता। यथा, द्वयोरह्नोः समाहारः द्व्यहः, त्र्यहः, ...।

४ न पुण्यैकाभ्याम् (उत्तमैकाभ्याम् च)—पुण्य और एक के परवर्ती अहन् का अह्न नहीं होता। यथा, पुण्याहम्, एकाहः।

५ संख्याव्ययादङ्गुलेः (तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः)—संख्यावाचक और अव्यय शब्द के परवर्ती अङ्गुलि के उत्तर अच् होता है। यथा, द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य द्व्यङ्गुलम्, त्र्यङ्गुलम्, निरङ्गुलम्।

६ राजाहःसखिभ्यष्टः (राजाहःसखिभ्यष्टच्)—राजन्, अहन् और सखि शब्द के उत्तर ट होता है और इसका अ रहता है। यथा, अङ्गानां राजा अङ्गराजः, महान् राजा महाराजः, परममहः परमाहः, उत्तमं अहः उत्तमाहः, राज्ञः सखा राजसखः, प्रियः सखा प्रियसखः।

७ गोरतद्धितार्थे (गोरतद्धितलुकि)—गो शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, राज्ञो गौः राजगवः, परमो गौः परमगवः, दश गावो धनमस्य दशगवधनः, पञ्चानां गवां समाहारः पञ्चगवम्। तद्धितार्थ में नहीं होता। यथा, पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगुः।

८ मुख्यार्थादुरसः (अग्राख्यायामुरसः)—मुख्य अर्थवाचक उरस् शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, अश्वानां उरः इव अश्वोरसम्, मुख्योऽश्व इत्यर्थः।

९ अनोऽश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः—जाति और संज्ञा अर्थ में अनस्, अश्मन्, अयस् और सरस् के उत्तर ट होता है। यथा, जाति—उपानसम्, अमृताश्मः, कालायसम्, मण्डूकसरसम्; संज्ञा—महानसम्, पिण्डाश्मः, लोहितायसम्, जलसरसम्।

१० ग्रामकौटाभ्यां तक्ष्णः (ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः)—ग्राम और कौट शब्द के परवर्ती तक्षन् के उत्तर ट होता है। यथा, ग्रामतक्षः, साधारण इत्यर्थः; कौटतक्षः, स्वतन्त्र इत्यर्थः। अन्यत्र राजतक्षा।

११ अतेः शुनः—अति शब्द के परवर्त्ती श्वन् के उत्तर ट होता है यथा, अतिक्रान्तः श्वानम् अतिश्वो वराहः, अतिश्वी सेवा।

१२ उपमानादप्राणिषु—उपमानवाचक श्वन् के उत्तर ट होता है यथा, आकर्षः श्वेव आकर्षश्वः। प्राणी अर्थ में नहीं होता; यथा, वानरः श्वे वानरश्वा।

१३ उत्तर-मृग-पूर्व्वोपमानेभ्यः सक्थ्नः (उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः)—उत्तर, मृग, पूर्व्व और उपमानवाचक के परवर्त्ती सक्थि शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, उत्तरसक्थम्, मृगसक्थम्, पूर्व्वसक्थम्। उपमान—फलकमिव सक्थि फलकसक्थम्।

१४ नावो द्विगोरतद्धितार्थे (नावो द्विगोः)—द्विगुसमासस्थित नौ के उत्तर ट होता है। यथा, द्वयोर्नावोः समाहारः द्विनावम्, पञ्च नावो धनमस्य पञ्चनावधनः। तद्धितार्थ में नहीं होता; यथा, पञ्चभिः नौभिः क्रीतः पञ्चनौः। द्विगुभिन्न स्थान में—राज्ञो नौः राजनौः, नदीना नौः नदीननौः।

अर्द्धाच्च—अर्द्ध शब्द के परवर्त्ती नौ के उत्तर ट होता है। यथा, अर्द्धं नावः अर्द्धनावम्।

१५ खार्य्याः विभाषा (खार्य्याः प्राचाम्)—द्विगु समास होने अथवा अर्द्ध शब्द के पहले रहने से खारी शब्द के उत्तर विकल्प से ट होता है। यथा, द्वे खार्य्यौ प्रमाणमस्य द्विखारम्, द्विखारिः; अर्द्धं खार्य्याः अर्द्धखारम्, अर्द्धखारि।

१६ द्वित्रिभ्यामञ्जलेः—द्विगु समास होने पर द्वि और त्रि शब्द के परवर्त्ती अञ्जलि शब्द के उत्तर विकल्प से ट होता है। यथा, द्वे अञ्जली प्रमाणमस्य द्व्यञ्जलम्, द्व्यञ्जलिः; त्र्यञ्जलम्, त्र्यञ्जलि। अन्यत्र द्वयोरञ्जलिः द्व्यञ्जलिः।

१७ अनपदाद् ब्रह्मनः (ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम्)—जनपद-

वाचक शब्द के परवर्ती अह्न् के उत्तर ट होता है । यथा, सुराज्ञस्य अह्नः सुराह्नः , अर्वाह्नः , कतिपयाह्नः । अन्यत्र देवस्य अहः ।

विभाषाकुमहद्भ्याम् (कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम्)—कु और महत् शब्द के परवर्ती होने से विकल्प में होता है । यथा: कुत्सितो ब्रह्मा कुब्रह्मः , कुब्रह्मा; महाब्रह्मः , महाब्रह्मा ।

१८ अक्ष्णोऽचक्षुषि (अक्ष्णोऽदर्शनात्)—अक्षि शब्द के उत्तर ट होता है । यथा; गवामक्षीव गवाक्षः । नेत्र समझे जाने से नहीं होता; यथा; बालकस्य अक्षि बालकाक्षि ।

१९ वृद्ध-महज्जातेभ्य उक्ष्णः (अचतुर विचतुर —)—वृद्ध, महत् और जात शब्द के परवर्ती उक्षन् के उत्तर ट होता है । यथा; वृद्धः उक्षः वृद्धोक्षः, महान् उक्षः महोक्षः , जातः उक्षः जातोक्षः ।

२० निःश्रेयस-पुरुषायुषे (विभाषा सेनासुराच्छायाशाला-निशानाम्)—निःश्रेयस और पुरुषायुष निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा; निश्चितं श्रेयः निःश्रेयसम् , पुरुषस्य आयुः पुरुषायुषम् ।

२१ विभाषा छायादि नपुंसकम् (विभाषासेना ...)— छाया, शाला, सेना, सुरा, निशा इत्यादि विकल्प से नपुंसक होते हैं । यथा; तरुच्छायम् , तरुच्छाया; गोशालम् , गोशाला ।

२२ नित्यं छाया बाहुल्ये (छाया बाहुल्ये)—पूर्व पदार्थ की बाहुल्यता में छाया शब्द नित्य नपुंसक होता है । यथा; इक्षूणां छाया इक्षुच्छायम् , शराणां छाया शरच्छायम् ।

२३ सभाप्रभुपर्य्याय पूर्व्वा (सभाराजाऽमनुष्यपूर्व्वा)—प्रभु का पर्य्याय (अर्थसूचक दूसरा) शब्द पहले रहने से सभा शब्द नित्य नपुंसक होता है । यथा; प्रभुसभम् , ईश्वरसभम् राजसभा इत्यादि में नहीं होता ।

रक्षापिशाचादि पूर्व्वा च—रक्षस् , पिशाच इत्यादि पहले रहने से

सभा शब्द नित्य नपुंसक होता है। यथा; रक्षःसभम्, पिशाचसभ
अन्यत्र मनुष्यसभा, देवसभा।

अशाला च—शालाभिन्न अर्थवाचक सभा शब्द नित्य नपुंसक हो
है। यथा, स्त्रीसभम्, स्त्रीणां समूह इत्यर्थः; शिशुसभम्, शिशूनां सम
इत्यर्थः।

२४ पुंवत् कुक्कुटीप्रभृतीनामण्डादौ (कुक्कुट्यादीनामण्डा
दिषु)—अण्ड इत्यादि शब्द परे रहने से कुक्कुटी इत्यादि का पुंवद्भा
होता है। यथा, कुक्कुट्या अण्डं कुक्कुटाण्डम्, हंस्या अण्डं हंसाण्डम्,
कुक्कुट्याः शावः कुक्कुटशावः, हरिण्याः शावः हरिणशावः, मृग्याः पद
मृगपदम्, मृग्याः क्षीरं मृगक्षीरम्।

बहुव्रीहि समास।

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः (शेषो बहुव्रीहिः)—जिसमें अन्य
पदार्थ प्रधान हो अर्थात् जिन पदों का समास हो उनका अर्थ
न समझा जाकर अन्य पदार्थ का अर्थबोध हो तो उसे बहु-
व्रीहि समास कहते हैं। यथा, आरूढो वानरोऽयम् आरूढवानरो
वृक्षः, कृतं कर्म्म येन कृतकर्म्मा पुरुषः, दत्तं धनं यस्मै दत्तधनो
दरिद्रः, उद्धृतं उदकं यस्मात् उद्धृतोदकः कूपः, दीर्घौ बाहू
यस्य दीर्घबाहुः पुरुषः, प्रफुल्लानि कमलानि यस्मिन् प्रफुल्ल-
कमलं सरः।

५१ संख्याभिरव्ययासन्नादूराधिक संख्या (संख्ययाव्ययासन्नादूराधिक-
संख्याः संख्येये)—संख्यावाचक शब्द के साथ अव्यय, आसन्न,
दूर, अधिक और संख्यावाचक का बहुव्रीहि समास
होता है।

संख्याया अबहोर्डः (बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्)— संख्या-
वाचक शब्द के उत्तर ड होता है। यथा, दशानां समीपे ये ते

उपदशाः, त्रिंशतेरासन्ना आसन्नत्रिंशाः, त्रिंशतोऽदूरे अदूर-त्रिंशाः, चत्वारिंशतोऽधिका अधिकचत्वारिंशाः, द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः, पञ्च वा षड् वा पञ्चषाः। बहु शब्द के उत्तर नहीं होता। यथा, बहूनां समीपे उपबहवः।

५२ दिङ् नामान्यन्तराले—अन्तराल अर्थ में दिग्वाचक पूर्व इत्यादि शब्द का बहुव्रीहि समास होता है। यथा, दक्षिणस्याः पूर्व्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दक्षिणपूर्व्वा, उत्तरस्याः पश्चिमायाश्च दिशोरन्तरालं उत्तरपश्चिमा।

५३ सहस्तृतीयया (तेन सहेति तुल्ययोगे)—तृतीयान्त पद के साथ सह शब्द का बहुव्रीहि समास होता है।

सहः सो विभाषा (वोपसर्ज्जनस्य)—बहुव्रीहि समास में सह का विकल्प से स होता है। यथा, पुत्रेण सह सपुत्रः, सहपुत्रः, अनुजेन सह सानुजः, सहानुजः, यान्धवेन सह सबान्धवः, सहबान्धवः; भृत्येन सह सभृत्यः, सहभृत्यः।

५४ रणव्यतिहारे तृतीयासप्तम्योः सरूपयोः (तत्रतेनेदमिति सरूपे)—परस्पर युद्ध अर्थ में समान रूप तृतीयान्त और सप्तम्यन्त पद का बहुव्रीहि समास होता है।

दीर्घोऽन्त्यः पूर्व्वस्य (अन्येषामपि दृश्यते)—रणव्यतिहार में समास होने से पूर्व्व पद के अन्त्य स्वर का दीर्घ होता है।

इच् परात् (इच् कर्म्मव्यतिहारे)—रणव्यतिहार में समास होने से पर पद के उत्तर इच् होता है और इसका इ रहता है। इच् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है। इच् परे रहने से अन्त्य उवर्ण का गुण होता है। यथा, केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं केशाकेशि, दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तं दण्डादण्डि, मुष्टामुष्टि, बाहूबाहवि (वोपदेव के मत से पूर्व्व पद के अन्त्यस्वर के स्थान में विकल्प से आ होता है)। यथा,

मुष्टामुष्टि, मुष्टीमुष्टिः; पाहापाहवि, पाहूपाहवि; स्
रहने से नहीं होता; यथा, अस्यसि ।

५५ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु (स्त्रियाः पुं
स्त्रियाः पुंवत् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु) बहुव्रीहि सम
लिङ्ग शब्द परे हो तो उसका पुंवद्भाव होता है। य
बुद्धिरस्य स्थिरबुद्धिः, महती मतिरस्य महामतिः, चि
स्य चित्रमतिः, दृढा भक्तिरस्य दृढभक्तिः, प्रिय
प्रियभार्य्यः, शीता गौरस्य शीतगुः ।

विशेष ऊङ्प्रत्ययान्तस्य (स्त्रियाः ......)—ब
में ऊङ्-प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव नहीं होता।
भार्य्यास्य वामोरूभार्य्यः ।

न कोपधस्य (न कोपधायाः)—जिस स्त्रीलिङ्ग की उ
या अक प्रत्यय का क रहे उसका पुंवद्भाव नहीं होता है। य
रसिका भार्य्यास्य रसिकाभार्य्यः, अक प्रत्यय—पाचि
पाचिकाभार्य्यः । अन्यत्र होता है; यथा, एका भार्य्यास्य एकभार्य्

न संज्ञा-पूरण्योः (संज्ञापूरण्योश्च)—संज्ञावाचक
वाचक का पुंवद्भाव नहीं होता। यथा, संज्ञावाचक—
दत्ताभार्य्यः, गंगा भार्य्यास्य गंगाभार्य्यः; पूरणवाचक—द्वि
द्वितीयाभार्य्यः, पञ्चमी भार्य्यास्य पञ्चमीभार्य्यः ।

न जाति स्वाङ्गयोः (स्वाङ्गाच्चेतः। जातेश्च)
और स्वाङ्गवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव नहीं होता।
वाचक—ब्राह्मणी भार्य्यास्य ब्राह्मणीभार्य्यः, क्षत्रिया भार्
भार्य्यः, स्वाङ्गवाचक—सुकेशी भार्य्यास्य सुकेशीभार्

न प्रियादिपूरण्योः (स्त्रिया......)—बहुव्रीहि समास में प्रिया, मनोज्ञा, कल्याणी, सुभगा, दुर्भगा, सचिवा, स्वा, कान्ता, क्षान्ता, समा, चपला, वामना (भक्ति, तनया और दुहिता भी प्रियादि गण में पठित होता है, परन्तु सर्वत्र ही विशीत प्रयोग देखा जाता है, अतएव इस गण में इनको नहीं रखा) इत्यादि और पूरणवाचक शब्द परे रहने से पूर्ववर्ती स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव नहीं होता। यथा, शोभना प्रियास्य शोभनाप्रियः, सुलोचना कान्तास्य सुलोचनाकान्तः ।

२ अप् पूरणी-प्रमाणीभ्याम् (अप् पूरणी-प्रमाण्योः)—पूरणवाचक और प्रमाणी शब्द के उत्तर अप् होता है और इसका अ रहता है। यथा, कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणां ताः कल्याणी पञ्चमा रात्रयः। मुख्य पूरणी के उत्तर अप् होता है, गौण के उत्तर नहीं होता। कल्याणी पञ्चमी रात्रिर्यस्मिन् पक्षे स कल्याण-पञ्चमीकः पक्षः। यहां पूरण वाचक शब्द गौण है, इसलिये इसके उत्तर अप् नहीं हुआ। असमस्त दशा में जिस अर्थ का वाचक है, समस्त दशा में भी उसी अर्थ का वाचक हो तो मुख्य, पर असमस्त दशा में जिस अर्थ का वाचक है समस्त दशा में उसके भिन्न अर्थ का वाचक होने से गौण कहते हैं। कल्याणपञ्चमा रात्रयः, यहां पूरणवाचक असमस्त और समस्त दोनों दशा में रात्रिवाचक है, इसलिये मुख्य है; पर कल्याण-पञ्चमीकः पक्षः, इस स्थान में पूरणवाचक शब्द असमस्त दशा में रात्रिवाचक किन्तु समस्त दशा में तद्वाचक न होकर तद्भिन्नार्थ पक्षवाचक होता है, अतएव यह गौण है।

नञ्-सु-वित्र्युपेभ्यश्चतुरः (अचतुर विचतुर सुचतुर ...)—नञ्, सु, वि, त्रि और उप के परवर्त्ती चतुर् के उत्तर अप् होता है। यथा, अविद्यमानानि चत्वार्य्यस्य अचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः, त्रिचतुरः, उपचतुरः ।

नेतुर्नक्षत्रात् (नेतुर्नक्षत्रे अप् वक्तव्यः)—नक्षत्रवाचक शब्द के परवर्त्ती नेतृ के उत्तर अप् होता है। यथा, मृगनेत्राः, पुष्यनेत्राः रात्रयः।

नाभेः संज्ञायाम्—संज्ञा अर्थ में नाभि के उत्तर अप् होता है। यथा; ऊर्णनाभः, पद्मनाभः।

अन्तर्बहिर्भ्यां लोम्नः—अन्तर् और बहिस् शब्द के परवर्त्ती लोमन् शब्द के उत्तर अप् होता है। यथा; अन्तर्लोमानि यस्य अन्तर्लोमः, बहिर्लोमानि यस्य बहिर्लोमः।

नञ् दुः-सुभ्यः सक्थ्नो वा (नञ् दुःसुभ्यो हलि सक्थ्योरन्यतरस्याम्)—नञ्, दुर् और सु के परवर्त्ती सक्थि के उत्तर विकल्प से अप् होता है। यथा, असक्थः असक्थिः, दुःसक्थः, दुःसक्थिः, सुसक्थः, सुसक्थिः।

१ सक्थ्यक्षिभ्यां च स्वाङ्गे (बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्)—स्वाङ्ग अर्थ में सक्थि और अक्षि शब्द के उत्तर ष होता है और इसका अ रहता है। यथा; दीर्घे सक्थिनी यस्य दीर्घसक्थ (one having long thighs) पुरुषः, स्थूले सक्थिनी यस्याः स्थूलसक्थी नारी, दीर्घे अक्षिणी अस्मिन् दीर्घाक्षं पद्मम्, विशाले अक्षिणी यस्याः विशालाक्षी देवी। स्वाङ्ग न समझे जाने से नहीं होता, यथा, दीर्घसक्थि शकटम्, स्थूलाक्षिः इक्षुदण्डः।

अङ्गुलेर्दारुणि—दारु समझे जाने से अंगुली शब्द के उत्तर ष होता है। यथा; पञ्चांगुलं दारु। दारुभिन्न स्थान में पञ्चांगुलिर्हस्तः।

द्वित्रिभ्यां मूर्द्ध्नः (द्वित्रिभ्यां षः मूर्द्ध्नः)—द्वि और त्रि शब्द के परवर्त्ती मूर्द्धन् के उत्तर ष होता है। यथा, द्वौ मूर्द्धानौ

द्विमूर्द्धः त्रयो मूर्द्धानोऽस्य त्रिमूर्द्धः । अन्यत्र नहीं होता । यथा; पञ्च मूर्द्धानोऽस्य पञ्चमूर्द्धा ।

४ असृ नञ्‌-दुः-सुभ्यः प्रजायाः (नित्यमसिच् प्रजामेधयोः)—नञ्‌, दुर्‌ और सु के परवर्त्ती प्रजा के उत्तर असृ होता है । यथा; अप्रजाः, दुष्प्रजाः, सुप्रजाः ।

मन्दाल्पाभ्याञ्च मेधायाः (नित्यमसिच् प्रजामेधयोः)—नञ्‌, दुर्‌, सु, मन्द और अल्प के परवर्त्ती मेधा शब्द के उत्तर असृ होता है । यथा; अमेधाः, दुर्मेधाः, सुमेधाः, मन्दमेधाः, अल्पमेधाः ।

धर्म्मादन् केवलात् (धर्म्मादनिच् केवलात्)—धर्म्म के उत्तर अन् होता है । यथा; सुधर्म्मा, शुभधर्म्मा, अर्ज्जितधर्म्मा । धर्म्म शब्द के साथ दूसरा शब्द मिला हो तो नहीं होता; यथा; परमस्वधर्म्मः ।

५ दक्षिणादीर्म्मा लुब्धयोगे (दक्षिणेर्म्मा लुब्धयोगे)—व्याध सम्बन्ध समझे जाने से दक्षिण के परवर्त्ती ईर्म्म के उत्तर अन् होता है । यथा; दक्षिणे ईर्म्मं व्रणं यस्य, दक्षिणेर्म्मा मृगः, व्याधेन दक्षिणे पार्श्वे कृतव्रण इत्यर्थः ।

६ प्रसम्भ्यां जानुनोः ज्ञुः—प्र और सम् अव्यय के परवर्त्ती जानु का ज्ञु होता है । यथा; प्रज्ञुः, संज्ञुः ।

ऊर्द्ध्वाद्विभाषा—ऊर्द्ध्व शब्द के परवर्त्ती जानु का विकल्प से ज्ञु होता है । यथा; ऊर्द्ध्वज्ञुः, ऊर्द्ध्वजानुः ।

७ नसोनासिकायाः संज्ञायाम् (अञ्‌ नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात्)—संज्ञा अर्थ में नासिका का नस होता है । यथा; द्रुरिव नासिका अस्य द्रुणसः, वार्द्धीव नासिका अस्य वार्द्धीणसः गौरिव नासिका अस्य गोनसः । स्थूल शब्द के उत्तर नहीं होता; यथा; स्थूला नासिका अस्य स्थूलनासिकः । संज्ञा नहीं

समझे जाने से नहीं होता; यथा, तुङ्गा नासिकास्य तुङ्गनासिकः पुरुषः।

उपसर्गाच्च—उपसर्ग के परवर्त्ती नासिका का नस् होता है। यथा; प्रणसः, उन्नसः, अपनसः।

खरखुराभ्यां नस् च (खुरखराभ्यां वा नस्)—खर और खुर शब्द के परवर्त्ती नासिका का नस और नस् होता है। यथा, खरणसः, खरणाः; खुरणसः, खुरणाः।

विग्राद्यः (वेर्ग्रो वक्तव्यः। ख्यश्च)—वि उपसर्ग के परवर्त्ती नासिका का विग्र, विख्य और विग् निपातन से सिद्ध होते हैं।

८ आनिर्जायायाः (जायाया निङ्) -जाया का जानि होता है। यथा, युवतिर्जायास्य युवजानिः, प्रिया जायास्य प्रियजानिः, सुन्दरी जायास्य सुन्दरजानिः।

९ इर्गन्धात्पूत्युत्सुसुरभिभ्यः (गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः)— उद्, सु, पूति और सुरभि के परवर्त्ती गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है। यथा, उद्गन्धिः, सुगन्धिः, पूतिगन्धिः, सुरभिगन्धिः। दूसरे द्रव्य के गन्ध के सम्बन्ध में नहीं होता। यथा, सुगन्धः पवनः।

अल्पयोगे (अल्पाख्यायाम्)—अल्पसंयोग समझे जाने से गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है। यथा, घृतगन्धि, दधिगन्धि, सूपगन्धि भोजनम्।

उपमानाच्च—उपमानवाचक पद के परवर्त्ती गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है। यथा, पद्मस्येव गन्धोऽस्य पद्मगन्धिः, करीषगन्धिः (बोपदेव के मत से विकल्प से होता है)।

१० पादस्य पादुपमानादहस्त्यादेः (पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः)—उपमानवाचक पद के परवर्त्ती पाद का पात् होता है। यथा, व्याघ्रस्येव पादावस्य व्याघ्रपात्। हस्तिन्, कुद्दाल, अश्व, मत्र,

कपोत, जाल, गण्ड, गण्डोल और कुसूल इत्यादि के परवर्ती होने से नहीं होता, यथा, हस्तिन इव पादावस्य हस्तिपादः ।

संख्यासुपूर्वस्य च (संख्या सुपूर्वस्य)— संख्यावाचक और सु पहले रहने से पाद का पात् होता है। यथा, द्विपात्, त्रिपात्, चतुष्पात् ।

स्त्रियां कुम्भादेः पद् (कुम्भपदीषु च)— स्त्रीलिङ्ग में कुम्भ, एक, द्वि, त्रि, जाल, शूल, आल, मुनि, गुण, सूत्र, गोधा, दास, विष्णु, आर्द्र, कलश, शुचि, स्तूणा इत्यादि के परवर्ती पाद का पद् होता है। यथा, कुम्भपदी, एकपदी, द्विपदी, त्रिपदी, विष्णुपदी, आर्द्रपदी ।

११ वयसि दन्तस्य दतृ— वयस् समझे जाने से संख्यावाचक और सु पूर्वक दन्त का दतृ होता है और इसका दत् रहता है। यथा; द्विदन्, चतुर्दन्, सुदन्, सुदती। वयस् नहीं समझे जाने से द्विदन्तः करी, सुदन्तः नटः ।

अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च— अग्र, अन्त, शुद्ध, शुभ्र, वृष और वराह के परवर्ती दन्त का विकल्प से दत् होता है। यथा; अग्रदन्, अग्रदन्तः ।

सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः— मित्र और अमित्र अर्थ में सुहृद् और दुर्हृद् निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; शोभनं हृदयमस्य सुहृद् मित्रम्, दुष्टं हृदयमस्य दुर्हृद् अमित्रः ।

१२ उरः प्रभृतिभ्यः कप्— उरस्, उपानह्, पुमस्, पयस्, दधि, मधु, शालि, सर्पिस्, अनडुह्, श्री, निर् और नञ् पूर्वक अर्थ के उत्तर कप् होता है और इसका क रहता है। यथा; व्यूढमुरोऽस्य व्यूढोरस्कः, उपानद्भ्यां सह सोपानत्कः, भावितः पुमाननेन भावितपुंस्कः, न विद्यते अर्थोऽस्मिन् निरर्थकम्, अनर्थकम् (अर्थहीन)।

इनन्तात् स्त्रियाम् (इनः स्त्रियाम्)— स्त्रीलिङ्ग में इन् भागान्त

शब्द के उत्तर कप् होता है। यथा; बहवोऽस्यां धनिनः बहुधनिका नगरी, बहवोऽस्यां वाग्मिनः बहुवाग्मिका सभा।

नद्यृतश्च (नद्यृतश्च)—ऋकारान्त और नदीसंज्ञक शब्द के उत्तर कप् होता है। यथा; ऋदन्त—एकपितृकः, समातृकः, मृतभर्तृका; नदीसंज्ञक—मृतपत्नीकः, बहुकुमारीकः।

शेषाद्विभाषा—पूर्वोक्त भिन्न के उत्तर विकल्प से कप् होता है। यथा; महायशस्कः, महायशाः, समानवयस्कः, समानवयाः, मुण्डितशिरस्कः, मुण्डितशिराः, अर्जितधनकः, अर्जितधनः।

ईयसुनः (ईयसश्च)—ईयसुन् प्रत्ययान्त शब्द के उत्तर कप् नहीं होता। यथा; बहुश्रेयान्, बहुश्रेयसी।

न प्रशंसायां भ्रातुः (वन्दिते भ्रातुः)—प्रशंसा अर्थ में भ्रातृ के उत्तर कप् नहीं होता। यथा; सुभ्राता, [illegible], साधुभ्राता। अन्यत्र मूर्खभ्रातृकः, कुभ्रातृकः।

न नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे (नाडी तन्त्र्योः स्वाङ्गे)—स्वाङ्ग अर्थ में नाडी और तन्त्री के उत्तर कप् नहीं होता। यथा; बहुनाडिः कायः, बहुतन्त्री ग्रीवा। स्वाङ्ग नहीं रहने से बहुनाडीकः स्तम्भः, बहुतन्त्रीका वीणा।

१३ सुप्रातादयः (सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः)—बहुव्रीहि समास में इनका [illegible] निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, शोभनं प्रातरस्य सुप्रातः, शोभनं दिवास्य सुदिवः, चत्वारोऽश्रयः अस्य चतुरश्रः।

१४ धनुषश्च—बहुव्रीहि समास में उत्तरपदस्थित धनुष् के उत्तर अनङ् होता। यथा, शार्ङ्गं धनुः यस्य शार्ङ्गधन्वा।

वा संज्ञायाम्—संज्ञा अर्थ में विकल्प से होता है। यथा, शतधन्वा, शतधनुः, पुष्पधन्वा, पुष्पधनुः।

द्वन्द्व-समास

उभयप्रधानो द्वन्द्वः (चार्थे द्वन्द्वः)—जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों प्रधान हों उसे द्वन्द्व समास कहते हैं।

५९ परलिङ्गं द्वन्द्वे (परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः)—द्वन्द्व समास में समस्त भाग परपद के लिङ्ग को प्राप्त होता है।

६० इतरेतरयोगे—परस्पर योग समझे जाने से द्वन्द्वसमास होता है। यथा; हरिश्च हरश्च हरिहरौ, रामश्च लक्ष्मणश्च रामलक्ष्मणौ, भीमश्च अर्जुनश्च भीमार्जुनौ, धवश्च खदिरश्च पलाशश्च धवखदिरपलाशाः; कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च कन्दमूलफलानि, शब्दश्च स्पर्शश्च रूपञ्च रसश्च गन्धश्च शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः। हरिहरौ, यहाँ हरि और हर का परस्पर योग समझा जाता है; धवखदिरपलाशाः, यहाँ धव, खदिर और पलाश का परस्पर योग समझा जाता है।

(क) ऋदन्तादृदन्ते डा विद्यायोनिसम्बन्धे (आनङ् ऋतो द्वन्द्वे)—विद्या और गोत्र सम्बन्ध हो तथा ऋकारान्त शब्द के परे ऋकारान्त शब्द हो तो पूर्ववर्ती शब्द के उत्तर डा होता है, और इसका आ रहता है। यथा; विद्यासम्बन्ध—होता च पोता च होतापोतारौ, नेष्टा च उद्गाता च नेष्टोद्गातारौ; गोत्रसम्बन्ध—माता च पिता च मातापितरौ, याता च ननान्दा च याताननान्दारौ।

पुत्रे च (पुत्रेऽन्यतरस्याम्)—पुत्र शब्द परे रहने से भी ऋ का डा होता है। यथा; पिता च पुत्रश्च पितापुत्रौ, माता च पुत्रश्च मातापुत्रौ।

देवताविनां पूर्वात् (देवता द्वन्द्वे च)—देवतावाची पदों का समास हो तो पूर्वपद के परे डा होता है। यथा, इन्द्रश्च वरु-

यश्च इन्द्रावरुणौ, मित्रश्च वरुणश्च मित्रावरुणौ, सूर्यश्च चन्द्रमाश्च सूर्याचन्द्रमसौ।

न ब्रह्मप्रजापत्यादेः—ब्रह्मप्रजापति इत्यादि के उत्तर आ नहीं होता। यथा, ब्रह्मा च प्रजापतिश्च ब्रह्मप्रजापती, अग्निश्च वायुश्च अग्निवायू, वायुश्च अग्निश्च वाय्वग्नी।

(ख) ईदग्नेः सोमवरुणयोः—सोम और वरुण शब्द परे रहने से अग्नि शब्द के उत्तर ईत् होता है और इसका ई रहता है। यथा, अग्निश्च सोमश्च अग्नीषोमौ, अग्निश्च वरुणश्च अग्नीवरुणौ।

(ग) दिवो द्यावा—पूर्ववर्ती दिव् को द्यावा होता है। यथा, द्यौश्च भूमिश्च द्यावाभूमी, द्यौश्च क्षमा च द्यावाक्षमे।

दिवस् च पृथिव्याम् (दिवश्च पृथिव्याम्)—पृथिवी शब्द परे हो तो दिव् का द्यावा और दिवस् होता है। यथा, द्यौश्च पृथिवी च द्यावापृथिव्यौ, दिवस्पृथिव्यौ।

(घ) मातरपितरौ (मातरपितरावुदीचाम्)—निपातन से सिद्ध होता है। यथा, माता च पिता च मातरपितरौ।

(ङ) दम्पती जम्पती वा (जायाशब्दस्य जम्भावोदम्भावश्च वा निपात्यते)—जाया और पति शब्दों का समास होने से विकल्प से दम्पती और जम्पती होता है। यथा, जाया च पतिश्च जायापती, दम्पती, जम्पती।

११ समाहारे च—दो या अधिक पदार्थों का समाहार समझा जाय तो द्वन्द्व समास होता है।

(क) प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् (द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्) द्वन्द्व समास में प्राण्यङ्ग, तूर्याङ्ग और सेनाङ्गवाचक शब्दों का समाहार होता है। यथा, प्राण्यङ्ग—पाणी च पादौ च तयोः समाहारः पाणिपादम् ऐसे ही करौ च चरणौ च करचरणम्, दन्ताश्च

ओष्ठौ च दन्तौष्ठम्, कर्णौ च नासिका च कर्णनासिकम्, भ्रुवौ च ललाटश्च भ्रूललाटम्, पृष्ठञ्च उदरञ्च पृष्ठोदरम्; तूर्यांग— पणवश्च मृदङ्गश्च पणवमृदङ्गम्, शङ्खश्च दुन्दुभिश्च शङ्खदुन्दुभि, भेरी च पटहश्च भेरीपटहम्, ऋषभश्च गान्धारश्च ऋषभगान्धारम्; धैवतश्च पञ्चमश्च धैवतपञ्चमम्, षड्जश्च मध्यमश्च षड्जमध्यमम्; सेनाङ्ग—रथिकाश्च अश्वारोहाश्च रथिकाश्वारोहम्, शाक्तिकाश्च याष्टीकाश्च शाक्तीकयाष्टीकम्, पाशाश्च करवालाश्च परशुकरवालम्, धनूंषि च शराश्च धनुःशरम्, शराश्च तूणीराश्च शरतूणीरम्।

सेनाङ्गवाची पदों के केवल बहुवचन ही में समाहार होता है। यथा, शरश्च तूणीरश्च शरतूणीरौ, शक्तिश्च परशुश्च करवालश्च शक्तिपरशुकरवालाः।

(ख) नदीवाचिनां लिङ्गभेदे (विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः)— लिङ्ग में भेद हो तो नदीवाचक पदों का समाहार होता है। यथा, गङ्गा च शोणश्च तयोः समाहारः गङ्गाशोणम्, उद्ध्यश्च इरावती च उद्ध्येरावति, ब्रह्मपुत्रश्च चन्द्रभागा च ब्रह्मपुत्रचन्द्रभागम्। लिङ्ग भेद न हो तो नहीं होता; यथा, गङ्गा च यमुना च गङ्गायमुने, सरस्वती च दृषद्वती च सरस्वतीदृषद्वत्यौ।

(ग) देशवाचिनाञ्च (विशिष्ट······)—लिङ्गभेद हो तो देशवाची पदों का समाहार होता है। यथा, कुरवश्च कुरुक्षेत्रञ्च कुरुकुरुक्षेत्रम्, कुरवश्च जाङ्गलञ्च कुरुजाङ्गलम्, मथुरा च पाटलिपुत्रञ्च मथुरापाटलिपुत्रम्। लिङ्ग-भेद न हो तो नहीं होता, यथा, मद्राश्च केकयाश्च मद्रकेकयाः, विदेहाश्च कलिङ्गाश्च विदेहकलिङ्गाः। ग्रामवाचक पदों का समाहार नहीं होता। यथा जाम्बवश्च शालूकिनी च जाम्बवशालूकिन्यौ।

(घ) वा वृक्षमृगतृणधान्यानां बहुत्वे (द्रव्यस्य······। वि······

गतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम्)–पशुवाच
निवाचक और क्षुद्रजन्तुवाचक बहुवचनान्त पदों
ल्प से समाहार होता है। यथा; पशुवाचक– गावश्च म
तेषां समाहारः गोमहिषम्, गोमहिषाः; वृकाश्च कुरङ्गा
रङ्गम्, वृकुरङ्गाः; गोमायवश्च गर्दभाश्च गोमायुगर्दभ
युगर्दभाः; शकुनिवाचक—हंसाश्च सारसाश्च हंससारसम्
रसाः; बकाश्च चक्रवाकाश्च बकचक्रवाकम्, बकचक्र
कोकिलाश्च मयूराश्च कोकिलमयूरम्, कोकिलमयूराः;
वाचक— दंशाश्च मशकाश्च दंशमशकम्, दंशमशकाः;
मक्षिकाश्च यूकमक्षिकम्, यूकमक्षिकाः; मत्कुणाश्च
काश्च मत्कुणपिपीलिकम्, मत्कुणपिपीलिकाः।

) फलतृणतरुवाचकानाञ्च (विभाषा वृक्षमृग ...)—फल, तृण
व्यायी बहुवचनान्त शब्दों का विकल्प से समाहार
यथा; फलवाचक—बदराणि च आमलकानि च बदरा-
बदरामलकानि; खर्जूराणि च नारिकेलानि च खर्जूर-
म्, खर्जूरनारिकेलानि; व्रीहयश्च यवाश्च व्रीहियवम्,
; मुद्गाश्च माषाश्च मुद्गमाषम्, मुद्गमाषाः; तृणवाचक—
काशाश्च कुशकाशम्, कुशकाशाः; तरुवाचक—
न्यग्रोधाश्च अश्वत्थन्यग्रोधम्, अश्वत्थन्यग्रोधाः।

नित्यं नित्यविरोधिनाम् (येषाञ्च विरोधः शाश्वतिकः)— जिन
परस्पर नित्य विरोध हो उनके वाचक बहुवचन
रय समाहार होता है। यथा; अहयश्च नकुलाश्च
ः अहिनकुलम्, काकाश्च उलूकाश्च काकोलूकम्,
मूषिकाश्च मार्जारमूषिकम्।

ाश्वप्रभृतीनाञ्च (गवाश्वप्रभृतीनि च)—गवाश्च इत्यादि
माहार होता है। यथा; गावश्च अश्वाश्च तेषां

समाहारः गवाश्वम्, अजाश्च अविकाश्च अजाविकम्, पुत्राश्च पौत्राश्च पुत्रपौत्रम्, गवाविकम्, गवैडकम्, अजैडकम्, कुब्जवामनम्, कुब्जकिरातम्, श्वपचचण्डालम्, स्त्रीकुमारम्, दासीमाणवकम्, शाटीपटीरम्, शाटीप्रच्छदम्, शाटीपट्टिकम्, उष्ट्रखरम्, उष्ट्रशशम्, मूत्रशकृत्, मूत्रपुरीषम्, यकृन्मेदः, मांसशोणितम्, दर्भशरम्, दर्भपूतीकम्, अर्जुनशिरीषम्, अर्जुनपुरुषम्, तृणोपलम्, दासीदासम्, कुटीकुटम्, भागवती भागवतम्।

(क) विभाषा पूर्वापरादीनाम् (विभाषा वृक्षमृग ...)—पूर्व और अपर इत्यादि का विकल्प से समाहार होता है। यथा; पूर्वंच अपरंच पूर्वापरम्, पूर्वापरे; अधरंच उत्तरंच अधरोत्तरम्, अधरोत्तरे; दधि च घृतंच दधिघृतम्, दधिघृते।

(ट) विरुद्धानामविशेषणानाञ्च (विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि)—परस्पर विरुद्ध पदार्थों में विकल्प से समाहार होता है। यथा; शीतंच उष्णं च शीतोष्णम्, शीतोष्णे, सुखंच दुःखंच सुखदुःखम्, सुखदुःखे, आलोकश्च अन्धकारश्च आलोकान्धकारम्, आलोकान्धकारौ। विशेषण होने से नहीं होता। यथा; शीतोष्णे पयसी।

(ठ) शूद्राणामनिरवसितानां नित्यम् (शूद्राणामनिरवसितानाम्)—शूद्रवाचक पदों का नित्य समाहार होता है। यथा; गोपाश्च नापिताश्च तेषां समाहारः गोपनापितम्, कर्मकाराश्च कुम्भकाराश्च कर्मकारकुम्भकारम्, ताम्बूलिकाश्च तन्तुवायाश्च ताम्बूलिकतन्तुवायम्। निरवसित (यै भुक्ते पात्रं संस्कारेणापि शुध्यति ते निरवसिताः) शूद्रों का नहीं होता; यथा; चण्डालाश्च मृतपाश्च चण्डालमृतपाः।

(ड) न दधिपयः प्रभृतीनाम् (न दधिपय आदीनि)—दधिपयस् इत्यादि में समाहार नहीं होता। यथा; दधिपयसी, सर्पिर्मधुनी

शुक्लकृष्णौ, दीक्षातपसी, उलूखलमुसले, मधुसर्पिषी, ब्रह्मप्रजापती, शिववैश्रवणौ, स्कन्दविशाखौ, परिव्राट्कौशिकौ, प्रवर्ग्योपसदौ, इध्माबर्हिषी, श्रद्धातपसी, मेधातपसी, अध्ययनतपसी, आद्यवसाने, श्रद्धामेधे, ऋक्सामे, वाङ्मनसे।

N. B. अव्ययवर्गदषहान्तात् समाहारे (द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे)—समाहार द्वन्द्व में चवर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त और हकारान्त शब्दों के परे अ होता है। यथा, वाक्त्वचम्, श्रीस्रजम्, शमीदृषदम्, सम्पद्विपदम्, वाक्त्विषम्, वाग्विप्रुषम्, छत्रोपानहम्, धेनुगोदुहम्। समाहार नहीं होने से नहीं होता। यथा, श्रीस्रजौ, प्रावृट्शरदौ।

२ स्त्रियं स्त्रीपुंसादयः (अचतुरविचतुर ... .)—द्वन्द्व समास में स्त्रीपुंसौ इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, स्त्री च पुमांश्च स्त्रीपुंसौ, वाक् च मनश्च वाङ्मनसे, नक्तञ्च दिवा च नक्तंदिवम्, रात्रौ च दिवा च रात्रिंदिवम्, अहनि च दिवा च अहर्दिवम्, अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रः, धेन्वनडुही, अक्षिभ्रुवम्, दारगवम्, ऊर्वष्ठीवम्, पदष्ठीवम्, ऋग्यजुषम्, सरजसम्, निःश्रेयसम्, पुरुषायुषम्, जातोक्षः, महोक्षः, वृद्धोक्षः, उपशुनम्, गोष्ठश्वः, अचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः।

१२ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ—एकविभक्ति में जितने एक से रूप होते हैं उनमें से एक ही (अवशिष्ट) रह जाता है, इसको एकशेष द्वन्द्व कहते हैं। दो पदों का एकशेष होने से अवशिष्ट पद द्विवचनान्त होता है और अनेक पदों का एकशेष होने से अवशिष्ट पद बहुवचनान्त होता है। यथा, तरुश्च तरुश्च तरू, तरुश्च तरुश्च तरुश्च तरवः, फलञ्च फलंच फले, फलंच फलंच फलंच फलानि।

(क) पुमान् स्त्रिया—स्त्री और पुरुष के साथ समास होने पर पुरुषवाची पद अवशिष्ट रह जाता है। यथा, ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च ब्राह्मणौ, कुक्कुटश्च कुक्कुटी च कुक्कुटौ। यदि भिन्न

समाहारः गवाश्वम्, अजाश्च अविकाश्च अजाविकम्, पुत्राश्च पौत्राश्च पुत्रपौत्रम्, गवाविकम्, गवैडकम्, अजैडकम्, कुब्जवामनम्, कुब्जकिरातम्, श्वपचचण्डालम्, स्त्रीकुमारम्, दासीमाणवकम्, शाटीपटीरम्, शाटीप्रच्छदम्, शाटीपट्टिकम्, उष्ट्रखरम्, उष्ट्रशशम्, मूत्रशकृत्, मूत्रपुरीषम्, यकृन्मेदः, मांसशोणितम्, दर्भशरम्, दर्भपूतीकम्, अर्जुनशिरीषम्, अर्जुनपुरुषम्, तृणोपलम्, दासीदासम्, कुटीकुटम्, भागवती भागवतम्।

(क) विभाषा पूर्वापरादीनाम् (विभाषा वृक्षमृग ...)—पूर्व और अपर इत्यादि का विकल्प से समाहार होता है। यथा; पूर्वंच अपरंच पूर्वापरम्, पूर्वापरे; अधरंच उत्तरंच अधरोत्तरम्, अधरोत्तरे; दधि च घृतंच दधिघृतम्, दधिघृते।

(ड) विरुद्धानामविशेषणानाञ्च (विप्रतिषिद्धं चानाधिकरणवाचि)—परस्पर विरुद्ध पदार्थों में विकल्प से समाहार होता है। यथा; शीतंच उष्णं च शीतोष्णम्, शीतोष्णे, सुखंच दुःखंच सुखदुःखम्, सुखदुःखे, आलोकश्च अन्धकारश्च आलोकान्धकारम्, आलोकान्धकारौ। विशेषण होने से नहीं होता। यथा; शीतोष्णे पयसी।

(ढ) शूद्राणामनिरवसितानां नित्यम् (शूद्राणामनिरवसितानाम्)—शूद्रवाचक पदों का नित्य समाहार होता है। यथा; गोपाश्च नापिताश्च तेषां समाहारः गोपनापितम्, कर्मकाराश्च कुम्भकाराश्च कर्मकारकुम्भकारम्, ताम्बूलिकाश्च तन्तुवायाश्च ताम्बूलिकतन्तुवायम्। निरवसित (वे शूद्र के पात्र संस्कारेणापि न शुध्यति से निरवसिताः) शूद्रों का नहीं होता; यथा, चण्डालाश्च मृतपाश्च चण्डालमृतपाः।

(ण) न दधिपयः प्रभृतीनाम् (न दधिपय आदीनि)—दधिपयस् इत्यादि में समाहार नहीं होता। यथा, दधिपयसी, सर्पिर्मधुनी

शुक्लकृष्णौ, दीक्षातपसी, उलूखलमुसले, मधुसर्पिषी, ब्रह्मप्रजापती, शिववैश्रवणौ, स्कन्दविशाखौ, परिव्राट्कौशिकौ, प्रवर्ग्योपसदौ, इध्मबर्हिषी, श्रद्धातपसी, मेधातपसी, अध्ययनतपसी, आद्यवसाने, श्रद्धामेधे, ऋक्सामे, वाङ्मनसे।

N. B. चश्चवर्गदषहान्तात् समाहारे (द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे)—समाहार द्वन्द्व में चवर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त और हकारान्त शब्दों के परे अ होता है। यथा, वाक्त्वचम्, श्रीस्रजम्, शमीदृषदम्, सम्पद्विपदम्, वाक्त्विषम्, वाग्विप्रुषम्, छत्रोपानहम्, धेनुगोदुहम्। समाहार नहीं होने से नहीं होता। यथा, श्रीस्रजौ, प्रावृट्शरदौ।

२ निपात्यं स्त्रीपुंसादयः (अचतुरविचतुर ... ...)—द्वन्द्व समास में स्त्रीपुंसौ इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, स्त्री च पुमांश्च स्त्रीपुंसौ, वाक् च मनश्च वाङ्मनसे, नक्तञ्च दिवा च नक्तंदिवम्, रात्रौ च दिवा च रात्रिंदिवम्, अहनि च दिवा च अहर्दिवम्, अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रः, धेन्वनडुहौ, अक्षिभ्रुवम्, दारगवम्, ऊर्वष्ठीवम्, पदष्ठीवम्, ऋग्यजुषम्, सरजसम्, निःश्रेयसम्, पुरुषायुषम्, जातोक्षः, महोक्षः, वृद्धोक्षः, उपशुनम्, गोष्ठश्वः, अचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः।

१७ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ—एकविभक्ति में जितने एक से रूप होते हैं उनमें से एक ही (अवशिष्ट) रह जाता है, इसको एकशेष द्वन्द्व कहते हैं। दो पदों का एकशेष होने से अवशिष्ट पद द्विवचनान्त होता है और अनेक पदों का एकशेष होने से अवशिष्ट पद बहुवचनान्त होता है। यथा, तरुश्च तरुश्च तरू, तरुश्च तरुश्च तरुश्च तरवः, फलञ्च फलञ्च फले, फलञ्च फलञ्च फलञ्च फलानि।

(क) पुमान् स्त्रिया—स्त्री और पुरुष के साथ समास होने पर पुरुषवाची पद अवशिष्ट रह जाता है। यथा, ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च ब्राह्मणौ, कुक्कुटश्च कुक्कुटी च कुक्कुटौ। यदि भिन्न

जातीय स्त्री और पुरुष का समास हो तो ऐसा नहीं होता यथा, हंसश्च सारसी च हंससारस्यौ।

(ख) न व्यक्तिसंज्ञानाम्—विशेष व्यक्ति-बोधक पदों का एक शेष समास नहीं होता। यथा, इन्द्रश्च इन्द्राणी च इन्द्रेन्द्राण्यौ भवश्च भवानी च भवभवान्यौ।

(ग) भ्रातृ-पुत्रौ स्वसृ-दुहितृभ्याम्—स्वसृ के साथ भ्रातृ और दुहितृ के साथ पुत्र का समास होने पर यथाक्रम भ्रातृ और पुत्र अवशिष्ट रहता है। यथा, भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ पुत्रश्च दुहिता च पुत्रौ।

(घ) विभाषा पिता मात्रा—मातृ के साथ समास होने पर विकल्प से पितृ शब्द अवशिष्ट रहता है। यथा, माता च पिता च पितरौ, मातापितरौ।

(च) श्वशुरः श्वश्र्वा—श्वश्रू के साथ समास होने पर विकल्प से श्वशुर शब्द अवशिष्ट रहता है। यथा, श्वश्रूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ, श्वश्रूश्वशुरौ।

(छ) नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् (नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चान्यतरस्याम्)—नपुंसक भिन्न शब्द के साथ नपुंसक शब्द का समास होने पर नपुंसक शब्द अवशिष्ट रहता है और विकल्प से एकवचन होता है। यथा, शुक्लश्च शुक्ला च शुक्लं च-शुक्लम्, शुक्लानि। नपुंसक शब्द के साथ समास होने से एकवचन नहीं होता। यथा, शुक्लं च शुक्लं च शुक्लं च शुक्लानि।

N. B. द्वन्द्व समास में किस पद को कहाँ रखना चाहिये। निमित्त निम्नलिखित नियमों पर ध्यान देना चाहिये।

(१) अल्पस्वरं द्वन्द्वे (अल्पाच् तरम्)—द्वन्द्व समास के पद में कम स्वर हों उसे पहले रखना चाहिये। यथा, ताम्रमाली, श्वशुर

...वदुन्दुभी, भ्रातृभगिन्यौ, गोमहिषी, दंशमशकौ, हंससारसौ, काक-
...कोकिलौ, अम्लमधुरौ, तिक्तकषायौ।

(२) स्वराद्यदन्तं साम्ये (अजाद्यदन्तम्)—यदि समान स्वर
...तो स्वरादि अकारान्त पद पहले रखा जाता है। यथा, अश्वगजौ,
...कृष्णौ, अनन्तवचनौ, अर्जुनमहेशौ, अजरसामुखौ, इन्द्रवरौ, ईशमयौ,
...इलरौ, ऊर्द्ध्वनिम्ने।

(३) इदुदन्तश्च—यदि समान स्वर हो तो इकारान्त और उकारान्त
...को पहले रखना चाहिये। यथा, हरिहरौ, रविबुधौ, पशुशुकौ, मृदुरवौ।

(४) अभ्यर्हितञ्च—अभ्यर्हित (पूजित) वाची पद को पहले रखना
...ये। यथा, मातापितरौ, तापसयाचकौ।

(५) लघ्वक्षरञ्च (लघ्वक्षरं पूर्वम्) लघु वर्णयुक्त पद को पहले
...चाहिये। यथा, कुशकाशम्, शललोलौ, बलकेयूरौ।

(६) भ्राता च ज्यायान् (भ्रातुर्ज्यायसः)—ज्येष्ठ भ्रातृवाची
पद पहले रखा जाता है। यथा, युधिष्ठिरार्जुनौ, रामलक्ष्मणौ, बलदेवकृष्णौ।

(७) ऋतुनक्षत्राणामानुपूर्व्येण (ऋतुनक्षत्राणां समानाक्षराणा
मानुपूर्व्येण)—ऋतु और नक्षत्रवाची पद पौर्वापर्य नियम के अनुसार
रखे जाते हैं। यथा, हेमन्तशिशिरौ, शिशिरवसन्तौ, अश्विनीभरण्यौ।

(८) वर्णानाञ्च (वर्णानामानुपूर्व्येण)—ब्राह्मणादि वर्णों
...र्णों को आनुपूर्व्य क्रम से रखना चाहिये। यथा, ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः।

(९) अनियमो धर्मादौ (धर्मादिष्वनियमः)—धर्म इत्यादि
...प्रयोग में कोई नियम नहीं है। यथा, धर्मार्थौ, अर्थधर्मौ, कामार्थौ,
...र्थकामौ; शब्दार्थौ, अर्थशब्दौ; दारपती, पतिदारौ; सर्पिर्मधुनी, मधुसर्पिषी;
...पन्नौ, अन्तादी; गुणवृद्धी, वृद्धिगुणौ।

अलुक् समास।

१२ अलुगुत्तरपदे—समास होने पर कहीं कहीं पूर्वपद को

विभक्ति का लोप नहीं होता; उसे अलुक् समास कहते हैं

९४ पञ्चम्याः स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्रेभ्यः (पंचम्याः स्तोकादिभ्यः) स्तोकार्थ, अन्तिकार्थ, दूरार्थ और कृच्छ्र शब्द की परव पंचमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, स्तोकान्मु अल्पान्मुक्तः, अन्तिकादागतः, समीपादागतः, दूरादाग विप्रकृष्टादागतः, कृच्छ्रान्मुक्तः।

९५ ओजः सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः (ओजःसहोऽम्भस्तमसस् यायाः अञ्जस उपसंख्यानम्)— ओजस्, सहस्, अम्भस्, तम और अंजस् की परवर्त्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होत यथा, ओजसाकृतम्, सहसाकृतम्, अम्भसाकृतम्, तमसा तम्, अंजसाकृतम्।

(क) पुंसोऽनुजे (पुंसानुजो जनुषान्धो विकृताक्ष इति च)—अनु शब्द परे हो तो पुमस् की परवर्त्ती तृतीया विभक्ति का लो नहीं होता। यथा, पुंसानुजः।

(ख) जनुषाऽन्धे (पुंसानुजो...)—अन्ध शब्द परे हो जनुस् की परवर्त्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता यथा, जनुषान्धः।

(ग) आत्मनः पूरणे (आत्मनश्च पूरण इति वक्तव्यम्)—पूरण वाचक पद परे हो तो आत्मन् की परवर्त्ती तृतीया विभ का लोप नहीं होता। यथा, आत्मना पंचमः आत्मनादशमः।

९६ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः—व्याकरण की संज्ञा समझी जाय तो आत्मन् की परवर्त्ती चतुर्थी विभक्ति का लोप [illegible] होता। यथा, आत्मनेपदम्, आत्मनेभाषा।

(क) परस्य च (परस्य च)—पर शब्द के उत्तर भी लोप नहीं होता। यथा, परस्मैपदम्, परस्मैभाषा।

९७ हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्—संज्ञा अर्थ में हल् अकारा

और अकारान्त शब्द की परवर्त्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; युधिष्ठिरः, त्वचिसारः, अरण्येतिलकाः, तनेकिंशुकाः, कूपेपिशाचकाः।

(क) अन्तमध्याभ्यां गुरौ (मध्यात् गुरौ। अन्ताच्च)—गुरु शब्द परे ो तो अन्त और मध्य की परवर्त्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; अन्तेगुरुः, मध्येगुरुः।

(ख) अमूर्द्ध मस्तकात् स्वाङ्गादकामे—स्वाङ्गवाचक शब्द की परवर्त्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; कण्ठेकालः, ररसिलोमा, शिरसिशिखः। काम शब्द परे हो तो विभक्ति का लोप होता है; यथा; मुखकामः। मूर्द्धन् और मस्तक शब्द के परे की विभक्ति का लोप होता है। यथा; मूर्द्धशिखः, मस्तकशिखः।

(ग) विभाषा बन्धे (बन्धे च विभाषा)—बन्ध शब्द परे होने से विकल्प से लोप होता है। यथा; हस्तेबन्धः, हस्तबन्धः; पद्देबन्धः, पद्दबन्धः।

(घ) तत्पुरुषे कृति बहुलम्—तत्पुरुष समास में कृत् प्रत्यय से बना हुआ पद परे हो तो सप्तमी विभक्ति के लोप का कोई नियम नहीं है अर्थात् कहीं लोप नहीं होता, कहीं होता है और कहीं विकल्प से होता है। यथा; अलुक्-अन्तेवासी, स्तम्बेरमः, कर्णेजपः, पङ्केरुहः, मनसिशयः, प्रावृषिजः, शरदिजः (प्रावृट्शरत्कालदिवां जेः)। लुक्-कुरुचरः, स्थण्डिलशायी, कूटस्थाः, गृहस्थः। विकल्प से-सरसिजम्, सरोजम्; मनसिजः, मनोजः; ग्रामेवासः, ग्रामवासः; ग्रामेवासी, ग्रामवासी।

पात्रेसमितादयः कुत्सायाम् (पात्रेसमितादयश्च)—कुत्सा अर्थ में पात्रेसमित इत्यादि की सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, पात्रेसमिताः (भोजनकाले पात्रे एव सङ्गताः, नतु कार्य्य-

काले इत्यर्थः) गेहेशूरः (गेहे एव शूरः, नतु अन्यत्र इत्यर्थः) पात्रेसमितः, पात्रेबहुलाः, गेहेनर्दी, गेहेक्ष्वेडी, गेहेविजिती, गेहेतृप्तः, गेहेधृष्टः, गर्भेतृप्तः, गोष्ठेशूरः, गोष्ठेपटुः, गोष्ठेपण्डितः, गोष्ठेप्रगल्भः इत्यादि।

६८ षष्ठ्या आक्रोशे—भर्त्सना अर्थ में षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; चौरस्य कुलम्, शासस्य तनयः।

(क) पुत्रे विभाषा (पुत्रेऽन्यतरस्याम्)—भर्त्सना समझे जाने और पुत्र शब्द परे रहने से षष्ठी विभक्ति का विकल्प से लोप नहीं होता। यथा; दास्याःपुत्रः, दासीपुत्रः; वृषल्याः पुत्रः, वृषलीपुत्रः।

(ख) वाग्दिक्पश्यद्भ्यो युक्तिदण्डहरेषु—युक्ति, दण्ड और हर शब्द परे रहने से यथाक्रम वाच्, दिश् और पश्यत् शब्द की परवर्त्ती षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; वाचोयुक्तिः, दिशोदण्डः पश्यतोहरः।

(ग) देवात् प्रिये (देवानां प्रिय इति च मूर्खे)—प्रिय शब्द परे होने से देव शब्द की परवर्त्ती षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, देवानांप्रियः। अन्यत्र देवप्रियः।

(घ) शुनः शेप-पुच्छ-लाङ्गूलेषु संज्ञायाम् (शेपपुच्छलाङ्गूलेषु शुनः)—संज्ञा समझे जाने और शेप, पुच्छ और लाङ्गूल शब्द परे रहने से श्वन् की परवर्त्ती षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; शुनः शेपः, शुनः पुच्छः, शुनो लाङ्गूलः।

(च) दिवश्च दासे—संज्ञा अर्थ में दास शब्द परे होने से दिव् की षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; दिवोदासः।

(छ) ऋतो विद्यागोत्रसम्बन्धात् (ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः)—विद्या सम्बन्धवाचक और गोत्र सम्बन्धवाचक ऋकारान्त शब्द

की षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा; ह
होतुरन्तेवासी, पितुः पुत्रः, पितुरन्तेवासी।

विभाषा स्वसृपत्योः—स्वसृ और पति शब्द परे हो।
से लोप होता है। यथा; मातुःस्वसा (मातुः पितृभ्यामन्
मातृस्वसा; पितुः स्वसा पितृस्वसा; दुहितुः पतिः द
ननान्दुः पतिः ननान्दृपतिः।

मध्यपदलोपी समास

६९ लोपः क्वचिन्मध्यस्य (शाकपार्थिवादीनां सिद्धये
स्योपसंख्यानम्)—समास होने पर कहीं कहीं मध्य प
होता है उसी को मध्यपदलोपी समास कहते हैं। य
मिश्रं ओदनं गुडोदनम्, पलमिश्रं अन्नं पलान्नम्,
पार्थिवः शाकपार्थिवः, गत एव प्रत्यागतः गतप्रत्याग
स्थितः कालोऽस्य कण्ठेकालः, उरसि स्थितानि ल
उरसिलोमा, शिरसि स्थिता शिखाऽस्य शिरसिशिखः,
वर्णोऽस्मात् प्रवर्णः, अपगतः शोकोऽस्य अपशोक
मलमस्मात् निर्मलः, अमुक्तानि पर्णान्यनया अपर्णा, नि
अस्मात् व्यर्थः, अनुगतोऽर्थोऽस्मिन् अन्वर्थः, यथाभूतोऽ
यथार्थः, प्रतिगतमक्षमस्मिन् प्रत्यक्षः, उन्नमितं मुखमनेन
अधःकृतं मुखमनेन अधोमुखः, निर्गतं धनमस्य निर्धनः
मनोऽस्य विमनाः, उत्कण्ठितं मनोऽस्य उन्मनाः,
मनोऽस्य सुमनाः, सुवर्णविकारोऽलङ्कारोऽस्य सुव
अविद्यमानः पुत्रोऽस्य अपुत्रः, अविद्यमानः क्रोधोऽस्य
एकाधिका विंशतिः एकविंशतिः, एकाधिका त्रिंशत्, ए
चतुरधिका दश चतुर्दश, पञ्चाधिका दश पञ्चदश,
विंशतिः पञ्चविंशतिः, पञ्चाधिका त्रिंशत् पञ्चत्रिंशत्।

(क) एकस्यैका दशनि—दशन् शब्द परे होने से एक का एका होता है। यथा; एकाधिका दश एकादश।

(ख) द्व्यष्टनोर्द्वाशा संख्यायाम् (द्व्यष्टनसंख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः)—संख्यावाचक शब्द परे हो तो द्वि का द्वा और अष्टन् का अष्टा होता है। यथा, द्व्यधिका विंशतिः द्वाविंशतिः, द्व्यधिका त्रिंशत् द्वात्रिंशत्, अष्टाधिका दश अष्टादश, अष्टाधिका विंशतिः अष्टाविंशतिः, अष्टाधिका त्रिंशत् अष्टात्रिंशत्।

त्रेस्त्रयः—त्रि का त्रयस् होता है। यथा; त्र्यधिका दश त्रयोदश, त्र्यधिका विंशतिः त्रयोविंशतिः, त्र्यधिका त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशत्।

विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्व्वेषाम्—चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति और नवति परे हो तो द्वि का द्वा, त्रि का त्रयः और अष्टन् का अष्टा विकल्प से होता है। यथा, द्व्यधिका चत्वारिंशत् द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत्; द्व्यधिका पञ्चाशत् द्वापञ्चाशत्, द्विपञ्चाशत्; त्रयश्चत्वारिंशत्, त्रिचत्वारिंशत्; त्रयःपञ्चाशत्, त्रिपञ्चाशत्; अष्टाचत्वारिंशत्, अष्टचत्वारिंशत्; अष्टापञ्चाशत्, अष्टपञ्चाशत्।

नाशीतिशतादौ बहुव्रीहौ (द्व्यष्टनः ......)—अशीति और शत इत्यादि संख्यावाचक शब्द परे हो तो बहुव्रीहि समास में उपर्युक्त कार्य्य नहीं होता। यथा; द्व्यशीतिः त्र्यशीतिः, द्विशतम्, त्रिसहस्रम्। बहुव्रीहि समास में द्वित्राः, त्रिचतुराः।

(ग) एकोनस्यैकान्नैकादनौ विभाषा (एकादिश्चैकस्य चादुक्)—एकोन का विकल्प से एकान्न और एकादुन होता है। यथा; एकोनविंशतिः, एकादुनविंशतिः, एकान्नविंशतिः।

सर्व्वसमास-साधारणविधि

७० नञोऽसमासे (नञ्पूर्वपदः पराभवति)—समास होने

पर समस्त भाग के अन्तस्थित पथिन् के उत्तर अ होता है और इसका थ रहता है। यथा, पथः समीपं उपपथम्, जले पन्थाः जलपथः, त्रयाणां पथां समाहारः त्रिपथम्, चतुर्णां पथां समाहारः चतुष्पथम्, रम्यः पन्थाः अस्मिन् रम्यपथं नगरम्, क्षेत्रञ्च पन्थाश्च क्षेत्रपथौ। अव्यय के परवर्ती होने से नपुंसक होता है। यथा, विरुद्धः पन्थाः विपथम्, गर्हितः पन्थाः उत्पथम्, अपकृष्टः पन्था अपपथम्।

७१ अपः—समास होने पर अन्तस्थित अप् के उत्तर अत् होता है और इसका अ रहता है। यथा, विमला आपोऽस्मिन् विमलापं सरः, उद्धृता आपोऽस्मात् उद्धृतापः कूपः, कूपस्थापः कूपापः, निर्मला आपः निर्मलापः।

द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत (द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत्)—द्वि, अन्तर् और उपसर्ग के परवर्ती अप् के अ का ई होता है। यथा, द्वयोर्दिशोः आपोऽस्य द्वीपम्, अन्तरीपम्, समीपम्, प्रतीपम्, अन्वीपम्।

अवर्णाद्वाप्ता (अवर्णान्तात्)—अवर्णान्त उपसर्ग के परवर्ती होने से विकल्प से होता है। यथा, प्रेपम्, प्रापम्, परेपम्, परापम्, अपां समीपं उपेपम्, उपापम्।

७२ समापानूपौ—समाप और अनूप निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, समापो देवयजनम्, अनूपो देशः।

७३ धुरोऽनक्षे (ऋक्पूर......)—समास होने पर अन्तस्थित धुर् के उत्तर अत् होता है। यथा, राज्ञो धूः राजधुरा, महती धूः महाधुरा, धूर्ता धुरेन धूर्तधुरः। अक्ष शब्द का सम्बन्ध हो तो नहीं होता। यथा, अक्षस्य धूः अक्षधूः, दृढा धूरस्मिन् दृढधूः अक्षः।

७४ ऋचम (ऋक्पूर......)—अन्तस्थित ऋच् के उत्तर अत्

होता है। यथा, अर्द्धं ऋचः अर्द्धर्चः (पुंलिङ्ग होता है)। अधिगता ऋक् अनेन अधिगतर्चः।

नञो माणवके—माणवक अर्थ में नञ् के परवर्त्ती ऋच् के उत्तर अन् होता है। यथा, अनृचो माणवकः। अन्यत्र अनृक् साम।

बह्वोश्चरणे (ऋक्पूर......)—चरण अर्थ में बहु के परवर्त्ती ऋच् के उत्तर अन् होता है। यथा, बह्वृचश्चरणः। अन्यत्र बह्वृक् सूक्तम्।

७५ प्रत्यन्ववेभ्यो लोम्नः (अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः)—प्रति, अनु और अव के परवर्त्ती लोमन् के उत्तर अन् होता है। यथा, प्रतिलोमम्, अनुलोमम्, अवलोमम्।

७६ साम्नश्च (अच्......)—प्रति, अनु, और अव [illegible] परवर्त्ती सामन् के उत्तर अन् होता है। यथा, प्रतिसामम्, अनुसामम्, अवसामम्।

७७ कृष्णोदक् पाण्डुसंख्याभ्यो भूमेः (कृष्णोदक्पाण्डुसंख्यापूर्वाया भूमेरजिष्यते)—कृष्ण, उदक्, पाण्डु और संख्यावाचक शब्द [illegible] परवर्त्ती भूमि के उत्तर अन् होता है। यथा, कृष्णभूमः, उदग्भूमः, पाण्डुभूमः, द्विभूमः, चतुर्भूमः।

७८ ब्रह्महस्तिपल्यराजभ्यो वर्चसः (ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसोऽच्; पल्यराजभ्यां चेति वक्तव्यम्)—ब्रह्मन्, हस्तिन्, पल्य और राजन् के परवर्त्ती वर्चस् के उत्तर अन् होता है। यथा, ब्रह्मवर्चसम्, हस्तिवर्चसम्, पल्यवर्चसम्, राजवर्चसम्।

७९ अवसमन्धेभ्यस्तमसः—अव, सम् और अन्ध के परवर्त्ती तमस् के उत्तर अन् होता है। यथा, अवतमसम्, सन्तमसम्, अन्धतमसम्।

८० अन्ववतप्तेभ्यो रहसः (अन्ववतप्ताद् रहसः)—अनु, अव

और तत के परवर्ती रहस् के उत्तर अन् होता है। यथा; अनुरहसम्, अवरहसम्, ततरहसम्।

८१ उपसर्गादध्वनः—उपसर्ग के परवर्ती अध्वन् के उत्तर अन् होता है। यथा; प्रगतः अध्वान प्राध्वो रथः, अध्वानोऽमात्र: निरध्वम्, अध्वानं प्रति प्रत्यध्वम्। अन्यत्र उत्तमोऽध्वा उत्तमाध्वा।

८२ श्वसो वसीयःश्रेयसोभ्याम्—श्वस् के परवर्ती वसीयस् और श्रेयस् के उत्तर अन् होता है। यथा; श्वोवसीयसम्, श्वःश्रेयसम्।

N.B. न प्रशंसायां स्वतिभ्याम् (न पूजनात्) एवस्तिभ्यामेव) प्रशंसावाची सु और अति पहले रहने से समासान्त विधि नहीं होती। यथा; शोभनो राजा सुराजा, शोभनो राजा अस्मिन् सुराजा देशः, अतिशयेन राजा अतिराजा; सुसखा, अतिसखा, सुगौः, अतिगौः, सुपन्थाः, स्वक्षा।

२ न किमः कुत्सायाम् (किमःक्षेपे)—कुत्सावाची किम् शब्द पहले रहने से समासान्त विधि नहीं होती। यथा, कुत्सितो राजा किंराजा, कुत्सितः सखा किंसखा, कुत्सितः पन्थाः अस्मिन् किंपन्थाः देशः।

३ न नञस्तत्पुरुषे (नञस्तत्पुरुषात्)—तत्पुरुष समास में नञ् पहले रहने से समासान्त विधि नहीं होती। यथा, अराजा, असखा, अगौः।

४ पथो विभाषा—पथिन् के उत्तर विकल्प से होता है। समासान्त पक्ष में नपुंसक होता है। यथा; अपथम्, अपन्थाः।

८३ सः समानस्य गोत्रादौ (ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचनबन्धुषु)—समास में गोत्र इत्यादि शब्द परे हो तो समान का [redacted] होता है। यथा; समानं गोत्रमस्य सगोत्रः, सरूपः, सवर्णः, सपक्षः, सनाभिः, सपिण्डः, सनामा, सवयाः, सतीर्थः, सबन्धुः, सवचनः, सरात्रिः, सज्योतिः, सजनपदः, सब्रह्मचारी।

विभाषा धर्म्मोदर्य्यजातीयेषु——धर्म्म, उदर्य्य और जातीय शब्द परे हो तो विकल्प से होता है । यथा, सधर्म्मा, समानधर्म्मा; सोदर्य्यः, समानोदर्य्यः (विमातोदरे); सजातीयः, समानजातीयः ।

८४ दुगन्यस्याशीरादिषु (अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोतिकारकरागेषु)—आशिस् इत्यादि शब्द परे हो तो अन्य शब्द के उत्तर दु होता है और इसका दु रहता है । यथा; अन्या आशीः अन्यदाशीः, अन्यस्मिन् आशा अन्यदाशा, अन्यस्मिन् आस्था अन्यदास्था, अन्यस्मिन् आस्थितः अन्यदास्थितः, अन्यस्मिन् उत्सुकः अन्यदुत्सुकः, अन्यस्मिन् रागः अन्यद्रागः, अन्यः कारकः अन्यत्कारकः ।

(क) न तृतीयाषष्ठ्योः—तृतीयान्त और षष्ठ्यन्त अन्य शब्द के उत्तर नहीं होता । यथा; अन्येन आशीः अन्याशीः, अन्यस्याशीः अन्याशीः ।

(ख) अर्थे विभाषा—अर्थ शब्द परे हो तो विकल्प से होता है । यथा; अन्यस्यार्थः अन्यदर्थः, अन्यार्थः ।

८५ कोः कत् स्वरे तत्पुरुषे (कोः कत्तत्पुरुषेऽचि)—तत्पुरुष समास में स्वरवर्ण परे हो तो कु का कत् होता है । यथा; कुत्सितोऽश्वः कदश्वः, कुत्सितः उष्ट्रः कदुष्ट्रः, कुत्सितमन्नं कदन्नम् , कुत्सित आचारः कदाचारः, कुत्सितमुदकं कदुदकम् ।

(क) त्रिरथवदेषु (त्रौ च । रथवदयोश्च)—त्रि, रथ और वद शब्द परे हो तो कु का कत् होता है । यथा; कुत्सितास्त्रयः कत्त्रयः, कुत्सितो रथः कद्रथः, कुत्सितं वदति कद्वदः ।

(ख) का पथ्यक्ष्णोः (का पथ्यक्षयोः)—पथिन् और अक्षि शब्द परे हो तो कु का 'का' होता है । यथा, कुत्सितः पन्थाः कापथः कुत्सितमक्षि अस्य काक्षः ।

(ग) ईषदर्थे च—ईषत् अर्थ में कु का 'का' होता है। यथा, कामधुरम्, ईषन्मधुरमित्यर्थः; कालवणम्, ईषल्लवणमित्यर्थः।

विभाषा पुरुषे—पुरुष शब्द परे हो तो विकल्प से होता है। यथा, कापुरुषः, कुपुरुषः।

(घ) का-कत्-कवाः उष्णे (कवं चोष्णे)—उष्ण शब्द परे हो तो कु का का, कत् और कव होता है। यथा, कोष्णम्, कदुष्णम्, कवोष्णम्।

८६ विश्वामित्रादयः (मित्रे चर्षौ। विश्वस्य वसुराटोः। नरे संज्ञायाम्)- विश्वामित्र आदि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, विश्वस्य मित्रं विश्वामित्रः, विश्वावसुः, विश्वानरः, अष्टावक्रः, अष्टापदम्, अष्टागवम्, शुनो दन्तः श्वादन्तः, श्वादंष्ट्रा, श्वाकर्णः, श्वापुच्छः, शुन इव पादा यस्य श्वापदः (अष्टनः संज्ञायाम्। शुनो दन्तदंष्ट्राकर्णकुन्दवराहपुच्छपदेषु दीर्घो वाच्यः)

८७ समोऽन्त्यलोपः काम-मनसोः—काम और मनस् शब्द परे हो तो सम् अव्यय के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, सकामः, समनाः।

(क) तुमुनश्च (तुमः काम-मनसोः)—काम और मनस् शब्द परे हो तो तुम् के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, गन्तुकामः, गन्तुमनाः।

(ख) अवश्यमः कृत्ये—कृत्य प्रत्यय परे हो तो अवश्यम् के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, अवश्यदेयम्, अवश्य-कर्त्तव्यम्।

पूर्व्व-निपात

८८ उपसर्ज्जनं पूर्व्वम्—समास में उपसर्ज्जन पद का पूर्व्व-निपात होता है।

प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्—समास में प्रथमा विभक्ति के सहयोग में जिसका निर्देश रहता है उसे उपसर्जन कहते हैं। अव्ययीभाव में अव्यय इत्यादि पद, तत्पुरुष में द्वितीयादि विभक्त्यन्त पद, कर्मधारय में विशेषण इत्यादि पद, द्विगु में संख्यावाचक पद उपसर्जन हैं। यथा, अव्ययीभाव—कूलस्य समीपं उपकूलम्, ज्ञानमनतिक्रम्य यथाज्ञानम्, वर्णानामानुपूर्व्येण अनुवर्णम्, तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम्, ग्रामाद्बहिः बहिर्ग्रामम्, पाटलिपुत्रात् आपाटलिपुत्रम्, समुद्रस्य पारे पारेसमुद्रम्। तत्पुरुष—सुखं प्राप्तं सुखप्राप्तम्, अन्नं बुभुक्षुः अन्नबुभुक्षुः, वर्षं भोग्यः वर्षभोग्यः, पित्रा समः पितृसमः, अङ्गेन विकलः अङ्गविकलः, पाणिनिना प्रणीतं पाणिनिप्रणीतम्, भूताय बलिः भूतबलिः, पुत्राय हितम् पुत्रहितम्, व्याघ्रात् भयम् व्याघ्रभयम्, गृहात् निर्गतः गृहनिर्गतः, तरोः छाया तरुच्छाया, अग्नेः शिखा अग्निशिखा, शास्त्रे प्रवीणः शास्त्रप्रवीणः, पूर्वाह्णे कृतम् पूर्वाह्णकृतम्। कर्मधारय—नीलं उत्पलं नीलोत्पलम्, नवः पल्लवः नवपल्लवः, सन् पुरुषः सत्पुरुषः। द्विगु—पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगुः, त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम्

८९ राजदन्तादिषु परम्—राजदन्त इत्यादि [redacted] उपसर्जन पद का परनिपात होता है। यथा, दन्तानां राजा राजदन्तः, वनस्य अग्रे अग्रेवनम्।

९० वा कडाराद्यः कर्मधारये (कडाराः कर्मधारये)—कर्मधारय समास [redacted] कडार, खञ्ज, काण, कुण्ठ, गौर, वृद्ध, भिक्षुक, पिङ्ग, पिङ्गल, तनु, जठर, बधिर, बर्बर इत्यादि पदों का विकल्प से पूर्वनिपात होता है। यथा, कडारगजः, गजकडारः, खञ्जशिशुः, शिशुखञ्जः; वृद्धपुरुषः, पुरुषवृद्धः।

६१ सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ—बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त और विशेषण पद का पूर्व्वनिपात होता है। यथा; सप्तम्यन्त—कण्ठेकालः, उरसिलोमा; विशेषण-दीर्घबाहुः, महाबलः।

६२ विभाषा प्रियस्य—प्रिय शब्द का विकल्प से पूर्व्वनिपात होता है। यथा; गुडप्रियः, प्रियगुडः।

६३ सप्तमी पर गड्वादेः—गडु इत्यादि के योग में सप्तम्यन्त पद का परनिपात होता है। यथा; गडुः कण्ठे यस्य गडुकण्ठः, गडुः शिरसि यस्य गडुशिराः।

६४ प्रहरणार्थेभ्यश्च (प्रहरणार्थेभ्यः परे निष्ठासप्तम्यौ)—प्रहरणवाचक पद के योग में सप्तम्यन्त पद का परनिपात होता है। यथा, शस्त्रं पाणौ यस्य शस्त्रपाणिः, दण्डः पाणौ यस्य दण्डपाणिः, चक्रं करे यस्य चक्रकरः, धनुर्हस्ते यस्य धनुर्हस्तः।

६५ निष्ठा पूर्व्वा—निष्ठा से उत्पन्न पद का पूर्व्व निपात होता है। यथा; कृतकर्म्मा, अधीतव्याकरणः, अभिवादितः, धृतायुधः, उद्धृतदण्डः, भग्नरथः, पक्वकेशः।

६६ आहिताग्न्यादिषु—आहिताग्नि इत्यादि में निष्ठा से उत्पन्न पदों का विकल्प से पूर्व्वनिपात होता है। यथा, आहिताग्निः, अग्न्याहितः; जातसुखः, सुखजातः; जातपुत्रः, पुत्रजातः; जातदन्तः, दन्तजातः; तैलपीतः, पीततैलः, मद्यपीतः, पीतमद्यः; सुरापीतः, पीतसुरः; भार्य्योढः, ऊढभार्य्यः; अर्थगतः, गतार्थः; प्राप्तकालः, कालप्राप्तः; अस्युद्यतः, उद्यतासिः, जातश्मश्रुः, श्मश्रुजातः; घृतपीतः, पीतघृतः।

सर्व्व समास शेष।

६७ समासश्चतुर्विधः—पाणिनि के मत से अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व, ये चार प्रकार के समास हैं। कर्म्मधारय और द्विगु

तत्पुरुष के अन्तर्गत है। कहीं कहीं कर्मधारय और द्विगु को स्वतन्त्र समास मान कर समास ६ प्रकार का माना जाता है।

९८ पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः—अव्ययीभाव समास में पूर्व पदार्थ प्रधान है। उपगृहम्, यथाशक्ति इत्यादि में उप, यथा इत्यादि पूर्व पदार्थ प्रधान हैं।

९९ उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः—तत्पुरुष समास में उत्तर पदार्थ प्रधान है। तरुच्छाया, गङ्गाजलम् इत्यादि में छाया, जल इत्यादि परपदार्थ प्रधान हैं।

१०० उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः—द्वन्द्व समास में दोनों पदार्थ प्रधान हैं। अश्वगजौ, तालतमालौ इत्यादि में अश्व, गज, ताल, तमाल, ये सभी प्रधान हैं।

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः—जिन पदों से बहुव्रीहि समास बनता है उनके अर्थ को छोड़ कर इसमें अन्य अर्थ की प्रधानता रहती है। यथा; बहुधनः, दीर्घबाहुः इत्यादि में बहु धन दीर्घ और बाहु इत्यादि की प्रधानता न समझी जाकर बहुत धन और बहुत बाहु वाले व्यक्ति रूप अन्य पदार्थ की प्रधानता समझी जाती है।

परन्तु सर्वत्र ये नियम नहीं लगते। कहीं कहीं इसका व्यतिक्रम देखा जाता है। सप्तगोदावरम्, उन्मत्तगङ्गम् इत्यादि अव्ययीभाव में पूर्व-पदार्थ प्रधान न होकर अन्य पदार्थ प्रधान है। [illegible], आपन्नजीविकः, इत्यादि तत्पुरुष में उत्तरपदार्थप्रधान न होकर अन्यपदार्थ प्रधान है। द्वित्राः पञ्चषाः इत्यादि बहुव्रीहि में अन्यपदार्थ प्रधान न होकर उभय पदार्थ प्रधान है। [illegible], दंशमशकम् इत्यादि द्वन्द्व में उभयपदार्थ प्रधान न होकर समाहाररूप पदार्थ प्रधान है। अतएव उपर्युक्त नियम सर्वत्र न लग कर प्रायः लगते हैं। इसलिये उपर्युक्त चारों सूत्रों के पहले लोग प्रायेण जोड़ दिया करते हैं।

उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः—यह सूत्र सम्यक् रूप से नहीं लगता।

उभय पदों में जिस प्रकार द्वन्द्व समास होता है उसी प्रकार अनेक पदार्थों में भी होता है; अतएव सूत्र में उभय के स्थान में अनेक होना चाहिये। अव्ययीभाव समास में दो पद और अनेक पद होते हैं, द्वन्द्व और बहुव्रीहि समास में दो पद और अनेक पद होते हैं; पर तत्पुरुष समास में प्रायः सर्वत्र दो पद होते हैं।

१०१ बहुव्रीहि द्विविधस्तु गुणसंविज्ञानोऽतद्गुणसंविज्ञानश्च—बहुव्रीहि समास दो प्रकार के होते हैं, तद्गुणसंविज्ञान, अतद्गुणसंविज्ञान। जहाँ समास बोधित अन्यपदार्थ के सदृश समास होने वाले पदार्थ का क्रिया इत्यादि के साथ सम्बन्ध हो उसे तद्गुणसंविज्ञान कहते हैं और जहाँ समास होने वाले पदार्थ का क्रिया के साथ सम्बन्ध न हो उसे अतद्गुणसंविज्ञान कहते हैं। लम्बकर्णमानय इत्यादि में आनय क्रिया का लम्बकर्ण व्यक्ति के साथ सम्बन्ध है और लम्बकर्ण का भी परम्परा सम्बन्ध है, इसे तद्गुणसंविज्ञान कहते हैं। दृष्टसमुद्रमानय इत्यादि में आनय क्रिया का दृष्ट-समुद्र व्यक्ति के साथ सम्बन्ध है, पर समुद्र का सम्बन्ध नहीं है इसलिये इसे अतद्गुणसंविज्ञान कहते हैं।

१०२ समानाधिकरणपदघटितो व्यधिकरणपदघटितश्च— बहुव्रीहि प्रकारान्तर में दो प्रकार का होता है, समानाधिकरणपदघटित और व्यधिकरणपदघटित। विशेष्य और विशेषण पद के बहुव्रीहि को समानाधिकरणपदघटित कहते हैं, यथा, नीलाम्बरः, दीर्घबाहुः, कृष्णकायः इत्यादि। जहाँ अन्य प्रकार के पदों में बहुव्रीहि होता है उसे व्यधिकरणपदघटित कहते हैं; यथा; दण्डपाणिः, धनुर्हस्तः इत्यादि।

Exercise—43

1. Explain the distinction between—तत्पुरुष & बहुव्रीहि, कर्मधारय & द्विगु, कर्मधारय & बहुव्रीहि, समाहार द्वन्द्व & समाहार द्विगु, and पीताम्बरम् & पीताम्बरः।

2. Expound the Samasas of:—अतिशोकम्, यथाशक्ति, पारेसमुद्रम्, पञ्चनदम्, उपगङ्गम्, कूपपतितः, पितृसमः, भ्रातृस्वम्, बन्धनमुक्तः, कार्यकुशलः, कूपोदकम्, ब्राह्मणभार्या किराब्राह्मणीभार्य्यः, चतुष्पदी, दण्डादण्डि, निरर्थकम्, हरिहरौ, दंशमशकम्, मातापितरौ, दम्पती and भ्रातरौ।

3. Give compound words for:—कण्ठे स्थितः कालो यस्य तृणमभ्यवहरिष्यतश्च, पञ्चाधिका विंशतिः, तमसा हतम्, कुत्सितं अश्वम् नक्तञ्च दिवा च, द्यौश्च, भूमिश्च, वाक्चश्च उत्कृष्टश्च, पद्मस्येव गन्धोऽस्य सुन्दरी जायास्य, पाचिका भार्यास्य, अहानां राजा, नास्ति पुत्रोऽपि यस्य, पूर्वं स्नातः पश्चादनुलिप्तः, सुन्दरी महिला and सर्वान् जयति।

4. Translate into Hindi:—नदी सुभगती बहवो वृक्षाः सन्ति। रावणेन भीता वानरा दिशि दिशि पलायन्ते। कठोरगर्भामपि जानकीं विमुच्य गुरुजनस्तत्र गतः। न मे हस्तपादं प्रसरति। इदं फलकुसुमपल्लवदर्पेण मामुपतिष्ठते। स समार्थ्यः सपुत्रः तपसि स्थितः। विष्णुशर्मा नाम ब्राह्मणः सकलनीतिशास्त्रपारदृश्वा आसीत्। ममायुःशेषेणापि जीवतु लवणराशोऽयं राजपुत्रः।

5. Translate into Sanskrit:—(a) सोलह वर्ष की यह कन्या बड़ी ही सुन्दर है। [illegible] की मीठी बात सुनकर हृदय संतुष्ट हो गया। यह मनुष्य नीतिशास्त्र में बड़ा ही कुशल है। विद्याधन सब धनों से उत्तम है। माता पिता की सेवा करो। विश्वासघाती की कोई प्रतिष्ठा नहीं करता। मैं ईश्वर के विषय में जितना अधिक विचारता हूँ उतना ही कम जानता हूँ।

(b) Kindly send there the person possessed of long arms. You have a bad minister. I saw there an assembly of women. I will order them to go to another village. Ram accompanied by Sita and Lakshmana went to the forest. I shall try for

your good to the utmost of my power.

6. Correct:—एवं चिन्तयन् सा निशा अति चक्राम । रोगिः दिवायां निद्रा याति । नृपो प्रजान् पाल्यति । कथं त्वं रुदसि । मे पापान् क्षम । मिथ्यावादी धिक् । अहं वेत्ति शुक्रो वेत्ति । अथ ज्वलते तरुर्भ शमी-कोटरेऽवंदग्धशरीरः स्फुटितेक्षणा करुणात् परिदेवयन् तस्य पिता निर्चक्राम ।

लिङ्गानुशासन ।

पुंलिङ्ग Masculine.

१ घञबन्तः—घञ् और अप् (अल्) प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं; यथा, पाकः, त्यागः, भावः; करः, गरः Sickness.

२ घाजन्तश्च—घ और अच् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं, यथा; विस्तरः, गोचरः, चयः, जयः । पर भय, लिङ्ग, भग (fortune), और पद शब्द क्लीबलिङ्ग हैं ।

३ नङन्तः—नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग हैं, यथा; यत्नः, यज्ञः । पर याच्ञा स्त्रीलिङ्ग है ।

४ क्यन्तोघुः—कि प्रत्ययान्त दा और धा धातु से बने हुए शब्द पुंलिङ्ग होते हैं, यथा, आधिः (anxiety), उदधिः, निधिः । पर इषुधि (quiver) पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों हैं ।

५ देव, असुर, आत्मन्, स्वर्ग, चन्द्र, सूर्य, अग्नि, वायु, मेघ, गिरि, समुद्र, नख, केश, दन्त, स्तन, भुज, कण्ठ, खड्ग, ...र, पङ्क, शत्रु, धर्म, ग्रह और वृक्ष वाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं; यथा,

देव—अमरः, निर्जरः, देवः, सुरः, विबुधः, दिवौकः, त्रिदशः । असुर—असुरः, दैत्यः, दनुजः, दानवः, सुरद्विट् । आत्मन्—आत्मा, क्षेत्रज्ञः । स्वर्ग—स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः । चन्द्र—चन्द्रः,

हिमांशुः, चन्द्रमाः, इन्दुः, विधुः, सुधांशुः, सोमः, मृगा
शशधरः, क्षपाकरः । सूर्य—सूर्यः, आदित्यः, दिवाक
भास्करः, अहस्करः, विभाकरः, मार्तण्डः, मिहिरः, विभावसु
सविता, रविः, तपनः, मित्रः, सहस्रांशुः, भानुः, अंशुमाली
अग्नि—अग्निः, वैश्वानरः, वह्निः, पावकः, अनलः, हुतभु
वायु—वायुः, अनिलः, समीरः, मारुतः, मरुत्, समीरण
पवनः, प्रभञ्जनः, वातः । मेघ—मेघः, वारिवाहः, बलाह
जलधरः, वारिदः, जलमुक्, अम्बुभृत् । गिरि—पर्वतः, भू
गिरिः, अचलः, शैलः । समुद्र—समुद्रः, सागरः, अब्धि
पारावारः, उदधिः, सिन्धुः, अर्णवः, जलनिधिः, रत्नाक
सरित्पतिः, नख—नखः, कररुहः । केश—केशः, चिकु
कुन्तलः, कचः, शिरोरुहः । दन्त—दन्तः, दशनः । स्तन—स्तन
कुचः । भुज—भुजः, बाहुः, दोः । कण्ठ—कण्ठः, गलः । खड्ग
खड्गः, असिः, करवालः । शर—शरः, बाणः, विशिखः, मार्गण
पङ्क—पङ्कः, कर्दमः । शत्रु—शत्रुः, रिपुः, अरिः, वैरी, सपत्न
द्विषत्, द्विट्, अमित्रः, अरातिः । वर्ण—शुक्लः, श्वेतः, शुभ्र
पाण्डुरः । ग्रह—रविः, सोमः, बुधः, केतुः इत्यादि । वृक्ष—वृक्ष
तरुः, विटपी, शाखी, अनोकहः, महीरुहः, द्रुमः, पादपः । प
त्रिविष्टप शब्द क्लीवलिंग, दिव् शब्द स्त्रीलिंग, द्यु तथा बाहुशब्द
पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग तथा अभ्र शब्द क्लीवलिङ्ग है ।

६ क्रतु (यज्ञ), पुरुष, कपोल और गुल्फ के पर्याय शब्द
पुंलिङ्ग हैं; यथा; क्रतुः, अध्वरः, पुरुषः, नरः, कपोलः, गण्डः
गुल्फः, प्रपदः ।

७ रश्मिदिवसाभिधानानि—रश्मि और दिवस के पर्याय
शब्द पुंलिङ्ग हैं । यथा, रश्मिः, करः, किरणः, अंशुः, गभस्तिः,
मयूखः, दिवसः, घस्रः । पर दीधिति (ray of light)

स्त्रीलिङ्ग है और दिन तथा अहन् शब्द क्लीबलिङ्ग हैं ।

८ मानाभिधानानि—मान के पर्य्याय शब्द पुंलिङ्ग हैं; यथा, कुडवः, प्रस्थः । पर द्रोण तथा आढक पुंलिङ्ग और क्लीबलिंग, खारी और मानिका स्त्रीलिंग हैं ।

९ दाराक्षतलाजासूनां बहुत्वञ्च—दार, अक्षत, लाज, असु (प्राण) पुंलिंग और बहुवचनान्त हैं ।

१० नाड्यपजनोपपदानि व्रणाङ्गपदानि—नाडी, अप और जन के परवर्त्ती यथाक्रम व्रण, अङ्ग और पद शब्द पुंलिङ्ग हैं । यथा, नाडीव्रणः, अपाङ्गः, जनपदः ।

११ उकारान्त तथा क्, ट्, ण्, थ्, न्, म्, य्, र् या ष्, उपधा वाले शब्द पुंलिङ्ग होते हैं; यथा,

उ—प्रभुः, इक्षुः (ईख) । पर धेनु, रज्जु, कुहु–हू, सरयु, तनु, रेणु, प्रियङ्गु (a plant) स्त्रीलिङ्ग हैं; श्मश्रु (beard), जानु, स्वादु, अश्रु, जतु (lac), त्रपु (tin), तालु (palate), वसु क्लीबलिङ्ग हैं; मद्गु (A kind of bird), मधु, शीधु, (wine), सानु (table-land) और कमण्डलु पुंलिङ्ग तथा क्लीबलिङ्ग हैं ।

रुत्वन्तः—रु और तु प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग हैं, यथा, मेरुः (पर्व्वत), सेतुः । पर दारु, कसेरु (grass), वस्तु, मस्तु (पनीर) पुंलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग हैं ।

क—स्तबकः, कल्कः (sediment) । पर चिबुक, शालूक, प्रातिपदिक, अंशुक, उल्मुक क्लीबलिंग हैं; कण्टक, अनीक, सरक (rum), मोदक, चषक (wine glass), मस्तक, पुस्तक, तडाक, निष्क, शुष्क, वर्च्चस्क (brightness), पिनाक, भाण्डक, दण्डक, पिटक (फोड़ा), तालक (bolt), फलक (shield), पुलक (रोमाञ्च) पुंलिंग और क्लीबलिंग हैं

ट—घटः, पटः। पर किरीट, मुकुट, ललाट, वट, वीट (पत्ता गोपा), शृङ्गाट (चौराहा), कराट, लोष्ट क्लीवलिंग हैं, कुट, कूट, कपाट, कपट, कर्पट, कट, निकट, कीट पुलिंग और क्लीवलिंग हैं।

ण—गुणः, गणः, पाषाणः। पर ऋण, लवण, पर्ण, तोरण, रण, उष्ण क्लीवलिङ्ग हैं; स्वर्ण, सुवर्ण, व्रण, चरण, विषाण (सींग), चूर्ण, तृण, पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

थ—रथ। पर काष्ठ, पृष्ठ, सिक्थ (wax), उक्थ (साम-वेद) क्लीवलिंग हैं; तीर्थ, प्रोथ (hip), यूथ, गोथ (a resre), पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

न—इनः (सूर्य्य), फेनः। पर जघन, अजिन (मृग चर्म), तुहिन, कानन, वन, वृजिन (पाप), विपिन, वेतन, शासन, सोपान, मिथुन, श्मशान, रत्न, निम्न, चिह्न, क्लीवलिंग हैं; मान, यान, अभिधान, नलिन, पुलिन (तट), उद्यान, शयन, आसन, स्थान, चन्दन, आलान (a fetter), समान, भवन, सम्भावन, विमान, पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

प—यूपः, दीपः, सर्पः। पर पाप रूप, उडुप (a raft), तल्प (bed), शिल्प, पुष्प, शष्प समीप, अन्तरीप क्लीवलिंग हैं; शूर्प, द्वीप, विटप, पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

भ—स्तम्भः, कुम्भः। पर जृम्भ (yawning), पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

म—सोमः, भीमः। पर रुक्म (स्वर्ण), सिध्म (a scab), ईध्म (fuel), युग्म, गुल्म, अध्यात्म, कुङ्कुम, क्लीवलिंग हैं; संग्राम, दाडिम, कुसुम, आश्रम, क्षेम, क्षौम (रेशमी वस्त्र), होम, उद्दाम पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

य—समयः, हयः। पर किसलय, हृदय, इन्द्रिय, उत्तरीय,

मय क्लीवलिंग हैं; कषाय, मलय, अन्वय, अव्यय पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

र—क्षुरः (razor), अङ्कुरः। पर द्वार, अग्र, तक्र, वक्र, ?, क्षिप्र, छिद्र, नीर, तीर, दूर, कृच्छ्र, रन्ध्र, अश्रु, श्वभ्र (a ole), गभीर, क्रूर, विचित्र, केयूर, केदार, उदर, अजस्र (द्रा), शरीर, कन्दर, मन्दर, पञ्जर, जठर, काश्मीर, नार, ?र, शिशिर, तन्त्र, यन्त्र, क्षत्र, क्षेत्र, मित्र, कलत्र, चित्र, सूत्र, वक्त्र (मुख), नेत्र, गोत्र, अङ्गुलित्र, भस्त्र, शास्त्र, वस्त्र, पत्र, पात्र छत्र क्लीवलिङ्ग हैं; चक्र, वज्र, अन्धकार, सार, पार, क्षीर, तोमर, शृङ्गार, भृङ्गार, तिमिर, पुंलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग हैं।

ष—यूषः वृक्षः। पर शिरीष, जोष (ease), अम्बरीष (a frying pan), पीयूष, पुरीष (मल), किल्बिष, कल्मष (पाप) क्लीवलिंग हैं; यूष (soup), करीष (dried cow-dung), मिष, विष, वर्ष पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

स—वत्सः, वायसः, महानसः (kitchen)। पर पनस, बिस, साहस क्लीवलिंग हैं; चमस, निर्यास, उपवास, कार्पास, वास, मास, कास (cough), कांस (metal), मांस पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

स्त्रीलिङ्ग—Feminine

११ ऋकारान्ता मातृदुहितृस्वसृयातृननान्दरः—ऋकारान्त मातृ, दुहितृ, स्वसृ, पोतृ (priest), ननान्दृ और यातृ (पति की भ्रातृवधू) शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

१२ अन्यूप्रत्ययान्तो धातुः—अनि और ऊ प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं, यथा, अवनिः, चमूः। पर अशनि (वज्र), सरणि, अरणि (काष्ठ) पुंलिंग और स्त्रीलिंग हैं।

१४ मिन्यन्तः—धातु के परे मि और नि प्रत्यय के योग से उत्पन्न शब्द स्त्रीलिंग हैं, यथा, भूमिः, ग्लानिः। पर वह्नि, वृष्णि, अग्नि पुंलिंग हैं; श्रेणि, योनि और ऊर्मि पुंलिंग और स्त्रीलिंग हैं।

१५ क्तिन्नन्तः—क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं; यथा; धृतिः, मतिः, भक्तिः।

१६ ईकारान्तश्च—ईप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं, यथा; लक्ष्मीः।

१७ ऊङाबन्तश्च—ऊङ्, ङी और आप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं; यथा, कुरूः, विद्या, काली।

१८ य्वन्तमेकाक्षरम्—एकाक्षर ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; यथा, श्रीः, भूः (पृथिवी)।

१९ विंशत्यादिरानवतेः—विंशति से नवति पर्यन्त संख्या-वाचक शब्द स्त्रीलिंग हैं; विंशतिः, त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टिः, सप्ततिः, अशीतिः, नवतिः।

२० दुन्दुभिरक्षेषु—अक्ष अर्थ में दुन्दुभि स्त्रीलिंग है।

२१ नाभिरक्षत्रिये—अक्षत्रिय अर्थ में नाभि स्त्रीलिंग है।

२२ तलन्तश्च—तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग हैं, यथा, शुक्लता, ग्रामता (ग्रामस्य समूहः), देवता, ब्राह्मणता।

२३ भूमिविद्युत्सरिल्लतावनिताभिधानानि—भूमि, विद्युत्, सरित्, लता और वनिता वाचक शब्द स्त्रीलिंग हैं, यथा; भूः, सौदामिनी, निम्नगा, वल्ली, योषित्। पर यादस् (aquatic animal) क्लीबलिंग है।

२४ भास् (light) स्रक्, स्रुक् (spoon), दिक्, उष्णिह् (वेदांग) और उपानह् स्त्रीलिंग हैं।

२५ स्थूणा (post) और ऊर्णा स्त्रीलिंग और क्लीबलिंग हैं।

२६ प्रावृष्, विप्रुष् (जलबिन्दु), रुष्, त्विष् और अप् स्त्रीलिंग हैं।

२७ दर्वि (spoon), वेदि, खनि, कृषि, ओषधि, कटि और अंगुलि स्त्रीलिंग हैं (पक्षान्तर में ङीप् होता है, यथा; वेदी, दर्वी इत्यादि)।

२८ अप् सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वञ्च— अप्, सुमनस्, समा (year), सिकता और वर्षा स्त्रीलिंग और बहुवचनान्त हैं। पर देवतावाची सुमनस्, पुंलिंग और बहुवचनान्त है।

क्लीवलिङ्ग—Neuter.

२९ भावे ल्युडन्तः— भाववाच्य में ल्युट् (अनट्) प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिंग हैं; यथा, हसनम्, शयनम्।

३० निष्ठा च— निष्ठा प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिंग हैं; यथा, हसितम्, गीतम्।

३१ त्वष्यञौ तद्धितौ— तद्धित के त्व और ष्यञ् प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिंग हैं; यथा, शुक्लत्वम्, शौक्ल्यम्।

३२ भाव और कर्म अर्थ में यत्, य, ढक्, यक्, अञ्, मन्, ञ, [redacted] प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग हैं। यथा, स्तेयम् (चोरी), सख्यम्, आधिपत्यम्, द्वैहायनम् (दो वर्ष का), पितापुत्रम्।

३३ अव्ययीभावः— अव्ययीभाव समास के शब्द क्लीवलिंग हैं; यथा, उपनगरम्, यथाशक्ति, अधिहरि।

३४ द्वन्द्वैकत्वम्—समाहार द्वन्द्व के शब्द क्लीवलिंग हैं; यथा, पाणिपादम्।

३५ अनञ्कर्मधारयात् छाया—बाहुल्य अर्थ में छाया क्लीवलिंग है; यथा, शरच्छायम्, इक्षुच्छायम् (इक्षूणां छाया)।

३६ राजा मनुष्यपूर्वासभा— राजन् तथा मनुष्यभिन्न अन्य शब्दों के परे सभा शब्द क्लीवलिंग है; यथा, राजसभम्, पिशाचसभम्।

सुरा, सेना, छाया, शाला और निशा समास में विकल्प से स्त्रीलिंग होते हैं; यथा, यवसुरा, यवसुरम्; शत्रुसेना, शत्रुसेनम्; वृक्षछाया, वृक्षच्छायम्; गोशाला, गोशालम्; महानिशा, महानिशम्।

३७ संख्यापूर्वा रात्रिः—संख्यावाचक पद पूर्व में हो तो रात्रि शब्द क्लीवलिंग होता है; यथा, त्रिरात्रम्।

३८ इसुसन्तः—इस् और उस् भागान्त शब्द क्लीवलिंग होते हैं; यथा, हविस्, धनुस्। पर अर्चिस् क्लीवलिंग और स्त्रीलिंग है।

३९ मुख, नयन, लोह, वन, मांस, रुधिर, धनुः, विवर, जल, हल, धन और अन्न वाचक शब्द क्लीवलिंग होते हैं।

४० लोपधः—ल् उपधा वाले शब्द क्लीवलिंग होते हैं; यथा, कुलम्, कूलम्, स्थलम्। पर तूल, उपल, ताल, तरल, कम्बल पुंलिंग हैं। शील, मूल, मंगल, कमल, तल, मूसल और मूल पुंलिंग और क्लीवलिंग हैं।

४१ शतादिः संख्या—संख्यावाचक शत इत्यादि क्लीवलिंग हैं; यथा, शतम्, सहस्रम्। पर अयुत, प्रयुत पुंलिंग हैं। कोटि स्त्रीलिंग है।

४२ मन् द्व्यच्कोऽकर्तरि—कर्त्तरि-भिन्न वाच्य में मन् भागान्त शब्द क्लीवलिंग हैं; यथा, कर्म, वर्म। पर अणिमा, लघिमा, पुंलिंग हैं; महान् पुंलिंग और क्लीवलिंग है।

४३ असन्तो द्व्यच् कः—अस् भागान्त शब्द क्लीवलिंग है; यथा, यशः, मनः, तपः। पर चन्द्रमा पुंलिंग और अप्सरस्

स्त्रीलिंग है।

४४ प्रायः— त्र-प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिंग हैं, यथा, पत्र छत्रम्। पर यात्रा, मात्रा, भस्त्रा (bellows), दंष्ट्रा स्त्रीलिंग हैं; मूत्र, आमत्र, छात्र, पुत्र, मन्त्र, उष्ट्र पुंलिंग हैं; पत्र (leaf), पात्र, पवित्र, सूत्र पुंलिंग और क्लीबलिंग हैं।

४५ बल, कुसुम, पत्तन, रण वाचक शब्द क्लीबलिंग हैं। पर आहव (रण) और संग्राम पुंलिंग और आजि (रण) स्त्रीलिंग हैं।

४६ आमलकम्, आम्रम् इत्यादि फलजाति तथा वियत्, जगत्, नवनीत, अमृत, निमित्त, चित्त, वित्त, व्रत, रजत, वृत्त आज्य, कुलिश, पीठ, अङ्कु, अन्न, आस्पद, आकाश, धान्य, शस्य, काव्य, पण्य, सत्य, अपत्य, मूल्य, मद्य, हर्म्य, सैन्य, कुटुम्ब, कवच इत्यादि क्लीबलिंग हैं।

N. B. इनके अतिरिक्त शुब्दरूप प्रकरण में अक्षर के क्रमानुसार पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग शब्दों की तालिका दी गयी है, उसमें भी लिङ्ग का ज्ञान हो सकता है।

धातुकोष

"1. 2. 3. इत्यादि Conjugation के बोधक हैं। A. से आत्मनेपदी, P. से परस्मैपदी, U. से उभयपदी धातु समझना चाहिये।"

अक् 1 P. to go tortuously लट्-अकति, लोट् अकतु, लङ्-आकत्, विधिलिङ्-अकेत्। लुट्-अकिता। लृट्-अकिष्यति। लृङ्-आकिष्यत्। आशीर्लिङ् अक्यात्। लिट्-आक, आकिथ। लुङ्-आकीत्, आकिषाम्। क्त-अकितः, तव्य-अकितव्यः, क्त्वा-अकित्वा, तुम्-अकितुम्। णिच्-आकयति-ते। कर्मणि-अक्यते।

अञ्च् 1 P. to go, to worship. अञ्चति। अञ्चिता। अञ्चिष्यति। आञ्चिष्यत्। अञ्च्यात्। आनञ्च, आनञ्चिथ। आञ्चीत्, आञ्चिष्टाम्। अञ्चितः (worshipped), अक्तः (moved), अञ्चितव्यः; अञ्चित्वा, अक्त्वा; अञ्चितुम्। अञ्चयति। अञ्च्यते, अच्यते।

अट् 1 P. to go. अटति, अटिता, अटिष्यति, आटिष्यत्, अट्यात्, आट, आटीत्, अटितः। अटित्वा, अटितुम्, आटयति-ते, अट्यते, अटाट्यते (यङन्त), अटिटिषति (सनन्त)।

अण् 4 A. to breathe, to live. अण्यते, अणिता, अणिष्यते, आणिष्यत अणिषीष्ट, आणे, आणिष्ट, अणितः, आणयति, अण्यते, अणिणिषते।

अत् 1 P to go अतति, अतिता, अतिष्यति, आतिष्यत्, अत्यात्, आत, आतीत, अतितः, आतयति-ते, अत्यते, अतितिषति।

अद् 2 P. to eat, अत्ति, अत्ता, अत्स्यति, आत्स्यत्, अद्यात्; जघास, जक्षतुः, जक्षुः, जघसिथ (आद, आदिथ), अघसत्, अघसताम्, अघसन्; जग्धः, अन्नम्, घासः, जग्ध्वा, अत्तुम्, आदयति-ते, अद्यते, जिघत्सति।

अन् 2 P. to breathe, to live. अनिति, अनितः, अनन्ति, आनीत्, आनत्, अनिता, अनिष्यति, आनिष्यत्, अन्यात्, आन, आनीत्, आनिष्टाम्; अनितः, आनयति-ते, अन्यते, अनिनिषति।

अय् 1 A. to go अयते, अयिता, अयिष्यते, आयिष्यत, अयिषीष्ट, अयाञ्चक्रे, आयिष्ट, आयिषाताम्, आयिढ्वम्; अयितः, आययति-ते, अय्यते, अयियिषते, with परा—पलायते।

अर्च् 1 P. 10 U. to worship अर्चति, अर्चयति-ते; अर्चिता, अर्चयिता, अर्चिष्यति, अर्चयिष्यत; अर्च्यात्, आनर्च, अर्चयाञ्चकार, आर्चीत्, अर्चितः, अर्चनीयः, अर्चयति-ते, अर्च्यते,

चिषति-ते ।

अर्ज् to earn, अर्द् to ask, to kill, अर्ह्, to worship, eserve-अर्च् के समान। अर्ह् 10 U. का लुङ्-आर्जिहत्-त।

र्थ् 10 A. to beg. अर्थयते, अर्थयिता, अर्थयिष्यते, ष्यत अर्थयिषीष्ट, अर्थयाञ्चक्रे-यमूव-आस, आर्तथत, अर्थितः, ते अर्तिथयिषते।

व् 1 P. to protect. अवति, अविता, अविष्यत्, ति, अव्यात्, आव, आवीत, अवितः, आवयति-ते, अव्यते, यति।

श् 5 A. to pervade. अश्नुते, अशिता, अष्टा, अशिष्यते, त, अक्ष्यते, अशिषीष्ट, अक्षीष्ट, आनशे, आशिष्ट(आशिशत्-; अशित्वा, अष्ट्वा; आशयति-ते, अश्यते, अशिशिषते।

9 P. to eat. अश्नाति, अश्यात्, अशिता, आशीत्,

2 P. to be. अस्ति, भविता, भविष्यति, भूयात्, भूत्, भूतः, भवितव्यः, भवनीयः, भूयते, बुभूषति, (यङन्त)।

4 P. to throw. अस्यति, असिता, असिष्यति, , असत्यात्, आस्थत्, आस, अस्त; असित्वा, अस्त्वा, अस्यते, असिसिषति।

5 P. to obtain, to pervade आप्नोति, आप्ता, आप्स्यत्, आप्यात्, आप, आपत्, आप्तः, आपयति।

2 A. to sit आस्ते, आसिता, आसिष्यते, आसिषीष्ट, आसाञ्चक्रे यमूव-आस, आसिष्ट, आसयति, आस्यते, आसिसिषते।

इ 1. P. 2. P. to go. अयति, एति; एता, एष्यति, ऐष्यत्, ईयात्; इयाय, ईयतुः, ईयुः, अगात्; इतः; गमयति, अययति, ईयते, जिगमिषति।

इ with अधि 2A. to study. अधीते, अध्येता, अध्येष्यते; अध्यगीष्यत, अध्यैष्यत; अध्येषीष्ट, अधिजगे; अध्यगीष्ट, अध्यैष्ट; अधीतः, अधीत्य, अध्येतुम्, अध्यापयति, अधीयते।

इष् 1. P. to wish. इच्छति, एषिता, एष्टा; एषिष्यति, ऐषिष्यत्, इष्यात्, इयेष; ऐषीत्, इष्टः, एषित्वा, इष्ट्वा; एषितुम्, एषयति-ते, इष्यते, एषिषिषति।

इष् 4 P. to go. इष्यति, एषिता, इयेष, ऐषीत्, इषितः।

ईक्ष् 1 A. to see ईक्षते, ईक्षिता, ईक्षिष्यते, ऐक्षिष्यत, ईक्षिषीष्ट, ईक्षाञ्चक्रे; ऐक्षिष्ट, ऐक्षिषाताम्, ऐक्षिषाः; ईक्षितः, ईक्षयति-ते, ईचिक्षिषते।

ईड् 2 A. to praise. ईट्टे, ईडिता, ईडिष्यते, ऐडिष्यत, ईडिषीष्ट, ईडाञ्चक्रे, ऐडिष्ट, ईडितः, ईडयति-ते, ईड्यते, ईडिडिषते।

ईर् 2 A. to go to move. ईर्त्ते, ईरिता, ईरिष्यते ऐरिष्यत, ईरिषीष्ट, ईराञ्चक्रे, ऐरिष्ट, ईरितः, ईरयति-ते, ईर्य्यते, ईरिरिषते।

ईर्ष्य् 1. P. to envy. ईर्ष्यति, ईर्ष्यिता, ईर्ष्यिष्यति, ईर्ष्याञ्चकार, ऐर्ष्यीत्, ईर्ष्यित, ईर्ष्ययति-ते, ईर्ष्यते, ईर्ष्यिषिषति।

ईश् 2 A. to rule, ईष्टे, ईशिता, ईशिष्यते, ऐशिष्यत, ईशिषीष्ट, ईशाञ्चक्रे, ऐशिष्ट, ईशितः, ईशयति-ते, ईश्यते।

ईह् 1 A. to aim at. ईहते, ईहिता, ईहिष्यते, ऐहिष्यत, ईहिषीष्ट, ईहाञ्चक्रे, ऐहिष्ट, ईहितः, ईहयति-ते, ईह्यते,

ईर्क्षिष्यते।

उञ्छ् 1, 6 P. to glean. उञ्छति, उञ्छिष्यति, उञ्छाञ्चकार: औञ्छीत्।

उष् 1, P. to burn, to punish. ओषति, ओषिता, ओषिष्यति, औषिष्यत्, उष्यात्, ओषाञ्चकार, उवोष, औषीत्, ओषितः, उषितः, उष्टः, ओषयति, उष्यते, ओषिषिषति।

ऊर्णु 2 U. to cover, to hide. ऊर्णोति, ऊर्णौति, ऊर्णुते; ऊर्णविता, ऊर्णुविता, ऊर्णविष्यति-ते, ऊर्णुविष्यति-ते, और्णाविष्यत, और्णविष्यत्, और्णुविष्यत; ऊर्णविषीष्ट, ऊर्णुविषीष्ट, ऊर्णुनाव, ऊर्णुनुवे; और्णविष्ट, और्णुविष्ट, ऊर्णूयते।

ऋ 1 P. to go, to get. 3 P. to go. ऋच्छति, इयर्ति; अर्ता, अरिता, अरिष्यति, आरिष्यत् अर्यात्, आर; आर्षीत्, ऋतः, ऋत्वा; अर्पयति-ते, अर्प्यते, अरिरिषति।

ऋध् 4 P. to prosper, to please. ऋध्यति, अर्धिता, अर्धिष्यति, आनर्ध, आर्धीत्, ऋद्धः, ऋद्ध्वा, अर्धित्वा, अर्धितुम्, अर्धयति-ते, ऋध्यते, अर्दिधिषति, ईर्त्सति।

ॠ 9 P. to go. ऋणाति, अरिष्यति, अरीष्यति; ईर्यात्, अराञ्चकार, आरीत्, ईर्णः।

एध् 1 A. to grow, to prosper. एधते, एधिता, एधिष्यते, ऐधिष्यत, एधिषीष्ट, एधाञ्चक्रे, ऐधिष्ट, एधितः, एधयति-ते, एध्यते, एदिधिषते। with उप-उपैधते।

कण् 1 P. to cry in distress. कणति, कणिता, कणिष्यति, अकणिष्यत्, कण्यात्, चकाण, अकणीत्, अकाणीत्; कणितः, काणयति-ते, कण्यते।

कथ् 10 U. to tell. कथयति, कथयिता, कथयिष्यति, अकथयिष्यत्, कथ्यात्, कथयिषीष्ट, कथयाञ्चकार, अचकथ-

त्-त, कथितः, कथ्यते, चिकथयिषति।

कम् 1 A. to desire. कामयते, कामयिता, कमिता; कामयिष्यते, कमिष्यते; अकामयिष्यत, अकमयिष्यत, कामयिषीष्ट, कमिषीष्ट; कामयाञ्चक्रे, चकमे, अचीकमत्, अचकमत्; कान्तः, कामयित्वा, कान्त्वा, कमित्वा, कामयितुम्, काम्यते, कम्यते; चिकामयिषते, चिकमिषते; चङ्क्रम्यते।

कम्प् 1 A. to shake, to tremble. कम्पते, कम्पिता, कम्पिष्यते, अकम्पिष्यत, कम्पिषीष्ट, चकम्पे, अकम्पिष्ट, कम्पितः, कम्प्यते, चिकम्पिषते।

कर्ण् 10 U. to pierce. कर्णयति-ते, कर्णयिता, कर्णयिष्यति-ते, अकर्णयिष्यत्-त, कर्णयाञ्चकार, अचकर्णत्-त।

कल् 10 U. to go, to count कलयति-ते, कलयिता, कलयिष्यति-ते, अकलयिष्यत्-त, कलयाञ्चकार, अचकलत्-त, कलितः।

काङ्क्ष् 1 P. to desire, to wish. काङ्क्षति, काङ्क्षिता काङ्क्षिष्यति; अकाङ्क्षिष्यत्, काङ्क्ष्यात्, चकाङ्क्ष, अकाङ्क्षीत्, काङ्क्षितः, काङ्क्षयति-ते; काङ्क्ष्यते, चिकाङ्क्षिषति।

काश् 1, 4 A. to shine. काशते, काश्यते, काशिता, काशिष्यते, अकाशिष्यत, काशिषीष्ट, चकाशे, काशाञ्चक्रे, अकाशिष्ट, काशितः, काशयति-ते, चिकाशिषते।

कास् 1 A. to cough. कासते, कासाञ्चक्रे, अकासिष्ट, (like काश्)।

कित् 1 P. to cure. चिकित्सति, चिकित्सिता, चिकित्सिष्यति, अचिकित्सीत्, अचिकित्सिष्यत्, चिकित्साञ्चकार, चिकित्सितः, चिकित्सयति, चिकित्स्यते, चिचिकित्सिषति।

कुप् 4 P. to be angry. कुप्यति, कोपिता, कुपिष्यति,

अकोपिष्यत, कुप्यात्, चुकोप, अकुपत्, कुपितः, कोपयति-ते कुप्यते, चुकोपिषति, चुकुपिषति।

कुस् 4 P. embrace. कुस्यति, कोसिता, कोसिष्यति, अकोपिष्यत्, कुस्यात्, चुकोस, अकुसत् कुसितः, कोसयति-ते कुस्यते, चुकोसिषति, चुकुसिषति।

कूज् 1 P. to coo. कूजति, कूजिता, कूजिष्यति, अकूजिष्यत्, कूज्यात्, चुकूज; अकूजीत्, कूजितः, कूजयति-ते, कूज्यते, चुकूजिषति।

कृ 8 U to do. करोति, कुरुते; कर्ता, करिष्यति-ते, अकरिष्यत्-त; क्रियते, क्रियात्, कृषीष्टः, चकार, चक्रे, अकार्षीत्, अकृत; कृतः, कर्तुम्, कारयति-ते, चिकीर्षति ते, चेक्रीयते।

कृत् 6 P. to cut. कृन्तति, कर्तिता, कर्तिष्यति, कर्त्स्यति, अकर्तिष्यत्, अकर्त्स्यत्, कृत्यात्, चकर्त, अकर्तीत्, कृत्तः, कर्तयति, कृत्यते; चिकर्तिषति, चिकृत्सति।

क्लृप् 1 A. to be able. कल्पते, कल्पिता, कल्पिष्यते, कल्प्स्यते, अकल्पिष्यत, अकल्प्स्यत, कल्पिषीष्ट, क्लृप्सीष्ट, चक्लृपे, अक्लृपत्, अकल्पिष्ट, अक्लृप्त, कल्पितुम्, कल्प्तुम्, कल्पयति-ते, कल्प्यते; चिकल्पिषते, चिक्लृप्सते-ति।

कृश् 4 A. to become thin. कृश्यति, कर्शिष्यति, चकर्श, अकृशत्।

कृष् 1 P. to draw, to plough. कर्षति; कर्ष्टा, क्रष्टा; कर्क्ष्यति, क्रक्ष्यति, अकर्क्ष्यत्, अक्रक्ष्यत; कृष्यात्, चकर्ष; अकार्क्षीत्, अक्राक्षीत्, अकृक्षत्, कृष्टः, कर्षयति-ते, कृष्यते, चिकृक्षति।

कृष् 6 U. to plough. कृषति-ते, कर्क्ष्यति-ते, क्रक्ष्यति-ते,

कृष्यात्, कृक्षीष्ट ।

कॄ 6 P. to scatter. किरति, करिता, करीता, करिष्यति, करीष्यति, कीर्य्यात्, चकार, अकारीत्, कीर्णः, कारयति-ते, कीर्य्यते, चिकरिषति ।

कृत् 10 U to sound. कीर्त्तयति-ते, कीर्त्तयाञ्चकार-चक्रे कीर्त्यात्, कीर्त्तयिषीष्ट; अचीकृतत्-त, अचिकीर्तत्-त, कीर्तितः, कीर्तिः, कीर्त्यते ।

क्रन्द् 1 P. to cry क्रन्दति, क्रन्दिता, क्रन्दिष्यति, अक्रन्दिष्यत्, क्रन्द्यात्, चक्रन्द, अक्रन्दीत्, क्रन्दितः, क्रन्दयति-ते, क्रन्द्यते, चिक्रन्दिषति, चाक्रन्द्यते ।

क्रम् 1 U. and P. to walk. क्रामति, क्राम्यति, क्रमते; क्रमिता, क्रन्ता; क्रमिष्यति, क्रंस्यते, अक्रमिष्यत, अक्रंस्यत; क्रम्यात्, क्रंसीष्ट, चक्राम, चक्रमे, अक्रमीत्, अक्रंस्त, क्रान्तः, क्रमयति-ते, चिक्रमिषति, चिक्रंसते ।

क्री 9 U. to buy. क्रीणाति, क्रीणीते, क्रेता क्रेष्यति-ते, क्रीयात्, क्रेषीष्ट, चिक्राय, चिक्रिये; अक्रैषीत्, अक्रेष्ट; क्रीतः, क्रापयति-ते, क्रीयते, चिक्रीषति-ते ।

क्रीड् 1 P. to play. क्रीडति, क्रीडिता, क्रीडिष्यति, अक्रीडिष्यत्, क्रीड्यात्, चिक्रीड, अक्रीडीत्, क्रीडितः, क्रीडयति-ते, क्रीड्यते, चिक्रीडिषति ।

क्रुध् 4 P. to be angry. क्रुध्यति, क्रोद्धा, क्रोत्स्यति, अक्रोत्स्यत्, क्रुध्यात्, चुक्रोध, अक्रुधत्, क्रुद्धः, क्रोधयति-ते, क्रुध्यते, चुक्रुत्सति ।

क्रुश् 1 P. to cry, to call. क्रोशति, क्रोष्टा, क्रोक्ष्यति, अक्रोक्ष्यत्, क्रुश्यात्, चुक्रोश, अक्रुक्षत्, क्रुष्टः, क्रोशयति-ते, चुक्रुक्षति ।

क्लम् 1 & 4 P. to be tired. क्लामति, क्लाम्यति, क्लमिता, क्लमिष्यति, अक्लमिष्यत्, क्लम्यात्, चक्लाम, अक्लमत्, क्लान्तः, क्लम्यते, चिक्लमिषति।

क्लिश् 4 A. to be afflicted. क्लिश्यते, क्लेशिता, क्लेशिष्यते, अक्लेशिष्यत, क्लेशिषीष्ट, चिक्लिशे, अक्लेशिष्ट, क्लिष्टः, क्लिश्यते, चिक्लिशिषते, चिक्लेशिषते।

क्लिश् 9 P. to distress क्लिश्नाति; क्लेशिता, क्लेष्टा, क्लेशिष्यति, क्लेक्ष्यति, क्लिश्यात्, चिक्लेश; अक्लेशीत्, अक्लिक्षत, चिक्लिशिषति, चिक्लेशिषति, चिक्लिक्षति।

क्षम् 1 A. to bear. क्षमते, क्षमिता, क्षन्ता, क्षमिष्यते क्षंस्यते, क्षमिषीष्ट, क्षंसीष्ट, चक्षमे, अक्षमिष्ट, अक्षंस्त, क्षमितः, क्षमयति, क्षम्यते; चिक्षमिषते, चिक्षंसते।

क्षम् 4 P. to endure. क्षाम्यति, क्षम्यात्, चक्षाम, अक्षमत्।

क्षर् 1 P. to flow. क्षरति, क्षरिता, अक्षरिष्यत्, क्षर्यात्, चक्षार, अक्षारीत्, क्षरितः, क्षारयति, क्षर्यते, चिक्षरिषति।

क्षल् 1 P. to wash. क्षलति, चक्षाल, अक्षालीत्, (like क्षर्)। क्षल् 10 P. to wash. क्षालयति—ते, क्षालयाञ्चकार—चक्रे, अचिक्षलत्-त।

क्षि 1. 6. 5. 9. P. क्षयति, क्षियति, क्षिणोति, क्षिणाति, क्षेता, क्षेष्यति, क्षीयात्, चिक्षाय, अक्षैषीत् क्षीणः, क्षितः, क्षापयति, क्षीयते, चिक्षीषति।

क्षिप् 4P, 6U, क्षिप्यति, क्षिपति-ते, क्षेप्ता, क्षेप्स्यति, क्षेप्स्यते, क्षिप्यात्, क्षिप्सीष्ट, चिक्षेप, अक्षैप्सीत्, अक्षिप्त, क्षिप्तः, क्षेपयति, क्षिप्यते, चिक्षिप्सति-ते।

क्षुद् 7U, to pound, to grind क्षुणत्ति, क्षुन्ते, क्षोत्ता,

क्षोत्स्यति-ते, क्षुद्यात्, चुक्षोद, अक्षुदत्, अक्षौत्सीत्, अक्षुत्त, क्षुण्णः, क्षोदयति, क्षुद्यते, चुक्षुत्सति-ते।

क्षुध् 4P, to be hungry. क्षुध्यति, क्षोद्धा, क्षोत्स्यति, अक्षोत्स्यत्, क्षुध्यात्, अक्षुधत्, क्षुधितः।

क्षुभ् 1A, 4, 9P, to disturb क्षोभते, क्षुभ्यति, क्षुभ्नाति, क्षोभिता, क्षोभिष्यति-ते, क्षोभिषीष्ट, क्षुभ्यात्, चुक्षुभे, चुक्षोभ अक्षोभिष्ट, अक्षुभत्, अक्षोभीत्, क्षुब्धः, क्षुभितः, क्षोभयति-ते क्षुभ्यते, चुक्षुभिषत्-ति, चुक्षुभिषते-ति।

खण्ड् 10 U. खण्डयति-ते, खण्डयामास, अचखण्डत्, खण्डितः।

खन् 1 U, to dig खनति-ते, खनिता, खनिष्यति-ते, अखनिष्यत्-त, खन्यात्, खायात्, खनिषीष्ट; चखान, चख्ने, अखनीत्, अखानीत्, अखनिष्ट, खातः, खानयति-ते, खन्यते, चिखनिषति-ते।

खाद् 1 P. to eat खादति, खादिता, खादिष्यति, अखादिष्यत्, खाद्यात्, चखाद, अखादीत्, खादितः, खादयति-ते, खाद्यते, चिखादिषति।

खिद् 6P. to afflict, 4&7A, to suffer pain खिन्दति, खिद्यते, खिन्ते; खेत्ता, खेत्स्यति-ते; चिखेद, चिखिदे, अखैत्सीत्, अखित्त, खिन्नः, चिखित्सति-ते।

खेल् 1 P. to play खेलति, खेलिता, खेलिष्यति, अखेलिष्यत्, चिखेल, अखेलीत्, खेलितः, खेलयति, चिखेलिषति।

ख्या 2P. to tell ख्याति, ख्याता, ख्यास्यति, अख्यास्यत्, ख्यायात्, ख्येयात्; चख्यौ, अख्यत्, ख्यातः, ख्यापयति, ख्यायते, चिख्यासति।

गण् 10 U. to count गणयति-ते, गणयिता, गणयि-

ण्यति-ते, गण्यात्, गणयिषीष्ट, गणयाञ्चकार-चक्रे; अज
त, अजगणन्-त; जिगणयिषति-ते ।

गद् 1 P. to speak गदति, गदिता, गदिष्यति
दिष्यत्, गद्यात्, जगाद; अगदीत्-अगादीत्, गदितः
यति-ते, गद्यते; जिगदिषति ।

गम् 1 P. to go गच्छति, गन्ता, गमिष्यति, अगं
गम्यात्, जगाम, अगमत्, गतः, गमयति-ते,
जिगमिषति ।

गर्ज् 1 P & 10 U. to roar. गर्जति, गर्ज
गर्जिता, गर्जिष्यति, गर्ज्यात्, जगर्ज, अगर्जीत्, गर्जितः,
र्जिषति; जागर्ज्यते ।

गर्ह् 1 A & 10 U. to censure गर्हते (गर्हति),
ते, गर्हयिता, गर्हिता, गर्हयिष्यति-ते, गर्हिष्यति; गर्हया
चक्रे, गर्हिषीष्ट, जगर्हे-जगर्ह; अगर्हिष्ट, अजगर्हत्-त, अ
जिगर्हयिषति-ते, जिगर्हिषति ।

गाह् 1 A. to bathe गाहते, गाहिता, गाढा, गा
घाक्ष्यते; गाहिषीष्ट, घाक्षीष्ट; जगाहे; अगाहिष्ट, अगाढः,
जिगाहिषते, जिघाक्षते ।

गुप् 1 P. to defend, conceal. गोपायति; गोप
गोपिता, गोप्ता, गोपायिष्यति, गोपिष्यति, गोप
गोपाय्यात्, गुप्यात्, जुगोप, गोपायाञ्चकार, अगोप
अगौप्सीत्, गोपायितः, गुप्तः, जुगोपायिषति, जुगु
जुगोपिषति, जुगुप्सति ।

गुह् 1U. to cover, to keep secret. गूहति-ते,
गोढा, गूहिष्यति-ते, घोक्ष्यति-ते, गुह्यात्, गूहिषीष्ट,
जुगूह, जुगुहे; अगूहीत्, अगूहिष्ट, अघुक्षत्-त, अगूढ,

गुह् १, गृह गूहयति ते, गुह्यते, जुघुक्षति ते ।

गॄ 6 P. to swallow. गिरति, गिलति; गरिता, गरीता, गलिता, गलीता, गरिष्यति, गरीष्यति, गलिष्यति, गलीष्यति, गीर्यात्, जगार, जगाल, अगारीत्, अगालीत्; गीर्णः, गारयति, गालयति, गीर्यते, जिगरिषति, जिगलिषति ।

गॄ 9 P. to speak. गृणाति, गरिष्यति, गरीष्यति (like कॄ)।

गै 1 P. to sing. गायति, गाता, गास्यति, अगास्यत्, गेयात्, जगौ, अगासीत्, गीतः, गीतिः, गापयति-ते, गीयते, जिगासति ।

ग्रन्थ् 1 A. to bend, to twine. ग्रन्थते, ग्रन्थिता, ग्रन्थिष्यते, अग्रन्थिष्यत, जग्रन्थे, अग्रन्थिष्ट, ग्रन्थित, ग्रन्थयति, ग्रथ्यते, जिग्रन्थिषते ।

ग्रन्थ्, 9 P. to tie. ग्रथ्नाति, ग्रथान, (लोट् हि) अग्रन्थीत् ।

ग्रस् 1 A. to swallow. ग्रसते, ग्रसिता, ग्रसिष्यते, अग्रसिष्यत, ग्रसिषीष्ट, जग्रसे, अग्रसिष्ट, ग्रस्तः, ग्रसित्वा, ग्रस्त्वा, ग्रासयति-ते, जिग्रसिषते ।

ग्रह् 9 U. to take. गृह्णाति, गृह्णीते; ग्रहीता, ग्रहीष्यति-ते, गृह्यात्, ग्रहीषीष्ट, जग्राह, जगृहे, अग्रहीत्, अग्रहीष्ट, गृहीतः, गृहीतुम्, गृह्यते, जिघृक्षति-ते ।

ग्लै 1 P. to be weary. ग्लायति, ग्लाता, ग्लास्यति, अग्लास्यत्; ग्लेयात्, ग्लायात्; जग्लौ, अग्लासीत्, ग्लानः, ग्लानिः, ग्लापयति-ते, ग्लायते, जिग्लासति ।

घट् 1 A. to happen. घटते, घटिता, घटिष्यते, अघटिष्यत्, अघाटिष्यत; घटिषीष्ट, जघटे, अघटिष्ट, घटितः, घटयति-ते, जिघटिषति ।

घुष् 1 P. to declare. घोषति, घोषिता, घोषिष्यति, अघो-

घिष्यत्, घुष्यात्, जुघोष, अघुषत्, अघोषीत्, घोषितः, घुषितः, घोषयति, घुष्यते, जुघुषिषति।

घुष् 10 U, to proclaim aloud, घोषयति-ते, घोषयिता, घोषयिष्यति-ते, घुष्यात्, घोषयाञ्चकार-चक्रे, अजूघुषत्, घुषितः, घुष्टः, घोषयति, घुष्यते, जुघुषिषति।

घ्रा 1 P, to smell, जिघ्रति, घ्राता, घ्रास्यति, अघ्रास्यत्, घ्रायात्, घ्रेयात्, जघ्रौ, अघ्रात्, अघ्रासीत्, घ्रातः, घ्राणः, घ्रापयति-ते, घ्रायते, जिघ्रासति।

चकास् 2 U, to shine, चकास्ति-ते, चकासिष्यति-ते, चकासिता, चकासाञ्चकार-मास-चक्रे, अचकासीत्, अचकासिष्ट, चकासितः, चकासयति-ते, चकासिषति।

चक्ष् (with आ) 2 A, to speak, चष्टे, ख्याता, क्शाता, ख्यास्यते-ति, क्शास्यते-ति, ख्यायात्, ख्येयात्, ख्यासीष्ट, क्शायात्, क्शेयात्, क्शासीष्ट चचक्षे, चख्यौ, चख्ये, चक्शौ, चक्शे, अख्यत्-अक्शासीत्, अक्शास्त, ख्यातः, ख्यापयति-ते, क्शापयति-ते, चिख्यासते-ति, चिक्शासते-ति।

चम् 1 P, to eat, (with आ) to drink, आचमति, आचमिता, आचमिष्यति, आचचाम, आचमीत्, चान्तः, चान्त्वा, चमित्वा, चिचमिषति।

चर् 1 P, to walk, चरति, चरिता, चरिष्यति, अचरिष्यत्, चर्यात्, चचार, अचारीत्, चरितः, चारयति-ते, चर्य्यते, चिचरिषति।

चल् 1 P, to go, चलति, चलिता, चलिष्यति अचलिष्यत्, चचाल, अचालीत्, चलितः; चलयति, चालयति-ते; चिचलिषति।

चि 5 U, to collect, चिनोति, चिनुते, चेता, चेष्यति-ते, चीयात्, चेषीष्ट, चिकाय, चिचाय, चिक्ये, चिच्ये,

अचैषीत्, चितः; चापयति, चाययति, चीयते, चिचीषति-ते, चिकीषति-ते

चिन्त् 10 U, to think चिन्तयति-ते, चिन्तयिता, चिन्तयिष्यति-ते, चिन्त्यात्, चिन्तयिषीष्ट, चिन्तयाञ्चकार-चक्रे, अचिचिन्तत्-त, चिन्तितः, चिन्तयित्वा, चिन्त्यते, चिचिन्तयिषति, चिचिन्तिषति।

चुर् 10 U, to steal, चोरयति-ते, चोरयिता, चोरयिष्यति-ते, चोर्य्यात्, चोरयिषीष्ट; चोरयाञ्चकार-चक्रे, अचूचुरत्-त, चोरितः, चोरयित्वा, चोर्य्यते, चुचोरयिषति-ते।

चेष्ट् 1 A, to strive, चेष्टते, चेष्टिता, चेष्टिष्यते, चेष्टिषीष्ट, चिचेष्टे, अचेष्टिष्ट, चेष्टितः, चेष्टयति, चेष्ट्यते।

च्युत् 1 P, to flow, to drop down, च्योतति, च्योतिता, च्योतिष्यति, च्युत्यात्, चुच्योत; अच्युतत्, अच्योतीत्, च्युतितः, च्योतितः, च्योतयति-ते, चुच्योतिषति, चुच्युतिषति।

छद् 1 & 10 U, to cover, छदति-ते, छादयति-ते; छदिता, छादयिता, छदिष्यति-ते, छद्यात्, छाद्यात्, चच्छाद, चच्छदे, छादयाञ्चकार-चक्रे; अच्छदीत्, अच्छादीत्, अच्छदिष्ट, अचिच्छदत्; छन्नः, छादितः; चिच्छदिषति-ते, चिच्छादयिषति-ते।

छिद् 7 U, to cut, छिनत्ति, छिन्ते, छेत्ता, छेत्स्यति-ते, छिद्यात्, छित्सीष्ट; चिच्छेद, चिच्छिदे; अच्छिदत्, अच्छैत्सीत्, अच्छित्त; छिन्नः, छेदयति-ते, छिद्यते, चिच्छित्सति-ते।

जक्ष् 2 P, to eat, जक्षिति, जक्षिता, जक्षिष्यति, जक्ष्यात्, जजक्ष, जजक्षुः, अजक्षीत्, जक्षितः, जक्षयति, जक्ष्यते, जिजक्षिषति।

जन् 4 A, to be born, जायते, जनिता, जनिष्यते, जनयिषीष्ट, जज्ञे, अजनिष्ट, जातः, जनयति, जायते, जन्यते,

जिजपिषति।

जप् 1 P, to mutter, जपति, जपिता, जपिष्यति, जप्यात्, जजाप, अजपीत्, अजापीत्; जपितः, जापयति-ते, जप्यते, जिजपिषति।

जागृ 2 P, to wake, जागर्ति, जागरिता, जागरिष्यति, जागर्यात्, जजागार-गर, जागराञ्चकार, अजागरीत्, जागरितः, जागर्यते, जिजागरिषति।

जि 1 P, to conquer, जयति, जेता, जेष्यति, अजेष्यत्, जीयात्, जिगाय, अजैषीत्, जितः, जापयति-ते, जीयते, जिगीषति।

जीव् 1 P, to live, जीवति, जीविता, जीविष्यति, अजीविष्यत्, जीव्यात्, जिजीव, अजीवीत्, जीवितः, जीवयति-ते, जीव्यते, जिजीविषति।

जॄ 4 P, to grow old, जीर्यति, जरिता, जरीता, जरिष्यति, जरीष्यति, जीर्यात्; जजार, अजारीत्, अजरत्; जीर्णः, जरयति-ते, जीर्यते; जिजरिषति, जिजरीषति, जिजीर्षति।

ज्ञा 9 P, to know, जानाति, जानीते, ज्ञाता, ज्ञास्यति-ते, ज्ञायात्, ज्ञेयात्, ज्ञासीष्ट; जज्ञौ, जज्ञे; अज्ञासीत्, ज्ञातः, ज्ञापयति-ते, ज्ञपयति-ते, ज्ञायते, जिज्ञासते।

ज्वर् 1 P, to be hot with fever or passion, ज्वरति, ज्वरिता, ज्वरिष्यति, ज्वर्यात्, जज्वार, अज्वारीत्, जूर्णः, ज्वरितः, ज्वरयति-ते, जिज्वरिषति।

ज्वल् 1 P, to burn, ज्वलति, ज्वलिता, ज्वलिष्यति, ज्वल्यात्, जज्वाल, अज्वालीत्, ज्वलितः, ज्वालयति-ते, ज्वलयति-ते, ज्वल्यते, जिज्वलिषति।

डी 1 & 4 A, to fly, डयते, डीयते, डयिता, डयिष्यते,

डयिषीष्ट, डिड्ये, अडयिष्ट; डयितः, डीनः, डाययति-ते, डिडयिषते।

ढौक् 1 A, to go, to approach, ढौकते, ढौकिता, ढौकिष्यते, ढौकिषीष्ट, डुढौके, अढौकिष्ट, ढौकितः, ढौकयति-ते, ढौक्यते, डुढौकिषते।

तक्ष् 1 & 5 P, to cut to wound, तक्षति, तक्ष्णोति, तक्षिता; तक्षिष्यति, तक्ष्यति, तक्ष्यात्, ततक्ष, अतक्षीत्, तष्टः, तक्षित्वा, तितक्षिषति।

तन् 8 U, to spread, तनोति, तनुते; तनिता, तनिष्यति-ते; तन्यात्, तनिषीष्ट; ततान, तेने, अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्ट, अतत, ततः, तनित्वा, तानयति-ते; तन्यते; तायते, तितांसति-ते; तितंसति-ते, तितनिषति-ते।

तप् 1 P, to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति, तप्यात्; ततापं, तेपतुः; अताप्सीत्, तप्तः, तापयति-ते, तप्यते, तितप्सति।

तप् 4 A, to trouble, तप्यते, तप्सीष्ट, तेपे; तेपाते; अतप्त।

तर्ज् 1 P, & 10 A, to threaten, तर्जति, तर्जयते, तर्जिष्यति, तर्जयिष्यते; ततर्ज, तर्जयाञ्चक्रे, अतर्जीत्, अततर्जत, तर्जितः, तितर्जिषति।

तड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्, ताडयिषीष्ट; ताडयाञ्चकार-चक्रे, अतीतडत्-त; ताडितः; ताडयित्वा, ताड्यते।

तुद् [illegible] U, to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोत्स्यति-ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदे; अतौत्सीत्, अतुत्त, तुन्नः, तोदयति-ते, तुतुत्सति-ते।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

ष्यति ते; तोल्यात्, तोलयिषीष्ट; तोलयाञ्चकार-चक्रे, अतूतुलत्-त, तोलितः, तुतोलयिषति।

तुष् 4 P, to be pleased, तुष्यति, तोष्टा, तोक्ष्यति, अतोक्ष्यत्, तुष्यात्, तुतोष, अतुषत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुष्यते, तुतुक्षति।

तृप् 4 P, to become satisfied, तृप्यति, तर्पिता, तप्ता, त्रप्ता; तर्पिष्यति, तप्स्यति, त्रप्स्यति; तृप्यात्, ततर्प, अतृपत्, अतर्पीत्, अत्राप्सीत्, अताप्सीत्; तृप्तः, तर्पितुम्, तर्पयति-ते; तितर्पिषति, तितृप्सति।

तॄ 1 P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरीष्यति; तीर्यात्, ततार, अतारीत्, तीर्णः, तारयति-ते, तीर्यते; तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति।

त्यज् 1 P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति, त्यज्यात्, तत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यज्यते, तित्यक्षति।

त्रप् 1 A, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपिष्यते, त्रप्स्यते; त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट, त्रेपे; अत्रपिष्ट, अत्रप्त, त्रप्तः; त्रप्त्वा, त्रपित्वा, त्रपयति-ते, तित्रपिषते।

त्रस् 1 & 4 P. to fear, त्रसति, त्रस्यति; त्रसिता, त्रसिष्यति, त्रस्यात्, तत्रास; अत्रासीत्, अत्रसीत्, त्रस्तः, त्रसित्वा, त्रासयति-ते, त्रस्यते, तित्रसिषति।

त्रै 1 A. to protect, त्रायते, त्राता, त्रास्यते; अत्रास्यत, त्रासीष्ट, तत्रे, अत्रास्त; त्रातः, त्राणः; त्रापयति-ते, त्रायते, तित्रासते।

त्वर् 1 A. to hurry, त्वरते, त्वरिता, त्वरिष्यते, त्वरिषीष्ट, तत्वरे, अत्वरिष्ट, त्वरितः, तूर्णः, त्वरयति-ते, त्वर्यते, तित्वरिषते।

दण्ड् 10 U. to punish, दण्डयति-ते, दण्डयिता, दण्डयिष्यति-ते, दण्डयिषीष्ट, दण्डयाञ्चकार-चक्रे, अददण्डत्-त।

डयिषीष्ट, डिड्ये, अडयिष्ट, डयितः, डीनः, डाययति-ते, डिडयिषते।

ढौक् 1 A, to go, to approach, ढौकते, ढौकिता, ढौकिष्यते, ढौकिषीष्ट, डुढौके, अढौकिष्ट, ढौकितः, ढौकयति-ते ढौक्यते, डुढौकिषते।

तक्ष् 1 & 5 P, to cut, to wound, तक्षति, तक्ष्णोति, तक्षिता, तक्षिष्यति, तक्ष्यति, तक्ष्यात्, ततक्ष, अतक्षीत्, तष्ट, तक्षित्वा, तितक्षिषति।

तन् 8 P, to spread, तनोति, तनुते; तनिता, तनिष्यति-ते, तन्यात्, तनिषीष्ट; ततान, तेने, अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्ट, अतत, ततः, तनित्वा, तानयति-ते, तन्यते, तायते, तितांसति-ते; तितंसति ते, तितनिषति-ते।

तप् 1 P, to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति, तप्यात्, तताप, तेपतुः; अताप्सीत्, तप्तः, तापयति-ते, तप्यते, तितप्सति।

तप् 4 A, to trouble, तप्यते, तप्सीष्ट, तेपे, तेपाते; अतप्त।

तर्ज् 1 P, & 10 A, to threaten, तर्जति, तर्जयते; तर्जिष्यति, तर्जयिष्यते; ततर्ज, तर्जयाञ्चक्रे, अतर्जीत्, अततर्जत, तर्जितः, तितर्जिषति।

तड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्, ताडयिषीष्ट; ताडयाञ्चकार-चक्रे, अतीतडत्-त; ताडितः; ताडयित्वा, ताड्यते।

तुद् 6 U, to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोत्स्यति-ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदे; अतौत्सीत्, अतुत्त, तुन्नः, तोदयति-ते, तुतुत्सति-ते।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

ते-ते; तोल्यात्, तोलयिषीष्ट; तोलयाञ्चकार-चक्रे, अतुतुलत्-
तोलितः, तुतोलयिषति।

तुष् 1 P, to be pleased, तुष्यति, तोष्टा, तोक्ष्यति, अतो-
, तुष्यात्, तुतोष, अतुषत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुष्यते, तुतुक्षति।

तृप् 1 P, to become satisfied, तृप्यति, तर्पिता, तर्प्ता,
; तर्पिष्यति, तर्प्स्यति, त्रप्स्यति; तृप्यात्, ततर्प, अतृपत्,
त्, अत्राप्सीत्, अतार्प्सीत्, तृप्तः, तर्पितुम्, तर्पयति-ते;
ति, तितृप्सति।

1 P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरी-
तीर्यात्, ततार, अतारीत्, तीर्णः, तारयति-ते, तीर्यते,
ति, तितरिषति, तितीर्षति।

त्यज् 1 P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति,
त्, तत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यज्यते,
ति।

1 A, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपिष्यते,
त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट, त्रेपे, अत्रपिष्ट, अत्रप्त; त्रप्तः, त्रप्त्वा,
त्रपयति-ते, तित्रपिषते।

1 & 4 P, to fear, त्रसति, त्रस्यति, त्रसिता, त्रसि-
ष्यात्, तत्रास, अत्रासीत्, अत्रसीत्, त्रस्तः, त्रसित्वा,
ते, त्रस्यते, तित्रसिषति।

A, to protect, त्रायते, त्राता, त्रास्यते, अत्रास्यत,
ष्ट, अत्रास्त; त्रातः, त्राणः; त्रापयति-ते, त्रायते, तित्रासते।

1 A, to hurry, त्वरते, त्वरिता, त्वरिष्यते, त्वरिषीष्ट,
रिष्ट, त्वरितः, तूर्णः, त्वरयति-ते, त्वर्यते, तित्वरिषते।

0 U, to punish, दण्डयति-ते, दण्डयिता, दण्डयि-
दण्डयिषीष्ट, दण्डयाञ्चकार-चक्रे, अददण्डत् त।

डयिषीष्ट, डिड्ये, अडयिष्ट, डयितः, डीनः, डाययति-ते, डिडयिषते।

ढौक् 1 A, to go, to approach, ढौकते, ढौकिता, ढौकिष्यते ढौकिषीष्ट, डुढौके, अढौकिष्ट, ढौकितः, ढौकयति-ते ढौक्यते, डुढौकिषते।

तक्ष् 1 & 5 P, to cut, to wound, तक्षति, तक्ष्णोति, तक्षिता, तक्षिष्यति, तक्ष्यति, तक्ष्यात्, ततक्ष, अतक्षीत्, तष्ट, तक्षित्वा, तितक्षिषति।

तन् 8 U, to spread, तनोति, तनुते; तनिता, तनिष्यति-ते, तन्यात्, तनिषीष्ट; ततान, तेने, अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्ट, अतत, ततः, तनित्वा, तानयति-ते; तन्यते, तायते, तितंसति-ते; तितांसति-ते, तितनिषति-ते।

तप् 1 P, to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति, तप्यात्, तताप, तेपतुः; अताप्सीत्, तप्तः, तापयति-ते, तप्यते, तितप्सति।

तप् 4 A, to trouble, तप्यते, तप्सीष्ट, तेपे, तेपाते, अतप्त।

तर्ज् 1 P, & 10 A, to threaten, तर्जति, तर्जयते; तर्जिष्यति, तर्जयिष्यते; ततर्ज, तर्जयाञ्चक्रे, अतर्जीत्, अततर्जत, तर्जितः, तितर्जिषति।

तड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्, ताडयिषीष्ट; ताडयाञ्चकार-चक्रे, अतीतडत्-त; ताडितः; ताडयित्वा, ताड्यते।

तुद् 6 U, to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोत्स्यति-ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदे; अतौत्सीत्, अतुत्त, तुन्नः, तोदयति-ते, तुतुत्सति-ते।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

ल्यति-ते; तोल्यात्, तोलयिषीष्ट; तोलयाञ्चकार-चक्रे, अतूतुलत्-त, तोलितः, तुतोलयिषति।

तुष् 1 P, to be pleased, तुष्यति, तोष्टा, तोक्ष्यति, अतोक्ष्यत्, तुष्यात्, तुतोष, अतुषत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुष्यते, तुतुक्षति।

तृप् 1 P, to become satisfied, तृप्यति, तर्पिता, तर्प्ता, त्रप्ता; तर्पिष्यति, तर्प्स्यति, त्रप्स्यति; तृप्यात्, ततर्प, अतृपत्, अतर्पीत्, अत्राप्सीत्, अतार्प्सीत्, तृप्तः, तर्पितुम्, तर्पयति-ते; तितर्पिषति, तितृप्सति।

तॄ 1 P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरीष्यति; तीर्यात्, ततार, अतारीत्, तीर्णः, तारयति-ते, तीर्यते, तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति।

त्यज् 1 P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति, त्यज्यात्, तत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यज्यते, तित्यक्षति।

त्रप् 1 A, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपिष्यते, त्रप्स्यते; त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट, त्रेपे, अत्रपिष्ट, अत्रप्त; त्रप्त, त्रप्त्वा, त्रपित्वा, त्रपयति-ते, तित्रपिषते।

त्रस् 1 & 4 P, to fear, त्रसति, त्रस्यति, त्रसिता, त्रसिष्यति, त्रस्यात्, तत्रास, अत्रासीत्, अत्रसीत्, त्रस्तः, त्रसित्वा, त्रासयति-ते, त्रस्यते, तित्रसिषति।

त्रै 1 A, to protect, त्रायते, त्राता, त्रास्यते,

डयिषीष्ट, डिड्ये, अडयिष्ट; डयितः, डीनः, डाययति-ते, डिडयिषते।

ढौक् 1 A. to go, to approach, ढौकते, ढौकिता, ढौकिष्यते, ढौकिषीष्ट, डुढौके, अढौकिष्ट, ढौकितः, ढौकयति-ते ढौक्यते, डुढौकिषते।

तक्ष् 1 & 5 P. to cut, to wound, तक्षति, तक्ष्णोति, तक्षिता, तक्षिष्यति, तक्ष्यति, तक्ष्यात्, ततक्ष, अतक्षीत्, तष्ट, तक्षित्वा, तितक्षिषति।

तन् 8 U. to spread, तनोति, तनुते, तनिता, तनिष्यति-ते, तन्यात्, तनिषीष्ट; ततान, तेने, अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्ट, अतत, ततः, तनित्वा, तानयति-ते; तन्यते, तायते, तितांसति-ते; तितंसति-ते, तितनिषति-ते।

तप् 1 P. to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति, तप्यात्; तताप, तेपतुः; अताप्सीत्, तप्तः, तापयति-ते, तप्यते, तितप्सति।

तप् 4 A. to trouble, तप्यते, तप्सीष्ट, तेपे, तेपाते; अतप्त।

तर्ज् 1 P. & 10 A. to threaten, तर्जति, तर्जयते; तर्जिष्यति, तर्जयिष्यते; ततर्ज, तर्जयाञ्चक्रे, अतर्जीत्, अततर्जत, तर्जितः, तितर्जिषति।

तड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्, ताडयिषीष्ट; ताडयाञ्चकार-चक्रे, अतीतडत्-त; ताडितः; ताडयित्वा, ताड्यते।

तुद् 6 U. to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोत्स्यति-ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदे; अतौत्सीत्, अतुत्त, तुन्नः, तोदयति-ते, तुतुत्सति-ते।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

ष्यति-ते; तोल्यात्, तोलयिषीष्ट; तोलयाञ्चकार-चक्रे, अतुतुलत्-त, तोलितः, तुतोलयिषति।

तुष् 1 P, to be pleased, तुष्यति, तोष्टा, तोक्ष्यति, अतोक्ष्यत्, तुष्यात्, तुतोष, अतुषत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुष्यते, तुतुक्षति।

तृप् 1 P, to become satisfied, तृप्यति, तर्पिता, तर्प्ता, त्रप्ता; तर्पिष्यति, तर्प्स्यति, त्रप्स्यति; तृप्यात्, ततर्प, अतृपत्, अतर्पीत्, अत्राप्सीत्, अतार्प्सीत्; तृप्तः, तर्पितुम्, तर्पयति-ते; तितर्पिषति, तितृप्सति।

तॄ 1 P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरीष्यति; तीर्यात्, ततार, अतारीत्, तीर्णः, तारयति-ते, तीर्यते; तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति।

त्यज् 1 P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति, त्यज्यात्, तत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यज्यते, तित्यक्षति।

त्रप् 1 A, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपिष्यते, त्रप्स्यते, त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट; त्रेपे; अत्रपिष्ट, अत्रप्त; त्रप्तः; त्रप्त्वा, त्रपित्वा, त्रपयति-ते, तित्रपिषते।

त्रस् 1 & 4 P. to fear, त्रसति, त्रस्यति; त्रसिता, त्रसिष्यति, त्रस्यात्, तत्रास; अत्रासीत्, अत्रसीत्, त्रस्तः, त्रसित्वा, त्रासयति-ते, त्रस्यते, तित्रसिषति।

त्रै 1 A. to protect, त्रायते, त्राता, त्रास्यते; अत्रास्यत, त्रासीष्ट, तत्रे, अत्रास्त; त्रातः; त्राणः; त्रापयति-ते, त्रायते, तित्रासते।

त्वर् 1 A. to hurry, त्वरते, त्वरिता, त्वरिष्यते, त्वरिषीष्ट, तत्वरे, अत्वरिष्ट, त्वरितः, तूर्णः, त्वरयति-ते, त्वर्यते, तित्वरिषते।

दण्ड् 10 U. to punish, दण्डयति-ते, दण्डयिता, दण्डयिष्यति-ते, दण्डयिषीष्ट, दण्डयाञ्चकार-चक्रे, अददण्डत्-त।

डयिषीष्ट, डिड्ये, अडयिष्ट; डयितः, डीनः, डाययति-ते, डिडयिषते ।

ढौक् 1 A, to go, to approach, ढौकते, ढौकिता, ढौकिष्यते, ढौकिषीष्ट, डुढौके, अढौकिष्ट, ढौकितः, ढौकयति-ते, ढौक्यते, डुढौकिषते ।

तक्ष् 1 & 5 P, to cut to wound, तक्षति, तक्ष्णोति, तक्षिता, तक्षिष्यति, तक्ष्यति, तक्ष्यात्, ततक्ष, अतक्षीत्, तष्ट, तक्षित्वा, तितक्षिषति ।

तन् 8 U, to spread, तनोति, तनुते; तनिता, तनिष्यति-ते; तन्यात्, तनिषीष्ट; ततान, तेने, अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्ट, अतत, ततः, तनित्वा, तानयति-ते; तन्यते; तायते, तितांसति-ते; तितंसति ते, तितनिषति-ते ।

तप् 1 P, to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति, तप्यात्, तताप, तेपतुः; अताप्सीत्, तप्तः, तापयति-ते, तप्यते, तितप्सति ।

तप् 4 A, to trouble, तप्यते, तप्सीष्ट, तेपे; तेपाते; अतप्त ।

तर्ज् 1 P, & 10 A, to threaten, तर्जति, तर्जयते; तर्जिष्यति, तर्जयिष्यते; ततर्ज, तर्जयाञ्चक्रे, अतर्जीत्, अततर्जत, तर्जितः, तितर्जिषति ।

तड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्, ताडयिषीष्ट; ताडयाञ्चकार-चक्रे, अतीतडत्-त; ताडितः; ताडयित्वा, ताड्यते ।

तुद् 6 U, to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोत्स्यति-ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदे; अतौत्सीत्, अतुत्त, तुन्नः, तोदयति-ते, तुतुत्सति-ते ।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

ति-ते; तोलयात्, तोलयिषीष्ट; तोलयाञ्चकार चक्रे, अतूतुलत्-
तोलितः, तुतोलयिषति।

तुष् 1 P, to be pleased, तुष्यति, तोष्टा, तोक्ष्यति, अतो-
त्, तुष्यात्, तुतोष, अतुषत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुष्यते, तुतुक्षति।

तृप् 1 P, to become satisfied, तृप्यति, तर्पिता, तर्प्ता,
ा; तर्पिष्यति, तर्प्स्यति, त्रप्स्यति; तृप्यात्, ततर्प, अतृपत्,
र्पीत्, अत्राप्सीत्, अतार्प्सीत्, तृप्तः, तर्पितुम्, तर्पयति-ते;
र्पिषति, तितृप्सति।

तॄ 1 P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरी-
, तीर्यात्, ततार, अतारीत्, तीर्णः, तारयति-ते, तीर्यते,
र्षति, तितरिषति, तितरीषति।

त्यज् 1 P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति,
ात्, तत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यज्यते,
क्षति।

त्रप् 1 A, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपिष्यते
ते, त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट; त्रेपे, अत्रपिष्ट, अत्रप्त; त्रप्तः त्रप्त
, त्रपयति-ते, तित्रपिषते।

त्रस् 1 & 4 P, to fear, त्रसति, त्रस्यति; त्रसिता, त्रसि-

दंश् 1 P, to bite दशति, दष्टा, दंक्ष्यति, दश्यात्, ददंश, अदांक्षीत्, दष्टः, दष्टुम्, दष्ट्वा, दंशयति-ते, दश्यते, दिदंक्षति ।

दम् 4 P, to conquer, to be tamed, दाम्यति, दमिता, दमिष्यति, दम्यात्, ददाम, देमतुः, अदमत्, दमितः, दान्तः, दमयते, only, दिदमिषति ।

दय् 4 A, to pity, to protect, to give, दयते, दयिता, दयिष्यते, दयिषीष्ट, दयाञ्चक्रे, अदयिष्ट, दयितः, दिदयिषते ।

दरिद्रा 2 P, to be poor, दरिद्राति, दरिद्रिता, दरिद्रिष्यति, दरिद्र्यात्, दरिद्राञ्चकार, ददरिद्रौ, अदरिद्रीत्, अदरिद्रासीत्, दरिद्रितः, दरिद्र्यते, दिदरिद्रासति, दिदरिद्रिषति ।

दल् 1 P, to burst open, दलति, दलिता, ददाल, अदालीत् ।

दह् 1 P, to burn, दहति, दग्धा, धक्ष्यति, अधक्ष्यत्, दह्यात्; ददाह, देहतुः; अधाक्षीत्, अदाग्धाम्, दग्धः, दाहयति-ते, दह्यते, दिधक्षति ।

दा 1 P, & 3 U, to give, यच्छति, ददाति, दत्ते, दाता, दास्यति, देयात्, दासीष्ट, ददौ, ददे, अदात्, अदित, दत्तः, दातुम्, दापयति-ते, दीयते, दित्सति-ते ।

दिव् 4 P, to shine, to play, दीव्यति, देविता, देविष्यति, दीव्यात्, दिदेव, दिदिवतुः, अदेवीत्, द्यूतः, द्यूनः, देवयति-ते, दीव्यते, दुद्यूषति, दिदेविषति ।

दिश् 6 U, to allow, दिशति-ते, देष्टा, देक्ष्यति-ते, दिश्यात्, दिक्षीष्ट, दिदेश, दिदिशे; अदिक्षत्-त, दिष्टः, दिष्ट्वा, देष्टुम्, देशयति-ते, दिश्यते, दिदिक्षति-ते ।

दीप् 4 A, to shine, to burn, दीप्यते, दीपिता, दीपिष्यते, दीपिषीष्ट, दिदीपे, अदीपिष्ट, अदीपि, दीप्तः, दीपयति-ते, दीप्यते, दिदीपिषते ।

दुह् 2 U, to milk, दोग्धि, दुग्धे, दोग्धा, धोक्ष्यति-ते, दुह्यात्, धुक्षीष्ट, दुदोह, दुदुहे, अधुक्षत्-त, अदुग्ध, दुग्धः, दोग्धुम्, दोहयति-ते, दुह्यते, दुधुक्षति-ते ।

दृ (with आ) 6 A, to regard, आद्रियते, आदर्ता; आदरिष्यते, आदृषीष्ट, आदद्रे; आदृत, आदृषाताम्, आदृतः, आदरयति-ते, आद्रियते, आदिदरिषते ।

दृश् 1 P, to see, पश्यति, द्रष्टा, द्रक्ष्यति, दृश्यात्, ददर्श; अदर्शत, अद्राक्षीत्, दृष्टः, दर्शयति-ते, दृश्यते; दिदृक्षते ।

द्युत् 1 A, to shine, द्योतते, द्योतिता, द्योतिष्यते, द्योतिषीष्ट, दिद्युते; अद्योतिष्ट, अद्युतत्, द्युतितः, द्योतितः, द्योतयति-ते; दिद्युतिषते, दिद्योतिषते ।

द्रु 1 P, to melt, to run, द्रवति, द्रोता, द्रोष्यति, द्रूयात्, दुद्राव; अदुद्रुवत्, द्रुतः, द्रावयति-ते, द्रूयते, दुद्रूषति ।

द्रुह् 4 P, to bear malice, द्रुह्यति; द्रोहिता, द्रोग्धा, द्रोढा, द्रोहिष्यति, ध्रोक्ष्यति, द्रुह्यात्, दुद्रोह (दुद्रोहिथ, दुद्रोढ, दुद्रोग्ध-लिट्-थ), अद्रुहत्, द्रुग्धः, द्रूढः; द्रोहितुम्, द्रोग्धुम्; द्रोढुम्, द्रुहित्वा, द्रोहित्वा, द्रुग्ध्वा, द्रूढ्वा; द्रोहयति-ते, द्रुह्यते, दुद्रोहिषति, दुद्रुहिषति ।

द्विष् 2 U, to hate, द्वेष्टि, द्विष्टे; द्वेष्टा, द्वेक्ष्यति-ते; द्विष्यात्, द्विक्षीष्ट; दिद्वेष, दिद्विषे; अद्विक्षत्-त, द्विष्टः, द्वेष्टुम्, द्वेषयति-ते, द्विष्यते, दिद्विक्षति-ते ।

धा 3 U, to maintain, दधाति, धत्ते; धाता, धास्यति-ते; धेयात्, धासीष्ट, दधौ, दधे; अधात्, अधित, हितः, धापयति-ते; धीयते, धित्सति-ते ।

धाव् 1 U, to run, धावति-ते, धाविता, धाविष्यति-ते, धाव्यात्, धाविषीष्ट; दधाव, दधावे; अधावीत्, अधाविष्ट;

धावितः, धौतः, धावयति-ते, दिधाविषति-ते ।

[illegible] 5 U, to shake, धुनोति, धुनुते; धोता, धोष्यति-ते; धूयात्, धोषीष्ट; दुधाव, दुधुवे; अधौषीत्, अधोष्ट; धुतः, धावयति, धूयते, दुधुषति-ते ।

धू 6 P, 5 & 9 U. धुवति, धुनोति, धुनुते, धुनाति, धुनीते; धोता, धविता; धोष्यति-ते धविष्यति-ते; धूयात्, धविषीष्ट, दुधाव, दुधुवे; अधावीत्, अधविष्ट, अधुवीत्; धूतः, धूनः; धूनयति, धूयते, दुधूषति-ते ।

धृ 1 U, to hold, धरति-ते, धर्ता, धरिष्यति-ते; ध्रियात्, धृषीष्ट, दधार, दध्रे; अधार्षीत्, अधृत; धृतः, धारयति-ते, ध्रियते, दिधीर्षति-ते ।

ध्मा 1 P, to blow, धमति, ध्माता, ध्मास्यति; ध्मायात्, ध्मेयात्, दध्मौ, अध्मासीत्, ध्मातः, अध्मापयति, ध्मायते, दिध्मासति ।

ध्यै 1 P, to think of, ध्यायति, ध्याता, ध्यास्यति; ध्यायात्, ध्येयात्; दध्यौ, अध्यासीत्, ध्यातः, ध्यापयति-ते, ध्यायते, दिध्यासति ।

ध्वंस् 1 A, to perish, ध्वंसते, ध्वंसिता, ध्वंसिष्यते, ध्वंसिषीष्ट, दध्वंसे, अध्वंसत्, अध्वंसिष्ट, ध्वस्तः; ध्वंसित्वा, ध्वस्त्वा, ध्वंसयति-ते, ध्वस्यते, दिध्वंसिषते ।

ध्वन् 1 P, to sound, to echo. ध्वनति, ध्वनिता, ध्वनिष्यति, ध्वन्यात्, दध्वान, अध्वनीत्, अध्वानीत्; [illegible]नितः, ध्वान्तः; ध्वानयति-ते, दिध्वनिषति ।

नद् 1 P, to sound नदति नदिता ननाद; अनादीत्, अनदीत् ।

नन्द् 1 P, to be pleased, नन्दति, नन्दिता, नन्दिष्यति, नन्द्यात्, ननन्द, अनन्दीत्, नन्दितः, नन्दयति-ते, नन्द्यते,

निनन्दिषति ।

नम् 1 P, to salute, नमति, नन्ता, नंस्यति, नम्यात्, ननाम, अनंसीत्, नतः; नामयति, नमयति, नम्यते, निनंसति ।

नर्द् 1 P, to roar, नर्दति; नर्दिष्यति, ननर्द, अनर्दीत् ।

नश् 4 P, to be lost, नश्यति; नष्टा, नशिता; नशिष्यति, नङ्क्ष्यति; नश्यात्, ननाश, अनशत्, नष्टः; नष्ट्वा, नशित्वा; नाशयति-ते, नश्यते, निनशिषति ।

नह् 4 U, to bind, नह्यति-ते, नद्धा, नत्स्यति-ते, नह्यात्, नत्सीष्ट; ननाह, नेहे; अनात्सीत्, अनद्ध; नद्धः, नाहयति-ते, नह्यते, निनत्सति-ते ।

निन्द् 1 P, to censure, निन्दति, निन्दिता, निन्दिष्यति, निन्द्यात्, निनिन्द, अनिन्दीत्, निन्दितः निन्दयति-ते, निन्द्यते, निनिन्दिषति ।

नी 1 U, to lead. नयति-ते, नेता, नेष्यति-ते, नीयात्, नेषीष्ट, निनाय, निन्ये, अनैषीत्, अनेष्ट, नीतः, नेतुम्, नाययति, नीयते, निनीषति-ते ।

नु 2 P, to praise. नौति, नविता, नविष्यति, नुनाव, अनावीत्, नुतः, नावयति-ते, नुनूषति ।

नृत् 4 P, to dance, नृत्यति, नर्तिता, नर्तिष्यति, नृत्यात्, ननर्त, अनर्तीत्, नृत्तः, नर्तितुम्, नर्तयते; only, नृत्यते, निनर्तिषति, निनृत्सति ।

पच् 1 U, to cook, to digest, पचति-ते, पक्ता, पक्ष्यति-ते, पच्यात्, पक्षीष्ट; पपाच, पेचे; अपाक्षीत्, अपक्त; पक्त्वा, पक्तव्यः, पाचयति-ते, पच्यते, पिपक्षति-ते ।

पठ् 1 P, to read, पठति, पठिता, पठिष्यति, पठ्यात्, पपाठ, पेठतुः अपठीत्; अपाठीत्, पठितः, पाठयति-ते, पठ्यते,

पिपतिषति ।

पत् 1 P, to fall, पतति, पतिता, पतिष्यति, पत्यात्; पपात, पेततुः, अपप्तत्, पतितः, पातयति-ते, पत्यते; पित्सति, पिपतिषति ।

पद् 4 A, to go, पद्यते, पत्ता, पत्स्यते, पत्सीष्ट, पेदे, अपादि, पन्नः, पत्त्वा, पादयति-ते, पद्यते, पित्सते ।

पा 1 P, to drink, पिबति, पाता, पास्यति, पेयात्, पपौ, अपात्, पीतः, पातुम्, पाययति-ते, पीयते, पिपासति ।

पा 2 P, to protect, पाति, अपासीत्, पायात्, पालयति-ते, पायते ।

पाल् 10 U, to protect, पालयति-ते, पालयिष्यति-ते; पाल्यात्, पालयिषीष्ट, पालयाञ्चकार-चक्रे, अपीपलत्, पालितः ।

पिष् 7 P, to grind, पिनष्टि, पेष्टा, पेक्ष्यति, पिष्यात्, पिपेष, अपिषत्, पिष्टः, पेष्टुम्, पेषयति-ते, पिष्यते, पिपिक्षति ।

पीड् 10 U, to give pain, पीडयति, पीडयिष्यति-ते, पीड्यात्, पीडयाञ्चकार-चक्रे, अपीपिडत्-त, अपिपीडत्-त, पिपीडयिषति-ते ।

पुष् 1 9, 4, P, to nourish, पोषति, पुष्णाति, पुष्यति; पोषिता, पोष्टा; पोषिष्यति, पोक्ष्यति; पुष्यात्, पुपोष; अपोषीत्, अपुषत्; पुषितः, पुष्टः, पुषितुम्, पोषयति-ते, पुष्यते; पुपुषिषति, पुपोषिषति, पुपुक्षति ।

पू 9 U, to purify, पुनाति,-पुनीते, पविता, पविष्यति; पूयात्, पविषीष्ट; पुपाव, पुपुवे; अपावीत्, अपविष्ट; पूतः, पुपूषति-ते ।

पूज् 10 U, to worship, पूजयति-ते, पूजयिता, पूजयिष्यति-ते, पूजयाञ्चकार-चक्रे, अपूपुजत्, पूजितः, पुपूजयिषति-ते।

पुर् 4 A, to satisfy, पूर्य्यते, पुरिता, पूरिष्यते, पुपुरे, अपुरिष्ट, अपूरि, पूर्णः, पूर्त्तः, पूरयति-ते, पुपुरिषते।

पृ 5 P, to be satisfied, पृणाति, पर्त्ता, परिष्यति, पपार, अपार्षीत्।

पॄ 9 & 3 P, to fill, पृणाति, पिपर्त्ति, परिता, परीता, परिष्यति, परीष्यति, पूर्य्यात्, पपार, अपारीत्, पूर्णः, पूरितः, पारयति-ते, पुपूर्षति, पिपरिषति, पिपरीषति।

प्याय् 1 A, to grow, प्यायते, प्यायिष्यते, पिप्ये, अप्यायि, पीनः, प्यानः।

प्रच्छ् 6 P, to ask, पृच्छति, प्रष्टा, प्रक्ष्यति, पृच्छ्यात्, पप्रच्छ, अप्राक्षीत्, अप्राष्टाम्लुङ्-साम्, पृष्टः, प्रष्टुम्, प्रच्छयति-ते, पृच्छ्यते, पिपृच्छिषति-ते।

प्रथ् 10 U, to publish, प्रथयति-ते, प्रथयिता, प्रथयिष्यति ते, प्रथयाञ्चकार-चक्रे, अपप्रथत्-त, प्रथितः, पिप्रथयिषति-ते।

प्री 4 A, to feel affection, प्रीयते, प्रेता, प्रेष्यते, प्रेषीष्ट, पिप्रिये, अप्रेष्ट, प्रीतः, प्रेतुम्, प्राययति-ते, प्रीयते, पिप्रीषते।

प्री 9 U, to please, प्रीणाति, प्रीणीते, प्रीयात्, पिप्राय, अप्रैषीत्।

प्री 10 U, प्रीणयति, प्रीणयिष्यति, प्रीणयाञ्चकार-चक्रे

प्लु 1 A, to float, to go प्लवते, प्लोता, प्लोष्यते, प्लोषीष्ट, पुप्लुवे, अप्लोष्ट, प्लुतः, प्लावयति-ते, प्लूयते, पुप्लुषते।

फल् 1 P, to result, फलति, फलिता, फलिष्यति, पफाल, अफालीत्; फलितः, फुल्लः, फालयति, फल्यते, पिफलिषति।

बन्ध् 9 P, to bind, बध्नाति, बन्द्धा, भन्त्स्यति, बन्ध्यात्

बबन्ध, अभान्त्सीत्, बद्धः, बन्धयति-ते, बध्यते, बिभन्त्सति।

बाध् 1 A, to oppress, बाधते, बाधिता, बाधिष्यते, बाधिषीष्ट, बबाधे, अबाधिष्ट, बाधितः, बाधयति-ते, बाध्यते, बिबाधिषते।

बुध् 1 U, to know, बोधति-ते, बोधिता, बोधिष्यति-ते; बुध्यात्, बोधिषीष्ट; बुबोध, बुबुधे; अबुधत्, अबोधीत्, अबोधिष्टः; बुद्धः; बुधितः; बोधयति-ते; बुध्यते, बुबुधिषति-ते; बुबोधिषति-ते।

बुध् 4 A, to know बुध्यते, बोद्धा, भोत्स्यते, भुत्सीष्ट; अबुद्ध, अबोधि; बुद्धः, बोद्धुम्, बुभुत्सते।

ब्रू 2 U, to speak ब्रवीति-ब्रूते, आह, वक्ता, वक्ष्यति-ते; उच्यात्, वक्षीष्ट; उवाच, ऊचे; अवोचत्-त, उक्तः, वक्तुम्, वाचयति-ते, उच्यते, विवक्षति-ते।

भक्ष् 10 U, to eat भक्षयति-ते, भक्षयिष्यति, भक्ष्यात्, भक्षयाञ्चकार-चक्रे, अबभक्षत्, भक्षितः, भक्षयितुम्, भक्ष्यते, बिभक्षयिषति-ते।

भज् 1 U to serve भजति-ते, भंक्ता, भंक्ष्यति-ते, भज्यात्, भक्षीष्ट; बभाज, भेजे; अभाक्षीत्; अभक्त, भक्तः, भाजयति-ते, भज्यते, बिभक्षति-ते।

भञ्ज् 7 P, to break भनक्ति, भंक्ता, भंक्ष्यति, भज्यात्, बभञ्ज, अभांक्षीत्, भग्नः, भञ्जयति-ते, भज्यते, बिभंक्षति।

भा 2 P, to shine भाति, भाता, भास्यति, भायात्, बभौ, अभासीत्, भातः, भापयति-ते, भायते, बिभासति।

भाष् 1 A, to speak भाषते, भाषिता, भाषिष्यते, भाषिषीष्ट, बभाषे, अभाषिष्ट, भाषितः, भाषयति, भाष्यते, बिभाषिषते।

भास् 1 A, to shine, भासते, बभासे, अभासिष्ट, like भाष्।

भिक्ष् 1 A, to beg भिक्षते, भिक्षिष्यते, भिक्षिषीष्ट, बिभिक्षे, अभिक्षिष्ट।

भिद् 7 U, to break down, भिनत्ति, भिन्ते; भेत्ता, भेत्स्यति-ते; भिद्यात्, भित्सीष्ट; बिभेद, बिभिदे; अभिदत्, अभैत्सीत्, अभित्त; भित्तः; भिन्नः, भेद्यः, भित्वा, भेत्तुम्, भेदयति ते, भिद्यते, बिभित्सति-ते।

भी 3 P, to fear, बिभेति, भेता, भेष्यति, भीयात्; बिभाय, बिभ्यतुः; बिभयिथ, बिभेथ; बिभयाञ्चकार, अभैषीत्, भीतः; भाययति, भापयते, भीषयते; भीयते, बिभीषति।

भुज् 7 U, to eat, to protect भुनक्ति, भुङ्क्ते, भोक्ता, भोक्ष्यति-ते, भुज्यात, भुक्षीष्ट; बुभोज, बुभुजे; अभौक्षीत्, अभुक्त; भुक्तः, भोजयति-ते, भुज्यते, बुभुक्षति-ते।

भू 1 U, to be, भवति-ते, भविता, भविष्यति-ते, भूयात्, भविषीष्ट; बभूव, बभूवे; अभूत्, अभविष्ट; भूतः, भावयति, भूयते, बुभूषति।

भूष् 1 P & 10 U, to adorn भूषति, भूषयति-ते, भूषिष्यति, भूषयिष्यति-ते, भूष्यात्, भूषयिषीष्ट, बुभूष, भूषया-ञ्चकार-चक्रे, अभूषीत्, अबुभूषत्।

भृ 1 & 3 U, to nourish, to fill भरति-ते, बिभर्ति, बिभृते; भर्ता, भरिष्यति-ते, भ्रियात्, भृषीष्ट; बभार, बभ्रे, बिभराञ्चकार-चक्रे; अभार्षीत्, अभृत, भृतः, भारयति-ते, भ्रियते, बिभरिषति, बुभूर्षति-ते।

भ्रम् 1 & 4 P, to roam, भ्रमति, भ्राम्यति, भ्रम्यति, भ्रमिता, भ्रमिष्यति, भ्रम्यात्, बभ्राम, अभ्रमीत्, अबभ्रमत्।

भ्राम्तः, भ्रमयति, भ्रम्यते, बिभ्रमिषति ।

भ्रंश् 1 A & 4 P, to fall, भ्रंशते, भ्रश्यति, भ्रंशिता, भ्रंशिष्यति-ते, भ्रंशिषीष्ट, भ्रश्यात्; बभ्रंश, बभ्रंशे; अभ्रंशत्, अभ्रंशिष्ट, अभ्रशत्; भ्रष्टः, भ्रंशित्वा, भ्रंशयति-ते, भ्रश्यते, बिभ्रंशिषति-ते ।

भ्रस्ज् 6 U, to fry, भृज्जति-ते; भ्रष्टा, भर्ष्टा; भ्रक्ष्यति-ते भर्क्ष्यति; भृज्ज्यात्, भ्रक्षीष्ट, भर्क्षीष्ट; बभ्रज्ज, बभर्ज, बभ्रज्जे, बभर्जे; अभ्राक्षीत्, अभार्क्षीत्; अभ्रष्ट, अभर्ष्ट; भृष्टः; भ्रष्टुम्, भर्ष्टुम्; भ्रज्जयति-ते, भर्ज्जयति-ते; भृज्ज्यते, बिभ्रक्षति-ते, बिभर्क्षति-ते; बिभ्रज्जिषति-ते, बिभर्जिषति-ते ।

भ्राज् 1 A, to shine, भ्राजते, भ्राजिता, भ्राजिष्यते, भ्राजिषीष्ट; बभ्राजे, भ्रेजे; अभ्राजिष्ट, भ्राजितः, भ्राजयति-ते, भ्राज्यते, बिभ्राजिषते ।

मद् 4 P, to be glad, to be mad, माद्यति, मदिता, मदिष्यति, मद्यात्, ममाद; अमदीत्, मत्तः, मदित्वा, मदयति-ते, मद्यते, मिमदिषति ।

मन् 4 A, to think, मन्यते, मन्ता, मंस्यते, मंसीष्ट; मेने, अमंस्त, मत्तः, मानयति-ते, मन्यते, मिमंसते ।

मन्त्र् 10 A, to advise, मन्त्रयते, मन्त्रयिता, मन्त्रयिष्यते, मन्त्रयिषीष्ट, मन्त्रयाञ्चक्रे, अममन्त्रत, मन्त्रितः, मिमन्त्रयिषते ।

मन्थ् 9 & 1 P, to churn, मथ्नाति, मन्थति; मन्थिता, मन्थिष्यति, मथ्यात्, ममन्थ, अमन्थीत्, मथितः, मन्थित्वा, मन्थयति-ते, मथ्यते, मिमन्थिषति ।

मस्ज् 6 P, to sink, मज्जति, मङ्क्ता, मङ्क्ष्यति, मज्ज्यात्, ममज्ज, अमाङ्क्षीत्, मग्नः, मज्जयति, मज्ज्यते, मिमङ्क्षति ।

मा 2 P, to measure, माति, माता, मास्यति, मेयात्,

ममौ, अमासीत्, मितः, मापयति-ते, मीयते, मित्सति ।

मान् 1 A, to search, मीमांसते, मिमांसता, मिमांसिष्यते, मीमांसिसीष्ट, मीमांसाञ्चकार-आस-चक्रे, अमीमांसीष्ट, मिमांसितः, मीमांसिषत ।

मार्ग 10 U, to seek for, मार्गयति-ते, मार्गयिता, मार्गयिष्यति-ते, मार्ग्यात्, मार्गयिषीष्ट; अममार्गत्-त, मार्गितः, मिमार्गयिषति-ते ।

मार्ज 10 U, to purify, मार्जयति-ते, मार्जयिता, मार्ज्यात्, मार्जयिषीष्ट; मार्जयाञ्चकार-चक्रे, अममार्जत्-त, मार्जितः, मिमार्जयिषति-ते ।

मि 5 U, to scatter, मिनोति-मिनुते, माता, मास्यति-ते; मीयात्, मासीष्ट, ममौ, मिम्ये, अमासीत्, अमास्त; मितः, मापयति-ते, मीयते, मित्सति-ते ।

मिल् 6 U, to join मिलति-ते, मेलिता; मिल्यात्, मेलिषीष्ट, मिमेल, मिमिले, अमेलीत्, अमेलिष्ट; मिलितः, मेलयति-ते, मिमेलिषति-ते ।

मुच् 6 U, to leave, मुञ्चति-ते, मोक्ता, मोक्ष्यति-ते; मुच्यात्, मुक्षीष्ट, मुमोच, मुमुचे; अमुचत्, अमुक्त; मुक्तः, मुक्त्वा, मोचयति-ते, मुमुक्षति-ते ।

मुद् 1 A, to rejoice, मोदते, मोदिता, मोदिष्यते, मोदिषीष्ट, मुमुदे, अमोदिष्ट; मुदितः-मोदितः, मोदयति, मुद्यते, मुमुदिषते ।

मुष् 9 P, to steal, मुष्णाति; मोषिता, मोषिष्यति, मुष्यात्, मुमोष, अमोषीत्, मुषितः, मुष्यते, मुमुषिषति ।

मुह् 4 P, to faint, मुह्यति; मोहिता, मोग्धा-मोढा, मोहिष्यति, मोक्ष्यति; मुह्यात्, मुमोह, अमुहत्; मूढः; मोहित्वा-मुग्ध्वा;

मूढ्वा, मोहयति-ते, मुह्यते; मुमुहिषति, मुमोहिषति, मुमुक्षति ।

मृ 6 A, to die, म्रियते, मर्ता, मरिष्यति, मृषीष्ट, ममार, अमृत, मृतः, मर्त्तुम्, मारयति-ते, म्रियते, मुमूर्षति ।

मृग् 10 A, to hunt, मृगयते, मृगयिष्यते, मृगयाञ्चक्रे, अममृगत ।

मृश् 6 P, to touch, to consider, मृशति, मर्ष्टा, म्रष्टा; मर्क्ष्यति, म्रक्ष्यति, मृश्यात्, ममर्श; अमार्क्षीत्, अम्राक्षीत्, अमृक्षत्, मृष्टः, मर्शयति-ते, मृश्यते; मिमृक्षति ।

मृष् 1 P, to sprinkle, to bear, मर्षति, मर्षिता; मर्षिष्यति, म्रक्ष्यति, मर्क्ष्यति; मृष्यात्, ममर्ष; अमर्षीत्, मृष्टः; मृषित्वा, मर्षित्वा, मर्षयति-ते, मृष्यते, मिमर्षिषति ।

मृष् 4 U to suffer, to allow, मृष्यति-ते, मर्षिषीष्ट, ममृषे, अमर्षिष्ट ।

यज् 1 U, to worship, यजति-ते, यष्टा, यक्ष्यति-ते, इज्यात्, यक्षीष्ट; इयाज, ईजे; अयाक्षीत्, अयष्ट; इष्टः, याजयति-ते, यियक्षति-ते ।

यत् 1 A, to attempt, यतते, यतिता, यतिष्यते, यतिषीष्ट, येते, अयतिष्ट, यतः, यतित्वा, यातयति-ते, यत्यते, यियतिषते ।

यम् 1 P, to go, यच्छति, यन्ता, यंस्यति, अयंस्यत्, यम्यात्, ययाम, अयंसीत्, यतः, यामयति-ते, यमयति-ते, यम्यते, यियंसति ।

या 2 P, to go, याति, याता, यास्यति, अयास्यत्, यायात्, ययौ, अयासीत्, यातः, यापयति-ते; यायते, यियासति ।

याच् 1 U, to beg, याचति-ते, याचिता, याचिष्यति, याच्यात्, याचिषीष्ट, अयाचीत्, अयाचिष्ट, याचित, याचयति-ते, याच्यते, यियाचिषति-ते ।

युज् 4 A, & 7 U, to unite, युज्यते, युनक्ति, युङ्क्ते,

योक्ता; योक्ष्यति-ते, युज्यात्, युक्षीष्ट; युयोज, युयुजे; अयुजत्, अयौक्षीत्, अयुक्त; युक्तः, योजयति-ते, युज्यते, युयुक्षति-ते।

युध् 4 A, to fight, युध्यते, योद्धा, योत्स्यते, युत्सीष्ट, युयुधे, अयुद्ध, युद्धः, योधयति-ते, युध्यते, युयुत्सते।

रक्ष् 1 P, to protect, रक्षति, रक्षिता, रक्षिष्यति, रक्ष्यात्, ररक्ष, अरक्षीत्, रक्षितः, रक्षयति-ते, रक्ष्यते; रिरक्षिषति।

रच् 10 U, to arrange, to make, रचयति-ते, रचयिता, रच्यात्, रचयिषीष्ट; रचयाञ्चकार-चक्रे, अररचत्-त, रिरचयिषति-ते।

रञ्ज् 1 & 4 U, to be pleased, रजति-ते, रज्यति-ते, रङ्क्ता; रङ्क्ष्यति-ते, रज्यात्, रङ्क्षीष्ट; ररञ्ज, ररञ्जे; अराङ्क्षीत्, अरंक्त, रक्तः, रञ्जयति-ते, रज्यते, रिरंक्षति-ते।

रभ् 1 A, to begin, रभते, रब्धा, रप्स्यते, रप्सीष्ट, रेभे, अरब्ध, रब्धः, रम्भयति-ते, रभ्यते; रिप्सते।

रम् 1 A, to play, रमते, रन्ता, रंस्यते, रंसीष्ट, रेमे, अरंस्त, रतः, रमयति-ते, रम्यते, रिरंसते।

राज् 1 U, to shine, राजति-ते, राजिता, राजिष्यति-ते, राज्यात्, राजिषीष्ट, रराज, रराजे, रेजे; अराजीत्, अराजिष्ट; राजितः, राजयति-ते, राज्यते, रिराजिषति-ते।

राध् 4 P, to finish, राध्यति, राद्धा, रात्स्यति, राध्यात्, रराध, अरात्सीत्, राद्धः, राधयति-ते, राध्यते, रिरात्सति।

रु 2 P, to sound, रौति, रवीति, रविता, रविष्यति, रूयात्, रराव, अरावीत्, रुतः, रावयति-ते, रूयते, रुरूषति।

रुच् 1 A, to be pleased with, रोचते, रोचिष्यते, रोचिषीष्ट, अरोचिष्ट, रुचितः, रोचयति-ते, रुच्यते, रुरोचिषते।

रुद् 2 P, to cry, रोदिति, रोदिता, रोदिष्यति, रुद्यात्,

रुरोद, अरुदत, अरोदीत्; रुदितः, रोदयति-ते, रुरुदिषति ।

रुध्, 7 U, to shut up, रुणद्धि, रुन्धे; रोद्धा, रोत्स्यति-ते; रुध्यात्, रुत्सीष्ट, रुरोध, रुरुधे; अरुधत्, अरौत्सीत्, अरुद्ध, रुद्धः, रोद्धुम्, रोधयति-ते, रुध्यते, रुरुत्सति-ते ।

रुह् 1 P, to rise, रोहति, रोढा, रोक्ष्यति, रुह्यात्, रुरोह, अरुक्षत्, रूढः, रोहयति, रुह्यते, रुरुक्षति ।

लभ् 1 A, to get, लभते, लब्धा, लप्स्यते, लप्सीष्ट, लेभे, अलब्ध, लब्धः, लम्भयति-ते, लभ्यते, लिप्सते ।

लम्ब् 1 A, to hang down, लम्बते, लम्बिता, लम्बिष्यते, लम्बिषीष्ट, ललम्बे, अलम्बिष्ट, लम्बितः, लम्बयति-ते, लम्ब्यते, लिलम्बिषते ।

लष् 1 & 4 U, to desire, लषति-ते, लष्यति-ते, लषिता, लषिष्यति-ते, लष्यात्, लषिषीष्ट, ललाष, लेषे; अलषीत्, अलाषीत्, अलषिष्ट; लषितः, लाषयति-ते, लष्यते, लिलषिषति-ते ।

लस्ज् 1 & 6 A, to be ashamed, लज्जते, लज्जिता, लज्जिष्यते, लज्जिषीष्ट, ललज्जे, अलज्जिष्ट, लज्जितः, लज्जयति-ते, लज्जयते, लिलज्जिषते ।

लिख् 6 P, to write, लिखति, लेखिता, लेखिष्यति, लिख्यात्, लिलेख, अलेखीत्, लिखितः, लेखयति-ते, लिख्यते, लिलेखिषति ।

लिप् 6 U, to paint, लिम्पति-ते, लेप्ता, लेप्स्यति-ते, लिप्यात्, लिप्सीष्ट, लिलेप, लिलिपे; अलिपत्-त, अलिप्त; लिप्तः, लेपयति-ते, लिप्यते, लिलिप्सति-ते ।

लिह् 2 U, to lick, लेढि, लीढे, लेढा, लेक्ष्यति-ते; लिह्यात्, लिक्षीष्ट, लिलेह, लिलिहे; अलिक्षत्, अलीढ; लीढः, लेहयति-ते, लिह्यते, लिलिक्षति-ते ।

ी 4 A, to perish, लीयते, लेता, लेष्यते, लास्यते;
, लासीष्ट; लिल्ये; अलेष्ट, अलास्त, लीनः, लाययति-ते
यते ।

ट् 1 & 4 U, to roll, लोटति-ते, लुट्यति; लोटिता;
, लुलुटे; अलुटत्, अलोटिष्ट, अलोटीत्, लुटितः, लोटितः,
ते-ते, लुलोटिषति-ते ।

भ् 4 P, to covet, लुभ्यति; लोभिता, लोब्धा; लोभि-
लोप्स्यति; लुभ्यात्, लुलोभ; अलोभीत्, अलुभत्; लुब्धः,
ते-ते, लुभ्यते, लुलुभिषति, लुलोभिषति ।

9 U, to cut, लुनाति, लुनीते; लविता, लविष्यति-ते;
लविषीष्ट; लुलाव, लुलुवे; अलावीत्, अलविष्ट; लूनः, लाव-
लूयते, लुलूषति-ते ।

क् 1 A, to see, लोकते, लोकिता, लोकिष्यते, लोकिषीष्ट,
अलोकिष्ट, लोकितः, लोकयति-ते, लोक्यते, लुलोकिषते ।

1 A, to see, लोचते, लोचिता, like लोक् ।

2 P, to speak, वक्ति, वक्ता, वक्ष्यति, उच्यात्,
वोचत्, उक्त, वाचयति, उच्यते, विवक्षति ।

P, & 10 U, to speak, वचति, वाचयति-ते,
अवीवचत्-त ।

P, to say, वदति, वदिता, वदिष्यति, उद्यात्, उवाद,
उदितः, वादयति-ते, उद्यते, विवदिषति ।

A, to salute, वन्दते, वन्दिता, वन्दिष्यते, वन्दि-
अवन्दिष्ट, वन्दितः, वन्दयति-ते, वन्द्यते, विवन्दिषते ।

U, to sow, वपति-ते, वप्ता, वप्स्यति-ते, उप्यात्,
उवाप, ऊपे, अवाप्सीत्, अवप्त, उप्तः, वापयति-ते,
वप्सति-ते ।

वम् 1 P, to vomit, वमति, वमिता, वमिष्यति, वम्यात्, ववाम, अवमीत्; वमितः, वान्तः, वमयति-ते, वम्यते, विवमिषति ।

वर्ण् 10 U, to explain, वर्णयति-ते, वर्णयिष्यति-ते, वर्णयाञ्चकार-चक्रे, अववर्णत्-त, वर्णितः, विवर्णयिषति-ते ।

वस् 1 P, to dwell, वसति, वस्ता, वत्स्यति, उष्यात्, उवास, अवात्सीत्, उषितः, वासयति, उष्यते, विवत्सति ।

वह् 1 U, to carry, to flow, वहति-ते, वोढा; उह्यात्, वक्षीष्ट; उवाह, ऊहे; अवाक्षीत्, अवोढ; ऊढः, वाहयति-ते, उह्यते, विवक्षति-ते ।

वा 2 P, to blow, वाति, वाता, वास्यति, वायात्, ववौ, अवासीत्, वातः, वापयति-ते, वायते, विवासति ।

वाञ्छ् 1 P, to desire, वाञ्छति, वाञ्छिता, वाञ्छिष्यति, वाञ्छ्यात्, ववाञ्छ, अवाञ्छीत्, वाञ्छितः, वाञ्छयति-ते, वाञ्छ्यते, विवाञ्छिषति ।

विद् 2 P, to desire, वेत्ति, वेद; वेदिता, वेदिष्यति, विद्यात्, विवेद, विदाञ्चकार, अवेदीत्, विदितः, वेदयति-ते, विवेद्यते, विविदिषति ।

विद् 4 A, to be, विद्यते, वेत्ता, वेत्स्यते, विविदे, अवित्त, विवित्सते ।

विद् [illegible] U, to get, विन्दति-ते; वेदिता, वेत्ता, विद्यात्, वित्सीष्ट, वेदिषीष्ट; अविदत्, अवित्त, अवेदिष्ट; विवित्सति-ते, विवि (वे) दिषति-ते ।

विश् 6 P, to enter, विशति, वेष्टा, वेक्ष्यति, विश्यात्, विवेश, अविक्षत्, विष्टः, वेशयति-ते, विश्यते, विविक्षति ।

वृ 1 & 5 U, A, to choose, वरति-ते, वृणोति, वृणुते, वरिता; वरीता; वरिष्यति-ते, वरीष्यति-ते, व्रियात्,

वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट; ववार, वव्रे; अवारीत्, अवरिष्ट, अवरीष्ट; अवृत; वृतः, वरितुम्, वारयति-ते, व्रियते; विवरिषति-ते, विवरीषति-ते, वुवूर्षति-ते।

वृत् 1 A, to exist, वर्त्तते, वर्त्तिता, वर्त्स्यति, वर्तिष्यते, वर्तिषीष्ट; ववृते, अवृतत, वृत्तः, वर्त्तयति-ते, वृत्यते; विवृत्सति, विवर्तिषते।

वृध् 1 A, to grow, वर्द्धते, वर्द्धिता; वर्द्धिष्यति, वर्त्स्यते; वर्द्धिषीष्ट, ववृधे; अवृधत्, अवर्द्धिष्ट, वृद्धः, वर्द्धयति-ते, वृध्यते; विवर्द्धिषते, विवृत्सति।

वृष् 1 P, to rain, वर्षति, वर्षिता, वर्षिष्यति, वृष्यात्, ववर्ष, अवर्षीत्, वृष्टः, वर्षयति-ते, विवर्षिषति।

वृ 9 U, to choose, वृणाति, वृणीते; वरिता, वरीता; वूर्यात्, वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट, ववार, ववरे; अवारीत्, अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवूर्ष्ट।

वेप् 1 A, to shake, वेपते, वेपिता, वेपिष्यते, वेपिषीष्ट, विवेपे, अवेपिष्ट, वेपितः, वेपयति-ते, विवेपिषते।

व्यध् 1 P, to hurt, विध्यति, व्यद्धा, व्यत्स्यति, विध्यात्, विव्याध, अव्यात्सीत्, विद्धः, व्याधयति-ते, विव्यत्सति।

व्रज् 1 P, to go, व्रजति, व्रजिता, व्रजिष्यति, व्रज्यात्, वव्राज, अव्राजीत्, व्रजितः, व्राजयति, व्रज्यते, विव्रजिषति।

शंस् 1 P, to praise, शंसति, शंसिता शंसिष्यति, शंस्यात्, शशंस, अशंसीत्, शस्तः, शंसित्वा, शंसयति, शिशंसिषति।

शक् 5 P, to be able, शक्नोति, शक्ता, शकिता, शक्ष्यति, शक्यात्, शशाक, अशकत्, शक्तः, शाकयति-ते, शक्यते, शिक्षति।

शंक् 1 A, to doubt, शङ्कते, शङ्किता, शशङ्के, अशङ्किष्ट।

सविष्यते; सोषीष्ट, सविषीष्ट; सुषुवे; असोष्ट, असविष्ट; सूतः, सूनः ।

सृ 1 P, to go, सरति, सर्त्ता, सरिष्यति, स्रियात्, ससार; असरत्, असार्षीत्; सृतः, सारयति-ते, स्रियते, सिर्षीर्षति ।

सृज् 6 P, to create, स्रष्टा, स्रक्ष्यति, सृज्यात्, ससर्ज, अस्राक्षीत्, सृष्टः, स्रष्टुम्, सृष्टिः, सृज्यते, सिसृक्षति ।

सृप् 1 P, to go, सर्पति; स्रप्ता, सर्प्ता; स्रप्स्यति, सर्प्स्यति; सृप्यात्, ससर्प, असृपत्, सृप्तः; सर्प्तुम्, सर्पयति-ते, सिसृप्सति ।

सेव् 1 A, to serve, सेवते, सेविता, सेविष्यते, सेविषीष्ट, सिषेवे, असेविष्ट, सेवितः, सेवयति-ते, सेव्यते, सिसेविषते ।

सो 4 P, to destroy, स्यति, साता, सास्यति, सेयात्, ससौ; असात्, असासीत्, सितः, साययति-ते, सीयते, सिषासति ।

स्तम्भ् 1 A, 5 & 9 p, to support, स्तम्भते, स्तभ्नोति, स्तभ्नाति, स्तम्भिता, स्तम्भिष्यति, स्तभ्यात्, तस्तम्भ, अस्तम्भिष्ट, स्तब्धः, स्तम्भित्वा, स्तम्भयति-ते, तिस्तम्भिषति ।

स्तु 2 U, to praise, स्तौति, स्तुते, स्तवीति, स्तोता, स्तोष्यति-ते, स्तूयात्, स्तोषीष्ट, तुष्टाव, तुष्टुवे, अस्तावीत्, अस्तोष्ट, स्तुतः, स्तावयति-ते, स्तूयते, तुष्टूषति-ते ।

स्तृ 5 U, to cover, स्तृणोति, स्तृणुते, स्तर्त्ता, स्तरिष्यति-ते; स्तर्य्यात्, स्तृषीष्ट, स्तरिषीष्ट; तस्तार, तस्तरे, अस्तार्षीत्, अस्तरिष्ट, अस्तरीष्ट; अस्तृत, स्तृतः स्तीर्य्यते, तिस्तरिषति-ते ।

स्तॄ 9 U, to cover, स्तृणाति, स्तृणीते; स्तरिता, स्तरीता, like स्तृ ।

स्था 1 P, to stand, तिष्ठति; स्थाता, स्थास्यति, स्थे-
, तस्थौ, अस्थात्, स्थितः, स्थापयति, स्थीयते, तिष्ठासति।

स्ना 2 P, to bathe, स्नाति, स्नाता, स्नास्यति;
ात्, स्नेयात्; सस्नौ, अस्नासीत्, स्नातः; स्नापयति,
यति; स्नायते, सिष्णासति।

स्निह् 4 P, to have, affection for, स्निह्यति; स्नेहिता,
ा, स्नेढा; स्निहिष्यति, स्निह्यात्, सिष्णेह, अस्निहत्,
ः-स्नीढः, स्निहित्वा, स्नेहित्वा, स्निग्ध्वा, स्नीढ्वा;
ह्यति, सिस्निहिषति, सिस्नेहिषति।

स्यन्द् 1 A, to throb, to go, स्यन्दते, स्यन्दिता, स्यन्दि-
सस्यन्द, अस्यन्दिष्ट, स्यन्दितः, स्यन्दयति, स्यन्द्यते, सिस्य-
ि।

र्ध् 1 A, to challenge, to contend with,
, स्पर्धिता, स्पर्धिष्यते, स्पर्धिषीष्ट, पस्पर्धे, अस्पर्धिष्ट,
:, पिस्पर्धिषते।

शु to touch, स्पृशति; स्प्रष्टा, स्पर्ष्टा; स्प्रक्ष्यति, स्प-
स्पृश्यात्, पस्पर्श, अस्प्राक्षीत्, अस्पृक्षत; पिस्पृक्षति।

10 U, to desire, स्पृहयति-ते, स्पृहयाञ्चकार-चक्रे,
ृ-त।

1 A, to smile, स्मयते, स्मेता, स्मेष्यते, सिष्मिये,
ेस्मितः, स्मापयति-ते, स्माययति-ते, स्मीयते, सिस्मयिषते।

p, to remember, स्मरति, स्मर्ता, स्मरिष्यति,
सस्मार, अस्मार्षीत्, स्मृतः, स्मारयति-ते, स्मरयति-
ते।

1 A, to embrace, स्वजते, स्वंक्ता, स्वंक्ष्यते,

स्वंक्षीष्ट; सस्वञ्जे, अस्वंक्त, स्वक्तः, स्वञ्जयति-ते, स्वज्यते सिस्वक्षते ।

स्वप् 2 p, to sleep, स्वपिति, स्वप्ता, स्वप्स्यति, सुप्यात्, सुष्वाप, अस्वाप्सीत्, सुप्तः, स्वप्यते, सुषुप्सति ।

हन् 2 p, to kill, हन्ति, हन्ता, हनिष्यति, वध्यात्, जघान, अवधीत्, अहत, अवधिष्ट हतः, घातयति-ते, हन्यते, जिघांसति ।

हस् 1 p, to laugh, हसति, हसिता, हसिष्यति, हस्यात्, जहास, अहसीत्, हसितः हासयति, हस्यते, जिहसिषति ।

हा 3 p, to abandon, जहाति, हाता, हास्यति, हेयात्, जहौ, अहासीत्, हीनः, हित्वा, हातुम्, हापयति-ते, हीयते, जिहासति ।

हु 3 p, U, to sacrifice, जुहोति, होता, होष्यति हूयात्, जुहाव, अहौषीत्, हुतः, होतुम्, हावयति-ते ।

हृ 1 U, to steal, हरति ते, हर्ता, हरिष्यति-ते, ह्रियात्, हृषीष्ट, जहार, जह्रे, अहार्षीत्, अहृत; हृतः, हारयति-ते, ह्रियते जिहीर्षति-ते ।

हेष् 1 A, to neigh, हेषते, हेषिता, जिहेषे ।

ह्लाद् 1 A, to be glad, ह्लादते, ह्लादिता, ह्लादिष्यते, ह्लादिषीष्ट, जह्लादे, अह्लादिष्ट, ह्लादितः, ह्लादयति ते, जिह्लादिषते ।

ह्वे 1 U, to call, ह्वयति-ते, ह्वाता, ह्वयति ह्वाता, ह्वास्यति-ते, हूयात्, ह्वासीष्ट, जुहाव, जुहुवे, अह्वत्-त, हूतः, हूत्वा, ह्वातुम्, ह्वाययति-ते, हूयते, जुहूषति-ते ।

ENGLISH-SANSKRIT VERBS.

Abandon त्यज्, हा
Abide वस्, स्था
Abuse कुत्स्, भर्त्स्
Accept प्रति-ग्रह्, आ-दा
Accompany अनु-या
Accomplish साध्, सिध्
Account गण्
Accuse अभि-युज्
Acknowledge स्वी-कृ
Acquaint बोधि
Acquire उप-अर्ज्
Act चेष्ट्, कृ, चर्
Adapt योजि
Add सम्-धा
Address सम्-बोधि
Admire प्र-शंस्
Admit स्वी-कृ

Adopt परि-ग्रह्
Adore पूज्, अर्च्
Adorn भूष्, मण्ड्
Advise उप-दिश्
Afflict दु, व्यथ्
Agitate क्षोभि
Agree स्वी-कृ
Allow अनु-ज्ञा
Amend परि-शोधि
Annex सम्-युज्
Answer प्रति-वद्
Appear भा
Appease शमय्
Apply अधि,सम्-युज्
Appoint नि-युज्
Approach उप-गम्
Approve अनु-मुद्
Arrange रच्

Arrive आ-गम्
Ascend आ-रुह्
Ascertain ज्ञा
Ask प्रच्छ्
Attack आ-क्रम्
Attain प्र-आप्
Attend उप-स्था
Attempt यत्, चेष्ट्
Attract आ-कृष्
Await अप-ईक्ष्
Awake जागृ
Awaken प्रति-बोधि
Bake पच्
Bathe मज्ज्, स्ना
Be अस्, भू, विद्, वृत्
Be able शक्
— afraid त्रस्
— angry कुप्

Be born जन्
„ careful अव-धा
„ humble वि-नी
„ hungry क्षुध्
„ pleased तुष्
„ poor दरिद्रा
„ proud दृप्
Bear क्षम्, सह्
Beat तड्, प्र-हृ
Become भू
Beg भिक्ष्, याच्
Begin आ-रभ्
Behave आ-चर्
Behold दृश्, ईक्ष्
Believe वि-श्वस्
Bend नम्
Bewail क्रुश्
Bid आ-दिश्
Bind बन्ध्, ग्रन्थ्
Bite दंश्
Blame निन्द्
Bless आशिर्व [illegible]
Blow ध्मा, प्र-ह
Boast वि-कथ्
Bow नम्, प्र-णम्
Break भञ्ज्, त्रुट्

Breathe श्वस्
Bring आ-नी
Bring forth सू
Build निर्-मा
Burn दह्, ज्वल्
Buy क्री
Calculate गण्
Call ह्वे, आ-ह्वे
Carry नी-वह्
Catch प्र-ग्रह्
Cease वि-रम्
Censure निन्द्
Challenge स्पर्ध्
Change परि-वृत्
Cheat वञ्च्
Check नि-सं-यम्
Chew चर्व्
Choose प्र-वृ
Churn मन्थ्
Close सं-वृ-नि-मील्
Collect चि, सं-ग्रह्
Colour रञ्ज्
Combine सं-युज्
Come आ-गम्
Command आ-दिश्
Commence आ रभ्

Commit कृ
Compare तुल्
Compose प्र-णी
Conceal गुह्
Confess स्वी-कृ
Conquer जि
Consider मन्-स्मृ
Consult सम्-मन्त्र्
Control शास्
Cook पच्
Correct सं-शोधि
Count गण्
Cover प्र-आ-छद्
Covet लुभ्
Create सृज्
Creep सृप्
Cross तॄ
Crush चूर्ण्, मृद्
Cry क्रन्द्, रुद्
Cure चिकित्
Curse शप्
Cut कृत्, छुर्
Dance नृत्
Deceive वञ्च्
Decide निर्णी
Declare घुष्

Decorate मण्ड्
Defeat परा भू
Defend रक्ष् , पा
Delay वि-लम्ब्
Deny न-स्वी-कृ
Deposit न्यस्
Depute नि-युज्
Descend अव-तॄ
Describe वर्ण्
Deserve अर्ह्
Desire इष् , कम्
Destroy क्षि, सो
Develop पुष्
Devour भक्ष् , गृ
Die मृ
Dig खन्
Digest पच्
Disappear तिरो-भू
Disappoint आशां भञ्
Discuss चर्च्
Disguise आ-छद्
Dispense प्र-णी
Disperse अप-कॄ
Dispute वि-वद्
Disregard उप-ईक्ष्

Disrespect अव-मन्
Distinguish वि-भिद्
Distress क्लिश्
Distribute वि-भज्
Disturb बाध्
Divide वि-भज्
Do कृ, वि-धा
Doubt शङ्क्
Drag आ-कृष्
Draw कृष्
Drink पा
Dry शुष्
Dwell वस्
Earn अर्ज्
Eat अद् , अश् , खाद् , भक्ष् , भुज् , प्सा
Echo प्रति-ध्वन्
Elapse अति क्रम्
Embrace श्लिष्, स्वञ्ज्
Emlpoy प्र-युज्
Endure क्षम् , सह्
Engage नि-युज्
Enjoy उप-भुज्
Enquire अनु-इष्
Enter विश्
Entreat अनु-नी

Enumerate गण्
Envy ईर्ष्य्
Escape निर्-गम्
Examine परि-ईक्ष्
Exceed अति-क्रम्
Exempt मुच् ,
Exercise अभि-अस्
Exist भू , वृत्
Expand वि-तन्
Expect प्रति-ईक्ष्
Expend वि-इ
Explain वर्ण्
Express प्र-दर्शि
Fade म्लै, ग्लै
Fail विफली-भू
Faint मुह् , मूर्च्छ्
Fall भ्रंश्
Fall down ध्वंस् ,
Fasten बन्ध् , ।
Favour अनु ग्रह्
Fear त्रस् , भी, ।
Feed भोजि, पोषि
Feel अनु-भू
Fetch आ-हृ
Fight युध्
Fill पॄ , पूर्

Find आप्, मम्
Find out बुध्, ज्ञा
Fine दण्ड्
Finish सम् आप्
Fix बन्ध्, युज्
Flatter अभि स्तु
Flow वह्, धाव्
Fly डी
Follow अनु, गम्
Forget वि-स्मृ
Form रच्, कृ
Fry भ्रस्ज्, भृज्
Gain लभ्, प्र-आप्
Gather चि
Gaze निर्-ईक्ष्
Get लभ्, प्र-आप्
Get up उत्-स्था
Give दा, अर्पि
Give pain दु
Give up त्यज्, हा
Glean उञ्छ्
Go इ, या, गम्
Go away अप-गम्
Go beyond अति-क्रम्
Go forth प्र-स्था
Go out निर्-गम्
Govern शास्
Grant अनु-मन्
Grasp ग्रह्, धृ
Graze चर्
Grind पिष्, चूर्ण्
Grow वृध्, रुह्, एध्
Grow old जॄ
Guess तर्क्
Hang आ-अव-लम्ब
Happen घट्
Harass तुद्
Hate द्विष्, अप-चीर्
Have affection for स्निह्
Hear श्रु, आ-कर्ण्
Heat तप्, दह्
Help साहाय्यं-कृ
Hesitate आशंक्
Hide गुह्, गुप्
Hold धृ, ग्रह्
Hunt मृग्
Hurry त्वर्
Hurt पीड् बाध्
Imagine ध्यै, चिन्त्
Improve सं-वि-वृध्
Increase वृध्, एध्
Inform वि-ज्ञा, नि-विद्
Injure पीड्, हृ, हिंस्
Inquire अनु-इष्, प्रच्छ्
Introduce सम्- आ क्षिप्
Invite आ ह्वे
Join मिल्, युज्
Jump प्लु
Keep रक्ष्, पा।
Kill हन्, हिंस्
Kindle इन्ध्, ज्वलि
Kiss चुम्ब्
Know ज्ञा, विद्, बुध्
Labour श्रम्
Lament वि-लप्, रुद्
Laugh हस्
Lead नी, वह्
Leap प्लु, लंघ्
Learn शिक्ष्, पठ्
Leave त्यज्, हा, मुच्
Lick लिह्
Lie down शी
Live जीव्
Long for इष्, स्पृह्
Look दृश्, ईक्ष्
Lose अप हारि

Love प्र-णी	Order आ-दिश्	Proclaim घुष्
Make कृ, सृज्	Overcome वि-जि	Produce प्र-सू
Marry परि-णी	Pain व्यथ्, पीड्	Prohibit नि-षिध्
Measure मा, तुल्	Paint चित्र्, रञ्ज्	Promise प्रति-ज्ञा
Meditate ध्यै, जप्	Pardon क्षम्	Prosper ऋध्, एध्
Melt गल्, वि-ली	Pass अति-क्रम्	Protect रक्ष्, पा, त्रै
Milk दुह्	Perfom कृ, वि-धा	Pull कृष्
Mix मिश्र्	Perish नश्, ध्वंस्	Punish दण्ड्
Mount आ-रुह्	Permit अनु-ज्ञा	Purify पू
Mourn वि-लप्	Pierce व्यध्, छिद्	Pursue अनु-सृ
Move चल्, प्र-सृ	Play क्रीड्	Put स्थापि, नि-धा
Murmur जल्प्	Please प्री, तोषि	Put on परि-धा
Mutter जप्	Plough कृष्	Quarrel वि-वद्
Narrate कथ्, वर्ण्	Plunder लुण्ठ्, मुष्	Rain वृष्
Neglect उप-ईक्ष्	Point out सूच्	Raise तुल्, उद्-हन्
Neigh हेष्	Polish परि-कृ	Ramble परि-अट्
Nourish पुष्	Possess अधि कृ	Reach उपा-आ-गम्
Nurse सेव्	Pour पाति	Read पठ्, अधि-इ
Obey वचनं धृ	Pour out कृ, वम्	Receive आ-दा-ग्रह्
Observe दृश्	Practise अभि-अस्	Recognise अभि-ज्ञा
Obstruct रुध्	Praise शंस्, श्लाघ्	Recommend प्र-शंस्
Obtain आप्	Pray स्तु, प्र-अर्थ्	Refuse प्रत्या-ख्या
Occupy वि-आप्	Present उप-हृ	Regard आदृ
Offer उप-हृ	Press पीड्, मृद्	Regret अनु-तप्, शुच्
Open अपा-वृ, उद्-घाटि	Prattle जल्प्	Reject निरा-कृ
Oppose नि-रुध	Prevent नि-षिध्	Rejoice मुद्

Remain स्था
Remedy प्रति-कृ
Remember स्मृ
Remove अप-नी
Repeat अनु-लप्
Reply प्रति-भाष्
Report वि-ज्ञापि
Reproach गर्ह्
Request अनु-रुध्
Require अप-ईक्ष्
Respect आ-दृ
Return प्रत्या-गम्
प्रति-दा, प्रति-अर्पि
Rise उत् इ, रुह्
Roam परि-अट्
Roar गर्ज्, नद्
Rob मुष्, लुण्ठ्
Rub घृष्
Rule शास्
Run धाव्, द्रु
Sacrifice हु, यज्
Salute नम्
Satisfy तोषि
Save रक्ष्, त्रै
Say वद्, कथ्, भाष्
Scatter कॄ

Scratch अप-कृ
Search वि-चि
See ईक्ष्, दृश्, लोक्
Seek मृग्
Seek for वाञ्छ्
Seem भा
Sell वि-क्री
Send प्र-हि, सं-प्रेरि
Serve सेव्
Set off प्र-स्था
Set free मुच्
Sew सिव्
Shake कम्प्, वेप्
Sharpen तीक्ष्णी कृ
Shave क्षुर्
Shine भा, द्युत्, शुभ्, राज्, भास्, चकास्, लस्
Show निर्-दिश्
Sin अघ्, पापं कृ
Sing गै
Sink मस्ज्
Sit आस्, उप-विश्
Sleep शी, स्वप्, निद्रा
Smell घ्रा
Smile स्मि, वि-हस्

Sound ध्वन्, गर्ज्
Sow वप्
Speak वद्, वच्, भाष्
Spit ष्ठिव्
Split open स्फुट्
Sport क्रीड्, रम्
Spread तन्, स्तॄ
Spring लंघ्
Sprinkle सिच्
Stand स्था
Stand over अधि-स्था
Start प्र-स्था
Starve उप-वस्
Steal मुष्, चुर्
Sting दंश्
Stop नि-वृत्
Strike प्र-हृ, आहन्
Strive प्र-यत्, चेष्ट्
Struggle युध्
Study अधि-इ
Succeed सिध्
Suffer सह्
Suggest उप-नि-अस्
Suit युज्
Surpass अति-क्रम्
Surround वेष्ट्